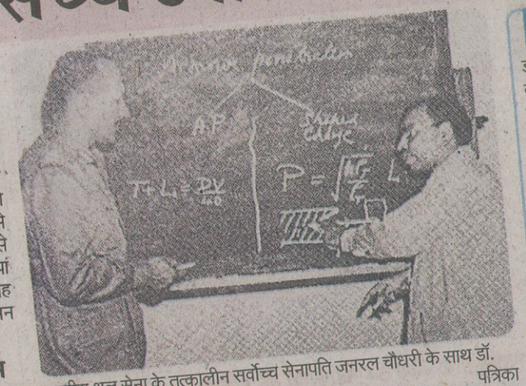
पुण्यतिथि विशेष : उदयपुर में जन्मे थे देश के महान वैज्ञानिक डॉ. डीएस कोठारी

शान्ति-अहिंसा के सच्चे उपासक और रक्षा विज्ञान के जनक थे डॉ. कोठारी



भारतीय थल सेना के तत्कालीन सर्वोच्च सेनापति जनरल चौधरी के साथ डॉ. डीएस कोठारी। पत्रिका



राजस्थान पत्रिका

गेस्ट राइटर

अनन्त गणेश त्रिवेदी
संस्थापक, शांतिपीठ संस्थान

उदयपुर में जन्मे देश के महान वैज्ञानिक और शिक्षाविद डॉ. दौलत सिंह कोठारी ने आगाह करते हुए कहा था कि आज मनुष्य जाति ऐसे चौराहे पर खड़ी है, जहां वह चाहे तो उस मार्ग को चुन सकती है, जो विज्ञान व अध्यात्म के मेल से बनने वाली दुनिया की ओर ले जाता है। चाहे तो वह ऐसे रास्ते पर जा सकती है, जहां सम्पूर्ण मानव जाति आपस में टकराकर चकनाचूर हो जाएगी। हमें कौनसा रास्ता चुनना है, यह तय करने में जितना विलम्ब करेंगे, उतना ही खतरा बढ़ता जाएगा। यह निश्चित है कि मनुष्य अपने आप को अणु अस्त्रों के भंवर में फंसने से बचा सका तो उसने अपने प्रयत्नों से आज ऐसी वैज्ञानिक उपलब्धियां अर्जित कर ली है, जिसके कारण वह शीघ्र स्वर्ण युग का नागरिक बन सकता है।

जयपुर में ली अंतिम सांस

उनका जन्म 6 जुलाई 1906 में उदयपुर में हुआ और 4 फरवरी 1993 को जयपुर में निधन हो गया। वे शान्ति और अहिंसा के सच्चे उपासक थे, साथ ही रक्षा विज्ञान के जनक भी थे। डॉ. कोठारी की प्रारम्भिक शिक्षा उदयपुर व इंदौर में होने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भौतिकी में एमएससी की। उनके गुरु प्रख्यात भौतिकविद मेघनाथ साहा थे, जिनका लम्बा मार्गदर्शन मिला। उन्होंने डॉक्टरेट की उपाधि (1933) केम्ब्रिज विश्वविद्यालय की केवेंडिश प्रयोगशाला में वैज्ञानिक लॉर्ड अरनेस्ट रदरफोर्ड, प्रो. आरएच फाउलर और प्रो. पीटर केपिट्जा के साथ अनुसंधान करके की। डॉ. कोठारी जीवन के अंतिम दो दशक में अध्यात्म और विज्ञान के अन्तसम्बन्धों सूक्ष्म चिंतन में जुटे रहे।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किए शोध

डॉ. कोठारी से मिलकर रदरफोर्ड बहुत खुश हुए। यहां उनकी मित्रता कार्यरत डॉ. एस. चन्द्रशेखर से हुई, जो अन्त तक शोध कार्य में बनी रही। भौतिकी के क्षेत्र में डॉ. कोठारी के अनुसांधन अहम माने जाते हैं। श्वेत बोने (ह्वाईट ड्वार्फ्स) सितारों का सिद्धान्त, दाब से पदार्थ का आयनीकरण, सांख्यिकीय यांत्रिकी में संख्याओ के विभाजन के सिद्धान्त का अनुप्रयोग, ठण्डे प्रोटोन गैस में ऊर्जा जनन, अपभृष्ट सितारों में न्यूट्रोनों का निर्माण, वृहत द्रव्यमानों के खण्डन का सितारों में रूपान्तरण का सिद्धान्त उनके महत्वपूर्ण योगदान हैं। दबाव आयनिकरण सिद्धान्त की खोज का श्रेय डॉ. कोठारी को है। उन्होंने इस सिद्धान्त का प्रयोग श्वेत बोने तारो की बनावट समझाने में किया, जिसे दुनिया के वैज्ञानिकों ने खास माना। अणुओं का आयनिकरण परमाणु विखण्डन के क्षेत्र में अहम योगदान सिद्ध हुआ और नाभिकीय भौतिकी के लिए मील का पत्थर बन गया।

देश के पहले वैज्ञानिक सलाहकार

रक्षा विज्ञान की नींव तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू और डॉ. कोठारी के बीच साफ समझ से रखी गई। उन्हें 1948 में देश का प्रथम वैज्ञानिक सलाहकार नियुक्त किया गया, जिस पर वे 13 साल तक बने रहे। इस दौरान उन्होंने रक्षा अनुसंधान की प्रयोगशालाओं की श्रृंखला स्थापित कर दी। डॉ. होमी भाभा, डॉ. के.एस.कृष्णनन और शान्ति स्वरूप भटनागर वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड के सदस्यों के रूप में डॉ. कोठारी को सहयोग देते रहे।

युद्ध में अहम रही भूमिका

भारत-पाक युद्ध के दौरान डॉ. कोठारी का योगदान भूलाया नहीं सकता। तारा भौतिकी में विशेष ज्ञान से उन्होंने ऐसे आयुध का आविष्कार किया जो इस्पात के कई इंच मोटे कवच को भेद सकता है। युद्ध में भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना के टेंकों को इसी आयुध से चकनाचूर कर दिया। इसलिए यूएस एजूकेशन फाउंडेशन इन इंडिया के एक्सेक्यूटिव डायरेक्टर पीजे लवकरे ने कहा था कि 'प्रतिरक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में डॉ. कोठारी ने वह भूमिका निभाई, जो महाभारत में कृष्ण ने अर्जुन के लिए निभाई थी।

दैनिक भास्कर
सोमवार, 24 अगस्त, 2026 | 02

रीजनल साइंस सेंटर को डॉ. कोठारी का नाम देने की मांग

मुख्यमंत्री, राज्यपाल व केंद्रीय मंत्री को लिखा पत्र

उदयपुर | शिल्पग्राम के पास तैयार हो चुके रीजनल साइंस सेंटर का नामकरण देश के महान वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी (डॉ. डी.एस. कोठारी) के नाम पर करने की मांग उठी है। शांति पीठ संस्थान के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री संजय शर्मा तथा पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया को पत्र भेजकर यह मांग दोहराई है।

इसके समर्थन में सांसद डॉ. मन्नालाल रावत और शहर विधायक ताराचंद जैन को भी पत्र की कॉपियां भेजी हैं। पत्र में त्रिवेदी ने बताया कि देश में जिस तरह परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में डॉ. एच.जे. भाभा और अंतरिक्ष अनुसंधान क्षेत्र में विक्रम साराभाई शीर्षस्थ हैं, ठीक उसी तरह प्रतिरक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में डॉ. कोठारी का योगदान रहा है। एक भविष्यदृष्टा वैज्ञानिक के रूप में उनकी सोच ने ही देश को रक्षा क्षेत्र में डीआरडीओ जैसी शीर्ष संस्था दी। रक्षा और शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए कार्य मील का पत्थर साबित हुए हैं। साइंस सेंटर के साथ उनका नाम जुड़ने से यह केंद्र अपने मूल उद्देश्यों को और अधिक स्पष्टता से प्रदर्शित करेगा।

साथ ही यहां आने वाले नवागंतुकों को नवाचार के साथ-साथ अध्यात्म और विज्ञान के अभाज्य विचार से सकारात्मक प्रेरणा भी मिलेगी। शांति पीठ के इस अनुरोध पत्र को पूर्व आईएएस अधिकारी सुमतिलाल बोहरा, पूर्व नगर निगम आयुक्त दिनेश कोठारी, शिक्षाविद डॉ. पी.एस. तलेसरा, इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, डॉ. नीरज शर्मा, डॉ. कमल सिंह राठौड़, एडवोकेट उमेशचंद्र शर्मा, इंद्रदेव जोशी आदि ने भी समर्थन दिया है।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, सोमवार, 24 अगस्त, 2026

डॉ. डीएस कोठारी के नाम पर हो साइंस सेंटर

उदयपुर @ पत्रिका. शांतिपीठ संस्थान के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, विज्ञान एवं तकनीकी मंत्री संजय शर्मा तथा पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया को पत्र लिखकर पुनः अनुरोध किया हैं कि तैयार हो चुके रीजनल साइंस सेंटर का नाम डॉ. डी. एस. कोठारी के नाम पर रखा जाए। त्रिवेदी ने उल्लेख किया कि डॉ. कोठारी का रक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में दिया गया योगदान मील का पत्थर सिद्ध हुआ हैं। त्रिवेदी ने सांसद डॉ. मन्नालाल रावत तथा उदयपुर विधायक ताराचंद जैन को भी पत्र की प्रतियां संलग्न की हैं। इस अनुरोध का डॉ. पी एस तलेसरा,डॉ नीरज शर्मा, पूर्व नगर-निगम आयुक्त दिनेश कोठारी, डॉ कृष्ण जुगनू, डॉ. कमल सिंह राठौड़, एडवोकेट उमेश चंद्र शर्मा, पूर्व आइएएस सुमतिलाल बोहरा, इन्द्र देव जोशी ने भी समर्थन किया हैं।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, मंगलवार 07 जुलाई 2026

शान्तिपीठ में डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर संगोष्ठी में बोले वक्ता

तकनीक के साथ आत्म तत्व की चेतना के विकास को दें प्राथमिकता

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com



संगोष्ठी को संबोधित करते विधायक ताराचंद जैन और मौजूद अतिथि।

उदयपुर. भारत ने ज्ञान को कर्म में नियोजित कर सर्वकल्याण की दिशा सुनिश्चित की। वर्तमान दौर कट्टर भौतिकवाद और जीवन मूल्यों के संघर्ष का है। ऐसे में आवश्यक है कि विज्ञान और तकनीक के विकास के साथ ही आत्म तत्व की चेतना के विकास को भी प्राथमिकता दें। वैज्ञानिक और शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर व्यवहार में नैतिकता: उपस्थित चुनौतियों की चाबी पर संगोष्ठी में वक्ताओं ने यह बात कही। मुख्य अतिथि विधायक ताराचंद जैन ने कहा कि डॉ. कोठारी ने विश्व को विज्ञान के साथ ही अहिंसा और शान्ति की दिशा दी। अध्यक्षता करते हुए सुविवि के कुलपति प्रो. कैलाश डागा ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. कोठारी के अवदान अविस्मरणीय रहेंगे। प्रो नीरज शर्मा ने कहा कि ज्ञान विज्ञान के समन्वय में नैतिकता की चेतना स्थापित रही हैं और इसी के अनुरूप आचरण पद्धति विकसित हुई हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने सावचेत किया कि मनुष्य जाति का अस्तित्व ही दांव पर लगा है, क्योंकि हम बाह्य जगत के बारे में तो और अधिक जानना चाहते हैं जबकि आत्म तत्व की उपेक्षा अन्ततः विनाशक होगी। शान्तिपीठ के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. पीएस तलेसरा ने युवाओं को डॉ. कोठारी से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। प्रो. केबी जोशी ने भौतिकी में योगदान को विस्तार से बताया। दिनेश कोठारी, ज्ञानप्रकाश सोनी, डॉ. परितोष दुग्गर, समर्थलाल साहू, डॉ हेमलता, लक्ष्मीकांत जोशी, मांगीलाल मेघवाल ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ. जितेंद्र ने संचालन व आभार व्यक्त किया।

तारामंडल का नाम कोठारी के नाम पर हो

अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विधायक जैन से तारामंडल का नामकरण डॉ कोठारी के नाम से करवाने का आग्रह किया, जिस पर विधायक ने आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया।

डॉ. कोठारी को पुष्पांजलि : डॉ. दौलत सिंह कोठारी जन्म जयंती पर सोमवार को विज्ञान समिति के सदस्यों ने सुविवि में डॉ. कोठारी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। कोठारी संस्थान, विज्ञान समिति सदस्य, प्रो. एमके जैन, प्रो. हर्षिता जोशी आदि मौजूद रहे।

दैनिक भास्कर, उदयपुर,
मंगलवार 07 जुलाई, 2026

उदयपुर में प्रख्यात वैज्ञानिक शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर संगोष्ठी आयोजित

विज्ञान के साथ आत्म तत्व की चेतना जरूरी, शिक्षा में उपनिषद शामिल करना चाहते थे डॉ. कोठारी



उदयपुर। शान्तिपीठ भारत संस्थान की ओर से प्रख्यात वैज्ञानिक और शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका विषय 'व्यवहार में नैतिकता: उपस्थित चुनौतियों की चाबी' था। कार्यक्रम की शुरुआत में अतिथियों ने डॉ. कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण किया।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कैलाश डागा ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. कोठारी का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे पूरे विश्व के शिक्षा जगत में शीर्ष स्थान रखते हैं। प्रो. डागा ने समन्वय, सच्ची सहिष्णुता और राजकार्य में आचार्य चाणक्य की आचार संहिता को रेखांकित किया। मुख्य अतिथि उदयपुर नगर विधायक तारा चंद्र जैन ने कहा कि डॉ. कोठारी राजस्थान के रत्न और भारत के मनीषी थे । उन्होंने विश्व को विज्ञान के साथ ही अहिंसा और शांति की राह दिखाई । इस दौरान शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विधायक जैन से शिल्पग्राम के पीछे बने तारामंडल का नामकरण डॉ. कोठारी के नाम पर करने का आग्रह किया, जिस पर विधायक ने आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया।

प्रमुख वक्ता सामाजिक विज्ञान व मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि ज्ञान और विज्ञान के समन्वय में हमेशा से नैतिकता की चेतना रही है। उन्होंने कर्म, अकर्म, विक्रम और सद्धर्म की व्याख्या की। शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी विज्ञान के साथ ही उपनिषद को भी शिक्षा में शामिल करना चाहते थे। वे प्रतिरक्षा विज्ञान और मानवीय संवेदना के आधार पर सशक्त राष्ट्र का सपना देखते थे। सुविवि के भौतिक विज्ञान विभाग अध्यक्ष प्रो. के.बी. जोशी, शांतिपीठ के कार्यकारी अध्यक्ष एवं पायरोटेक इंटरनेशनल के प्रमुख डॉ. पी.एस. तलेसरा, नगर निगम के पूर्व आयुक्त दिनेश कोठारी, सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियन्ता जी.पी. सोनी, शिक्षाविद् डॉ. परितोष दुग्गड़, एडवोकेट समर्थ लाल साहू, डॉ. हेमलता, पूर्व वन अधिकारी लक्ष्मीकांत जोशी और मांगीलाल मेघवाल ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर • उदयपुर
बुधवार 22 अप्रैल 2026 | 10

2 आचार्यों की जयंती आज • संगोष्ठी में विद्वान बोले- अद्वैत और विशिष्टाद्वैत सिद्धांत प्रासंगिक

अहंकार-संदेह का समाधान है शंकराचार्य दर्शन, रोल मॉडल बनें ये महान आध्यात्मिक क्रांतिकारी

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

जगद्गुरु आदि शंकराचार्य जयंती और रामानुजाचार्य जयंती की पूर्व संध्या पर मंगलवार को शांतिपीठ संस्थान की ओर से भारतीय ज्ञान परंपरा और दर्शन विषयक सत्संग-संगोष्ठी आयोजित की गई। वक्ता विद्वानों ने रेखांकित किया कि 8वीं सदी में आदि शंकराचार्य ने देश की चारों दिशाओं में मठों की स्थापना कर राष्ट्र को आध्यात्मिक और भौगोलिक रूप से एक सूत्र में बांधा, वहीं 11वीं सदी में रामानुजाचार्य ने भक्ति और सामाजिक समानता का मार्ग प्रशस्त किया।

मुख्य वक्ता मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने कहा कि आचार्य शंकर और आचार्य रामानुज ने भारतीय दर्शन को दिशाबोध दिया। जहां शंकराचार्य ने अद्वैतवाद से भ्रम नष्ट किए, वहीं रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत के माध्यम से भक्ति और सामाजिक समरसता की चेतना जाग्रत की। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आज का समाज संदेह और अहमन्यता की विकृतियों से जूझ रहा है। यदि आदि शंकराचार्य युवाओं के रोल मॉडल बनें, तो विकसित राष्ट्र का स्वप्न साकार होगा। शंकर ने अपने यौवन काल में ही सांस्कृतिक संरचना से राष्ट्र को सुगठित कर विदेशी षड्यंत्रों को विफल किया था।

इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए बताया कि मेवाड़ के एकलिंग पुराण में भगवान शंकराचार्य के जीवन वृत्त, शिष्य परंपरा और चार मठों का प्रामाणिक वर्णन मिलता है। पंडित जनार्दन राय नागर द्वारा रचित 'शंकराचार्य उपन्यास' वैश्विक स्तर की कृति है, जो मेवाड़ के शंकर परंपरा से जुड़ाव को दर्शाती है।

लक्ष्मण पुरी महाराज ने कहा कि प्रजातांत्रिक तरीके से धर्म राज्य की स्थापना शंकर की ही देन है। डॉ. सुरेंद्र द्विवेदी ने बताया कि कलयुग में आचार्य शंकर ने 'मानसिक पूजा' और स्तोत्र साहित्य को प्राथमिकता दी, जो आत्म-कल्याण के लिए पर्याप्त है। बीएन विश्वविद्यालय के डॉ. कमल सिंह राठौड़ और डॉ. देवीशंकर शास्त्री ने उन्हें सनातन धर्म का रक्षक और सुप्त आध्यात्मिक चेतना को जगाने वाला प्रकाश स्तंभ बताया। इससे पहले संगोष्ठी की शुरुआत दोनों महान आचार्यों को पुष्पांजलि अर्पित करने और स्तुति पाठ के साथ हुई। पंडित ओम प्रकाश पालीवाल ने उनके दर्शन को सर्वकालिक प्रासंगिक बताया। इस अवसर पर कैलाश पालीवाल सहित बड़ी संख्या में प्रबुद्धजन उपस्थित थे। अंतिम सत्र में आभार ज्ञापन कपिल दया ने किया।



सत्संग-संगोष्ठी में आदि शंकराचार्य व रामानुजाचार्य दर्शन पर मंथन हुआ।

भारतीय दर्शन के 2 स्तंभ, जिन्होंने दिखाया भक्ति मार्ग

भास्कर नॉलेज

आदि शंकराचार्य ने अद्वैत दर्शन को स्थापित किया था। इसका मूल मंत्र 'अहं ब्रह्मास्मि' है। यह सिद्धांत सिखाता है कि आत्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं है। यानी दोनों एक ही हैं। उनके अनुसार यह दृश्य जगत मिथ्या और केवल शुद्ध ज्ञान ही मोक्ष का एकमात्र मार्ग है। वहीं 11वीं सदी में आचार्य रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत का प्रतिपादन किया। उनका दर्शन कहता है कि यद्यपि ईश्वर ही सर्वोत्तम और पूर्ण सत्य है, लेकिन जीव और प्रकृति का अपना पृथक अस्तित्व भी सत्य है। उन्होंने मोक्ष प्राप्ति के लिए ज्ञान के साथ-साथ भक्ति और शरणागति को सबसे सुलभ और श्रेष्ठ मार्ग बताया था।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, बुधवार, 22 अप्रैल 2026

आदि शंकराचार्य और रामानुजाचार्य जयंती पर सत्संग-संगोष्ठी आयोजित

आदि शंकराचार्य सनातन धर्म के रक्षक और ज्ञान के प्रकाश स्तंभ

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. शांतिपीठ संस्थान की ओर से मंगलवार को आदि शंकराचार्य जयंती और रामानुजाचार्य जयंती की पूर्व संध्या पर सत्संग-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें 'चिदानंद रूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्' को सनातन का शाश्वत स्वर बताया गया। एमएलएसयू में संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने आचार्य शंकर व आचार्य रामानुज को ऐसी महान विभूतियां बताया, जिनकी ज्ञान ज्योति ने भारतीय ज्ञान परंपरा व दर्शन को दिशा दी।

शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आचार्य शंकर ने अपने यौवन काल में तत्कालीन विवादों, भ्रमजालों व विसंगतियों से समाज को मुक्त कर विशाल राष्ट्र की एकता को सांस्कृतिक-आध्यात्मिक संरचना से सुगठित किया। महाराज लक्ष्मण पुरी ने आचार्य शंकर से जुड़े जीवन वृत्तांतों का उल्लेख किया।

इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने बताया कि शंकराचार्य के जीवन वृत्त और योगदान का प्रामाणिक वर्णन मेवाड़ के एकलिंग पुराण में मिलता है, जो शंकर परंपरा के मेवाड़ में अक्षुण्ण रहने को दर्शाता है। निम्बार्क महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. सुरेंद्र द्विवेदी ने कलयुग में शंकराचार्य द्वारा मानसिक पूजा को प्राथमिकता देने की बात कही। बी.एन. विश्वविद्यालय के डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने शंकराचार्य को सनातन धर्म का रक्षक और ज्ञान का प्रकाश स्तंभ बताया।


सत्संग- संगोष्ठी में चर्चा करते हुए। पत्रिका

दैनिक भास्कर
गुरुवार, 19 फरवरी, 2026

रामकृष्ण परमहंस जयंती • शान्तिपीठ संस्थान और निंबार्क महाविद्यालय के साझे में संगोष्ठी, समन्वयवादी दर्शन पर मंथन

भारतीय ज्ञान परंपरा वेदों से प्रवाहित, सत्य के दिग्दर्शक थे रामकृष्ण

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

आध्यात्मिक चेतना के प्रेरक श्रीरामकृष्ण परमहंस की जयंती पर संगोष्ठी हुई। आयोजन शान्तिपीठ संस्थान और निम्बार्क शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय सभागार में हुआ। विषय था- 'आध्यात्मिक चेतना के प्रेरक श्रीरामकृष्ण परमहंस'।

वक्ताओं ने कहा, परमहंस ऐसे समय में अवतरित हुए जब समाज धर्म के नाम पर भ्रम और विवादों से घिरा था। उन्होंने जीवात्मा से परमात्मा तक पहुंचने का सरल मार्ग बताया। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ नीरज शर्मा ने कहा, भारत भूमि रूपांतरण की स्वतंत्रता देती है। यहां की ज्ञान परंपरा वेदों से प्रवाहित है। समय-समय पर देवत्व संपन्न महापुरुषों का आविर्भाव होता है। दर्शन का अर्थ तत्व दृष्टि है। सत्य नित्य है। रामकृष्ण सत्य का दिग्दर्शन हैं। उन्होंने 'सोहम' की व्याख्या करते हुए कहा, यह मनुष्य को उसकी अनंत क्षमताओं का बोध कराता है।



वक्ताओं ने स्वामी रामकृष्ण परमहंस की जीवनी बताई। उनके दर्शन को रेखांकित किया। आयोजन में बड़ी संख्या में शहरवासी शामिल हुए।

शिक्षक यदि इसे साध लें तो छात्रों के भीतर की ईश्वरीय ज्योति जागृत कर सकते हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा, परमहंस तीन हजार वर्षों की साधना का प्रतिफल थे। उन्होंने मानव मुक्ति का राजमार्ग दिखाया। उस समय ब्रह्म समाज, आर्य समाज और प्रार्थना समाज जैसे आंदोलन चल रहे थे। रामकृष्ण ने सबको समन्वयकारी आधार दिया। वे ज्ञान-विज्ञान, श्रुति-स्मृति और परा-अपरा के सेतु थे। अध्यक्षता करते हुए पूर्व प्राचार्य डॉ सुरेन्द्र द्विवेदी ने कहा, रामकृष्ण सर्वधर्म समभाव का संदेश हैं।

हमारी ज्ञान परंपरा एकत्व की दिशा दिखाती है। प्राचार्य डॉ हनुमान सहाय शर्मा ने कहा, रामकृष्ण और स्वामी विवेकानंद का दर्शन आज भी प्रासंगिक है। युवाओं के चरित्र निर्माण पर जोर दिया। बीएन विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ कमल सिंह राठौड़ ने कहा, रामकृष्ण की दीक्षा का प्रतिफल विवेकानंद ने विश्व को दिया। भारतीय आध्यात्मिक विरासत का प्रकाश फैलाया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रशिक्षणार्थी छात्राओं ने सरस्वती वंदना और वेद मंत्रों से की। संचालन डॉ. भारती दशोरा ने किया। पूर्व वन संरक्षक ओंकार लाल मेनारिया, कवि श्रेणी दान चारण, संकाय सदस्य, प्रबुद्ध नागरिक और बड़ी संख्या में प्रशिक्षणार्थी उपस्थित रहे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, गुरुवार, 19 फरवरी, 2026

वेदों से प्रारंभ बहुआयामी भारतीय ज्ञान परम्परा हमारे संस्कारों में समाहित

रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर संगोष्ठी व सत्संग



ब्यूरो नवज्योति,उदयपुर। शान्तिपीठ संस्थान एवं निम्बार्क शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के साझे में रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर आध्यात्मिक चेतना के प्रेरक श्रीरामकृष्ण परमहंस विषयक सत्संग - संगोष्ठी आयोजित हुई।

प्रमुख वक्ता सुविवि संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ नीरज शर्मा ने कहा कि भारत भूमि में पूर्ण स्वाधीनता है कि हम अपना रूपांतरण कर सकें और शुद्ध चैतन्य से परमात्मा तक पहुंच सकें। वेदों से प्रारंभ बहुआयामी भारतीय ज्ञान परम्परा हमारे संस्कारों में समाहित है और इसीलिए समय समय पर देवत्व को प्राप्त भारत के भाग्य विधाता का आविर्भाव होता है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने परमहंस को पिछले तीन हजार वर्षों की आध्यात्मिक साधना का प्रतिफल बताते हुए कहा कि क्षणातीत जीवन जीने वाले योगी भक्त परमहंस देव ने मानव मात्र की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया और हम इसी राज मार्ग से चलकर विश्व शान्ति के लक्ष्य को अर्जित कर सकते हैं। डॉ सुरेन्द्र द्विवेदी ने कहा कि रामकृष्ण सर्व धर्म समभाव का संदेश हैं।

उन्होंने कहा कि हमारी ज्ञान परम्परा नित्यता और एकत्व की दिशा को प्रशस्त करती है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ हनुमान सहाय शर्मा ने रामकृष्ण और विवेकानंद का दर्शन सर्वकालिक प्रासंगिक एवं नित नूतन बताया। डॉ कमल सिंह राठौड़ ने आभार व्यक्त किया। प्रारंभ में प्रशिक्षणार्थी छात्राओं ने सरस्वती वंदना के साथ ही वेद मंत्रों का पाठ किया। संचालन डॉ भारती दशोरा ने किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार, 20 फरवरी 2026

भारतीय ज्ञान परंपरा संस्कारों में समाहित



उदयपुर@पत्रिका. शांतिपीठ संस्थान एवं निंबार्क शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में रामकृष्ण परमहंस जयंती पर महाविद्यालय सभागार में आध्यात्मिक चेतना के प्रेरक रामकृष्ण परमहंस विषयक सत्संग-संगोष्ठी हुई। वक्ताओं ने कहा कि परमहंस ऐसे समय में अवतरित हुए जब समाज धर्म के नाम पर भ्रम, भेदाभेद और विवादों से ग्रसित था। उन्होंने जीवात्मा से परमात्मा तक पहुंचने के मार्ग को न केवल बताया, बल्कि उसे सहज और सरल रूप में जीकर दिखाया। मुख्य वक्ता सुविवि के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने कहा, वेदों से प्रारंभ भारतीय ज्ञान परम्परा हमारे संस्कारों में समाहित है, इसलिए समय-समय पर देवत्व को प्राप्त महापुरुषों का आविर्भाव होता है। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने परमहंस को तीन हजार वर्षों की आध्यात्मिक साधना का प्रतिफल बताते हुए कहा कि उन्होंने मानव मात्र की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. सुरेन्द्र द्विवेदी ने कहा कि वे सर्वधर्म समभाव के प्रतीक हैं और भारतीय ज्ञान परम्परा नित्यता एवं एकत्व की दिशा को प्रशस्त करती है। संगोष्ठी में प्राचार्य डॉ. हनुमान सहाय शर्मा, बीएन विवि के डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने भी विचार रखे।

दैनिक भास्कर
गुरुवार, 5 फरवरी, 2026

स्मृति संवाद • पुण्यतिथि पर शान्तिपीठ में डॉ. दौलत सिंह कोठारी को प्रबुद्धजनों ने दी पुष्पांजलि, वक्ताओं ने कहा

राष्ट्र के रत्न और विश्व की ज्योति थे डॉ. कोठारी

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

स्वातंत्र्योत्तर भारत को जिस संस्कारित, वैज्ञानिक और जीवनोपयोगी शिक्षा की आवश्यकता थी, उसे दिशा देने वाले महान शिक्षाविद् और वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी राष्ट्र के रत्न और विश्व ज्योति के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

यह विचार शान्तिपीठ भारत उदयपुर द्वारा आयोजित डॉ. कोठारी की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि एवं स्मृति संवाद कार्यक्रम में वक्ताओं ने व्यक्त किए। कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि भारत सरकार ने शिक्षा और प्रतिरक्षा की बुनियादी आवश्यकताओं को मजबूत करने का दायित्व डॉ. कोठारी को सौंपा था, जिसे उन्होंने निष्ठा, समर्पण और युगदृष्टा दृष्टिकोण से निभाया। उन्होंने न केवल शिक्षा सुधारों को गति दी, बल्कि विश्व मंगल की दिशा में भी मार्ग प्रशस्त किया। पुष्पांजलि के बाद आयोजित स्मृति संवाद की अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि किसी भी समाज या राष्ट्र के संकल्प तभी पूरे होते हैं जब शिक्षा स्वावलंबन और जीवन मूल्यों से जुड़ी हो।



पुष्पांजलि एवं स्मृति संवाद कार्यक्रम में मौजूद वक्ता।

डॉ. कोठारी ने प्रारंभिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा को व्यक्तित्व विकास और समाजोपयोगी बनाया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने डॉ. कोठारी को आधुनिक ऋषि बताते हुए कहा कि वे विश्व मंगल के दूरदृष्टा थे, जिन्होंने मानव समाज ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र में एकात्म चेतना के दर्शन किए। उन्होंने जैन दर्शन, पतंजलि योग सूत्र और श्रीमद्भगवद्गीता के मूल्यों को आत्मसात करते हुए अहिंसा, समता और विवेकपूर्ण जीवन का मार्ग दिखाया। साथ ही उन्होंने संसार की त्रिगुणात्मक प्रकृति को समझते हुए शस्त्र और शास्त्र दोनों की उपादेयता को संतुलित दृष्टि से रखा। राष्ट्रीय विमानपत्तन प्राधिकरण के पूर्व कार्यकारी निदेशक राजीव मेहता ने कहा कि नैतिक मूल्यों के बिना कोई भी आदर्श पूर्ण नहीं हो सकता। डॉ. कोठारी ने जीवन में मानव मूल्यों को सर्वोच्च स्थान दिया और अहिंसा को परम धर्म के रूप में प्रतिष्ठित किया।

सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. देवेंद्र सिंह राठौड़ ने कहा कि डॉ. कोठारी जड़ और चेतन को एक पूर्ण पारिस्थितिकी के रूप में देखते थे और उसी अनुरूप आचरण के पक्षधर थे। उन्होंने प्रकृति से केवल आवश्यकतानुसार उपभोग पर बल दिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में सभी अतिथियों ने डॉ. दौलत सिंह कोठारी के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, गुरुवार, 5 फरवरी, 2026

डॉ.कोठारी ने शिक्षा को दिए व्यक्तित्व विकास व समाजोपयोगी आयाम

वैज्ञानिक डॉ.दौलतसिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि अर्पित

ब्यूरो नवज्योति,उदयपुर। स्वातंत्र्योत्तर भारत को संस्कारित शिक्षा प्रतिरक्षा की बुनियादी आवश्यकता थी और इसके लिए भारत सरकार ने शिक्षाविद् वैज्ञानिक डॉ दौलत सिंह कोठारी को इसकी जिम्मेदारी दी जिसे उन्होंने पूरी निष्ठा और समर्पण भाव से स्पंदित तो किया ही, युग दृष्टा के रूप में उन्होंने विश्व मंगल के राज मार्ग को प्रशस्त करने का सूत्र भी दिया। वे राष्ट्र के रत्न और विश्व ज्योति हो गए। ये विचार विभिन्न वक्ताओं ने बुधवार को प्रख्यात शिक्षाविद् वैज्ञानिक डॉ दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर शान्तिपीठ संस्थान द्वारा आयोजित पुष्पांजलि कार्यक्रम में व्यक्त किए । संवाद की अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ उमाशंकर शर्मा ने कहा कि डॉ कोठारी ने प्रारंभिक स्तर से विश्व विद्यालय तक की शिक्षा को व्यक्तित्व विकास एवं समाजोपयोगी आयाम दिए। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने डॉ कोठारी को आधुनिक ऋषि बताते हुए



कहा कि वे विश्व मंगल के दूरदृष्टा थे जिन्होंने मानव समाज ही नहीं प्राणी मात्र में एकात्म चेतना के दर्शन किए । राष्ट्रीय विमान पत्तन प्राधिकरण के पूर्व कार्य कारी निदेशक राजीव मेहता ने कहा कि बगैर नैतिक मूल्यों के कोई भी आदर्श पूरा नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि डॉ कोठारी ने मानव मूल्यों को जीवन में प्राथमिकता दी , उन्होंने अहिंसा से परम धर्म का मार्ग प्रशस्त किया। सिंचाई विभाग के पूर्व अधिक्षण अभियंता ज्ञान प्रकाश सोनी ने सीमित और जायज आवश्यकताओं पर जोर दिया। सुविवि पर्यावरण विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ देवेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि डॉ. कोठारी ने प्रकृति से मात्र आवश्यकतानुसार ही उपभोग पर बल दिया। बी एन विश्व विद्यालय अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ जय श्री सिंह ने कहा कि डॉ कोठारी के शैक्षिक दर्शन ने कोशिकाओं को एक ब्रह्माण्डीय एकता में व्यवस्थित करने पर जोर दिया जो ज्ञान और परस्पर संबद्धता की उनकी गहरी समझ को दर्शाता है।

मार्शल आर्ट के आचार्य राजकुमार मेनारिया ने भी विचार व्यक्त किए। प्रारंभ में अतिथियों द्वारा डॉ. कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, सोमवार, 7 जुलाई 2025

डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान ने पुष्पांजलि अर्पित की

शिक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में डॉ. कोठारी का अहम योगदान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा और सुरक्षा दोनों सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राथमिकताएं हैं। इनके लिए डॉ. कोठारी के योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। वे ऋषि परम्परा की श्रेणी में आते हैं, जिन्होंने राष्ट्र निर्माण और मानव कल्याण के लिए जीवन जीया। उक्त विचार रविवार को वैज्ञानिक शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान के सभागार में आयोजित पुष्पांजलि एवं चिंतन सभा में वक्ताओं ने रखे। अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि डॉ. कोठारी की शिक्षा नीति कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती। शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने डॉ. कोठारी को आधुनिक ऋषि बताया। मोसुविवि में भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. केबी जोशी ने कहा कि आधुनिक विज्ञान का उत्कर्ष उपनिषदों के चिंतन से जुड़कर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकता है। इस अवसर पर समाजसेवी चंद्रगुप्त सिंह चौहान, पूर्व आइएएस सुमतिलाल बोहरा, पूर्व नगर परिषद आयुक्त दिनेश कोठारी, कुमार दुष्यंत, कैलाश पालीवाल ने भी विचार रखे।



आयोजन में मौजूद अतिथि। पत्रिका

इधर, विज्ञान समिति और डॉ. दौलत सिंह कोठारी संस्थान के सदस्यों ने फतहसागर पाल, बायो टेक्नोलॉजी विभाग के बाहर लगी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 7 जुलाई, 2025

डॉ. कोठारी की जीवन यात्रा अणु से आत्मतत्व की : चिंतक

महानगर संवाददाता

उदयपुर। राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा और सुरक्षा दोनों सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राथमिकताएं हैं, जिनके लिए डॉ कोठारी के योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। डा कोठारी ऋषि परम्परा की श्रेणी में आते हैं जिन्होंने राष्ट्र निर्माण और मानव कल्याण के लिए जीवन जीया। उनकी जीवन यात्रा अणु से आत्मतत्व की है। इसके मध्य अंतःक्रिया से बढ़ कर कोई समस्या नहीं। इनके मध्य समन्वय और समाधान ही विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। उनकी मान्यता थी कि सभ्यता का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस सीमा तक विज्ञान व अध्यात्म में संतुलन कायम कर सकते हैं।

यह विचार वैज्ञानिक शिक्षाविद् डॉ दौलतसिंह कोठारी की जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान के सभागार में हुए पुष्पांजलि एवं चिंतन सभा में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ उमाशंकर शर्मा ने कहा कि डा कोठारी की शिक्षा नीति कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती। उन्होंने गुरुकुल ज्ञान परम्परा और शिक्षा की भावी संभावनाओं को समझकर शिक्षा नीति का प्रतिपादन किया किन्तु हमने इसे समझने में दशाब्दियां गुजार दी। शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने डॉ कोठारी को आधुनिक ऋषि बताते हुए कहा कि कोठारी ने विज्ञान और अध्यात्म का अंतिम लक्ष्य एक ही है 'मैं कौन हूं' का प्रतिपादन किया। 'इलेक्ट्रोन' क्या है इस सवाल का संबंध बाह्य जगत से है, मैं कौन हूं इसका आंतरिक जगत से। उन्होंने कहा था मनुष्य जाति का अस्तित्व ही दांव पर है। आत्मतत्व के ज्ञान की उपेक्षा तो अंततः विनाशक ही होगी। सुविवि में भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ के बी जोशी ने कहा कि आधुनिक विज्ञान का उत्कर्ष उपनिषदों के चिंतन से जुड़कर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकता है। समाजसेवी चंद्रगुप्तसिंह चौहान ने कहा कि डॉ कोठारी की शिक्षा नीति जीवन मूल्यों और समग्र विकास की आधारशिला है। पूर्व आईएएस सुमतिलाल बोहरा ने कहा डॉ कोठारी मानवीय सौंदर्य का अनुपम उदाहरण हैं। वे जीवन की सतत साधना से सरल होकर प्रेरणास्रोत बन गए। पूर्व नगरपरिषद आयुक्त दिनेश कोठारी, कुमार दुष्यंत, कैलाश पालीवाल ने विचार व्यक्त किए। प्रारंभ में अतिथियों ने डा कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की।



राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 04 मई, 2025

शंकराचार्य और आचार्य रामानुज की जयंती पर संगोष्ठी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. जगतगुरु आदि शंकराचार्य और आचार्य रामानुज की जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में सत्संग-संगोष्ठी का आयोजन हुआ। सुविवि संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि आचार्य शंकर और रामानुज भारतीय संस्कृति के प्राण तत्व के समान हैं। दोनों ने भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति को अत्यन्त गहरे तक प्रभावित किया है। दोनों ने ही आध्यात्मिक समाजवाद से सबको एकसूत्र में बांधने का काम किया। भगवद्पाद शंकराचार्य ने अतुलनीय दार्शनिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान के साथ ही सम्पूर्ण भारत की चारों दिशाओं में पूर्वाम्नाय, पश्चिमाम्नाय, उत्तराम्नाय और दक्षिणाम्नाय के नाम से क्रमशः पुरी, द्वारका, जोशीमठ और श्रंगेरी में चार पीठों की स्थापना की। अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि तत्कालीन विसंगतियों के दौर में जगद्गुरू शंकराचार्य का अवतरण मानो चमत्कारी था, विवादों का शमन करते हुए उन्होंने चारों दिशाओं आध्यात्मिक-सांस्कृतिक जागरण हेतु चार मठों की स्थापना करते हुए राष्ट्र को एक सूत्र में बांधा। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शंकराचार्य को हम बौद्धिक शक्ति से नहीं चारित्रिक शक्ति से समझ पाएंगे। निम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. सुरेन्द्र द्विवेदी, बीएन विश्वविद्यालय के प्रो. कमल सिंह राठौड़ और एडवोकेट धर्मराज ने भी संबोधित किया।



संगोष्ठी को संबोधित करते हुए। पत्रिका

दैनिक भास्कर, उदयपुर, रविवार, 4 मई 2025 | 14
dainikbhaskar.com

शंकराचार्य जयंती पर हुई संगोष्ठी



उदयपुर | आदि शंकराचार्य और आचार्य रामानुज की जयंती पर शनिवार को शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में सत्संग-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अंत में ध्यान सत्र हुआ।

प्रमुख वक्ता प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि आचार्य शंकर और रामानुज भारतीय संस्कृति के प्राण तत्व के समान हैं। दोनों ने भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति को गहरे तक प्रभावित किया है। अध्यक्षता डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि तत्कालीन विसंगतियों के दौर में जगद्गुरू शंकराचार्य का अवतरण मानो चमत्कार था। उन्होंने चारों दिशाओं में आध्यात्मिक-सांस्कृतिक जागरण के लिए चार मठों की स्थापना कर राष्ट्र को एकसूत्र में बांधा। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शंकराचार्य को हम बौद्धिक नहीं, चारित्रिक शक्ति से समझ पाएंगे। उच्च न्यायालय जोधपुर के अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा ने भी विचार रखे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, रविवार, 4 मई 2025

आदि शंकराचार्य और रामानुज भारतीय संस्कृति के प्राण तत्व

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। जगद्गुरू आदि शंकराचार्य और आचार्य रामानुज की जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में सत्संग-संगोष्ठी आयोजित हुई। प्रमुख वक्ता सुविवि संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि आचार्य शंकर और रामानुज भारतीय संस्कृति के प्राण तत्व के समान हैं। आचार्य शंकर और आचार्य रामानुज दोनों ने भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति को अत्यन्त गहरे तक प्रभावित किया है। दोनों ने ही आध्यात्मिक समाजवाद के द्वारा सबको एकसूत्र में बांधने का काम किया। उन्होंने कहा कि भगवद्पाद शंकराचार्य ने अतुलनीय दार्शनिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान के साथ ही सम्पूर्ण भारत की चारों दिशाओं में पूर्वाम्नाय पश्चिमाम्नाय उत्तराम्नाय और दक्षिणाम्नाय के नाम से क्रमशः पुरी, द्वारका, जोशीमठ और श्रंगेरी में चार पीठों की स्थापना की तथा मठ-मंदिरों के संचालन का आगम पद्धति से प्रबन्धन किया। उन्होंने भारती, गिरि, सरस्वती आदि दशनामी संप्रदाय के रूप में संन्यास परम्परा को व्यवस्थित किया जिसने कालान्तर में सनातन धर्म को बचाए रखने में बड़ा योगदान किया। श्रीवैष्णव परम्परा के जगद्गुरू रामानुजाचार्य ने ग्यारहवीं सदी में भक्ति के आश्रय में दलितों और अछूतों को गले लगाया और सामाजिक एकता और समता का महान आदर्श उपस्थित किया।

अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि तत्कालीन विसंगतियों के दौर में जगद्गुरू शंकराचार्य का अवतरण मानो चमत्कारी था, विवादों का शमन करते हुए उन्होंने देशे की चारों दिशाओं आध्यात्मिक-सांस्कृतिक जागरण हेतु चार मठों की स्थापना करते हुए राष्ट्र को एक सूत्र में बांधा।

संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि सत्य शाश्वत व सनातन है और इसके सुक्ष्मातिसुक्ष्म तत्व को आत्मसात करते हुए शंकराचार्य ने भारत वर्ष का आध्यात्मिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अद्वितीय कार्य किया।

निम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. सुरेन्द्र द्विवेदी, उच्च न्यायालय जोधपुर के अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा, बी.एन. विश्वविद्यालय के प्रो. कमल सिंह राठौड़ और एडवोकेट धर्मराज ने भी विचार व्यक्त किए।

गोस्वामी समाज ने मनाई शंकराचार्य जयंती

उदयपुर। दशनाम गोस्वामी समाज की ओर से हाथीपोल स्थित गुरु महाराज मंदिर में आदि जगद गुरु शंकराचार्य जी की जयंती मनाई गई।

समाज सचिव तरुण पुरी गोस्वामी ने बताया कि शंकराचार्य जी की मूर्ति एवं छाया चित्र माल्यार्पण के साथ दीप प्रज्जवलित किया गया। मुख्य अतिथि रामस्नेही संप्रदाय के संत दयाराम थे। अध्यक्षता समाज के अध्यक्ष गजेंद्र पुरी गोस्वामी ने की। विशिष्ट अतिथि परमेश्वर गिरि थे। समारोह में समाज के 70 वर्ष आयु पूर्ण कर चुके वरिष्ठ नागरिकों एवं प्रतिभावान सदस्यों गीता देवी गोस्वामी, मोहन पुरी गोस्वामी, सुरेंद्र पुरी गोस्वामी, मोहन गिरि गोस्वामी, गिरिराज पुरी गोस्वामी, प्रेम पुरी गोस्वामी, राकेश पुरी गोस्वामी आदि का सम्मान किया गया। इसी अवसर पर वर्ल्ड एनजीओ डे पर सम्मानित गीता देवी गोस्वामी का भी सम्मान किया गया। धन्यवाद त्रिलोक पुरी गोस्वामी ने ज्ञापित किया।

दैनिक भास्कर
शनिवार, 22 मार्च, 2025

विज्ञान केंद्र का नाम डॉ. डीएस कोठारी करने की मांग, सीएम को पत्र लिखा

उदयपुर| शिल्पग्राम के पास बन रहे विज्ञान केंद्र का नाम डॉ. डीएस कोठारी के नाम पर रखने की मांग उठी है। शांतिपीठ संस्थान ने इसके लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को पत्र लिखा हैं।

महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने डॉ. कोठारी के भारत की रक्षा विज्ञान और शिक्षा नीति में योगदान का उल्लेख किया। उन्होंने तारा भौतिकी के क्षेत्र में उनके प्रमुख अनुसंधानों को रेखांकित करते हुए कहा कि विज्ञान केंद्र में आने वाले विद्यार्थी ब्रह्मांड के रहस्यों को जानने के साथ ही डॉ. कोठारी के विज्ञान और मानव मूल्यों से भी परिचित हो सकेंगे। उन्होंनें बताया कि डॉ. कोठारी ने श्वेत बोने सितारों का सिद्धांत, अपभ्रष्ट इलेक्ट्रॉन गैस में परिवहन घटना, दाब द्वारा पदार्थ का आयनीकरण, सांख्यिकीय यांत्रिकी में संख्याओं के विभाजन का अनुप्रयोग, ठंडे प्रोटोन गैस में ऊर्जा जनन, अपभ्रष्ट सितारों में न्यूट्रॉन निर्माण और वृहत, द्रव्यमानों के खंडन का सितारों में रूपांतरण जैसे महत्वपूर्ण अनुसंधान किए।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार, 21 मार्च 2025

विज्ञान केन्द्र का नामकरण डीएस कोठारी के नाम करने की मांग

उदयपुर. शिल्पग्राम के पास बन रहे विज्ञान केंद्र को डॉ. डीएस कोठारी के नाम से किए जाने के लिए शान्तिपीठ संस्थान ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को पत्र लिखा है। शान्तिपीठ के महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने डॉ. कोठारी के भारत प्रतिरक्षा विज्ञान के क्षेत्र में किए अवदानों का जिक्र किया। केंद्र में आने वाले विद्यार्थी रहस्यों से अवगत तो होंगे ही डॉ. कोठारी को लेकर भी जानेंगे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 21 मार्च 2025

विज्ञान केंद्र को डॉ डी एस कोठारी के नाम से अलंकृत करने का अनुरोध

ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर। शान्तिपीठ के महा सचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने मुख्मंत्री भजनलाल शर्मा से उदयपुर में शिल्पग्राम के पास बन रहे विज्ञान केंद्र को डॉ डी एस कोठारी के नाम से अलंकृत करने अनुरोध किया। त्रिवेदी ने विज्ञान मनीषी डॉ कोठारी के भारत प्रतिरक्षा विज्ञान एवं देश की शिक्षा नीति के क्षेत्र में किए गए अवदानों का जिक्र करते हुए बताया कि विज्ञान केंद्र में आने वाले विद्यार्थी एवं जिज्ञासु ब्रह्माण्ड के रोमांचकारी रहस्यों से अवगत तो होंगे ही डॉ कोठारी के विज्ञान व मानव मूल्यों के अभाज्य सूत्रों से ज्ञान विज्ञान की समन्वित संस्कृति को भी आत्मसात कर सकेंगे।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 21 मार्च, 2025

शिल्पग्राम के पास के विज्ञान केंद्र को डॉ डीएस कोठारी के नाम करने का शांतिपीठ ने सीएम से किया आग्रह

महानगर संवाददाता

उदयपुर। शहर में शिल्पग्राम के पास बन रहे विज्ञान केंद्र को डॉ डीएस कोठारी के नाम से अलंकृत करने का शान्तिपीठ संस्थान ने मुख्यमंत्री से अनुरोध किया है।

शान्तिपीठ के महासचिव अनंतगणेश त्रिवेदी ने विज्ञान मनीषी डॉ कोठारी के भारत प्रतिरक्षा विज्ञान,देश की शिक्षा नीति क्षेत्र में किए अवदानों का जिक्र कर तारा भौतिकी क्षेत्र में उनके प्रमुख अनुसंधानों को रेखांकित करते हुए मुख्यमंत्री को पत्र लिखकरआग्रह किया है कि विज्ञान केंद्र में आने वाले विद्यार्थी एवं जिज्ञासु ब्रह्माण्ड के रोमांचकारी रहस्यों से अवगत तो होंगे ही डॉ कोठारी के विज्ञान, मानव मूल्यों के अभाज्य सूत्रों से ज्ञान विज्ञान की समन्वित संस्कृति को भी आत्मसात कर सकेंगे।

उन्होंने बताया विज्ञान, अध्यात्म की सम्पूरकता के प्रकाश में मानव जीवन के उत्कर्ष पर शान्तिपीठ कोठरी की स्मृति में प्रतिष्ठित व्याख्यान का आयोजन करता रहा है, जिसमें डा एपीजे अब्दुल कलाम, डॉ यूआर राव, प्रो एमलीके मेनन, डॉ के कस्तूरी रंगन, डॉ के राधाकृष्णन, डॉ किरणकुमार, डॉ कर्णसिंह, डॉ कपिला वात्स्यायन जैसे मूर्धन्य वैज्ञानिक एवं चिंतकों ने नया समावेशी आयाम से मार्ग प्रशस्त किया है। अनंतगणेश ने तारा भौतिकी क्षेत्र में डा कोठरी के अनुसंधान का उल्लेख कर बताया श्वेत बोने (ह्वाईट ड्वार्फ्स) सितारों का सिद्धांत और अपभ्रष्ट इलेक्ट्रॉन गैस में परिवहन घटना, दाब द्वारा पदार्थ का आयनीकरण, सांख्यिकीय यांत्रिकी में संख्याओं के विभाजन के सिद्धांत का अनुप्रयोग, ठण्डे प्रोटोन गैस में ऊर्जा जनन आदि कोठारी के महत्वपूर्ण योगदान हैं। दबाव आयनीकरण की खोज का श्रेय डॉ कोठारी को ही जाता है। उदयपुर में बन रहे तारामंडल का प्रकाश डा कोठारी के दिशा बोध से विश्व भर में फैल सकेगा तथा विज्ञान व मानव मूल्य दोनों के उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त होगा।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, सोमवार, 03 मार्च 2025

जयंती पर सत्संग, संगोष्ठी एवं कीर्तन

रामकृष्ण ज्ञान, भक्ति और योग के समन्वय का विशुद्ध स्वरूप

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com



जयंती पर कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते वक्ता। पत्रिका

उदयपुर. रामकृष्ण परमहंस ने तत्कालीन समाज में व्याप्त विषमताओं को दूर कर जीवात्मा को परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग ही प्रकाशित नहीं किया अपितु सनातन संस्कृति को विश्व व्यापी आयाम देते हुए विवेकानंद जैसी प्रज्ञा वान ऊर्जा से दुनिया को आध्यात्मिक भारत के नवोदय से आलोकित किया। वर्तमान में पुनः रामकृष्ण - विवेकानंद जैसी गुरु शिष्य परम्परा की आवश्यकता है, जिससे राष्ट्र अपनी दिव्य विरासत को आत्मसात करे और विश्व कुटुम्ब जैसी मौलिक अवधारणाओं को सार्थकता प्रदान करे । ये विचार रामकृष्ण परमहंस की जयंती के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान के सभागार में आयोजित सत्संग संगोष्ठी एवं कीर्तन सभा में वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता सुखाड़िया विश्वविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ नीरज शर्मा ने हंस और परमहंस की विशद व्याख्या करते हुए कहा कि रामकृष्ण ज्ञान, भक्ति और योग के समन्वय का विशुद्ध स्वरूप हैं जो हमें कर्मों के बंधनों से मुक्त रखते हैं। उन्होंने कहा रामकृष्ण में क्रियाएं हैं कर्म नहीं हैं और वे हमें संसार में रहकर भी सांसारिक होने से मुक्त रखती हैं।

संगोष्ठी में गीता व्रती संतोष दीदी ने कहा कि परमहंस का दिग्दर्शन था कि मानव जीवन में संतुष्टि स्वयं आने वाला भाव है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि रामकृष्ण युगावतार हैं, जिनका चैतन्य आनेवाली शताब्दियों तक मार्ग दर्शन करता रहेगा। उन्होंने कहा समाज में जितना संघर्ष और भौतिक प्रलोभन बढ़ेगा रामकृष्ण की उत्तरोत्तर प्रासंगिकता बढ़ती रहेगी। रामकृष्ण भावधारा से जुड़े श्याम सुंदर चौबीसा, डॉ जयश्री सिंह आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

आयोजन के दूसरे सत्र में नगर के वरिष्ठ संगीतज्ञ पं रामकृष्ण बोस ने स्वामी विवेकानंद द्वारा रचित एवं उन्हीं के द्वारा स्वरबद्ध भजनों की प्रस्तुति दी।

संतोष दीदी ने भी राधाकृष्ण विवाहोत्सव पर सभी रूप में आप बिराजे त्रिलोकी के नाथ जी भजन प्रस्तुत किया। कार्य क्रम में उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा,बी एन विश्वविद्यालय के डॉ कमल सिंह राठौड़, डॉ कमल मेहरा, रणवीर सिंह जोलावास, डॉ लक्ष्मी नारायण दशोरा आदि उपस्थित थे। प्रारंभ में अतिथियों ने परमहंस की तस्वीर पर माल्यार्पण किया।

दैनिक भास्कर
सोमवार, 3 मार्च, 2025

रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर कीर्तन



उदयपुर| शान्तिपीठ संस्थान की ओर से रविवार को रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर संगोष्ठी और कीर्तन का आयोजन हुआ। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. नीरज शर्मा ने हंस और परमहंस की विशद व्याख्या करते हुए कहा कि रामकृष्ण ज्ञान, भक्ति और योग के समन्वय का विशुद्ध स्वरूप हैं जो हमें कर्मों के बंधनों से मुक्त रखते हैं। संगोष्ठी में बोलते हुए गीता व्रती संतोष दीदी ने परमहंस और विवेकानंद के बीच हुए दुर्लभ संवाद का सार बताते हुए कहा कि परमहंस का दिग्दर्शन था। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि रामकृष्ण युगावतार हैं जिनका चैतन्य आनेवाली शताब्दियों तक मार्ग दर्शन करता रहेगा।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 3 मार्च 2025

वर्तमान में रामकृष्ण-विवेकानंद जैसी गुरु शिष्य परम्परा की आवश्यकता

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। रामकृष्ण परमहंस भारत की आध्यात्मिक परम्परा के युगावतार थे । जिन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त विषमताओं को दूर कर जीवात्मा को परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग ही प्रकाशित नहीं किया अपितु सनातन संस्कृति को विश्व व्यापी आयाम देते हुए विवेकानंद जैसी प्रज्ञा वान ऊर्जा से दुनिया को आध्यात्मिक भारत के नवोदय से आलोकित किया। यह विचार रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित सत्संग संगोष्ठी एवं कीर्तन सभा में वक्ताओं ने व्यक्त किए। वक्ताओं ने कहा कि वर्तमान में पुनः रामकृष्ण - विवेकानंद जैसी गुरु शिष्य परम्परा की आवश्यकता है जिससे राष्ट्र अपनी दिव्य विरासत को आत्मसात करे और विश्व कुटुम्ब जैसी मौलिक अवधारणाओं को सार्थकता प्रदान करें।



प्रमुख वक्ता सुविवि संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ नीरज शर्मा ने कहा कि रामकृष्ण ज्ञान, भक्ति और योग के समन्वय का विशुद्ध स्वरूप हैं जो हमें कर्मों के बंधनों से मुक्त रखते हैं। गीता व्रती संतोष दीदी ने कहा कि परमहंस का दिग्दर्शन था कि मानव जीवन में संतुष्टि स्वयं आने वाला भाव है,जिसकी प्राप्ति के लिए बिना अफसोस के अपने अतीत का सामना करें, आत्म विश्वास से वर्तमान संभालें और निडर होकर अपना भविष्य तैयार करें। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि रामकृष्ण युगावतार हैं जिनका चैतन्य आनेवाली शताब्दियों तक मार्ग दर्शन करता रहेगा। श्याम सुंदर चौबीसा, डॉ जयश्री सिंह आदि ने भी विचार व्यक्त किए। दूसरे सत्र में नगर के वरिष्ठ संगीतज्ञ पं रामकृष्ण बोस ने स्वामी विवेकानंद द्वारा रचित एवं उन्हीं के द्वारा स्वरबद्ध भजनों से वातावरण को भक्ति रस से सरोबार कर दिया। कार्यक्रम में उमेश चन्द्र शर्मा, डॉ कमल सिंह राठौड़, डॉ कमल मेहरा, रणवीर सिंह जोलावास, डॉ लक्ष्मी नारायण दशोरा आदि उपस्थित थे।

भागवत कथा महोत्सव 5 से

उदयपुर। कुमावत समाज चांदपोल में 5 से 11 मार्च तक भागवत कथा महोत्सव आयोजित होगा। ओम श्रीं मार्कण्डेय आध्यात्मिक ट्रस्ट के महामंत्री आचार्य पंडित नीरज आमेटा ने बताया कि 4 मार्च को कथा का पोस्टर का विमोचन किया जाएगा।

महर्षि गौतम जयंती पर होंगे तीन दिवसीय कार्यक्रम

उदयपुर। समस्त गुर्जरगौड ब्राह्मण समाज की बैठक महर्षि गौतम भवन में आयोजित हुई। समाज महासचिव विवेक पंचोली ने बताया कि 30 मार्च को महर्षि गौतम जयंती के उपलक्ष्य में समाज द्वारा तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित होंगे। प्रथम दिवस पर 23 मार्च को महर्षि गौतम भवन में रक्तदान शिविर आयोजित होगा। समाज अध्यक्ष राकेश जोशी के अनुसार 29 मार्च को आयोजित समारोह में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होने वाली प्रतिभाओं के साथ ही माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं में अव्वल आने वाले विद्यार्थियों का सम्मान किया जाएगा। साथ ही अस्सी वर्ष पूर्ण करे चुके वरिष्ठजनों का भी सम्मान किया जाएगा। दिनांक 30 मार्च को महर्षि गौतम जयंती पर समाज के चारो भवनों पर पूजा/अर्चना एवं हवन के कार्यक्रम होंगे। दोपहर में महर्षि गौतम भवन,हिरणमगरी से वाहन रैली निकाली जाएगी। शाम 6 बजे ऑर्बिट रिसोर्ट में महर्षि गौतम की महाआरती की जाएगी।

वैज्ञानिक डॉ. कोठारी ने वेदांत और विज्ञान की संहत संस्कृति से नए युग निर्माण की भूमिका प्रस्तुत की

शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर संगोष्ठी का आयोजन

उदयपुर| वैज्ञानिक-शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर मंगलवार को शांतिपीठ संस्थान की ओर से संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें वक्ताओं ने कहा कि डॉ. कोठारी ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म का चिंतन करते हुए वेदांत और विज्ञान की संहत संस्कृति से नए युग निर्माण की भूमिका प्रस्तुत की।

राष्ट्र निर्माण की दिशा में युवा वर्ग में उनका पूर्ण विश्वास था और इसके लिए उन्होंने युवा वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करने बुनियादी प्रयत्न किए। राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा शुरू किया गया राष्ट्रीय



प्रतिभा खोज कार्यक्रम डॉ. कोठारी की सोच का ही परिणाम है।

विशिष्ट अतिथि महाराणा प्रताप कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने देश की शिक्षा नीति पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति का मौलिक प्रारूप डॉ. कोठारी की ही देन है। इसकी प्रासंगिकता वर्तमान में भी अनुभव की जा रही है। पूर्व आईएएस सुमति लाल बोहरा ने गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कहा कि विज्ञान, धर्म और सांस्कृतिक विरासत को एक सूत्र में लेकर चलने से नए समाज के सृजन में कोठारी की परिकल्पना विश्व शांति के मार्ग को प्रकाशित करती है। शांतिपीठ संस्थान के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी आधुनिक युग प्रवर्तक थे। उन्होंने भारत प्रतिरक्षा विज्ञान के साथ ही संस्कारित शिक्षा की बुनियाद रखी। संगोष्ठी में सुविवि में पर्यावरण विभागाध्यक्ष डॉ. डीएस राठौड़, पूर्व वन संरक्षक औंकार लाल मेनारिया, मार्शल आर्ट्स के राजकुमार मेनारिया, अंतरराष्ट्रीय कुश्ती कोच कैलाश पालीवाल, हर्षित व्यास आदि ने विचार व्यक्त किए।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 5 फरवरी, 2025

युवा वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करने के डा. कोठारी ने किए थे बुनियादी प्रयत्न

महानगर संवाददाता

उदयपुर। 21वीं शताब्दी के युगद्रष्टा डॉ. दौलतसिंह कोठारी ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म का चिंतन करते हुए वेदान्त और विज्ञान की संहत संस्कृति से नये युग निर्माण की भूमिका प्रस्तुत की। साथ ही राष्ट्र निर्माण की दिशा में युवा वर्ग में उनका पूर्ण विश्वास था और इसके लिए उन्होंने युवा वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करने के बुनियादी प्रयत्न किए। राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) द्वारा शुरू किया राष्ट्रीय प्रतिभा खोज कार्यक्रम डॉ. कोठारी की सोच का ही परिणाम है।



यह विचार वैज्ञानिक-शिक्षाविद डॉ. दौलतसिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि कार्यक्रम के तहत शान्तिपीठ संस्थान द्वारा आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। देश की शिक्षा नीति पर विस्तृत चर्चा करते हुए एमपीयूएटी के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा नई शिक्षा नीति का मौलिक प्रारूप डॉ. कोठारी की ही देन है जिसकी वर्तमान में प्रांसगिता अनुभव की जा रही है। उन्होंने बारहवीं तक की शिक्षा के पाठ्यक्रम को सबके लिए अनिवार्य अर्थात कॉमन शिक्षा की आवश्यकता जताई। पूर्व आईएएस सुमतिलाल बोहरा ने कहा विज्ञान, धर्म और सांस्कृतिक विरासत को एक सूत्र में लेकर चलने से नये समाज के सृजन में कोठारी की परिकल्पना विश्वशान्ति के मार्ग को प्रकाशित करती है।

शान्तिपीठ संस्थान के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा डॉ. कोठारी आधुनिक युग प्रवर्तक थे। उन्होंने भारत प्रतिरक्षा विज्ञान के साथ ही संस्कारित शिक्षा की बुनियाद रखी। उनकी मान्यता थी मनुष्य का अस्तित्व ही दांव पर है। हम अणुबम के बारे में दिक् काल और द्रव्य ऊर्जा के बाह्य जगत के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं किन्तु आत्मतत्व के ज्ञान की उपेक्षा तो अन्ततः विनाश की ही होगी। कर्त्तव्य और श्रद्धा का आधार स्वज्ञान है न कि अणु या बाह्य जगत। संगोष्ठी में सुविवि पर्यावरण विभागाध्यक्ष डॉ. डीएस राठौड़, पूर्व वन संरक्षक औंकारलाल मेनारिया, मार्शल आर्ट्स के राजकुमार मेनारिया, अन्तरराष्ट्रीय कुश्ती कोच कैलाश पालीवाल, हर्षित व्यास ने भी विचार व्यक्त किए। बीएन विवि में फार्मेसी विभागाध्यक्ष डॉ. कमलसिंह राठौड़ ने आभार जताया। प्रारम्भ में सभी ने डॉ. कोठारी को पुष्पांजलित अर्पित की।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, बुधवार, 5 फरवरी 2025

नई शिक्षा नीति का मौलिक प्रारूप डॉ. कोठारी की ही देन



डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर संगोष्ठी

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। डॉ. दौलत सिंह कोठारी ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म का चिंतन करते हुए वेदान्त और विज्ञान की संहत संस्कृति से नए युग निर्माण की भूमिका प्रस्तुत की। राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) द्वारा शुरू किया गया राष्ट्रीय प्रतिभा खोज कार्यक्रम डॉ. कोठारी की सोच का ही परिणाम है। यह विचार मंगलवार को वैज्ञानिक-शिक्षाविद डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर शान्तिपीठ संस्थान द्वारा आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। विशिष्ट अतिथि कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि नई शिक्षा नीति का मौलिक प्रारूप डॉ. कोठारी की ही देन है जिसकी वर्तमान में प्रांसगिता अनुभव की जा रही है। उन्होंने बारहवी तक की शिक्षा के पाठ्यक्रम को सबके लिए अनिवार्य अर्थात कोमन शिक्षा की आवश्यकता प्रतिपादित की। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए पूर्व आईएएस सुमति लाल बोहरा ने कहा कि विज्ञान, धर्म और सांस्कृतिक विरासत को एक सूत्र में लेकर चलने से नए समाज के सृजन में कोठारी की परिकल्पना विश्व शान्ति के मार्ग को प्रकाशित करती है। शान्तिपीठ संस्थान के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी आधुनिक युग प्रवर्तक थे। उन्होंने भारत प्रतिरक्षा विज्ञान के साथ ही संस्कारित शिक्षा की बुनियाद रखी।

संगोष्ठी में मो.सु.विश्वविद्यालय में पर्यावरण विभागाध्यक्ष डॉ. डी.एस.राठौड़, पूर्व वन संरक्षक औंकार लाल मेनारिया, मार्शल आर्ट्स के राजकुमार मेनारिया, अन्तरराष्ट्रीय कुश्ती कोच कैलाश पालीवाल, हर्षित व्यास आदि ने विचार व्यक्त किए।

बीएन विश्वविद्यालय में फार्मेसी विभागाध्यक्ष डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने आभार व्यक्त किया। इससे पूर्वअतिथियों ने डॉ. कोठारी की तस्वीर पर पुष्पांजलित अर्पित की।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, गुरुवार, 06 फरवरी 2025

डॉ. डीएस कोठारी की पुण्यतिथि पर संगोष्ठी



उदयपुर. वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर मंगलवार को पुष्पांजलि कार्यक्रम के तहत शान्तिपीठ संस्थान की ओर से संगोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों ने डॉ. कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलित अर्पित की। संगोष्ठी में वक्ताओं ने डॉ. दौलत सिंह कोठारी के शिक्षा एवं विज्ञान में दिए योगदान पर चर्चा करते हुए उनके व्यक्तित्व के बारे में बताया। देश की शिक्षा नीति पर विस्तृत चर्चा करते हुए एमपीयूएटी के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति का मौलिक प्रारूप डॉ. कोठारी की ही देन है। जिसकी वर्तमान में प्रांसगिकता अनुभव की जा रही है। पूर्व आईएएस सुमतिलाल बोहरा ने गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कहा कि विज्ञान, धर्म और सांस्कृतिक विरासत को एक सूत्र में लेकर चलने से नए समाज के सृजन में कोठारी की परिकल्पना विश्व शान्ति के मार्ग को प्रकाशित करती है। शान्तिपीठ संस्थान के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी ने भारत प्रतिरक्षा विज्ञान के साथ ही संस्कारित शिक्षा की बुनियाद रखी। संगोष्ठी में सुविवि के पर्यावरण विभागाध्यक्ष डॉ. डीएस राठौड़, पूर्व वन संरक्षक औंकारलाल मेनारिया, राजकुमार मेनारिया, कैलाश पालीवाल, हर्षित व्यास आदि ने विचार रखे।

प्रातःकाल
उदयपुर, बुधवार 5 फरवरी 2025

डॉ. कोठारी की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि



उदयपुर (वि.)। 21वीं शताब्दी के युग दृष्टा डॉ. दौलत सिंह कोठारी ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म का चिंतन करते हुए वेदान्त और विज्ञान की सम्मिलित संस्कृति से नये युग निर्माण की भूमिका प्रस्तुत की। साथ ही राष्ट्र निर्माण की दिशा में युवा वर्ग में उनका पूर्ण विश्वास था और इसके लिए उन्होंने युवा वैज्ञानिको को प्रोत्साहित करने बुनियादी प्रयत्न किये। उक्त विचार वैज्ञानिक-शिक्षाविद डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि कार्यक्रम के तहत शान्तिपीठ संस्थान द्वारा आयोजित संगोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किये। महाराणा प्रताप कृषि एवं तकनिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति का मौलिक प्रारूप डॉ. कोठारी की ही देन है जिसकी वर्तमान में प्रासंगिता अनुभव की जा रही है। पूर्व आई.ए.एस. बारां कलक्टर सुमति लाल बोहरा ने गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कहा कि विज्ञान, धर्म और सांस्कृतिक विरासत को एक सूत्र में लेकर चलने से नये समाज के सृजन में कोठारी की परिकल्पना विश्व शान्ति के मार्ग को प्रकाशित करती है। शान्तिपीठ संस्थान के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी आधुनिक युग प्रवर्तक थे। संगोष्ठी में मो.सु.विश्वविद्यालय में पर्यावरण विभागाध्यक्ष डॉ. डी.एस.राठौड़, पूर्व वन संरक्षक औंकार लाल मेनारिया, मार्शल आर्ट्स के राजकुमार मेनारिया, अन्तरराष्ट्रीय कुश्ती कोच कैलाश पालीवाल, हर्षित व्यास आदि ने विचार व्यक्त किये। बी.एन.विश्वविद्यालय में फार्मेसी विभागाध्यक्ष डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने आभार व्यक्त किया।

गीता जयंती की पूर्व संध्या पर सत्संग गोष्ठी

'प्रश्नों के द्वार खोलकर भौतिक और आध्यात्मिक समाधान देती है गीता'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. श्रीमद्भगव गीता सर्व मान्य दिव्य संवाद है, जो जाति, वर्ग, क्षेत्र, सम्प्रदाय, लिंग भेद से परे व्यक्ति को सत्य के पक्ष में खड़े रहने का सामर्थ्य प्रदान करती है। गीता प्रश्नों के द्वार खोल कर मनुष्य को भौतिक और आध्यात्मिक समाधान प्रदान करती है, जिससे वर्तमान की चुनौतियों का मुकाबला कर सके तथा मानव मात्र का भविष्य सुनिश्चित किया जा सके।

ये विचार गीता जयंती की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित सत्संग गोष्ठी में उभरकर आए। मुख्य वक्ता सुविवि संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा थे। उन्होंने कहा कि वेद सनातन का मूल है, गंगोत्री है और प्रकृति उपासना हमारा श्रेष्ठ कर्म जिसे हमें पुनः आत्मसात करना होगा। अध्यक्षता करते हुए पेसिफिक विवि के अध्यक्ष प्रो. बीपी शर्मा ने कहा कि प्राचीन भारत वर्ष का विराट स्वरूप क्यों कम होता गया, इस पर हमें गंभीरता से विचार कर मानव मंगल का निरापद मार्ग गीता में खोज लेना चाहिए। शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता सर्वमान्य आध्यात्मिक संदेश है। ज्ञान, भक्ति और कर्म की अद्भुत त्रिवेणी के सिद्ध मंत्र को प्रस्तुत करती है।



गीता जयंती की पूर्व संध्या पर आयोजित सत्संग गोष्ठी में शामिल विशिष्टजन। पत्रिका

वैदिक मंत्रों के साथ यज्ञ, प्राणायाम और ध्यान



श्रीमद्भगवद गीता की मोक्षदा एकादशी पर 5162वीं जयंती की पूर्व संध्या पर श्री चंद्रशेखर महादेव मंदिर सेक्टर 8 में गीता परिवार और संस्कृत भारती के संयुक्त तत्वावधान में हवन, ध्यान और गीता के 12वें, 15वें और 16वें अध्याय के सामूहिक पारायण कर गीता जयंती मनाई गई। प्रचारक गोपाल कनेरिया की अध्यक्षता में वैदिक मंत्रो के साथ यज्ञ, प्राणायाम और ध्यान डॉ. भूपेंद्र शर्मा ने करवाया। मुख्य यजमान योगाचार्य सीमा कुमावत, नवनीत भट्ट, राजेश शर्मा और दिनेश चंद्र अग्रवाल दंपती थे। मुख्य अतिथि राजू जोशी थे। विशिष्ट अतिथि सुभाष चंद्र मेहता ने सामूहिक प्रार्थना करवाई।

इन्होंने भी रखी बात : गीता अभियान से जुड़ी संतोष दीदी ने कहा कि गीता स्वयं जगत गुरु का शाश्वत संदेश है जो एक लघु ग्रंथए महानतम है। नगर परिषद के पूर्व आयुक्त दिनेश कोठारी, एमपीयूएटी के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा, उच्च न्यायालय अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा, डॉ. सुरेन्द्र द्विवेदी, डॉ. आरबी कुमार, लक्ष्मणपुरी गोस्वामी, हरिनामानंद दाज्स, चिदानंद दास, डॉ. कमल मेहरा, संध्या, कपिल दया ने भी विचार रखे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 1 दिसंबर, 2025

गीता के ज्ञान, भक्ति योग और कर्म योग को जीवन में आत्मसात करने का आह्वान



उदयपुर। श्रीमद्भगवद्गीता सर्व मान्य दिव्य संवाद है जो व्यक्ति को सत्य के पक्ष में खड़े रहने का सामर्थ्य प्रदान करता है। यह विचार गीता जयंती की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ संस्थान द्वारा आयोजित सत्संग - संगोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए।

प्रमुख वक्ता सुविवि संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ नीरज शर्मा ने कहा कि आवश्यक है कि ज्ञान, भक्ति और कर्म के राज मार्ग को गीता के प्रकाश में आत्मसात करें।अध्यक्षता पेसिफिक विश्व विद्यालय के अध्यक्ष प्रो बी पी शर्मा ने की । शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, संतोष दीदी, पूर्व आयुक्त दिनेश कोठारी, पूर्व कुलपति डॉ उमाशंकर शर्मा,अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा, डॉ सुरेन्द्र द्विवेदी, डॉ आर बी कुमार,लक्ष्मण पुरी गोस्वामी,हरीनामानंद दास, चिदानंद दास,डा कमल मेहरा, संध्या, कपिल दया आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

गीता दान महायज्ञ का शुभारंभ आज से

उदयपुर। गीता जयंती पर भूपालपुरा स्थित हरे कृष्ण मंदिर द्वारा 1 दिसम्बर से गीता दान महायज्ञ का शुभारंभ किया जाएगा।

मंदिर के प्रभारी मैत्रेयी दास ने बताया कि इस विशेष अभियान के तहत मंदिर ने कुल 5000 परिवारों तथा विभिन्न सामाजिक सेवा संस्थानों तक निःशुल्क श्रीमद्भगवद्गीता पहुंचाने का संकल्प लिया है। अभियान का प्रथम चरण 1008 परिवारों में गीता वितरण के साथ प्रारम्भ किया जाएगा।

दैनिक भास्कर
सोमवार, 1 दिसंबर, 2025

गीता जयंती की पूर्व संध्या पर शांतिपीठ संस्थान की सत्संग-संगोष्ठी

ज्ञान, भक्ति और कर्म जीवन के राज मार्ग, इन पर गीता से ही प्रकाश : डॉ. नीरज शर्मा

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

श्रीमद्भगवद्गीता सर्वमान्य दिव्य संवाद है। यह जाति-वर्ग, क्षेत्र-संप्रदाय, लिंग आदि के भेद से परे रहकर सत्य के पक्ष में खड़े रहने का सामर्थ्य देती है। गीता प्रश्नों के द्वार खोलकर भौतिक और आध्यात्मिक समाधान देती है, जिससे हम चुनौतियों का मुकाबला कर सकें तथा मानव मात्र का भविष्य सुनिश्चित कर सकें। आज धर्म-संप्रदाय से अलग रखते हुए भारतीय वांग्मय व ज्ञान परम्परा को शिक्षा और संस्कार का मुख्य जरिया बनाने की आवश्यकता है।

उक्त विचार गीता जयंती की पूर्व संध्या पर शांतिपीठ संस्थान की सत्संग-संगोष्ठी में वक्ताओं ने रखे। प्रमुख वक्ता सुखाड़िया विश्वविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने कहा कि वेद सनातन का मूल है, गंगोत्री है और प्रकृति उपासना हमारा श्रेष्ठ कर्म है। इसे हमें पुनः आत्मसात करना होगा। विवेक के बिना ज्ञान-अज्ञान का भेद नहीं हो सकता और निश्चयात्मक बुद्धि बिना कर्म नहीं मिल सकती। इसलिए आवश्यक है कि ज्ञान, भक्ति और कर्म के राज मार्ग को गीता के प्रकाश में आत्मसात करें। अध्यक्षता पेसिफिक विश्व विद्यालय के अध्यक्ष प्रो. बी.पी. शर्मा ने की। उन्होंने असत्य का पुरजोर विरोध करने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि यही कर्म कौशल की कसौटी है।



शांतिपीठ की सत्संग-संगोष्ठी में शिक्षाविदों ने गीता पर विचार साझा किए।

आरंभ में शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने संगोष्ठी की भूमिका प्रस्तुत की। कहा कि आज इंसान खुद से हार चुका है। गीता का संदेश स्वयं पर विजय प्राप्त करना है। गीता अव्यावसायिक अभियान से जुड़ी संतोष दीदी ने कहा कि गीता स्वयं जगत गुरु का शाश्वत संदेश है जो एक लघु ग्रंथ, महानतम है।

नगर परिषद के पूर्व आयुक्त दिनेश कोठारी, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलगुरु डॉ. उमाशंकर शर्मा, उच्च न्यायालय अधिवक्ता उमेशचंद्र शर्मा, डॉ. सुरेन्द्र द्विवेदी, डॉ. आर.बी. कुमार, लक्ष्मण पुरी गोस्वामी, हरिनामानंद दास, चिदानंद दास, डॉ. कमल मेहरा, संध्या, कपिल दया आदि ने भी विचार रखे।

महादेव मंदिर में हवन, ध्यान और पारायण होगा

मोक्षदा एकादशी की पूर्व संध्या पर सेक्टर 8 स्थित श्री चंद्रशेखर महादेव मंदिर में गीता परिवार और संस्कृत भारती ने संयुक्त कार्यक्रम किया। हवन, ध्यान और गीता के 12वें, 15वें और 16वें अध्याय का पारायण हुआ। प्रचारक गोपाल कनेरिया की अध्यक्षता में डॉ. भूपेंद्र शर्मा ने यज्ञ, प्राणायाम और ध्यान कराया। मुख्य अतिथि राजू जोशी ने गीता के ज्ञान, भक्ति और कर्म योग को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी।

प्रातःकाल
उदयपुर, सोमवार 1 दिसम्बर, 2025

गीता जयंती की पूर्व संध्या पर सत्संग संगोष्ठी



उदयपुर (वि.)। श्रीमद्भगवद्गीता सर्व मान्य दिव्य संवाद है जो जाति,वर्ग,क्षेत्र, सम्प्रदाय,लिंग आदि के भेद से परे रह कर व्यक्ति को सत्य के पक्ष में खड़े रहने का सामर्थ्य प्रदान करता है। गीता प्रश्नों के द्वार खोल कर मनुष्य को भौतिक और आध्यात्मिक समाधान प्रदान करती है जिससे वह वर्तमान की चुनौतियों का मुकाबला कर सके तथा मानव मात्र का भविष्य सुनिश्चित किया जा सके। उक्त विचार आज गीता जयंती की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ संस्थान द्वारा आयोजित सत्संग संगोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। मो सु विश्वविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ नीरज शर्मा ने कहा कि वेद सनातन का मूल है, गंगोत्री है और प्रकृति उपासना हमारा श्रेष्ठ कर्म जिसे हमें पुनः आत्मसात करना होगा। अध्यक्षता करते हुए पेसिफिक विश्व विद्यालय के अध्यक्ष प्रो बी पी शर्मा न असत्य का पुरजोर विरोध करने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि यही कर्मकौशल की कसौटी है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने प्रारंभ में संगोष्ठी की भूमिका प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज इन्सान स्वयं से हार चुका है, जरुरत है स्वयं पर विजय प्राप्त करने की,यही गीता का संदेश है। गीता अध्यवसायिक अभियान से जुड़ी संतोष दीदी ने कहा कि गीता स्वयं जगत गुरु का शाश्वत संदेश है जो एक लघु ग्रंथ, महानतम है। उद्योगपति गोयल ने संकल्प से सिद्धी एवं आचरण शुद्धि पर विस्तार से प्रकाश डाला। नगर परिषद के पूर्व आयुक्त दिनेश कोठारी ने गीता अध्ययन को शिक्षा का हिस्सा बनाए जाने की आवश्यकता बताई।

महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ उमाशंकर शर्मा ने कर्तव्य कर्म से विचलित नहीं होने का महत्व बताते हुए कहा कि आज विश्लेषण से अधिक क्रियाशील होने की आवश्यकता है। उच्च न्यायालय अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा, डॉ सुरेन्द्र द्विवेदी, डॉ आर बी कुमार, लक्ष्मण पुरी गोस्वामी, हरीनामानंद दास्स, चिदानंद दास, डॉ. कमल मेहरा, संध्या, कपिल दया आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

शिक्षक दिवस पर विशेष

मेवाड़ के 'राधाकृष्ण

मेवाड़ में शिक्षा की अलख जगाने वाले ये तीन चेहरे हैं। इन महानायकों ने पूरे अंचल को शि
मोहनसिंह मेहता (भाई साहब) और डॉ. दौलतसिंह कोठारी। ये तीनों विभूतियां हमारे मेवाड़ व

डॉ. मोहन सिंह मेहता (भाई साहब) संस्थापक, विद्या भवन एवं सेवा मंदिर



डॉ. मेहता का जन्म भीलवाड़ा में 20 अप्रेल, 1895 को जीवन सिंह मेहता के घर हुआ। 1925 में इंग्लैण्ड जाकर लन्दन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स से पी.एच.डी की और बार.एट. लॉ किया। 1937 और 1940 तक बांसवाड़ा राज्य के प्रधानमंत्री और बाद में मेवाड़ रियासत में राजस्व मंत्री एवं शिक्षा मंत्री रहे। 1949 से 1951 तक नीदरलैण्ड में भारत के प्रथम राजदूत, 1951 से 1955 तक पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त, 1955 से 1958 तक स्विट्जरलैण्ड, ऑट्रिया और वेटिकल में भारत के राजदूत रहे। 1959 में संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1960 से 1966 तक राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। 1969 में भारत सरकार ने मेहता को पदम विभूषण से सम्मानित किया। 21 जुलाई, 1931 में विद्या भवन की स्थापना व सेवा मंदिर का शिलान्यास किया। 23 अप्रेल, 1941 में बुनियादी स्कूल की स्थापना की। 1942 में विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना व 1944 में कला संस्थान की स्थापना कर हस्तकला की शिक्षा प्रारम्भ की। 1946 से 1948 तक संविधान सभा के सदस्य रहते हुए भारत के संविधान निर्माण में सक्रिय योगदान दिया। 1956 में विद्या भवन रूरल इंस्टिट्यूट और पॉलिटेक्निक की स्थापना कर ग्रामीण शिक्षा की अलख जगाई।

पं. जनार्दनराय नागर, राजस्थान विद्याप



पंडित जनार्दन राय नागर, जिन्हें जन्नू भाई के नाम से जाना जाता है। उनका जन्म 16 जून, 1911 को हुआ। उनके पिता प्रणलाल नागर व माता विजयलक्ष्मी नागर थीं। पंडित नागर ने प्रारंभिक शिक्षा उदयपुर में ली। आगे की पढ़ाई के लिए अजमेर चले गए। 1935 में हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा उन्हें साहित्य रत्न से सम्मानित किया गया। पंडित नागर का जीवन महात्मा गांधी और रवींद्र नाथ टैगोर से प्रेरित था। बनारस हिंदू विवि में छात्र दिनों के दौरान वे पंडित मदन मोहन मालवीय और मुंशी प्रेमचंद के संपर्क में आए। तब उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने 21 अगस्त, 1937 को हिंदी उन्होने न विद्यापीठ मोबाइल विद्यालयं गए। 19 ने राजर दर्जा दि

पत्रिका सिटी
नारी स्वास्थ्य समस्य
के लिए मेरा भरोसा
सिर्फ़ हेमपुष्पा
90 वर्षों से No.1 औषधि व टॉनि

कोटड़ा थाना क्षेत्र के मामेर बॉर्डर प

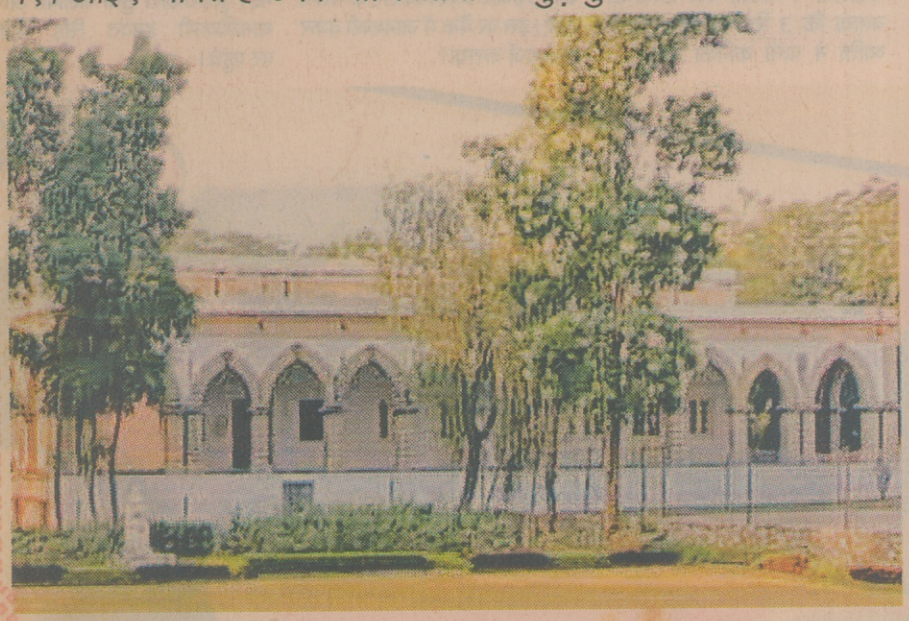
बाइक पेड़ से टक की मौत, कांस्टेब

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

कोटड़ा. घर लौटते वक्त बाइक हादसे में सेना के जवान की मौत हो गई। वहीं साथी पुलिस जिससे दिलीप के सिर में गं लगने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। जबकि पुलिस क शिवा गंभीर रूप से घायल हादसे के बाद हितरक्षा

आज भी अमिट छाप है मानस पटल पर

शिक्षा जगत में अविस्मरणीय योगदान देने वाले ये तीनों व्यक्तित्व लोगों के मानस पटल पर आज भी गहरी छाप छोड़े हुए हैं। लोगों के मन में आज भी वह उनके जीवन का हिस्सा बन जागृत है। कुछ ऐसे किस्से जो उनके साथ बिताए समय में गुजरे तो उन्हें जीवन का नया पाठ सिखा गए। आइए जानते हैं उनके साथ लोगों के जुड़े कुछ संस्मरणों के बारे में .....





पं. जनु भाई की प्रेरणा से आया शिक्षा जगत में



प. नागर को जन्नू भाई के नाम से इसलिए जानते रहे क्योंकि वे जनप्रिय व्यक्ति थे। जन्नूभाई से पहली बार मैं साहित्य अकादमी के एक कार्यक्रम में मिला था, तब वे मंच पर खड़े होकर एक-एक कर बुला रहे थे, तब मेरी भी बारी आई। जन्नूभाई ने मुझे व्यक्तिगत पूछा कि बड़े होकर कुछ बनोगे या किसी का अनुसरण करोगे। तब मैंने जन्नु भाई को ये कहा कि मैं जिस परिवेश में रहा हूं वहां का वातावरण शिक्षा से जुड़ा है। इस पर उन्होंने कहा कि अपने हाल में काम मत करो, जो परिवेश तुम्हें मिला है, उसके अनुसार कार्य करो। तब जन्नुभाई का आशय मैं समझ नहीं पाया, उन्होंने मुझे समझाते हुए कहा कि शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें तुम बहुत कुछ देना चाहोगे व बहुत कुछ दे पाओगे। जन्नू भाई का ये सुझाव इतना पसंद आया कि मैंने यह संकल्प लिया कि मुझे अध्यापक ही बनना है और इसे संयोग व सौभाग्य कहा जाएगा कि 1995 में उनके ही संस्थान राजस्थान विद्यापीठ में कार्य करने का अवसर मिला। आज मैं उन दिनों को याद करता हूं, साहित्य अकादमी में जहां पहली बार मैं मिला वह भी उन्हीं की देन थी, वह पुस्तकालय आज भी जनार्दनराय नागर पुस्तकालय के नाम से जाना जाता है। जन्नु भाई से जब व्यक्तिगत मिलना हुआ तो उन्हें पुरानी बात याद दिलाते हुए कहा कि मैं आपके संस्थान में ही कार्य कर रहा हूं, तब उन्होंने अप्रसन्न होते हुए कहा कि ये मेरा संस्थान नहीं है, ये कार्यकर्ताओं का हैं। तब उन्होंने यह बताया कि कार्यकर्ता व कर्मचारी में क्या अन्तर है।

मलय पानेरी, हिन्दी विभागाध्यक्ष (राजस्थान विद्यापीठ)

पैसों की थी भारी किल्लत, डॉ. मेहता खुद के पैसों से देते थे शिक्षकों को वेतन



मैं डॉ. मेहता के बहुत करीब रहा। मेरा सौभाग्य है कि 1974 से 1986 तक उनके साथ कार्य करने का अवसर मिला। डॉ. मेहता शिक्षा, स्काउट व समाजसेवा के लिए ही बने थे। उनमें मानवीय संवेदनाएं कूट-कूट कर भरी थी, विद्याभवन की स्थापना के पीछे बेहतर नागरिक बनाने का मूल उद्देश्य था। समाज के दलितों, गरीबों के लिए वे बहुत हृदय से कार्य करते थे। जब उनकी उम्र 90 वर्ष थी, तब विद्याभवन की शुरुआत के बाद पैसों की भारी किल्लत झेलनी पड़ रही थी तब वे अपने वेतन से विद्याभवन के शिक्षकों का वेतन देते थे। उन्होंने बताया था कि अन्य शिक्षकों का वेतन कम होना उन्हें परेशान करता है, एक दिन की घटना बताई कि दो शिक्षक उनके पास आए और उन्होंने कहा कि उनका काम 35 से 40 में हो जाता है, तो उन्हें इतना ही वेतन चाहिए। इस पर वह भावुक हो गए थे। उन्होंने वर्ल्ड लिट्रेसी ऑफ केनेडा की वेल्वी फिशर को लाकर प्रौढ़ शिक्षा की शुरुआत बड़गांव से करवाई।

नन्दकिशोर शर्मा, पूर्व सचिव, सेवा मंदिर व गांधी मानव कल्याण सोसायटी के निदेशक

उदयपुर पत्रिका फेसबुक पेज visit, like and share
आगे बढ़ें हर खबर से आपको रखे अपडेट facebook.com/Udaipur.patrika

डॉ. कोठारी का हर दिन होता था सत्संग से परिपूर्ण



जीवन के करीब डेढ़ दशक तक मैं उनके संपर्क में रहा। जब डॉ. कोठारी उदयपुर में होते थे तो मैं उनके साथ हो जाता था। भूपालपुरा में क.वख्तावरसिंह के घर होने वाले प्रतिदिन के सत्संग में मैं उनके साथ जाता था। तब के तत्कालीन मेवाड़ के जस्टिस राणावत भी उसमें शामिल होते थे। इस सत्संग में उपनिषद व आधुनिक विज्ञान पर चिंतन होता था। वह कहते कि विज्ञान का चरमोत्कर्ष उपनिषद की चेतना को स्पर्श कर रहा है। उन्हांने चिंता जताई कि दूर बैठे कई वैज्ञानिक जो क्वेटंन मैकेनिज्म से जुडे हैं वे उपनिषद पर चिंतन कर रहे हैं और हमारे वैज्ञानिक इससे दूर हैं। बर्लिन में वैज्ञानिक स्वोडिंजर ने आश्चर्य जताया कि जिस भूमि पर उपनिषद का पादुर्भाव हुआ वहां के ये लोग उससे कैसे दूर हैं। डॉ. कोठारी का कहना था कि आज मानव जाति ऐसे दोराहे पर खड़ी है, जहां पर वह चाहे तो उस मार्ग को चुन सकती है जो विज्ञान व अध्यात्म के मेल से बनने वाली दुनिया की ओर ले जाता है। चाहे तो वह ऐसे रास्ते पर जा सकती है, जहां संपूर्ण मानव जाति आपस में टकराकर नष्ट हो जाएगी। हमें किस रास्ते जाना है, यह विचार करने में जितनी देरी करेंगे, उतना संकट बढ़ता जाएगा। डॉ. कोठारी से ही चर्चा में सुनने मिला कि जार्ज वाल्ट नामक अमेरीकन वैज्ञानिक थे वह कहते थे कि मैं कई भारतीयों से मिला हूं। सबसे ज्यादा प्रभावित कोठारी से हुआ।

अनन्त गणेश त्रिवेदी, संस्थापक शांति पीठ

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, रविवार, 7 जुलाई 2024

डॉ. कोठारी भारत की रक्षा एवं शिक्षा नीति के जनक थे

ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर।

डॉ. दौलत सिंह कोठारी भारत की प्रतिरक्षा, विज्ञान एवं शिक्षा नीति के जनक है। यह हमारे लिए गर्व का विषय है। यह बात शांतिपीठ संस्थान द्वारा डॉ. डीएस.कोठारी की स्मृति में आयोजित 'भारतीय परम्परा और ज्ञान-विज्ञान का समवेत प्रवाह' विषयक विचार गोष्ठी में उभर कर आई। अध्यक्षता राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो.शिवसिंह सारंगदेवोत ने की। मुख्य वक्ता सुखाड़िया विश्वविद्यालय के प्रो. नीरज शर्मा, विशिष्ट अतिथि पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा, देवस्थान विभाग के पूर्व आयुक्त दिनेश कोठारी थे। संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा तथा धन्यवाद ज्ञापन एडवोकेट भरत कुमावत ने किया।

शांतिपीठ के प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी ने विज्ञान का आध्यात्मिककरण जीवंत रूप में



प्रस्तुत किया तथा विश्व में पहली बार आणविक विस्फोट एवं उसके दुष्प्रभाव पर प्रमाणिक पुस्तक लिखी, जिसकी पठकथा नेहरू जी ने लिखी। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो. नीरज शर्मा ने कहा ज्ञान एवं विज्ञान सदैव ही प्रवाहमान रहते है, यही वास्तव में विकास है। कुलपति कर्नल प्रो.एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि आज शिक्षा की नवीन नीति में करीब 65 प्रतिशत हिस्सा डॉ. कोठारी की शिक्षा नीति है जो उन्होंने 50 वर्ष पूर्व लक्षित की थी। इस मौके पर देवस्थान विभाग के पूर्व आयुक्त एवं कलाविद् दिनेश कोठारी, पुराविद् डॉ. ललित पाण्डे, सुविवि के पर्यावरण विभाग के प्रो. देवेन्द्र सिंह राठौड़, लक्ष्मणपुरी गोस्वामी आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 07 जुलाई, 2024

पद्मविभूषण डॉ. कोठारी को किया याद



उदयपुर. पद्मविभूषण डॉ. दौलत सिंह कोठारी की 119वीं जयंती पर विज्ञान समिति की ओर से आयोजन हुआ। इसी तरह से डॉ. कोठारी की स्मृति में शहर में कई कार्यक्रम हुए। विज्ञान समिति मीडिया प्रभारी प्रो. विमल शर्मा ने बताया कि फतहसागर पाल पर पुष्पांजलि दी गई। इसके बाद सुखाडिया विवि में प्रतिमा स्थल पर कार्यक्रम हुआ। प्रमुख डॉ. केएल कोठारी, शांतिलाल भंडारी, डॉ. केपी तलेसरा, डॉ. एसएस पोखरना, आरके खोखावत, डॉ. विमल शर्मा, मनीष गोयल, डॉ. बीएल चावत आदि की भागीदारी रही। इधर, डॉ. डीएस कोठारी शोध एवं शिक्षा संस्थान ने पांचवां स्थापना दिवस विज्ञान समिति में मनाया। मुख्य अतिथि गुजरात विवि अहमदाबाद के प्रो. हितेश सोलंकी थे। मुख्य वक्ता सोलर ऑब्जर्वेटरी के प्रो. भुवन जोशी थे। इधर, शान्तिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित 'भारतीय परम्परा और ज्ञान-विज्ञान का समवेत प्रवाह' विषयक संगोष्ठी की अध्यक्षता राजस्थान विद्यापीठ विवि के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने की। मुख्य वक्ता सुविवि के प्रो. नीरज शर्मा, विशिष्ट अतिथि पूर्व कलक्टर सुमति लाल बोहरा, देवस्थान के पूर्व आयुक्त दिनेश कोठारी थे। संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

दैनिक भास्कर | उदयपुर | सोमवार, 13 मई, 2024 | 08

शांतिपीठ व शिवरती शोध संस्थान की ओर से आदि शंकराचार्य के आविर्भाव दिवस पर संगोष्ठी

शंकराचार्य की आवश्यकता है जो अज्ञान जनित दूषित अवधारणाओं से समाज को मुक्त कर सके: सुरेन्द्र द्विवेदी

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

शांति-पीठ संस्थान की ओर से रविवार को आदि शंकराचार्य के आविर्भाव दिवस पर संगोष्ठी हुई। संगोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि आदि शंकराचार्य जैसे सद्गुरु की आज आवश्यकता है जो अज्ञान जनित दूषित अवधारणाओं से समाज को मुक्त कर सके और परम अभीष्ट को उपलब्ध करा पाए। डॉ सुरेन्द्र द्विवेदी ने कहा कि शंकराचार्य साक्षात शिव स्वरूप हैं जिन्होंने अद्वैत दर्शन से समाज को प्रकाशित करते हुए आत्मानुभूति से ब्रह्म प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आदि शंकराचार्य ने तत्कालीन भ्रामक परिस्थितियों में उपस्थित



विडंबनाओं से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया तथा राष्ट्र की आध्यात्मिक व सांस्कृतिक एकता के स्थायित्व के लिए देश के चारों दिशाओं में मठों के रूप में आध्यात्मिक चेतना केंद्र स्थापित किए। इधर शिवरती शोध संस्थान के तत्वावधान में आदि शंकराचार्य कि जयंती पर संगोष्ठी तीतरड़ी में हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो परमेंद्र दशोरा ने कहा कि आदि शंकराचार्य ने सनातन धर्म में के संकटों का निवारण करने हेतु पैदल भारत भ्रमण करते हुए चार धाम की स्थापना कर भारत वासियों को चार धाम यात्रा की प्रेरणा दी।

इतिहासकार डॉ अजात शत्रु सिंह शिवरती ने बताया कि ब्रह्मसूत्र पर भाष्य व अनेक उपनिषदों पर प्रबोधन देते हुए भारतीय दर्शन की विभिन्न धाराओं में समन्वय का आधार प्रदान किया। शंकराचार्य जी ने शंकर कृष्णा इत्यादि विभिन्न देवताओं की बहुत ही सुंदर स्तुतियों की रचना की जो भारत के अलग-अलग विश्वास रखने वाले जन मानस को प्रिय रहे हैं।

प्रातःकाल | उदयपुर, सोमवार 13 मई, 2024 | pratahkal.com

शांतिपीठ में आदि शंकराचार्य का अवतरण दिवस मनाया

उदयपुर (वि.)। ज्ञान से समृद्ध राष्ट्र बोध और मानवता के उत्थान के लिए ज्ञान विज्ञान व दर्शन के साक्षात मूर्त स्वरूप आदि शंकराचार्य जैसे सद्गुरु की आज आवश्यकता है जो अज्ञान जनित दूषित अवधारणाओं से समाज को मुक्त कर सके और परम अभीष्ट को उपलब्ध करा पाए। उक्त विचार शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आदि शंकराचार्य के आविर्भाव दिवस के अवसर पर आयोजित सत्संग - संगोष्ठी में व्यक्त किए गए। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए निम्बार्क महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ सुरेन्द्र द्विवेदी ने कहा कि शंकराचार्य साक्षात शिव स्वरूप हैं जिन्होंने अद्वैत दर्शन से समाज



को प्रकाशित करते हुए आत्मानुभूति से ब्रह्म प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आदि शंकराचार्य ने तत्कालीन भ्रामक परिस्थितियों में उपस्थित विडम्बनाओं से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। उच्च न्यायालय में अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा ने दिशा भ्रम का कारण अज्ञान बताते हुए कहा कि ज्ञान का मूल वेद है। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा उमाशंकर शर्मा ने स्वावलंबन व आचरण शुद्धि की आवश्यकता बताते हुए कहा कि गुरु शिष्य परम्परा से हम वांछित लक्ष्यों को अर्जित कर सकते हैं। बी एन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डा जयश्री सिंह ने कहा ज्ञान विज्ञान व दर्शन के शाश्वत तत्वों को विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में समाहित किया जाना चाहिए। पूर्व कुलपति प्रो परमेंद्र दशोरा ने कहा कि आदि शंकराचार्य ईश्वर के अवतरण थे। ग्लोबल हिस्ट्री फोरम के संस्थापक अध्यक्ष डा जी एल मेनारिया, कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए। एडवोकेट भरत कुमावत ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 13 मई 2024

आदि शंकराचार्य जैसे सद्गुरु की आज जरूरत





ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। ज्ञान से समृद्ध राष्ट्र बोध और मानवता के उत्थान के लिए ज्ञान विज्ञान व दर्शन के साक्षात मूर्त स्वरूप आदि शंकराचार्य जैसे सद्गुरु की आज आवश्यकता है जो अज्ञान जनित दूषित अवधारणाओं से समाज को मुक्त कर सके और परम अभीष्ट को उपलब्ध करा पाए। यह विचार रविवार को शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आदि शंकराचार्य के आविर्भाव दिवस के अवसर पर आयोजित सत्संग - संगोष्ठी में व्यक्त किए गए। निम्बार्क महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ सुरेन्द्र द्विवेदी ने कहा कि शंकराचार्य साक्षात शिव स्वरूप हैं जिन्होंने अद्वैत दर्शन से समाज को प्रकाशित करते हुए आत्मानुभूति से ब्रह्म प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आदि शंकराचार्य ने तत्कालीन भ्रामक परिस्थितियों में उपस्थित विडम्बनाओं से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया तथा राष्ट्र की आध्यात्मिक व सांस्कृतिक एकता के स्थायित्व के लिए देश के चारों दिशाओं में मठों के रूप में आध्यात्मिक चेतना केंद्र स्थापित किए।

उच्च न्यायालय में अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा, डॉ. उमाशंकर शर्मा, डॉ. जयश्री सिंह, प्रो परमेंद्र दशोरा, ग्लोबल हिस्ट्री फोरम के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. जी एल मेनारिया, कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए। आभारएडवोकेट भरत कुमावत ने जताया।

इधर शिवरती शोध संस्थान के तत्वावधान में आदि शंकराचार्य जयंती पर संगोष्ठी आयोजित हुई। संस्थान के डॉ अजात शत्रु सिंह शिवरती ने बताया कि संगोष्ठी में प्रो परमेंद्र दशोरा, इतिहासविद अनिरुद्ध सिंह ज्ञानगढ़, गुजरात के इतिहासकार प्रो हरीश राव, शोधार्थी सुरेंद्र सिंह चौहान, राम सिंह राठौड़, डॉ विनित पटेल आदि ने भाग लिया

सनातन पाठशाला में हुआ ध्यान व हवन

सेक्टर-4 स्थित स्वागत वाटिका में रविवार को श्रीमद्भगवत गीता आधारित सनातन पाठशाला में व्याख्यान, ध्यान, हवन, भजन के कार्यक्रम हुए। विप्र वाहिनी के प्रदेश महासचिव डॉ. विक्रम मेनारिया ने बताया कि लेखक और मोटिवेशनल वक्ता आशीष सिंहल द्वारा श्रीमद्भगवत गीता पर विशेष व्याख्यान दिया गया और उसी के आधार पर ध्यान का अभ्यास करवाया गया। संस्कार पुरोहित डॉ. भूपेंद्र शर्मा के मार्गदर्शन में वैदिक यज्ञ किया गया। आर्य वीर दल के मनोज राजपुरोहित, शिक्षाविद डॉ रेनू पालीवाल, लोकेश भारती ने विचार व्यक्त किए। शिल्पा शुक्ला और प्रियंका शर्मा ने भगवान कृष्ण के सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी। वीरपाल राणा, सुभाष चन्द्र मेहता और डा ए के चित्तौड़ा द्वारा प्रश्नोत्तरी के विजेता प्रतिभागियों को पुरुस्कृत किया गया।

क्षमा दान खुशी जीवन का सूत्र

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्विद्यालय के तत्वाधान में मोती मंगरी स्कीम पार्क में चल रहे नौ दिवसीय अलविदा तनाव हैप्पीनेस शिविर के अंतर्गत दूसरे दिन ब्रह्माकुमारी पूनम बहन ने मनुष्य जीवन में आ रहे दुखों के कारणों पर विस्तृत चर्चा करते हुए खुशी-खुशी जीवन जीने की कला सिखाई । उन्होंने कहा कि खुशी जैसा कोई खजाना नहीं है। खुशी किसी भी विपरीत परिस्थिति को हावी होने से रोकती है । हमें जीवन में क्षणिक खुशी नहीं अपितु स्थाई खुशी लाने में प्रयासरत रहना चाहिए जो आध्यात्म के मार्ग पर चल कर ही प्राप्त हो सकती है। उन्होंने कहा कि मनुष्य के जीवन में क्षमा मांगना व क्षमा दान देना एक एसा संस्कार सूत्र है जो अविनाशी खुशी देता है। शिविर में बच्चों ने मंच से व अन्य ने पांडाल में गुब्बारों के साथ मनोहारी नृत्य करते हुए सदैव खुश रहने का संकल्प लिया।

मनुष्य जन्म सौभाग्य की बात

मनुष्य जन्म परमात्मा की कृपा सौभाग्य की बात है। यह विचार आर्य समाज हिरण मगरी में आयोजित साप्ताहिक अधिवेशन में कवि विचारक वैदिक विद्वान शंकर लाल मरमट ने व्यक्त किए। उगंता यादव ने भजन प्रस्तुत किए। आर्य समाज के प्रधान भंवर लाल आर्य ने स्वागत किया। संचालन मंत्री वेद मित्र आर्य ने किया। इससे पूर्व सरला गुप्ता के पोराहित्य में देव यज्ञ किया गया।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 13 मई, 2024

ज्ञान से समृद्ध राष्ट्र बोध, मानवता उत्थान के लिए शंकराचार्य जैसे सद्गुरु की आवश्यकता

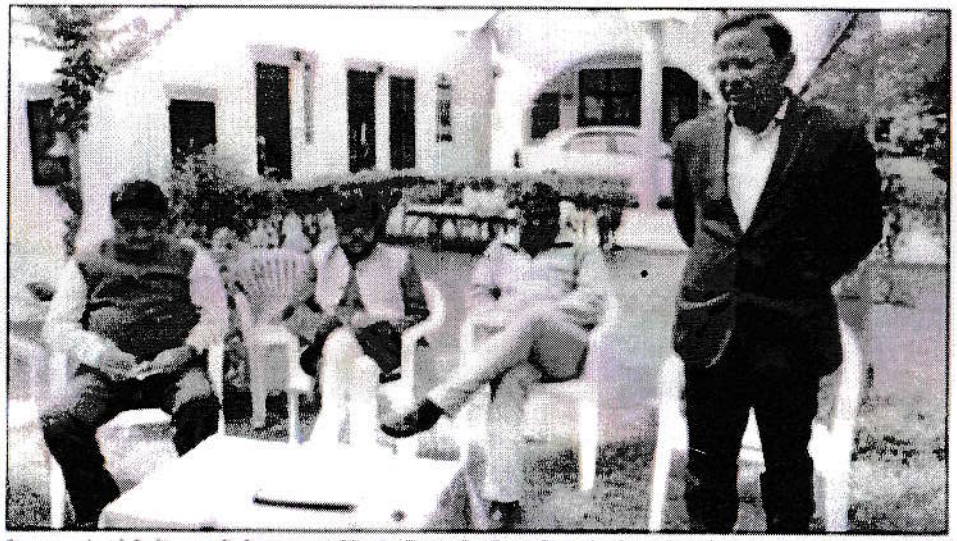
महानगर संवाददाता

उदयपुर। ज्ञान से समृद्ध राष्ट्र बोध और मानवता उत्थान के लिए ज्ञान, विज्ञान व दर्शन के साक्षात मूर्त स्वरूप आदि शंकराचार्य जैसे सद्गुरु की आज आवश्यकता है। जो अज्ञान जनित दूषित अवधारणाओं से समाज को मुक्त कर सकें और परम अभीष्ट को उपलब्ध करा पाए।

यह विचार शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आदि शंकराचार्य के आविर्भाव दिवस पर हुए सत्संग संगोष्ठी में व्यक्त किए गए। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए निम्बार्क महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ सुरेन्द्र द्विवेदी ने कहा शंकराचार्य साक्षात शिवस्वरूप हैं, जिन्होंने अद्वैत दर्शन से समाज को प्रकाशित करते हुए आत्मानुभूति से ब्रह्म प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने शंकराचार्य रचित स्तुतियों की व्याख्या करते हुए कहा सब कुछ ब्रह्म ही है। उसी एक तत्व का ही सर्वत्र प्रक्षेपण है, इसलिए जीवन की नश्वरता के उपरांत भी समग्रता से जीने से शिव सौंदर्य को अनुभव करते हुए जीवात्मा परम ब्रह्म को उपलब्ध होता है। शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा आदि शंकराचार्य ने तत्कालीन भ्रामक परिस्थितियों में उपस्थित विडम्बनाओं से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। राष्ट्र की आध्यात्मिक व सांस्कृतिक एकता के स्थायित्व के लिए देश के चारों दिशाओं में मठों के रूप में आध्यात्मिक चेतना केंद्र स्थापित किए। उन्होंने उपस्थित परिस्थितियों में घर, घर गुरु कुलम की आवश्यकता प्रतिपादित की। उच्च न्यायालय में अधिवक्ता उमेशचन्द्र शर्मा ने दिशा भ्रम का कारण अज्ञान बताते हुए कहा ज्ञान का मूल वेद है। शंकराचार्य वेद स्वरूप में अवतरित हुए और राष्ट्र के नित नूतन मांगल्य का बीजारोपण किया। राष्ट्र उनका सदैव कृतज्ञ रहेगा। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा उमाशंकर शर्मा ने स्वावलंबन व आचरण शुद्धि की आवश्यकता बताते हुए कहा गुरु, शिष्य परम्परा से हम वांछित लक्ष्यों को अर्जित कर सकते हैं।

राष्ट्र की शिक्षा, रक्षा में मील का पत्थर साबित हो सकता है डा कोठारी का योगदान

महानगर मयाददाता



उदयपुर। देश की शिक्षा और रक्षा में डॉ डीएस कोठारी का योगदान विकसित भारत के लिए मील का पत्थर साबित हो सकता है। शांति, अहिंसा, सामाजिक समरसता और वैश्विक एकता के स्वप्नदृष्टा के सम्मुख जब राष्ट्र रक्षा की चुनौती आन पड़ी, तब तात्र भौतिकी में अपने विशेष ज्ञान का प्रयोग कर डॉ कोठारी ने ऐसे आयुध का आविष्कार किया, जिससे भारत-पाक युद्ध के दौरान भारत की सेना ने इससे पाक सेना के एटम बैंकों को नष्ट कर दिया। इसलिए डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा प्रतिरक्षा मंत्रालय व वैज्ञानिक सलाहकार रूप में डॉ कोठारी ने वह भूमिका निभाई जो महाभारत में श्रीकृष्ण ने अर्जुन के लिए निभाई। यह विचार प्रख्यात शिक्षाविद वैज्ञानिक डॉ दौलतसिंह कोठारी की पुण्यतिथि अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में मूल्य अनुपूरक शिक्षा, विज्ञान व तकनीक विषयक हुई संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो एसएस सारंगदेवोत ने कहा देश में जो शिक्षा नीतियां बनीं, उनकी बुनियाद में डॉ कोठारी का मौलिक तत्व चिंतन है। उनकी बनाई नीति का क्रियान्वयन तत्कालीन किया जाता तो आज देश कई ज्वलंत समस्याओं पर होता। वे अपने में युग दृष्टा थे। जो योजना उन्होंने दी, वर्तमान में उसे ही महत्व मिला। उन्होंने मातृभाषा व त्रिभाषा फॉर्मूला देकर सामाजिक दक्षता, एकता व समता का बीज मंत्र दिया, जिससे विद्यार्थी अंतर में छिपी क्षमताओं को बाहर विकसित कर सके। विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त आयुक्त अरोड़ा भुनकर ने कहा जो पढ़ा, उसे अमल में लाने का आदर्श डॉ कोठारी ने प्रस्तुत किया, किन्तु आज इन आदर्शों के अभाव में सामाजिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है। उन्होंने कहा जीवन मूल्यों का निरंतर जागरण आवश्यक है। अन्यथा कोरोना जैसी चेतावनियां सामने आती हैं। उन्होंने मेटर और कॉन्शियसनेस को भारतीय परम्परा पर भी विचार व्यक्त किए। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा राष्ट्र निर्माण में शिक्षा और प्रतिरक्षा की अहम भूमिका होती है। इसके प्रतिपादन में डॉ कोठारी का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। डॉ कोठारी ने आधुनिक विज्ञान का उपनिषदिक विज्ञान में प्रतिपादन करते विश्व को आसन्न संकट से सुरक्षित करने का आह्वान किया जो वर्तमान में नित नूतन प्रासंगिक है। सुविधि संस्थान विभाग के प्रो नीरज शर्मा ने कहा भारतीय ज्ञान परम्परा में शान्ति संतुलन का परिणाम है जबकि अशांति असंतुलन का परिणाम। उन्होंने ज्ञानों के लिए भी तत्परता बनने की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा ज्ञान, विज्ञान और दर्शन की समन्वित साधना के परिणामस्वरूप भारत सदियों से विश्व शान्ति का संदेश देता आ रहा है। बीएन विवि में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ जयवीरसिंह ने डॉ कोठारी के क्षेत्र थोने सिद्धांत के सिद्धांत व शब्द द्वारा पदार्थ आयनीकरण के सिद्धांत पर चर्चा करते हुए कहा वर्तमान में उनका यह शोध कई अधिक महत्व रखता है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ प्रो आरवी कुमार, बीएन विवि में फोरेंसी विभागाध्यक्ष डॉ कमलसिंह राठौड़, प्रो विमल शर्मा, भरत कुमावत, कुमार दुष्यन्त आदि ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन मनोज गोयल ने किया। केसराम चारीकाल ने आभार जताया। प्रारंभ में अतिथियों ने डॉ कोठारी को पुष्पांजलि दी। अंत में चित्रक मोहनसिंह कोठारी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

रामकृष्ण परमहंस ने मानव जाति के उत्थान का राजमार्ग प्रशस्त किया

महानगर संवाददाता

19 मई 2024

उदयपुर। रामकृष्ण परमहंस ने परमात्मा तक पहुंचाने वाले सभी मार्गों की न केवल जानकारी दी अपितु द्वैत, अद्वैत, सगुण, निर्गुण आदि में समन्वय स्थापित कर मातृशक्ति की उपासना करते हुए मानव जाति के उत्थान का राजमार्ग प्रशस्त किया।

यह विचार रामकृष्ण परमहंस के 188वें आविर्भाव दिवस पर शांतिपीठ के तत्वावधान में संस्थान सभागार में हुई सत्संग संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रथम सत्र में आध्यात्मिक संगोष्ठी, दूसरे सत्र में संगीत गुरु डॉ रामकृष्ण बोस ने अपनी शिष्य मंडली के साथ भजन संकीर्तन किए। इसमें विवेकानंद द्वारा बांगला में रचित भजनों के



साथ ही ठाकुर रविंद्रनाथ टैगोर द्वारा गाया गीत प्रस्तुत किया गया, जिसे उन्होंने परमहंस के कहने पर गाया था। वसंत ऋतु आगमन के गीत के साथ ही बोस ने अहीर भैरव राज में गायन प्रस्तुत किया तथा मेवाड़ी में भी भजन प्रस्तुत करने पर श्रोता भाव विभोर हो उठे। संगोष्ठी में प्रोफेसर सुरेंद्र द्विवेदी ने कहा परमहंस ने सभी धर्म के सार तत्व को आत्मसात करते हुए एक ईश्वरीय सत्ता को प्रमाणित किया। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा आदि शंकराचार्य ने जिस तरह उपस्थित निरंकुश दिगभ्रमित परिस्थितियों को नियंत्रित कर परम ज्योति को प्रकाशित किया, उसी तरह 19वीं सदी में रामकृष्ण ने आकर सर्वधर्म समानत्व का संदेश देते हुए सनातन विचार को अनेकों प्रमाणों से पुनः प्रस्तुत किया। वे विशुद्ध अध्यात्म के चलत विग्रह थे। जिन्होंने मानवता को आत्मोपलब्धि का संदेश दिया। शिक्षाविद विष्णु नागदा ने महापुरुषों की उपादेयता आत्मसात करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा जो रामकृष्ण जैसी विभूति से जुड़ता है, वह समाज की पीड़ा से कभी उदासीन नहीं हो सकता। लक्ष्मणपुरी गोस्वामी ने कहा परमहंस का उथल.पुथल के काल में आविर्भाव हुआ। उन्होंने परमात्मा के नित्य अवतार को योग भक्ति और वेदांत से प्रमाणित किया। भौतिक शास्त्र के प्रो केबी जोशी, भद्रिका कोठारी, राजकुमार मेनारिया, कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए। मनोज गंधर्व ने गोष्ठी का संचालन किया। एडवोकेट भारत कुमावत ने आभार जताया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 19 फरवरी 2024

रामकृष्ण परमहंस आविर्भाव दिवस पर भजनकीर्तन



ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। शांति पीठ के तत्वावधान में रामकृष्ण परमहंस के 188वे आविर्भाव दिवस पर संस्थान सभागार में सत्संग संगोष्ठी आयोजित हुई। प्रथम सत्र में आध्यात्मिक संगोष्ठी रखी गई जबकि दूसरे सत्र में संगीत गुरु डॉ रामकृष्ण बोस ने अपनी शिष्य मंडली के साथ कई भजन संकीर्तन के साथ प्रस्तुत किए। वसंत ऋतु आगमन के गीत के साथ ही बोस ने अहीर भैरव राज में गायन प्रस्तुत किया तथा मेवाड़ी में भी भजन प्रस्तुत करने पर श्रोता भाव विभोर हो गए। संगोष्ठी में प्रोफेसर सुरेंद्र द्विवेदी ने कहा कि परमहंस ने सभी धर्म के सार तत्व को आत्मसात करते हुए एक ईश्वरीय सत्ता को प्रमाणित किया। शांति पीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि 19वीं सदी में रामकृष्ण ने सर्वधर्म समानत्व का संदेश देते हुए सनातन विचार को अनेकों प्रमाणों से पुनः प्रस्तुत किया। शिक्षाविद विष्णु नागदा, लक्ष्मण पुरी गोस्वामी, प्रोफेसर केबी जोशी, भद्रिका कोठारी, राजकुमार मेनारिया, कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, सोमवार, 19 फरवरी, 2024

जयंती : रामकृष्ण परमहंस से प्रेरणा लेने का किया आह्वान



उदयपुर। शांति पीठ की ओर से रविवार को रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर संगोष्ठी हुई।

संगोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि रामकृष्ण परमहंस ने परमात्मा तक पहुंचाने वाले सभी मार्गों की न केवल जानकारी दी अपितु दैत, अद्वैत, शगुण, निर्गुण आदि में समन्वय स्थापित कर मातृ शक्ति की उपासना करते हुए मानव जाति के उत्थान का राजमार्ग प्रशस्त किया। दूसरे सत्र में संगीत गुरु डॉ रामकृष्ण बोस ने अपनी शिष्य मंडली के साथ कई भजन प्रस्तुत किए। संगोष्ठी में प्रोफेसर सुरेंद्र द्विवेदी ने कहा कि परमहंस ने सभी धर्म के सार तत्व को आत्मसात करते हुए एक ईश्वरीय सत्ता को प्रमाणित किया। शांति पीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आदि शंकराचार्य ने जिस तरह उपस्थित निरंकुश दिग्. भ्रमित परिस्थितियों को नियंत्रित कर परम ज्योति को प्रकाशित किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, सोमवार, 19 फरवरी 2024

संगोष्ठी में वक्ताओं ने रखे विचार



उदयपुर. रामकृष्ण परमहंस के 188वें आविर्भाव दिवस पर शांति पीठ के तत्वावधान में संस्थान सभागार में सत्संग संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें कई वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। प्रथम सत्र में आध्यात्मिक संगोष्ठी रखी गई। दूसरे सत्र में संगीत गुरु डॉ. रामकृष्ण बोस ने अपनी शिष्य मंडली के साथ कई भजन संकीर्तन के साथ प्रस्तुत किए। प्रो. सुरेंद्र द्विवेदी, शांति पीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, शिक्षाविद विष्णु नागदा, लक्ष्मण पुरी गोस्वामी, भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर केबी जोशी, भद्रिका कोठारी, राजकुमार मेनारिया, कैलाश पालीवाल आदि ने विचार व्यक्त किए। मनोज गंधर्व ने गोष्ठी का संचालन किया। एडवोकेट भारत कुमावत ने आभार जताया।

दैनिक भास्कर उदयपुर, मंगलवार 06 फरवरी, 2024

डॉ. डीएस कोठारी की पुण्यतिथि पर संगोष्ठी आयोजित



उदयपुर| वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि के अवसर पर शांतिपीठ की ओर से मूल्य अनुपूरक शिक्षा, विज्ञान व तकनीक पर संगोष्ठी हुई। अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि देश में जो भी शिक्षा नीतियां बनी उसकी बुनियाद में डॉ कोठारी का मौलिक तत्व नीहित है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए अतिरिक्त आबकारी आयुक्त ओ पी बुनकर ने कहा कि जो पढा उसे अमल में लाने का आदर्श डॉ कोठारी ने प्रस्तुत किया है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि राष्ट्र निर्माण में शिक्षा और प्रतिरक्षा की अहम भूमिका होती है,इसके प्रतिपालन में डॉ कोठारी का योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 5 फरवरी 2024

श्रद्धांजलि

डॉ कोठारी की पुण्य तिथि पर पुष्पांजलि अर्पित

डॉ. दौलत सिंह कोठारी ऐसे शिक्षाविद् रहे जिन्होंने आयुध तक किए इजाद





ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर।

देश की शिक्षा और रक्षा के क्षेत्र में डॉ डी एस कोठारी का योगदान विकसित भारत के लिए मील का पत्थर साबित हो सकता है। यह विचार रविवार को प्रख्यात शिक्षाविद वैज्ञानिक डॉ दौलत सिंह कोठारी की पुण्य तिथि पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में मूल्य अनुपूरक शिक्षा,विज्ञान व तकनीक विषयक आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। वक्ताओं ने कहा कि शान्ति ,अहिंसा, सामाजिक समरसता और वैश्विक एकता के स्वप्न दृष्टा के सम्मुख जब राष्ट्र रक्षा की चुनौती आन पड़ी तब तारा भौतिकी में अपने विशेष ज्ञान का प्रयोग कर डॉ कोठारी ने ऐसे आयुध का आविष्कार किया जिससे भारत-पाक युद्ध के दौरान भारत की सेना ने पाक सेना के पेटन टैंकों को नष्ट कर दिया। इसलिए डॉ पी जे लवकरे ने कहा कि प्रतिरक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में डॉ कोठारी ने वह भूमिका निभाई जो महाभारत में श्रीकृष्ण ने अर्जुन के लिए निभाई। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो.एस एस सारंगदेवोत ने कहा कि देश में जो भी शिक्षा नीतियां बनी उसकी बुनियाद में डॉ कोठारी का मौलिक तत्व नीहित है।अगर उनकी बनाई नीति का क्रियान्वयन समय किया जाता तो आज देश कई ज्यादा ऊंचाइयों पर होता।

विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त आबकारी आयुक्त ओ पी बुनकर ने कहा कि जीवन मूल्यों का निरंतर जागरण आवश्यक है अन्यथा कोरोना जैसी चेतावनियाँ सामने आती हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ कोठारी ने आधुनिक विज्ञान का उपनिषदिक विज्ञान में प्रतिपादन करते विश्व को आसन्न संकट से सुरक्षित किए जाने का आह्वान किया जो वर्तमान में नितनूतन प्रासंगिक है। प्रो. नीरज शर्मा, डॉ जयश्री सिंह,प्रो आर बी कुमार, डॉ कमल सिंह राठौड,प्रो विमल शर्मा,एड.भरत कुमावत,कुमार दुष्यंत आदि ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन मनोज गंधर्व ने किया जबकि कैलाश पालीवाल ने आभार व्यक्त किया।

प्रारंभ में डॉ कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

इधर डॉ. दौलत सिंह कोठारी-शोध और शिक्षण संस्थान और विज्ञान समिति के सदस्यों द्वारा फतहसागर के किनारे मेवाड़ शिक्षाविद दीर्घा में स्थापित डॉ.कोठारी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस दौरान डॉ. कुन्दन लाल कोठारी, डॉ. कमलप्रकाश तलेसरा, राजेन्द्र कुमार चतुर, डॉ. सुरेन्द्र सिंह पोखरणा, शिव चरण कुमार वैद, शान्ति लाल भण्डारी, राजेन्द्र खोखावत, शिव रतन तिवारी, सीता शर्मा, डॉ. निर्मला शाह आदि मौजूद थे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, सोमवार, 05 फरवरी 2024

#Dr.D.S.Kothari

शान्तिपीठ संस्थान की ओर से डॉ. कोठारी की पुण्यतिथि पर संगोष्ठी

मील का पत्थर साबित हो सकता है शिक्षा और रक्षा क्षेत्र में योगदान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर . देश की शिक्षा और रक्षा के क्षेत्र में डॉ. डी.एस. कोठारी का योगदान मील का पत्थर साबित हो सकता है। शान्ति, अहिंसा, सामाजिक समरसता और वैश्विक एकता के स्वप्नद्रष्टा के सम्मुख जब राष्ट्र रक्षा की चुनौती आन पड़ी तो तारा भौतिकी में अपने विशेष ज्ञान का प्रयोग कर डॉ. कोठारी ने ऐसे आयुध का आविष्कार किया, जिसका भारत-पाक युद्ध के दौरान भारत की सेना ने इस्तेमाल कर पाक सेना के टैंकों को नष्ट कर दिया।

ये विचार शिक्षाविद्, वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्य तिथि पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से 'मूल्य अनुपूरक शिक्षा, विज्ञान व तकनीक' विषय पर हुई संगोष्ठी में



वक्ताओं ने व्यक्त किए।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए ज. रा. नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि देश में जो भी शिक्षा नीतियां बनी उसकी बुनियाद में डॉ. कोठारी का मौलिक तत्व नीहित है। अगर उनकी बनाई नीति का क्रियान्वयन ससमय किया जाता तो आज देश ज्यादा ऊंचाइयों पर होता।

विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त आबकारी आयुक्त ओपी बुनकर ने कहा कि जो पढ़ा उसे अमल में लाने का आदर्श डॉ. कोठारी ने प्रस्तुत किया। लेकिन आज इन आदर्शों के अभाव में सामाजिक मूल्यों का अवनयन हो रहा है।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि राष्ट्र निर्माण में शिक्षा ओर प्रतिरक्षा की अहम भूमिका होती है, इसके प्रतिपालन में कोठारी का योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

इस अवसर पर एमएलएसयू संस्कृत विभाग के प्रो. नीरज शर्मा, बीएन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. जयश्री सिंह, अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ प्रो. आरबी कुमार, फार्मेसी विभागाध्यक्ष डॉ. कमल सिंह राठौड, प्रो. विमल शर्मा, एड. भरत कुमावत, कुमार दुष्यंत आदि ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन मनोज गंधर्व ने किया। कैलाश पालीवाल ने आभार व्यक्त किया ।

मेवाड़ शिक्षाविद् दीर्घा में श्रद्धांजलि



उदयपुर . मेवाड़ में जन्मे भारत के महान वैज्ञानिक व विज्ञान और आध्यात्म के समन्वयक पद्म विभूषण से सम्मानित डॉ. दौलत सिंह कोठारी की 31वीं पुण्यतिथि पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मीडिया प्रभारी प्रो. विमल शर्मा ने बताया कि फतहसागर के किनारे पर मेवाड़ शिक्षाविद् दीर्घा में स्थापित उनकी मूर्ति पर डॉ. कोठारी शोध और शिक्षण संस्थान और विज्ञान समिति के सदस्यों ने माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। इस दौरान डॉ. कुन्दन लाल कोठारी, डॉ. कमल प्रकाश तलेसरा, राजेन्द्र कुमार चतुर, डॉ. सुरेन्द्र सिंह पोखरणा, शिव चरण कुमार वैद, शान्तिलाल भण्डारी, राजेन्द्र खोखावत, शिव रतन तिवारी, सीता शर्मा, गणपत लाल पोरवाल, डॉ. निर्मला शाह, आर के नेभनानी आदि मौजूद रहे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार, 13 दिसम्बर 2024

#GeetaJayanti सुविवि में गीता जयंती पर गोष्ठी का आयोजन

'गीता ही जीवन की यथार्थ संजीवनी'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com



सुविवि के संस्कृत विभाग में संगोष्ठी को सम्बोधित करते वक्ता। पत्रिका

उदयपुर. सुविवि के संस्कृत विभाग के तत्वावधान में श्रीमद्भगवद्गीता जयन्ती पर गीता जीवन-संजीवनी विषयक गोष्ठी हुई। डॉ. मुरलीधर पालीवाल ने कहा कि महाभारत के युद्ध-आरम्भ के समय मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी तिथि को ही भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र में दोनों सेनाओं के बीच विषादग्रस्त अर्जुन को गीता का उपदेश देकर कर्तव्य पथ पर आरूढ किया। यह दिन अर्जुन और श्रीकृष्ण के उस संवाद को याद करने का दिन है, जो मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है। शुरू में श्रीमद्भगवद्गीता महात्म्य पाठ के साथ विश्व रूप दर्शन योग नामक 11वें अध्याय का सस्वर पाठ-पारायण किया। कला महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त द्विवेदी ने कहा कि गीता ही जीवन की यथार्थ संजीवनी है, जो जीवन को सार्थकता प्रदान करने वाली विश्व धरोहर है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता वर्तमान समय और समाज की सभी समस्याओं के निराकरण में सर्वोपरि उपाय है। संस्कृत विभाग अध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने गीता में प्रतिपादित ज्ञानयोग, कर्मयोग एवं भक्तियोग के रहस्य और जीवन संजीवनी के रूप में गीता के दैनिक-व्यावहारिक पक्ष को सरल शब्दों में समझाया। गोष्ठी में राजनीतिशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. सतीश अग्रवाल, समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. राजू सिंह, प्राकृत एवं जैन विद्या विभाग के अध्यक्ष डॉ. ज्योति बाबू जैन, सहायक आचार्य डॉ. सुमत जैन, राजस्थानी भाषा विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुरेश सालवी, पुस्तकालय विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. पी.एस. राजपूत, अंग्रेजी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. स्नेहलता टेलर, डॉ. कोपल वत्स ने भी विचार रखे।

7

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, बुधवार, 11 दिसम्बर 2024

संसार को युद्धोन्माद एवं निर्दोषों को अत्याचार से मुक्त कर सकता है गीता संदेश



उदयपुर. युद्ध भूमि में स्वयं भगवान की ओर से दिया संदेश आज संसार को युद्धोन्माद एवं निर्दोषों को अत्याचार से मुक्त कर सकता है। हमें आत्मसंयमी एवं श्रद्धावान होना होगा, तभी हम समझ पाएंगे कि जो सत्य को समर्पित है उसके अधिकारों की रक्षा स्वयं नारायण करते हैं। ये विचार विश्व मानवाधिकार दिवस एवं श्रीमद्भगवद्गीता जयंती की पूर्व संध्या पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में 'मानवाधिकार गीता के प्रकाश में' विषयक आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने कही। अध्यक्षता करते हुए संस्कृतविद् डॉ. सुरेन्द्र द्विवेदी ने कहा कि मन, वचन व कर्म से शुद्ध होकर कर्तव्य परायणता से अधिकारों का संरक्षण संभव है। संतोष दीदी ने गीता के एकादश अध्याय की व्याख्या करते हुए कहा कि जीवन में रस प्रधानता की आवश्यकता है, जिससे पारस्परिक प्रेम का अभ्युदय हो। उन्होंने श्रद्धा तत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि जीवन में श्रद्धा है तो व्यक्ति संशयों से मुक्त है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा आज मानवता खुद से हार रही है। कार्यक्रम में लक्ष्मण पुरी गोस्वामी, प्रो. आरबी कुमार, जयश्री सिंह, सुमतिलाल बोहरा, ओंकारलाल मेनारिया, जीपी सोनी, दिनेश कोठारी, कैलाश पालीवाल ने भी विचार रखे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 24 दिसम्बर, 2023

#GeetaJayanti श्रीमद् भागवद्गीता जयंती पर हुए विविध आयोजन

गीता शास्त्रों का शास्त्र है, 18 अध्यायों में ज्ञान व परम्परा का समावेश

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. श्रीमद्भगवद्गीता जयंती के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में सत्संग व संगोष्ठी का आयोजन हुआ। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए सुखाड़िया विवि में संस्कृत विभाग के प्रो नीरज शर्मा ने कहा कि गीता शास्त्रों का शास्त्र है जिसके 18 अध्यायों में भारतीय शास्त्रों की ज्ञान परम्परा का समावेश है। जहां ज्ञान, कर्म और भक्ति के मार्ग से चल कर जीवन का परम लक्ष्य अर्जित किया जा सकता है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता जीवन को महोत्सव बनाती है और जीवन के चारों पुरूषार्थ सिद्ध करने का सूत्र सौंपती है। इस दौरान डॉ. सुरेन्द्र द्विवेदी, लक्ष्मणपुरी गोस्वामी, दिनेश कोठारी, डॉ. जयश्री सिंह, बी.शर्मा, देवेन्द्र साहू, मनोगंधर्व, जय नारायण पुरोहित, कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

इधर, विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी शाखा उदयपुर की ओर से गीता जयंती उत्सव मनाया गया। उत्सव में विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी के उपाध्यक्ष हनुवंत राव ने कहा कि जिस प्रकार अर्जुन के सामने युद्ध के समय जो समस्या खड़ी हुई थी आज हमारे सामने परिवार के अंदर भी इस तरीके की समस्याएं पैदा हो जाती हैं। इसलिए आवश्यक है परिवार में एकता बनी रहे जिससे समाज में एकता बनी रहेगी, समाज सुदृढ होगा तो उससे राष्ट्र का पुनरुत्थान होगा। विवेकानंद केंद्र के गुजरात एवं राजस्थान प्रांत के विभाग स्तरीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी किया जा रहा है।

इधर, गीता जयंती पर सहस्त्रबाहु नारी शक्ति संगठन व गीता परिवार, उदयपुर की ओर से श्यामसुंदर जी मंदिर सविना में आयोजन हुआ। गोविंद देवगिरी की शिष्या गीता मर्मज्ञा संतोष दीदी ने गीता के 12वें और 15वें अध्याय का सामूहिक पारायण करवाया। बताया कि गीता का कथन, श्रवण, चिंतन करने वाले सभी साधकों का कल्याण निश्चित है। 26 देवीय संपदा और 6 आसुरी संपदा बतलाते हुए विश्लेषण किया। कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग के से जीवन को आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर करने की प्रेरणा दी। गीता आधारित प्रश्नोत्तरी हुई, जिसमें सपना, प्रीति, कंचन टाक, मान्यसिंह, चार्वी पांचाल, रेणु चौधरी विजेता रही। सहस्त्रबाहु नारी शक्ति अध्यक्ष नम्रता चौधरी ने बताया कि कर्म को ईमानदारी से करना महत्वपूर्ण है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए समाज की उन बच्चियों और महिलाओं का सम्मान किया गया, जिन्होंने खेल और शिक्षा में श्रेष्ठ कार्य किया। उमिका टाक, कनिष्का चौधरी, कीर्ति टाक, डिंपी सुहालका आदि को सम्मानित किया। सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ और भजन सत्संग और नृत्य भी किया गया। गीता परिवार से गोपाल कनेरिया, इंदरसिंह और खुशाली, शिवशंकर गोशाला से संपतलाल माहेश्वरी मौजूद रहे। पुजारी कन्हैया लाल, दयालाल चौधरी, बालकृष्ण सुहालका की भागीदारी रही।



कार्यक्रम में मौजूद प्रबुद्धजन। पत्रिका



इस्कॉन मन्दिर मे गीता जयन्ती पर ब्रह्मोत्सव पाटोत्सव में मौजूद संत।



आयोजन में शामिल संगठन की पदाधिकारी। पत्रिका

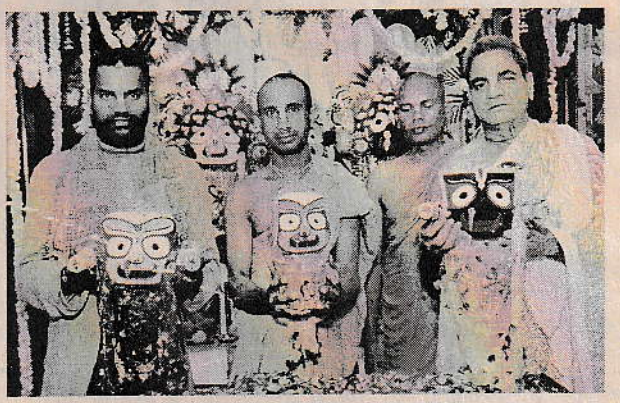
इस्कॉन मन्दिर में गीता जयन्ती पर पाटोत्सव

उदयपुर. गंगू कुण्ड स्थित इस्कॉन मन्दिर में दो दिवसीय ब्रह्मोत्सव एवं पाटोत्सव का शुभारंभ शनिवार को हुआ। उपाध्यक्ष शान्त नरसिम्ह प्रभु ने कथा में बताया कि इस्कॉन संस्थापक शील प्रभुपाद ने 70 के दशक मे विदेशों मे प्रवास कर विश्व को गीता से जोड़ा। आज ही के दिन श्री कृष्ण ने कुरूक्षेत्र मे अर्जुन को माध्यम बनाकर गीता का ज्ञान दिया। मन्दिर प्रबंधक मायापुरवासी ने बताया कि भगवान को मणिपुरी वेशभूषा धारण करवाकर श्रृंगार किया गया। सायंकाल कीर्तन एंव पंचामृत से महाअभिषेक कर छप्पन भोग तथा 208 केक का भोग धराया। रविवार को सुखशान्ति के लिए नृसिंह देव महायज्ञ, सम्मान पुरस्कार वितरण एंव तुला दान किया जाएगा।

प्रातःकाल
उदयपुर, रविवार 24 दिसम्बर, 2023

गीता जयंती पर सत्संग संगोष्ठी





उदयपुर (वि.)। संसार के सारे शास्त्रों में गीता मात्र ऐसा ग्रंथ है जो युद्ध भूमि में सनातन सत्य का गायन करते हुए जीवन को आनंद रुपी परम लक्ष्य को उपलब्ध कराता है, आवश्यकता है इसमें निरूपित ज्ञान, कर्म और भक्ति के शाश्वत संदेश को आत्मसात करने की चेतना जागृत की जाय। ये विचार श्रीमद्भगवद्गीता जयंती के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित सत्संग- संगोष्ठी में व्यक्त किए गए। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए मो सु विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के प्रो नीरज शर्मा ने कहा कि गीता शास्त्रों का शास्त्र है जिसके 18 अध्यायों में भारतीय शास्त्रों की ज्ञान परम्परा का समावेश है जहां ज्ञान, कर्म और भक्ति के मार्ग से चल कर जीवन का परम लक्ष्य अर्जित किया जा सकता है। पूर्व प्राचार्य डॉ. सुरेन्द्र द्विवेदी ने कहा की कृष्ण-अर्जुन संवाद गुरू शिष्य संवाद का आदर्श है जहां कृष्ण-अर्जुन को पार्थ, धनंजय, गुडाकेश आदि से सम्बोधित कर अमृत पान कराते है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता जीवन को महोत्सव बनाती है और जीवन के चारों पुरूषार्थ सिद्ध करने का सूत्र सोपती है। लक्ष्मणपुरी गोस्वामी, पूर्व देवस्थान आयुक्त कलाविद दिनेश कोठारी बी.एन विश्वविद्यालय अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. जयश्री सिंह, इस्कोन के बी.शर्मा, देवेन्द्र साहू, मनोजगंधर्व, जय नारायण पुरोहित, कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किये। विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी शाखा उदयपुर द्वारा गीता जयंती उत्सव मनाया गया। उत्सव में विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी से हनुवंत राव उपाध्यक्ष विवेकानंद केंद्र कन्याकुमार थे । कार्यक्रम का संचालन अशोक मेतवाले ने किया। केंद्र का परिचय एवं विवेकानंद केंद्र की गतिविधियों की जानकारी डॉ पुखराज सकलेचा ने दी।

प्रभुपाद ने विश्व को गीता से जोड़ा

गंगूकुण्ड स्थित इस्कॉन मन्दिर मे शनिवार को दो वर्ष पूर्ण होने तथा गीता जयन्ती महोत्सव के रूप मे दो दिवसीय श्री ब्रह्मोत्सव एंव पाटोत्सव का शुभारंभ हुआ। जयपुर से पधारे उपाध्यक्ष शान्तनरसिम्ह प्रभु ने कथा मे बताया इस्कॉन संस्थापक श्रील प्रभुपाद ने 70 के दशक में विदेशों में प्रवास कर पूरे विश्व को गीता से जोड़ा।

मायापुरवासी के अनुसार रविवार को उदयपुर मे सुखशान्ति तथा आने वाले कोरोना संक्रमण से बचाने व रक्षा के लिए नृसिंह देव महायज्ञ,सम्मान पुरस्कार वितरण एंव तुला दान किया जायेगा। आरती पश्चात सभी को छप्पन भोग प्रसाद परोसा गया।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, शुक्रवार 07 जुलाई, 2023

शिक्षाविद डॉ. दौलतसिंह कोठारी की जन्म जयंती पर संवाद

विज्ञान व वेदांत की संपूरकता से बने मार्ग से वैश्विक ऊंचाई को नई दिशा

उदयपुर| विज्ञान और वेदांत की संपूरकता से बनने वाला मार्ग वैश्विक उन्नयन की नई दिशा देता है। इस पर चलकर ही वसुधैव कुटुम्बकम का स्वप्न साकार हो सकता है। आवश्यकता है शिक्षा के सरोकारों से जीवन के भीतरी तत्व और आत्मा का सुदृढ़ीकरण करने की। हमें इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि शिक्षा सारी दुनिया में एक संकट के दौर से गुजर रही है, संकट गहरा और व्यापक है। डॉ. कोठारी का इस बात पर जोर था कि उच्च शिक्षा को पूरे विश्व में अमन और शांति की स्थापना के लिए कार्य करना चाहिए।

ये विचार गुरुवार को शिक्षाविद डॉ. दौलतसिंह कोठारी की जन्म जयंती के अवसर पर शांति पीठ संस्थान की ओर से श्रद्धासुमन-संवाद कार्यक्रम में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए चिंतक मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि डॉ. कोठारी ने निस्पृह भाव से जीवन जिया और अहंकार मुक्त हो गए। शांति पीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी मूल्य परक विकसित राष्ट्र के परोपकार थे। वे भारतीय शिक्षा और प्रतिरक्षा विज्ञान के शिल्पकार थे। उनकी कोशिश थी कि रक्षा विज्ञान भी एक तरह से शैक्षिक अनुसंधान का केंद्र बने।



संवाद कार्यक्रम में डॉ. दौलतसिंह कोठारी को श्रद्धांजलि देते सदस्य।

प्रातःकाल
उदयपुर, शुक्रवार 7 जुलाई, 2023

मूल्यपरक विकसित राष्ट्र के पैरोकार थे डॉ. कोठारी

उदयपुर (वि)। विज्ञान और वेदान्त की सम्पूरकता से बनने वाला मार्ग वैश्विक उन्नयन की नई दिशा देता है और इस पर चलकर ही वसुधैव कुटुम्बकम का स्वप्न साकार हो सकता है। आवश्यकता है शिक्षा के सरोकारों से जीवन के 'भीतरी तत्व और आत्मा का सुदृढ़ीकरण'।



हमें इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि शिक्षा सारी दुनिया में एक संकट के दौर से गुजर रही है, संकट गहरा और व्यापक है। इसके प्रकटीकरण के पैमानों और रूपों में भिन्नता के बावजूद सभी भौगोलिक, आर्थिक और राजनैतिक मोर्चों पर साम्य का एक अंत: सूत्र विद्यमान है। डॉ. कोठारी का इस बात पर जोर था कि उच्च शिक्षा को पूरे विश्व में अमन और शांति की स्थापना के लिए कार्य करना चाहिए। यह विचार शिक्षाविद्-वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जन्म जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में 'श्रद्धासुमन-संवाद' कार्यक्रम में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि डॉ. कोठारी ने नि:स्पृह भाव से जीवन जीया और अहंकार मुक्त हो गए। वे शिक्षा को लोकोपयोगी बनाना चाहते थे और विश्वविद्यालयों के द्वार आमजन के लिए खोलकर ऐसी भी उपाधियों की शुरूआत करना चाहते थे जहाँ प्रवेश के लिए कोई डिग्री या शिक्षा की अनिवार्यता न हो। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी मूल्य परक विकसित राष्ट्र के पैरोकार थे। वे भारतीय शिक्षा और प्रतिरक्षा विज्ञान के शिल्पकार थे। उनकी कोशिश थी कि रक्षा विज्ञान भी एक तरह से शैक्षिक अनुसंधान का केन्द्र बने। साथ ही उनकी मान्यता थी कि उपनिषदों की सुक्तियों का समावेश हमारी पाठ्य पुस्तकों में होना चाहिए। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि डॉ. कोठारी ने अध्यात्म और विज्ञान के एक-दूसरे के पूरक होने के सिद्धान्त को व्यवहार में अपनाने के विधान का दिग्दर्शन किया। संवाद में देवस्थान विभाग के पूर्व आयुक्त एवं कलाविद् डॉ. दिनेश कोठारी, पूर्व वन संरक्षक ऊंकार लाल मेनारिया भूपाल नोबल्स विवि के डॉ. कमल सिंह राठौड़, अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती कोच कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए। प्रारम्भ में अतिथियों द्वारा डॉ. कोठारी की तस्वीर पर पुष्पमाला से श्रद्धासुमन अर्पित किए गये।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार, 7 जुलाई 2023

डॉ. डीएस कोठारी की जन्म जयंती पर श्रद्धा सुमन संवाद कार्यक्रम

विश्व में अमन और शांति की स्थापना के लिए करना चाहिए कार्य

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com



डॉ. डीएस कोठारी की जन्म जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में अतिथियों ने दी श्रद्धांजलि।

उदयपुर. विज्ञान और वेदान्त की सम्पूरकता से बनने वाला मार्ग वैश्विक उन्नयन की नई दिशा देता है और इस पर चलकर ही वसुधैव कुटुम्बकम का स्वप्न साकार हो सकता है। आवश्यकता है शिक्षा के सरोकारों से जीवन के आभीतरी तत्व और आत्मा के सुदृढ़ीकरणद्य की। डॉ. कोठारी का इस बात पर जोर था कि उच्च शिक्षा को पूरे विश्व में अमन और शांति की स्थापना के लिए कार्य करना चाहिए। ये विचार गुरुवार को शिक्षाविद्-वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जन्म जयंती अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में श्रद्धासुमन-संवादद्य कार्यक्रम में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए।

शिक्षा को लोकोपयोगी बनाना चाहते थे डॉ. कोठारी

अध्यक्षता करते हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि डॉ. कोठारी ने निःस्प्रेह भाव से जीवन जीया और अहंकार मुक्त हो गए। वे शिक्षा को लोकोपयोगी बनाना चाहते थे और विश्वविद्यालयों के द्वार आमजन के लिए खोलकर ऐसी उपाधियों की शुरूआत करना चाहते थे, जहां प्रवेश के लिए कोई डिग्री या शिक्षा की अनिवार्यता न हो। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी की कोशिश थी कि रक्षा विज्ञान भी एक तरह से शैक्षिक अनुसंधान का केन्द्र बने। साथ ही उनकी मान्यता थी कि उपनिषदों की सुक्तियों का समावेश हमारी पाठ्य पुस्तकों में होना चाहिए। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि डॉ. कोठारी ने अध्यात्म और विज्ञान के एक-दूसरे के पूरक होने के सिद्धान्त को व्यवहार में अपनाने के विधान का दिग्दर्शन किया। संवाद में देवस्थान विभाग के पूर्व आयुक्त एवं कलाविद् डॉ. दिनेश कोठारी, पूर्व वन संरक्षक ऊंकार लाल मेनारिया, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय के डॉ. कमल सिंह राठौड़, अंतरराष्ट्रीय कुश्ती कोच कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए। प्रारम्भ में अतिथियों ने डॉ. कोठारी की तस्वीर पर पुष्पमाला से श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 7 जुलाई 2023

डॉ. कोठारी मूल्य परक विकसित राष्ट्र के पैरोकार थे : त्रिवेदी



ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। विज्ञान और वेदांत की सम्पूरकता से बनने वाला मार्ग वैश्विक उन्नयन की नई दिशा देता है, और इस पर चलकर ही वसुधैव कुटुम्बकम का स्वप्न साकार हो सकता है। ये विचार आज शिक्षाविद्-वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में श्रद्धासुमन-संवाद कार्यक्रम में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि डॉ. कोठारी ने निःस्प्रेह भाव से जीवन जीया और अहंकार मुक्त हो गए। वे शिक्षा को लोकोपयोगी बनाना चाहते थे और विश्वविद्यालयों के द्वार आमजन के लिए खोलकर ऐसी भी उपाधियों की शुरुआत करना चाहते थे जहां प्रवेश के लिए कोई डिग्री या शिक्षा की अनिवार्यता न हो।

शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी मूल्य परक विकसित राष्ट्र के पैरोकार थे।

इस मौके पर महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा, देवस्थान विभाग के पूर्व आयुक्त एवं कलाविद् डॉ. दिनेश कोठारी, पूर्व वन संरक्षक ऊंकार लाल मेनारिया, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय के डॉ. कमल सिंह राठौड़, अंतरराष्ट्रीय कुश्ती कोच कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर उदयपुर, बुधवार 26 अप्रैल, 2023

शंकराचार्य जयंती • गोस्वामी समाज और शांतिपीठ संस्थान की ओर से हुए कार्यक्रम

शिक्षा, खेल जगत की प्रतिभाओं के साथ समाज के वरिष्ठजनों का किया सम्मान





सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

गोस्वामी समाज नगर मंडल की ओर से मंगलवार को शहर के हाथीपोल स्थित गुरु महाराज मंदिर में समाज की शिक्षा, खेल जगत की प्रतिभाओं को सम्मान से नवाजा गया। वहीं कार्यक्रम में समाज की वरिष्ठजनों को भी सम्मानित किया। कार्यक्रम दशनाम गोस्वामी समाज के मंडल की ओर से जगत गुरु शंकराचार्य जयंती के अवसर पर हुआ।

समारोह में मुख्य अतिथि दयाराम महाराज रामद्वारा ने सभी समाजजनों को प्रोत्साहित किया कि वे सभी एकजुट होकर अपनी संस्कृति का संरक्षण करें। साथ ही आदि जगत गुरू शंकराचार्य के बारे में बताते हुए सभी को प्रेरणा लेने का आह्वान किया। कार्यक्रम में समाज अध्यक्ष गजेंद्र पुरी, सचिव तरुण पुरी, हरीश पुरी भी मौजूद थे। अध्यक्ष गजेंद्रपुरी ने बताया कि समारोह में समाज के 26 लोगों का चयन कर सम्मान दिया गया ताकि अन्य लोग भी प्रेरणा लें।

इन सभी का हुआ सम्मानः समारोह में समाज के वरिष्ठजन जिनकी आयु 70 साल हो गई हैं, उन्हें सम्मानित किया गया। इनमें कैलाश पुरी, पार्वती गोस्वामी, शम्भू देवी, अमृतदा देवी, सायर देवी, धापू बाई, शकुंतला देवी शामिल हैं। विद्यार्थियों में प्रियांशी गोस्वामी, हर्षिता गोस्वामी, हिना गोस्वामी, ध्वनि भारती, लक्षिता भारती, दक्ष पुरी, चेतन पुरी, त्रिलोक पुरी, राजेश भारती, पूर्णेन्दु गोस्वामी, कुणाल पुरी, हितेश पुरी शामिल हैं।

जगद्गुरु शंकराचार्य ने दिखाया लोक व आत्म कल्याण का राज मार्ग : शर्मा

जगद्गुरू शंकराचार्य की जयंती के अवसर पर मंगलवार को शान्तिपीठ संस्थान की ओर से संवाद कार्यक्रम हुआ। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए सुविवि के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने कहा कि जगद्गुरु शंकराचार्य ने लोक कल्याण और आत्म कल्याण के राज मार्ग का निर्माण किया । उन्होंने सम्पूर्ण भारत वर्ष को सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकात्मकता के सूत्र में बांधा तथा वैदिक धर्म, दर्शन और ज्ञान परम्परा को अद्वितीय ऊंचाइयां प्रदान की। द्वारका से पुरी तक पूरे भारत का पैदल भ्रमण कर जिन शारदा पीठों की स्थापना की वे अद्वेत वेदांत और भारतीय चेतना के चार स्तंभ बने । इन स्तंभों पर अविचल और स्थिर सनातन परंपरा को बाद की सदियों में आने वाले नृशंस आक्रामक भी नहीं मिटा सके । भारत का लोक और शास्त्र दोनों ही शंकराचार्य के ऋणी हैं । संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने शंकराचार्य के सार्वभौमिकता के भाव को रेखांकित करते हुए कहा कि नश्वर शरीर तक दृष्टि मत रखो, मैं ही विश्व हूं और सारा विश्व मेरे शरीर का हिस्सा है और यही भाव अज्ञान और आतंक से भरी दुनिया के लिए सुरक्षा और विकास की गारंटी है। अध्यक्षता करते हुए चिंतक मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि आध्यात्मिक विरासत पर जमी धूल को साफ़ कर उन्होंने अखिल भारतीयता को पुर्नस्थापित किया और आने वाली सदियों का मार्ग दर्शन किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, बुधवार, 26 अप्रेल 2023

आदि शंकराचार्य की जयंती मनाई

आदि शंकराचार्य ने लोक कल्याण के राज मार्ग का किया निर्माण

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. आदि शंकराचार्य के आविर्भाव दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से सद्संवाद कार्यक्रम हुआ। प्रमुख वक्ता सुखाड़िया विश्वविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ नीरज शर्मा ने कहा कि जगद्गुरु शंकराचार्य ने लोक कल्याण और आत्म कल्याण के राज मार्ग का निर्माण किया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने शंकराचार्य के सार्वभौमिकता के भाव को रेखांकित करते हुए कहा कि उन्होंने भारत को अपनी विस्मृत छवि के विराट दर्शन कराए। अध्यक्षता करते हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि आध्यात्मिक विरासत पर जमी धूल को साफ कर उन्होंने अखिल भारतीयता को पुनर्स्थापित किया और आने वाली सदियों का मार्ग दर्शन किया। डॉ ललित पाण्डेय, कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार रखे।



आदि शंकराचार्य की जयंती पर अतिथि सम्मान करते आयोजक।

उधर, आदि जगतगुरू शंकराचार्य की 2532वीं जयंती दशनाम गोस्वामी समाज की ओर से धार्मिक अनुष्ठानों के साथ मनाई गई। कार्यक्रम के प्रारंभ में मोहन गिरी ने शंकराचार्य के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर समाज के वरिष्ठजन, जिनकी आयु 70 वर्ष पूर्ण हो गई उनका सम्मान किया। सम्मानित होने वाले वरिष्ठजनों में कैलाश पुरी, पार्वती गोस्वामी, शम्भू देवी, अमृता देवी, सायरा देवी, धापूबाई, शकुंतला देवी थे। इसी क्रम में समाज के प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण व प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का मान सम्मान शॉल उपरना एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर किया गया। इस दौरान दयाराम, गजेन्द्र पुरी गोस्वामी, तरूण पुरी, हरीश पुरी आदि मौजूद रहे।

इस खबर से जुड़ा हुआ वीडियो देखें...

पातःकाल
उदयपुर, बुधवार 26 अप्रैल 2023

आदि शंकराचार्य के आविर्भाव दिवस पर सद्संवाद का आयोजन

उदयपुर (वि) । आद्य शंकराचार्य के दर्शन को आत्मसात कर हम एक विश्व और सर्वे भवन्तु सुखिन: के लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं । उक्त विचार आदि शंकराचार्य के आविर्भाव दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान द्वारा आयोजित सद्संवाद कार्य क्रम में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए मो सु विश्वविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ नीरज शर्मा ने कहा कि भगवत्पाद जगद्गुरु शंकराचार्य ने लोक कल्याण और आत्म कल्याण के राज मार्ग का निर्माण किया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने शंकराचार्य के सार्वभौमिकता के भाव को रेखांकित करते हुए कहा कि नश्वर शरीर तक दृष्टि मत रखो, मैं ही विश्व हूँ और सारा विश्व मेरे शरीर का हिस्सा है और यही भाव अज्ञान और आतंक से भरी दुनिया के लिए सुरक्षा और विकास की गारंटी है । अध्यक्षता करते हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि आध्यात्मिक विरासत पर जमी धूल को साफ कर उन्होंने अखिल भारतीयता को पुनर्स्थापित किया और आने वाली सदियों का मार्ग दर्शन किया । डॉ ललित पाण्डेय, कैलाश पालिवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किये ।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, मंगलवार, 01 मार्च, 2022

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर संगोष्ठियों और परिचर्चा में वक्ता बोले

विज्ञान का लक्ष्य लोक कल्याणकारी, लेकिन विध्वंसक है तकनीक का दुरुपयोग : त्रिवेदी

उदयपुर| राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर सोमवार को शहरभर में संगोष्ठियां, परिचर्चा हुई। स्कूलों में विज्ञान संबंधी प्रदर्शनी लगाई गई। शान्तिपीठ की 'विज्ञान सर्वत्र पूज्यते' विषय पर परिचर्चा हुई। इसमें शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि विज्ञान का मौलिक स्वरूप कल्याणकारी है, लेकिन विज्ञान-तकनीकी के दुरूपयोग ने विनाशकारी है। उन्होंने कहा कि विज्ञान सर्वत्र पूज्यते का विस्तार व्यापक और बहुआयामी है। विज्ञान चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि उपनिषदों का आह्वान है कि अस्तु विज्ञानवान भवतु। मनुष्य के समग्र कल्याण के लिए विज्ञान को अध्यात्म से अलग नहीं किया जा सकता। आज यदि विज्ञान अहित के लिए प्रस्तुत दिखाई देता है तो सिर्फ इसके लिए हमारी सामाजिक और शासन व्यवस्था की कमी है, वह नियंत्रित करे कि विज्ञान का सदुपयोग हो। प्रो. केबी जोशी ने कहा कि यह अभिक्रम भारत की वैज्ञानिक विरासत, संस्कृति, कौशल को



प्रदर्शित करने के साथ ही पृथ्वी, जलवायु, स्वास्थ्य, अंतरिक्ष, खगोल विज्ञान एवं रक्षा के क्षेत्र में आ रही चुनौतियों का सामना करने एवं समाधान खोजने के लिए आरंभ किया गया है। शिक्षा संकाय, सुविवि की विज्ञान दिवस पर शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री कार्यशाला का समापन हुआ। संकाय अध्यक्ष प्रो. एन लक्ष्मी ने विज्ञान दिवस की महत्ता बताई। प्रो. नीरज शर्मा ने संज्ञान, विज्ञान, प्रज्ञान को समझाया। सुविवि के प्राणी शास्त्र विभाग की कार्यशाला में मुख्य अतिथि डॉ. आरएस शर्मा ने विज्ञान दिवस मनाने की उपयोगिता बताई। अध्यक्षता कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह ने की। डॉ. आरएस शर्मा, प्रो. आरती प्रसाद आदि ने भी विचार रखे। एमपीयूएटी का विज्ञान सर्वत्र पूज्यते महोत्सव हुआ। मुख्य अतिथि डायरेक्टर रिसर्च प्रो. एसके शर्मा ने कहा कि भौतिक ज्ञान के अलावा वे अपने भीतर की शुद्धता पर भी ध्यान दें। कुलपति प्रो. एनएस राठौड़, अधिष्ठाता प्रो. पीके सिंह आदि मौजूद थे।

संस्कृत पूर्ण वैज्ञानिक भाषा : संस्कृत भारती की संस्कृत में विज्ञान विषय पर विचार गोष्ठी हुई। महानगर संयोजक नरेंद्र शर्मा ने साइंस इन संस्कृत नामक पुस्तक का विवेचन किया। प्रांत प्रचार प्रमुख डॉ. यज्ञ आमेटा ने कहा कि संस्कृत ही ऐसी भाषा है, जिसमें कम से कम शब्दों में वाक्य पूरे हो जाते हैं। एलियन से संवाद स्थापित करने के लिए भी नासा और खगोलीय संस्थानों ने संस्कृत के वाक्य अंतरिक्ष में भेजे हैं। दुष्यंत नागदा, डॉ हिमांशु भट्ट, रेखा सिसोदिया, डॉ. रेणु पालीवाल, मंगल जैन ने भी विचार रखे।

राजस्थान पत्रिका
बुधवार, 22 फरवरी, 2023

सत्संग- संगोष्ठी एवं सामूहिक ध्यान



उदयपुर @ पत्रिका. राम कृष्ण परमहंस की जयंती के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के सभागार में सत्संग- संगोष्ठी एवं सामूहिक ध्यान का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में पूर्व प्रशासनिक अधिकारी एवं कला धर्मी दिनेश कोठारी ने कहा कि राम कृष्ण सनातन संस्कृति की उपज और तत्कालीन समय की मांग है,उन्होंने आध्यात्मिक समन्वयक के रूप में समाज को एकता और सामाजिक समरसता की प्रामाणिक दिशा दी। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जब जब विचार सत्ता की भ्रामक स्थिति बनी सनातन संस्कृति ने राम कृष्ण परमहंस जैसे योगियों को जन्म दिया। राम कृष्ण भारत में आध्यात्मिक नवोदय के युग प्रवर्तक हैं जिनमें अनेकता में एकता का तत्व दर्शन है। मार्शल आर्ट के राज कुमार मेनारिया ने आध्यात्मिक जिज्ञासा की आवश्यकता बताते हुए कहा कि आज युवाओं को इस दिशा में प्रेरित करने की खास जरूरत है। संगोष्ठी में समाज सेवी ललित सोनी, अरुण खतुरिया , जीएल पाटीदार आदि ने विचार रखे।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, बुधवार, 22 फरवरी, 2023

रामकृष्ण परमहंस जयंती मनाई



उदयपुर| रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर शांतिपीठ ने संस्थान के सभागार में सत्संग-संगोष्ठी एवं सामूहिक ध्यान का आयोजन किया। संगोष्ठी में पूर्व प्रशासनिक अधिकारी एवं कला धर्मी दिनेश कोठारी ने कहा कि रामकृष्ण सनातन संस्कृति की उपज और तत्कालीन समय की मांग है, उन्होंने आध्यात्मिक समन्वयक के रूप में समाज को एकता और सामाजिक समरसता की प्रामाणिक दिशा दी। संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि रामकृष्ण भारत में आध्यात्मिक नवोदय के युग प्रवर्तक हैं। इस दौरान मार्शल आर्ट के राजकुमार मेनारिया, ललित सोनी, अरुण खतुरिया, जीएल पाटीदार ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, बुधवार, 22 फरवरी 2023

शांतिपीठ में सामूहिक ध्यान



ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर। राम कृष्ण परमहंस की जयंती के अवसर पर शांतिपीठ द्वारा संस्थान सभागार में सत्संग- संगोष्ठी एवं सामूहिक ध्यान का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते हुए पूर्व प्रशासनिक अधिकारी एवं कलाधर्मी दिनेश कोठारी ने कहा कि राम कृष्ण सनातन संस्कृति की उपज और तत्कालीन समय की मांग हैं। शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जब जब विचार सत्ता की भ्रामक स्थिति बनी सनातन संस्कृति ने राम कृष्ण परमहंस जैसे योगियों को जन्म दिया। इस मौके पर राजकुमार मेनारिया, ललित सोनी, अरुण खतुरिया आदि ने भी विचार व्यक्त किये। जी एल पाटीदार ने आभार व्यक्त किया।

राजस्थान पत्रिका patrik
उदयपुर, बुधवार, 01 मार्च 2023

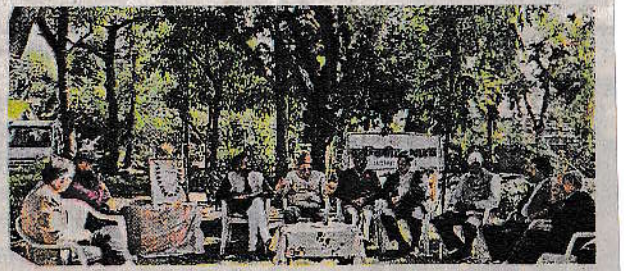
विज्ञान के साथ विवेक का भी होना चाहिए विकास

उदयपुर. शान्तिपीठ की ओर से विज्ञान और नैतिक मूल्यों के समुन्नयन पर परिचर्चा हुई। विद्यार्थियों को इस दिशा में शिक्षित- प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता बताई गई। विज्ञानविद् चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि विज्ञान निरंतर विकास कर रहा है, उसी गति से विवेक का भी विकास होना चाहिए।शान्तिपीठ के अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आधुनिक विज्ञान सूक्ष्मातिसूक्ष्म का चिंतन करते हुए उपनिषदों की चेतना के निकट पहुंच चुका है और वैज्ञानिक सत्य और नैतिक सत्य को एक दूसरे का पूरक मानते हुए आशावादी विश्व का मार्ग दिखा रहा है। एडवोकेट उमेश चन्द्र शर्मा ने वैज्ञानिक सी वी रमन के महान योगदान को रेखांकित किया। डॉ इन्द्र देव जोशी आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, रविवार, 05 फरवरी, 2023

आज राष्ट्र को कर्मयोगी चाहिए, जो सबको बढ़ने की प्रेरणा दें : कोठारी

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर



शांतिपीठ की ओर से शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर संवाद एंव पुष्पांजलि कार्यक्रम हुआ।

कार्यक्रम मं मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि 2023 बगैर धर्म के जीने का आधुनिक प्रयोग विफल हो चुका है। यह जानना आवश्यक है कि हमारे आधुनिक दायित्व कौनसे हैं। मानव सभ्यता का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस सीमा तक विज्ञान और अध्यात्म की शक्तियों में संतुलन कायम कर सकते हैं। 'आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स' खतरनाक हादसे पैदा करें इसके पहले यह जरूरी बनता है कि आधुनिक तकनीकी का उपयोग विवेक अनुसार ही हो। उन्होंने कहा कि आज राष्ट्र को ऐसे चरित्रवान, विचारशील और कर्मयोगियों की आवश्यकता है जो देश को सावधान होकर आगे बढ़ने को प्रेरित कर सकें। सुविवि के भौतिक शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. केबी जोशी ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के क्षेत्र में आसन्न संकटों से बचने के लिए डॉ. कोठारी का दृष्टिकोण प्रासंगिक है। शान्तिपीठ संस्थान के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अहिंसा और अमन के उपासक डॉ. कोठारी रक्षा विज्ञान के जनक भी थे और जब राष्ट्रहित का कर्तव्य सामने खड़ा हुँआ तो उन्होंने अपनी मेधा और तपस्या से प्राथमिकता के साथ राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित की। एमपीयूएटी के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि विज्ञान व अध्यात्म विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक है। पूर्व कलेक्टर सुमति बोहरा ने कहा कि महात्मा गांधी की मान्यता थी कि मशीन को मानव का दास बना रहना चाहिए मालिक नहीं। उन्होंने चिंता व्यक्त की कि आज साइबर सुरक्षा पर प्रश्न चिन्ह खड़े हो रहे हैं। इस दौरान उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा, पुराविद् डॉ. ललित पांडेय, वरिष्ठ नगर नियोजक सतीश शर्मा, पूर्व वन संरक्षक ऊंकारलाल मेनारिया, रोशन देपुरा, अंतरराष्ट्रीय कोच कैलाश पालीवाल ने भी विचार रखे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 5 फरवरी, 2023

संवाद एवं पुष्पांजलि कार्यक्रम

आधुनिक तकनीकी का उपयोग विवेक अनुपूरक हो



पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में संवाद एवं पुष्पाजंलि कार्यक्रम हुआ। अध्यक्षता करते हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि आज राष्ट्र को ऐसे चरित्रवान, विचारशील और कर्मयोगियों की आवश्यकता है, जो देश को सावधान होकर आगे बढ़ने को प्रेरित कर सकें।

सुविवि के भौतिक शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. के.बी.जोशी ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में आसन्न संकटों से बचने के लिए डॉ. कोठारी का दृष्टिकोण प्रासंगिक है। शान्तिपीठ संस्थान के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अहिंसा और अमन के उपासक डॉ. कोठारी रक्षा विज्ञान के जनक भी थे और जब राष्ट्रहित का कर्तव्य सामने खडा हुआ तो उन्होंने अपनी मेधा और तपस्या से प्राथमिकता के साथ राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित की।

महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि विज्ञान व अध्यात्म विरोधी नहीं अपितु ये एक-दूसरे के पूरक है। संगोष्ठी में सुमतिबाल बोहरा, उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा ने ,पुराविद् डॉ. ललित पाण्डेय, वरिष्ठ नगर नियोजक सतीश शर्मा, पूर्व वन संरक्षक ऊंकारलाल मेनारिया, रोशन देपुरा, कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार रखे।

प्रातःकाल
उदयपुर, रविवार 5 फरवरी 2023

डॉ. दौलतसिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर संवाद कार्यक्रम

आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स के संकटों से बचने में डॉ. कोठारी का दृष्टिकोण प्रासंगिक



उदयपुर (वि.)। बगैर धर्म के जीने का आधुनिक प्रयोग विफल हो चुका है। यह जानना आवश्यक है कि हमारे उत्तर आधुनिक दायित्व कौनसे हैं। मानव सभ्यता का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस सीमा तक विज्ञान और अध्यात्म की शक्तियों में संतुलन कायम कर सकते है। विज्ञान व तकनिकी महत्वपूर्ण अवश्य हैं किन्तु यह बहुत आवश्यक है कि इसका समन्वय मनुष्य के जीवन, संस्कृति और मान्यताओं से हो। 'आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स' खतरनाक हादसे पैदा करें इसके पहले यह जरूरी बनता है कि आधुनिक तकनिकी का उपयोग विवेक अनुपूरक हो। उक्त विचार आज प्रख्यात वैज्ञानिक-शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्तवावधान में आयोजित संवाद एवं पुष्पाजंलि कार्यक्रम में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये।

संवाद-संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि आज राष्ट्र को ऐसे चरित्रवान, विचारशील और कर्मयोगियों की आवश्यकता है जो देश को सावधान होकर आगे बढ़ने को प्रेरित कर सकें। बदलते वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्र के मनोबल को निरंतर उच्च बनाये रखने की आज प्राथमिक आवश्यकता है। प्रो. के.बी.जोशी ने कहा कि 'आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स' के क्षेत्र में आसन्न संकटों से बचने के लिए डॉ. कोठारी का दृष्टिकोण प्रासंगिक है। विवेक इंसान की उपज है और इसी से निर्देशित होकर शांति की दिशा में चलना संभव है।

शान्तिपीठ संस्थान के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अहिंसा और अमन के उपासक डॉ. कोठारी रक्षा विज्ञान के जनक भी थे और जब राष्ट्रहित का कर्तव्य सामने खड़ा हुआ तो उन्होंने अपनी मेधा और तपस्या से प्राथमिकता के साथ राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित की। उन्होंने समावेशी विकास और विश्व शांति के लिए उच्च शिक्षा संस्थानो में विज्ञान और अध्यात्म में अंतरसम्बन्धों के केन्द्र विकसित करने की आवश्यकता बतायी जिससे विश्व समाज में अहिंसा का वातावरण निर्मित हो सके। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि विज्ञान व अध्यात्म विरोधी नहीं अपितु ये एक-दूसरे के पूरक है। उन्होनें कहा कि डॉ. कोठारी की शिक्षा नीति उतनी ही प्रासंगिक है और नई शिक्षा नीति का मूल स्वरूप भी यही है। पूर्व जिला कलक्टर सुमति बाल बोहरा ने कहा कि महात्मा गांधी की मान्यता थी कि मशीन को मानव का दास बना रहना चाहिए मालिक नहीं। उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा ने 'आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स' से सावचेत करते हुए कई उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि विकास विनाश का पर्याय न बने। पुराविद् डॉ. ललित पाण्डेय और वरिष्ठ नगर नियोजक सतीश शर्मा ने कहा कि भारत की विदेश नीति विश्व का आदर्श है जिसमें अहिंसा और मानव गरीमा की सैद्धान्तिक और व्यावहारिक प्राथमिकताएँ हैं। संवाद में पूर्व वन संरक्षक ऊंकारलाल मेनारिया, रोशन देपुरा, अंतर्राष्ट्रीय कोच कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ में अतिथियों ने डॉ. कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण किया तथा पुष्पाजंलि अर्पित की।

दैनिक नवज्योति

उदयपुर, रविवार, 5 फरवरी 2023

'बगैर धर्म के जीने का आधुनिक प्रयोग विफल'



ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। बगैर धर्म के जीने का आधुनिक प्रयोग विफल हो चुका है। यह जानना आवश्यक है कि हमारे उत्तर आधुनिक दायित्व कौनसे हैं। मानव सभ्यता का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस सीमा तक विज्ञान और अध्यात्म की शक्तियों में संतुलन कायम कर सकते हैं। यह बात प्रख्यात वैज्ञानिक- शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि के अवसर पर शांतिपीठ के तत्वावधान में आयोजित संवाद एवं पुष्पाजंलि कार्यक्रम में वक्ताओं ने कही। अध्यक्षता चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने की। सुखाड़िया विश्वविद्यालय के भौतिक शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. केबी जोशी ने कहा कि 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' के क्षेत्र में आसन्न संकटों से बचने के लिए डॉ. कोठारी का दृष्टिकोण प्रासंगिक है। इस मौके पर शांतिपीठ संस्थान के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, एमपीयूएटी के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा, पूर्व जिला कलक्टर सुमति बाल बोहरा, उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेश चंद्र शर्मा, पुराविद् डॉ. ललित पाण्डेय, वरिष्ठ नगर नियोजक सतीश शर्मा, पूर्व वन संरक्षक ऊंकारलाल मेनारिया, रोशन देपुरा, अंतरराष्ट्रीय कोच कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए। अतिथियों ने डॉ. कोठारी को पुष्पाजंलि अर्पित की।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, सोमवार, 05 दिसंबर 2022

आयोजन

गीता जयंती पर सत्संग व संगोष्ठी

गीता आध्यात्मिक मार्गों का सारांश





उत्साह से मनाई गीता जयंती

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. गीता संसार के आध्यात्मिक मार्गों का सारांश है। भारतीय वांड्गमय का सार उपनिषदों में और उपनिषदों का सार श्रीमद् भगवदगीता में निरूपित है। जिसे आत्मसात कर विश्व कुटुम्ब के वेद वाक्य को चरितार्थ किया जा सकता है। उक्त विचार रविवार को गीता जयंती के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान की ओर से संस्थान परिसर में आयोजित सत्संग संगोष्ठी हुए वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता एमएलएसयू में संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने कर्म योग, ज्ञान योग और भक्ति योग की विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा कि ज्ञान में ही सत्य और आनंद है और यही धर्म की प्रतिष्ठा करता है। उन्होंने कहा कि सारे उपनिषदों को गायें मानले तो ग्वाला श्री कृष्ण हैं।

विशिष्ट अतिथि राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि गीता को समझने के लिए कृष्ण की भूमिका को समझना होगा जो अध्यात्म का सारस्वत मार्ग है। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए राम कृष्ण परमहंस भावधारा से जुड़े हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि गीता जीवन के परमोत्कर्ष का विज्ञान है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता काल और परिस्थिति को समझने का सामर्थ्य प्रदान करती है, आवश्यकता है युवा वर्ग गीता को आत्मसात कर विवेकानंद जैसे चरित्र का गठन करें।

राजनीति शास्त्र के प्रो. आरबी कुमार ने कहा कि यदि संबंधित पक्षों को समझाइश कर भारत वैश्विक खाद्यान्न संकट और युक्रेन युद्ध का सर्व सम्मत समाधान निकालने में सफल होता है तो यह मेजबानी की बड़ी उपलब्धि होगी। पुराविद् डॉ. ललित पाण्डेय ने कहा कि गीता निरंतर प्रवाहमान दर्शन है और समस्त जगत के लिए आवश्यक भी । राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश राम सिंह झाला ने संगोष्ठी का शुभारंभ किया। मार्शल आर्ट के राज कुमार मेनारिया, पं. जितेन्द्र आचार्य, एडवोकेट प्रथमेश्वर सिंह, कमल सिंह, एड. धर्मराज आदि ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन मनोज गंधर्व ने किया।

उदयपुर. सूर्येश्वर महादेव मंदिर तितरड़ी में रविवार को गीता जयंती उत्साह से मनाई गई। गीताव्रती संतोष दीदी गीता के 5 अध्यायों का पाठ किया। इस मौके पर गीता प्रश्न मंजूषा प्रतियोगिता भी हुई। गीता ज्ञानपति की प्रतियोगिता में भक्तों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। गीता के 18 अध्याय के रूप में 18 दिनों से अश्वत्थ के समक्ष आरती उतारी और पीपल के समक्ष दीपदान किया गया। संतोष दीदी ने कहा कि गीता का पूरा पाठ कर सकें तो अच्छा है। समयाभाव में कम से कम एक अध्याय का पाठ करना चाहिए। यह भी नहीं हो सके तो एक श्लोक का पाठ प्रतिदिन करना चाहिए। केंद्रीय विद्यालय एकलिंगगढ़ के प्राचार्य अरुण कुमार, गीता परिवार के एसएन शर्मा और शिव शंकर गौशाला समिति के पदाधिकारी मौजूद थे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 5 दिसंबर 2022

गीता संसार के आध्यात्मिक मार्गों का सारांश



ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। गीता संसार के आध्यात्मिक मार्गों का सारांश है । भारतीय वांड्गमय का सार उपनिषदों में और उपनिषदों का सार श्रीमद् भगवदगीता में में निरूपित है जिसे आत्मसात कर विश्व कुटुम्ब के वेद वाक्य को चरितार्थ किया जा सकता है। आवश्यकता है विवेक प्रधान जीवन शैली की जो सत्य और असत्य तथा जड़ और चेतन में भेद कर सके। असल में गीता जीवन का मंगल गान है। यह विचार गीता जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान परिसर में आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए । प्रमुख वक्ता सुविवि संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ नीरज शर्मा ने कर्म योग, ज्ञान योग और भक्ति योग की विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा कि ज्ञान में ही सत्य और आनंद है और यही धर्म की प्रतिष्ठा करता है। विशिष्ट अतिथि राजस्थान विद्यापीठ कुलपति प्रो एस एस सारंगदेवोत ने कहा कि गीता को समझने के लिए कृष्ण की भूमिका को समझना होगा जो अध्यात्म का सारस्वत मार्ग है जिस पर चल कर मानव मात्र अपना कल्याण कर सकता है । अध्यक्षता करते हुए राम कृष्ण परमहंस भावधारा से जुड़े चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि गीता जीवन के परमोत्कर्ष का विज्ञान है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता काल और परिस्थिति को समझने का सामर्थ्य प्रदान करती है, आवश्यकता है युवा वर्ग गीता को आत्मसात कर विवेकानंद जैसे चरित्र का गठन करें जिससे वैश्विक संकटों का शमन हो और विश्व शान्ति का मार्ग सुनिश्चित हो सके।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, मंगलवार, 01 मार्च, 2022

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया : विज्ञान सर्वत्र पूज्यते महोत्सव का समापन

विज्ञान की नई तकनीकों पर काम करना शुरू करें विद्यार्थी

पत्रिका
ग्राउंड रिपोर्ट

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर विभिन्न शिक्षण संस्थाओं व सामाजिक संस्थाओं की ओर से कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसी के तहत महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो नरेंद्र सिंह राठौड़ के निर्देशन में सात दिवसीय संस्कृति मंत्रालय एवं विज्ञान प्रसार भारत सरकार द्वारा प्रायोजित विज्ञान सर्वत्र पूज्यते महोत्सव का समापन हुआ। समापन समारोह में मुख्य अतिथि डायरेक्टर रिसर्च प्रो एस के शर्मा ने कहा कि विद्यार्थी विज्ञान की नई तकनीकों पर कार्य करना शुरू करें क्योंकि वे भविष्य की प्रौद्योगिकी बनने वाली है। इधर, कार्यालय अतिरिक्त निदेशक विधि विज्ञान प्रयोगशाला के फोरेंसिक लैब में फोरेंसिक साइंस क्विज, वैज्ञानिक शब्दावली ज्ञान, विज्ञान की भाषा में कविता प्रतियोगिता आयोजित हुई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संजय कुमार मालवीय, प्रिंसिपल मजिस्ट्रेट,किशोर न्याय बोर्ड,उदयपुर व अतिरिक्त निदेशक डॉ. परमजीत सिंह थे। सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

विद्या भवन रुरल इंस्टीट्यूट के वनस्पति विभाग द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। जिसमें विस्तार व्याख्यान, मौखिक प्रस्तुतीकरण, पोस्टर एवं चार्ट प्रतियोगिता आयोजित हुई। शान्तिपीठ द्वारा विज्ञान सर्वत्र पूज्यतेद्य विषयक परिचर्चा आयोजित की गई। अध्यक्षता करते हुए विज्ञान चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि मनुष्य के समग्र कल्याण हेतु विज्ञान को अध्यात्म से अलग नहीं किया जा सकता। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि विज्ञान का मौलिक स्वरूप कल्याणकारी है। भारत की वैज्ञानिक विरासत का लक्ष्य सर्वकल्याण है, प्रकृति और पुरूष के शाश्वत सम्बन्धों की खोज है। आलोक सी.सै.स्कूल, सीडलिंग स्कूल, विद्याभवन बेसिक, विद्याभवन गांधीयन इंस्टीट्यूट, भूपाल नोब्लस पब्लिक स्कूल आदि में भी विज्ञान दिवस मनाया गया।



एमपीयूएटी में विज्ञानसर्वत्र पूज्यते कार्यक्रम के तहत मौजूद अतिथि। पत्रिका

राजस्थान पत्रिका patr
उदयपुर, गुरुवार, 07 जुलाई, 2022

शिक्षाविद् व वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर पुष्पांजलि कार्यक्रम

अहिंसा और सत्य के आग्रही थे डॉ. कोठारी

उदयपुर. शिक्षाविद् व वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से ज्ञान-विज्ञान के अभाज्य समीकरण के विस्तार की आवश्यकता विषयक स्मृति संगोष्ठी आयोजित की गई।

मुख्य वक्ता सुविवि में संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने ब्रह्म को सर्वव्यापी बताते हुए ज्ञान, प्रज्ञान, संज्ञान, विज्ञान और ज्ञान की विस्तृत व्याख्या की। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हृदय में करूणा, प्रेम व निराभिमान के आदर्शों से युक्त डॉ. कोठारी अपने जीवन में अहिंसा और सत्य के आग्रही थे किन्तु साथ ही राष्ट्रीय मूल्यों और अस्मिता के लिए वे भारतीय प्रतिरक्षा विज्ञान के जनक भी थे। मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि डॉ. कोठारी का जीवन 21वीं शताब्दी का संदेश हैं। उन्होंने अधिक उपभोग, अधिक उत्पादन और अधिक प्रदूषण की अमर्यादित जीवन शैली पर गंभीर चिंता व्यक्त की। पूर्व बारां कलेक्टर सुमति लाल बोहरा, डॉ. बी. आर. कुमार, प्राचार्या डॉ. रचना तेलंग, प्रो. के. बी. जोशी, भरत कुमावत आदि ने विचार रखे।


सुखाड़िया विवि में डॉ. डीएस कोठारी को पुष्पांजलि देते हुए।

इधर, वैज्ञानिक डॉ. डी. एस.कोठारी की जयंती के उपलक्ष में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के बायो टेक्नालॉजी व माइक्रोबायोलॉजी विभाग में बुधवार को पुष्पांजलि सहित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यवाहक कुलपति प्रो.आई.वी. त्रिवेदी, कार्यवाहक डीन विज्ञान महाविद्यालय प्रो. बी.आर.बामनिया एवं विज्ञान समिति के गणमान्य पदाधिकारियों ने विभाग के कैंपस गार्डन में स्थापित डॉ. कोठारी की मूर्ति पर माल्यार्पण किया। कुलपति प्रो त्रिवेदी ने भी विचार रखे।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 7 जुलाई, 2022

युवाओं से भारतीय नैसर्गिक संस्कृति की विश्वव्यापी चेतना बनने का आह्वान

महानगर संवाददाता

उदयपुर। परब्रह्म सर्वव्यापी है। सारा संसार ही ब्रह्म का प्रथम अवतार है। जरूरत है ज्ञान-विज्ञान, परा-अपरा, आत्मा और परमात्मा के अद्वैत को आत्मसात करने की। अध्यात्म और विज्ञान दोनों का लक्ष्य सत्य की खोज है। गत शताब्दी में आधुनिक ऋषि डॉ. दौलत सिंह कोठारी ने इस लक्ष्य को साधते हुए राष्ट्र की गरिमा और उत्कर्ष के लिए शस्त्र और शास्त्र की आवश्यकता के आदर्श प्रस्तुत किए। उन्होंने भारतीय संस्कृति के वांग्मय की बुनियाद पर अपने आचरण से 21वीं शताब्दी का संदेश दिया।यह विचार प्रख्यात शिक्षाविद्, वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से 'ज्ञान-विज्ञान के अभाज्य समीकरण के विस्तार की आवश्यकता' विषयक हुई स्मृति संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए।

मुख्य वक्ता सुविवि में संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने ब्रह्म



को सर्वव्यापी बताते हुए ज्ञान, प्रज्ञान, संज्ञान, विज्ञान और ज्ञान की विस्तृत व्याख्या की और कहा कि विज्ञान की प्रयोगशाला हमारा जीवन है। जिसमें प्रेम ऐसा तत्व है जो परा और अपरा को जोड़ता है। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हृदय में करूणा, प्रेम व निराभिमान के आदर्शों से युक्त डॉ. कोठारी असल में अपने जीवन में अहिंसा और सत्य के आग्रही थे किन्तु साथ ही राष्ट्रीय मूल्यों और अस्मिता के लिए वे भारतीय प्रतिरक्षा विज्ञान के जनक भी थे। त्रिवेदी ने युवा समुदाय को आह्वान किया कि वे डॉ. कोठारी की प्रेरणा लेकर आगे आएं। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए चिंतक व वैज्ञानिक मोहनसिंह कोठारी ने सादगी और उच्च विचारों को रेखांकित करते हुए कहा कि डॉ. कोठारी का जीवन 21वीं शताब्दी का संदेश है। उन्होंने अधिक उपभोग, अधिक उत्पादन और अधिक प्रदूषण की अमर्यादित जीवन शैली पर गंभीर चिंता व्यक्त की। पूर्व बाराँ कलेक्टर सुमतिलाल बोहरा ने कहा कि डॉ. कोठारी ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के कारण पूरी दुनिया में मूल्यपरक भारतीय संस्कृति की छवि को नया आयाम दिया।

डॉ. बी.आर. कुमार ने बीते दिनों नगर में हिसंक घटना पर क्षोभ प्रकट करते हुए इसे मेवाड़ के आदर्शों और डॉ. कोठारी के प्रेरणा के विपरीत कृत्य और विश्व में हमारी सौहार्द्र की छवि को बिगाड़ने वाला बताया। राजसमंद महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्या डॉ. रचना तैलंग ने शिक्षा में गुरूकुल पद्धति के समावेश की आवश्यकता बताई। सुविवि के प्रो. के. बी. जोशी ने कहा डॉ. कोठारी वैज्ञानिकों में संत थे और संतों में वैज्ञानिक। एडवोकेट भरत कुमावत ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक भास्कर गुरुवार 07 जुलाई, 2022

दैनिक भास्कर

ज्ञान-विज्ञान के अभाज्य समीकरण के विस्तार की आवश्यकता पर संगोष्ठी



उदयपुर। गत शताब्दी में आधुनिक ऋषि डॉ. दौलत सिंह कोठारी ने राष्ट्र की गरिमा और उत्कर्ष के लिए शस्त्र और शास्त्र दोनों की आवश्यकता के आदर्श प्रस्तुत किए। उन्होंनें भारतीय संस्कृति के वांग्मय की बुनियाद पर अपने आचरण से 21वीं शताब्दी का संदेश दिया। यह बात वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान की मेजबानी में ज्ञान-विज्ञान के अभाज्य समीकरण के विस्तार की आवश्यकता पर हुई संगोष्ठी में वक्ताओं ने रखी। प्रो. नीरज शर्मा ने ब्रह्म को सर्वव्यापी बताते हुए ज्ञान, प्रज्ञान, संज्ञान, विज्ञान और ज्ञान की विस्तृत व्याख्या की। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा हृदय में करुणा, प्रेम व निराभिमान के आदर्शों से युक्त डॉ. कोठारी असल में अपने जीवन में अहिंसा और सत्य के आग्रही थे।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 7 मई, 2022

भगवान शंकराचार्य भारतीय राष्ट्रीय अस्मिता, सांस्कृति एकता के जनक, उद्धारक : प्रो. शर्मा

महानगर संवाददाता

उदयपुर। भगवान शंकराचार्य भारतीय राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृति एकता के जनक और उद्धारक हैं। आचार्य शंकर ने जिस अभेद और एकता का दर्शन प्रदान किया, वह सनातन धर्म के आध्यात्मिक समाजवाद का मूल आधार है जिस पर चलकर समरसता पूर्ण समतामूलक समाज का निर्माण हो सकता है। ऐसा संगठित और समर्थ समाज ही सक्षम भारत का निर्माण कर सकता है।

यह विचार आदि शंकराचार्य के जन्मोत्सव पर शांतिपीठ संस्थान द्वारा आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए सुविवि में संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि देश के चारों कोनों में चार पीठों की स्थापना करते हुए शंकराचार्य ने सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक एकीकरण का महनीय कार्य किया। सम्पूर्ण भारत में न केवल विभिन्न मत-सम्प्रदायों, संतों और भक्तों की



परम्पराओं के साथ ही तुलसी, कबीर, नानक, दादू आदि विद्ववत्त संतों और लोक संतों के विचार शंकर के दर्शन से अनुप्राणित हैं, अपितु सत्य, अहिंसा, सद्भाव और स्वराज के विचारों का मूलाधार भी आचार्य शंकर का दर्शन है। अध्यक्षीय उद्बोधन में पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि आधुनिक इतिहास में प्रथम राष्ट्र निर्माता आदि शंकराचार्य हैं। वे ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग से पूर्ण सिद्ध राष्ट्र के पुनरनिर्माण के महामंत्र हैं। स्वामी विवेकानन्द ने आचार्य शंकर के मार्ग का अनुसरण कर भारतीय अध्यात्म से विश्वभर को आलोकित किया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शंकराचार्य ने भारतीय संस्कृति को अनेक विकृत्तियों व अज्ञान से मुक्त करते हुए वैदिक ज्ञान-विज्ञान को उद्भासित व विशुद्ध कर वैदिक वांग्मय को व्यवहारिक, दार्शनिक एवं वैज्ञानिक धरातल पर समृद्ध किया। आचार्य शंकर का अद्वैत वैदान्त दर्शन न केवल आधुनिक विज्ञान की नई प्रेरणा है बल्कि विश्व कुटुम्ब की अवधारणा को मूर्त रूप दे सकता है तथा विश्व का भविष्य सुनिश्चित कर सकता है। आवश्यकता है देश विदेश के शिक्षण संस्थान आचार्य शंकर के दर्शन को आत्मसात करने की। इस अवसर पर सेवानिवृत्त जिला कलक्टर बारां सुमतिलाल बोहरा ने कहा कि आचार्य शंकर के विचार से वर्तमान में राष्ट्रीय एकता के समक्ष आ रही अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर नये राष्ट्र निर्माण के मिशन को पूर्ण किया जा सकता है। जरूरत है तो युवा वर्ग को ज्ञान विज्ञान की विरासत से जोड़ने की। एडवोकेट भरत कुमावत, भरत सोनी आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर उदयपुर, शनिवार, 7 मई, 2022
04

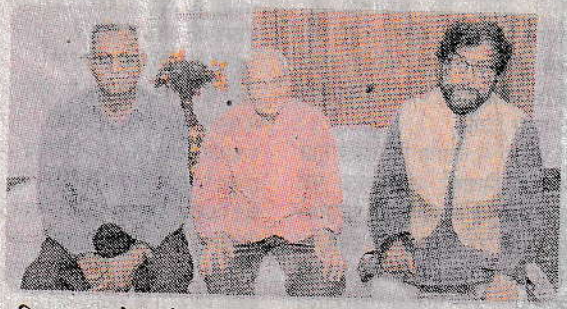
आदि शंकराचार्य के जन्मोत्सव पर सत्संग



उदयपुर | भगवान शंकराचार्य भारतीय राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृति एकता के जनक और उद्धारक हैं। यह विचार आदि शंकराचार्य के जन्मोत्सव पर शांति पीठ संस्थान की मेजबानी में हुई सत्संग-संगोष्ठी में प्रमुख वक्ता सुविवि के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा देश के चारों कोनों में चार पीठों की स्थापना करते हुए शंकराचार्य ने सांस्कृतिक व आध्यात्मिक एकीकरण का कार्य किया। शांति पीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शंकराचार्य भारतीय संस्कृति को अनेक विकृतियों व अज्ञान से मुक्त करते हुए वैदिक ज्ञान-विज्ञान को उद्भासित व विशुद्ध कर वैदिक वांग्मय को व्यवहारिक, दार्शनिक एवं वैज्ञानिक धरातल पर समृद्ध किया।

राजस्थान पत्रिका patr
उदयपुर, शनिवार, 07 मई, 2022

आदि शंकराचार्य ने किया सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक एकीकरण



पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. आदि शंकराचार्य के जन्मोत्सव पर शांतिपीठ संस्थान की ओर से सत्संग-संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें प्रमुख वक्ता मो. सु. वि. में संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि देश के चारों कोनों में चार पीठों की स्थापना करते हुए शंकराचार्य ने सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक एकीकरण का सराहनीय कार्य किया। सम्पूर्ण भारत में न केवल विभिन्न मत-सम्प्रदायों, संतों और भक्तों की परम्पराओं के साथ ही तुलसी, कबीर, नानक, दादू आदि विद्ववत्संतों और लोक संतों के विचार शंकर के दर्शन से अनुप्राणित हैं, अपितु सत्य, अहिंसा, सद्भाव और स्वराज के विचारों का मूलाधार भी आचार्य शंकर का दर्शन है। अध्यक्षता करते हुए पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि आधुनिक इतिहास में प्रथम राष्ट्र निर्माता आदि शंकराचार्य हैं। वे ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग से पूर्ण सिद्ध राष्ट्र के पुनरनिर्माण के महामंत्र हैं। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शंकराचार्य भारतीय संस्कृति को अनेक विकृतियों व अज्ञान से मुक्त करते हुए वैदिक ज्ञान-विज्ञान को उद्भासित व विशुद्ध कर वैदिक वांग्मय को व्यावहारिक, दार्शनिक एवं वैज्ञानिक धरातल पर समृद्ध किया। गोष्ठी में पूर्व जिला कलक्टर, बारां सुमति लाल बोहरा, एडवोकेट भरत कुमावत, भरत सोनी आदि ने भी विचार रखे।

विस्तृत खबरों और फोटोग्राफ्स के लिए देखें...
www.patrika.com

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शनिवार, 7 मई 2022

उपस्थित थे।

शंकराचार्य राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक एकता के जनक : प्रो. शर्मा



ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर। भगवान शंकराचार्य भारतीय राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक एकता के जनक और उद्धारक हैं। उन्होंने जिस अभेद और एकता का दर्शन प्रदान किया वह सनातन धर्म के आध्यात्मिक समाजवाद का मूल आधार है, जिस पर चलकर समरसता पूर्ण समतामूलक समाज का निर्माण हो सकता है। यह विचार आदि शंकराचार्य के जन्मोत्सव पर शांतिपीठ संस्थान द्वारा आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में प्रमुख वक्ता मो. सु. वि. में संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने व्यक्त किए। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि आधुनिक इतिहास में प्रथम राष्ट्र निर्माता आदि शंकराचार्य हैं। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आज आवश्यकता है कि देश विदेश के शिक्षण संस्थान आचार्य शंकराचार्य के दर्शन को आत्मसात करें। इस मौके पर पूर्व जिला कलक्टर, बारां सुमति लाल बोहरा, एडवोकेट भरत कुमावत, भरत सोनी आदि ने भी विचार रखे।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, शनिवार, 19 फरवरी, 2022

जयंती समारोह • शान्तिपीठ की चिंतन गोष्ठी में बोले वक्ता

भारतीय स्वाभिमान व आध्यात्मिक पुनर्जागरण के युग नायक थे समर्थ गुरु रामकृष्ण : कोठारी

कम्युनिटी रिपोर्टर | उदयपुर

रामकृष्ण परमहंस जयंती पर शुक्रवार को शान्तिपीठ की ओर से संस्थान परिसर में परमहंस श्रीराम कृष्ण की चेतना के विविध आयाम विषय पर चिंतन गोष्ठी हुई। इसमें पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि परमहंस श्रीराम कृष्ण आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और भारतीय स्वाभिमान के पुनर्जागरण के युग नायक थे, जिन्होंने तत्कालीन समय में नाना प्रकार की विषमताओं व विसंगतियों से समाज को मुक्त कराया और देश के स्वाभिमान को जगाने का कार्य किया। मुख्य वक्ता सुविवि के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने कहा कि जो संस्कारित करे, वो शिक्षा है। यह नित्य को कभी विस्मृत नहीं होने देती और स्वरूप का ज्ञान कराती है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि रामकृष्ण भारतीय मनीषा के मौलिक दर्शन हैं। संत शास्त्र की सरल अभिव्यक्ति है, जिसकी पहुंच हर संवेदनशील व्यक्ति तक होती है। आचार्य कुल राजस्थान की प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रचना तैलंग, डॉ. कमल सिंह राठौड़, जीपी सोनी, भरत कुमावत, रोशन देपुरा ने भी विचार रखे।



शान्तिपीठ परिसर में रामकृष्ण परमहंस जयंती पर चिंतन गोष्ठी हुई।

राजस्थान पत्रिका patrik
उदयपुर, शनिवार, 19 फरवरी, 2022

पुनर्जागरण के युग नायक थे परमहंस



उदयपुर. राम कृष्ण परमहंस की जयंती के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा संस्थान परिसर में परमहंस श्रीराम कृष्ण की चेतना के विविध आयाम विषयक चिंतन गोष्ठी आयोजित की गई। पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि परमहंस श्रीराम कृष्ण आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और भारतीय स्वाभिमान के पुनर्जागरण के युग नायक थे जिन्होंने तत्कालीन समय में नाना प्रकार की विषमताओं व विसंगतियों से समाज को मुक्त कराया और देश के स्वाभिमान को जगाने का कार्य किया । मुख्य वक्ता मोहनलाल सुखाड़िया विवि में संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ नीरज शर्मा ने कहा कि परमहंस ने परम तत्व को मानव समुदाय में जीकर चरितार्थ किया । जो संस्कारित करे वो शिक्षा है,जो नित्य को कभी विस्मृत नहीं होने देती और स्वरूप का ज्ञान कराती है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि राम कृष्ण भारतीय मनीषा का मौलिक दर्शन हैं । संत शास्त्र की सरल अभिव्यक्ति है जिसकी पहुंच हर संवेदनशील व्यक्ति तक होती है । गोष्ठी में डॉ रचना तैलंग, डॉ कमल सिंह राठौड़, जी पी सोनी, भरत कुमावत, रोशन देपुरा आदि ने भी विचार रखे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शनिवार, 19 फरवरी 2022

स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने देश के स्वाभिमान को जगाने का कार्य किया



ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर। स्वामी रामकृष्ण परमहंस आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और भारतीय स्वाभिमान के पुनर्जागरण के युग नायक थे। उन्होंने नाना प्रकार की विषमताओं व विसंगतियों से समाज को मुक्त कराया और देश के स्वाभिमान को जगाने का कार्य किया। यह बात श्रीराम कृष्ण परमहंस की जयंती के अवसर पर शांतिपीठ की ओर से आयोजित चिंतन गोष्ठी में पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कही। मुख्य वक्ता एमएलएसयू के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने कहा कि परमहंस ने परम तत्व को मानव समुदाय में जीकर चरितार्थ किया। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी कहा कि श्री रामकृष्ण भारतीय मनीषा का मौलिक दर्शन हैं। आचार्य कुल राजस्थान की प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रचना तैलंग ने युवा वर्ग को संस्कारित किए जाने के लिए गुरुकुल प्रणाली को पुर्नस्थापित किए जाने पर बल दिया। डॉ. कमल सिंह राठौड़, जीपी सोनी, एडवोकेट भरत कुमावत, रोशन देपुरा ने भी विचार व्यक्त किए। प्रतिभागियों ने श्रीरामकृष्ण परमहंस को पुष्पांजलि अर्पित की।

प्रातःकाल
उदयपुर, शनिवार 19 फरवरी 2022 5

भारतीय स्वाभिमान के पुनर्जागरण के युग नायक थे राम कृष्ण परमहंस



उदयपुर। राम कृष्ण परमहंस आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और भारतीय स्वाभिमान के पुनर्जागरण के युग नायक थे जिन्होंने तत्कालीन समय में नाना प्रकार की विषमताओं व विसंगतियों से समाज को मुक्त कराया और देश के स्वाभिमान को जगाने का कार्य किया। यह विचार राम कृष्ण परमहंस की जयंती पर शान्तिपीठ की ओर से संस्थान परिसर में परमहंस श्री राम कृष्ण की चेतना के विविध आयाम विषयक चिंतन गोष्ठी में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि युग नायकों ने समाज को समाधान की दिशा दी है । मुख्य वक्ता सुविवि के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ नीरज शर्मा ने कहा कि परमहंस ने परम तत्व को मानव समुदाय में जी कर चरितार्थ किया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि राम कृष्ण भारतीय मनीषा का मौलिक दर्शन हैं। संत शास्त्र की सरल अभिव्यक्ति है जिसकी पहुंच हर संवेदनशील व्यक्ति तक होती है । उन्होंने कहा कि राम कृष्ण की चेतना के हर आयाम पर व्यावहारिक सत्य और परम तत्व का सुंदर समन्वय है। आचार्य कुल राजस्थान की प्रदेश अध्यक्ष डॉ रचना तैलंग ने युवा वर्ग को संस्कारित किए जाने हेतु गुरूकुल प्रणाली को पुनर्स्थापित किए जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। बी एन विश्व विद्यालय के डॉ कमल सिंह राठौड़, सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता जी.पी सोनी, श्रीमती शर्मा, एडवोकेट भरत कुमावत, रोशन देपुरा ने भी विचार व्यक्त किए। प्रारंभ में अतिथियों द्वारा रामकृष्ण की तस्वीर पर माल्यार्पण किया गया।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, शनिवार 5 फरवरी, 2022

श्रद्धा संवाद : देश को डॉ. कोठारी जैसे वैज्ञानिक चाहिए, जो मूल्यों के साथ विकास की राह बताएं



उदयपुर | आज डॉ. डी.एस. कोठारी जैसे वैज्ञानिक तत्व दर्शियों की आवश्यकता है, जो राष्ट्र निर्माण के साथ ही मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे। यह विचार डॉ. दौलतसिंह कोठारी की 29वीं पुण्यतिथि पर शांतिपीठ संस्थान की मेजबानी में हुए श्रद्धा-संवाद में वक्ताओं ने रखे। प्रमुख अतिथि महापौर गोविंद सिंह टांक ने डॉ. कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण किया। अध्यक्षता करते हुए पं. जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा कि डॉ. कोठारी ऐसे समाज सृजन के पक्षधर थे, जिसमें सीखने और स्वाध्याय की सतत प्रक्रिया को स्वीकारा जाए। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि भारत प्रतिरक्षा विज्ञान के जनक डॉ. कोठारी का लक्ष्य राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित करना था, युद्ध नहीं।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शनिवार, 05 फरवरी, 2022

डॉ. डीएस कोठारी की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि व संवाद कार्यक्रम

शिक्षाविद् डॉ. कोठारी मानव कल्याण व विश्व शांति के थे पक्षधर

पत्रिका ग्राउंड रिपोर्ट

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com



पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में मौजूद गणमान्यजन। पत्रिका



डॉ. कोठारी को पुष्पांजलि देते कुलपति डॉ. सारंगदेवोत। पत्रिका

उदयपुर. शिक्षाविद् वैज्ञानिक पद्मविभूषण डॉ. दौलत सिंह कोठारी की 29वीं पुण्यतिथि पर शान्तिपीठ संस्थान में श्रद्धा-संवाद हुआ। प्रमुख अतिथि महापौर गोविन्द सिंह टांक द्वारा डॉ. कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित की गई। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी मानव मात्र का कल्याण और विश्व शांति के पक्षधर थे। वे दुनिया में शिक्षा में अहिंसा और शांति का समावेश किए जाने के पेरोकार थे। इस दौरान राज. विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत, महाराणा प्रताप विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. परमेन्द्र दशोरा, सुविवि के भौतिक विज्ञान के प्रो. कुंजबिहारी जोशी, प्रो. आर.बी.कुमार, चिंतक मोहनसिंह कोठारी, पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी के पूर्व मुख्य अभियंता रोशन देपुरा, प्रो. एसआर व्यास ने भी विचार रखे। इधर, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ की ओर से शुक्रवार को प्रतापनगर स्थित प्रशासनिक भवन के सभागार में प्रसिद्ध वैज्ञानिक और शिक्षाविद् डॉ. डी.एस. कोठारी की 29वीं पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि डॉ. कोठारी वैज्ञानिक के साथ कुशल प्रशासक, शिक्षाविद् भी थे उन्हें किसी एक क्षेत्र में बांधा नहीं जा सकता था। प्रो. गजेन्द्र माथुर, प्रो. अनिता शुक्ला, डॉ. हरीश शर्मा, डॉ. पारस जैन, डॉ. शैलेन्द्र मेहता, डॉ. मनीष श्रीमाली, डॉ. तरूण श्रीमाली सहित कार्यकर्ताओं ने पुष्पांजलि अर्पित उन्हे श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

प्रातःकाल उदयपुर, शनिवार 5 फरवरी 2022

शिक्षाविद् कोठारी की पुण्य तिथि पर श्रद्धा संवाद



उदयपुर (वि)। प्रख्यात शिक्षाविद् वैज्ञानिक पद्मविभूषण डॉ. दौलत सिंह कोठारी की 29वीं पुण्य तिथि पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में श्रद्धा-संवाद का आयोजन किया गया।

प्रमुख अतिथि नगर निगम के महापौर गोविन्द सिंह टांक द्वारा डॉ. कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं अतिथियों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित की गई। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि भारत प्रतिरक्षा विज्ञान के जनक डॉ. कोठारी का लक्ष्य राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित करना था, युद्ध नहीं।

महाराणा प्रताप विवि के पूर्व कुलपति प्रो. परमेन्द्र दशोरा ने कहा कि डॉ. कोठारी का व्यक्तित्व नोबल पुरस्कार के ऊपर के स्तर का था। वे आधुनिक ऋषि थे।

मो.सु.विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान के प्रो. कुंजबिहारी जोशी ने डॉ. कोठारी को कालजयी अवधारणा के जनक बताया।

महाराणा प्रताप कृषि महाविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा, चिंतक मोहन सिंह कोठारी, पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी के पूर्व मुख्य अभियंता रोशन देपुरा ने भी विचार व्यक्त किये। एडवोकेट भरत कुमावत ने आभार व्यक्त किया।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 15 दिसम्बर, 2021

पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पाठ्यक्रम का अंग बने गीता : चिंतक

महानगर संवाददाता

उदयपुर। गीता मनुष्य जीवन का सम्पूर्ण आचरण शास्त्र है, यह परा और अपरा का अनोखा समन्वय है। गीता जीवन के संघर्षों और चुनौतियों का सामना करते हुए व्यक्ति को एक योद्धा की तरह विजयी बनकर ही निकलने का मार्ग दिखाती है। यह सत्य और उच्च चेतना के क्रियान्वयन का दर्शन है, जिसे पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाना चाहिए।

यह विचार मंगलवार को गीता जयन्ती अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्त्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में चिंतकों ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता सुविवि संस्कृत विभागध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि गीता सम्पूर्ण आचार शास्त्र है। यह भारतीय ज्ञान परम्परा का अमृत तत्व है। मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास की कुँजी है। गीता हमें ज्ञाननिष्ठ व भक्ति प्रदान कर्म योग की ऐसी ऊर्जा प्रदान करती है, जो क्षेत्र, नस्ल, जाति, सम्प्रदाय की समस्त वर्जनाओं से ऊपर उठकर मानव मात्र को जीवन शक्ति से अनुप्राणित करती है। अध्यक्षता करते हुए पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि गीता ''आध्यात्मिक एनसायक्लोपिडिया'' के साथ ही एक शाश्वत स्मरण पत्र है, जिसमें सारे दर्शनों व आध्यात्मिक चिंतन की अवधारणाओं के साथ ही महान संस्कृति व प्रज्ञा को संजोया गया है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता परा व अपरा के समन्वय का ग्रंथ व्यक्ति को सत्य से संस्कारित करता है और जीवन के ध्येय को प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि 'सोशल मीडिया' के दौर में व्यक्ति बहिर्गमन कर चुका है। अन्तर्मुखी व बहीर्मुखी के समन्वय से ही ऊर्जा का संरक्षण संभव है। इसलिए जरूरत है ऊर्जावान युवा गीता को जीवन जीने का आधार बनाएं। चिंतक श्याम बाबा ने कहा कि जब मनोमय संसार प्रचण्ड तूफान का रूप धारण कर ले तब सर्वोत्तम आश्रय स्थल ईश्वर अर्थात हृदय ही है। पण्डित भंवरलाल व्यास ने कहा कि गीता सत्य और यथार्थ के क्रियान्वयन का दर्शन है। यह दुनियां के कई विश्वविद्यालयों व विज्ञान संकाय के पाठ्यक्रमों का हिस्सा बन चुका है। हमें सर्वांगीण उन्नयन हेतु गीता को पाठ्यक्रम का अंग बनाना चाहिए। इस दौरान पण्डित जितेन्द्र जानी, इन्द्र जोशी ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर उदयपुर, बुधवार 15 दिसंबर, 2021

संस्था-संगठनों ने मनाई गीता जयंती, गीतोपदेश पर चर्चा

गीता संपूर्ण आचार शास्त्र, भारतीय ज्ञान व परंपरा का अमृत तत्व : प्रो. शर्मा



गीता रामायण सेवा संघ के कार्यक्रम में गीता पाठ करते साधक।

उदयपुर | शहर में संस्थाओं-संगठनों ने गीता जयंती पर श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेशों पर चर्चा की। अशोकनगर स्थित गीता रामायण सेवा संघ में गीता के अध्यायों पर चर्चा हुई। इसमें प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए सुविवि के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि गीता सम्पूर्ण आचार शास्त्र है।

यह भारतीय ज्ञान परम्परा का अमृत तत्व है। मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास की कुंजी है। सेवा संघ के अध्यक्ष और पूर्व यूआईटी चेयरमैन रवींद्र श्रीमाली के अलावा कार्यक्रम में डॉ. जयराज आचार्य, देवेंद्र श्रीमाली आदि मौजूद रहे। शान्तिपीठ संस्थान का भी गीता जयंती का कार्यक्रम हुआ। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आज ऊर्जावान युवा गीता को जीवन जीने का आधार बनाए। श्याम बाबा ने भी विचार रखे। बीएन विश्वविद्यालय और स्वामी विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी का गीता जयंती का कार्यक्रम हुआ। डॉ. पुखराज सुखलेचा, विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन प्रदीप कुमार सिंह, प्रेसिडेंट एनबी सिंह मौजूद रहे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, बुधवार, 15 दिसंबर 2021

गीता भारतीय ज्ञान परंपरा का अमृत तत्व

गीता जयंती पर हुए कई आयोजन

ब्यूरो नवज्योति, उदयपुर। गीता मनुष्य जीवन का संपूर्ण आचरण शास्त्र है, यह परा और अपरा का अनोखा समन्वय है। गीता जीवन के संघर्षों और चुनौतियों का सामना करते हुए व्यक्ति को एक योद्धा की तरह विजयी बनकर निकलने का मार्ग दिखाती है। यह सत्य और उच्च चेतना के क्रियान्वयन का दर्शन है, जिसे पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाना चाहिए। ये विचार मंगलवार को गीता जयंती के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। इसके साथ ही इस दिन शहर में कई आयोजन भी हुए।

प्रमुख वक्ता सुखाड़िया विश्वविद्यालय में संस्कृत विभागध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि गीता सम्पूर्ण आचार शास्त्र है, यह भारतीय ज्ञान परम्परा का अमृत तत्व है। मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास की कुंजी है। गीता हमें ज्ञाननिष्ठ व भक्ति प्रदान कर्म योग की ऐसी ऊर्जा प्रदान करती है जो क्षेत्र, नस्ल, जाति, सम्प्रदाय की समस्त वर्जनाओं से ऊपर उठकर मानव मात्र को जीवन शक्ति से अनुप्राणित करती है। अध्यक्षता करते हुए पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि गीता आध्यात्मिक एनसाइक्लोपिडिया के साथ ही एक शाश्वत स्मरण पत्र है। जिसमें सारे दर्शनों व आध्यात्मिक चिंतन की अवधारणाओं के साथ ही महान संस्कृति व प्रज्ञा को संजोया गया है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता परा व अपरा के समन्वय का ग्रंथ व्यक्ति को सत्य से संस्कारित करता है। इस अवसर पर चिंतक श्याम बाबा, पं. भंवरलाल व्यास, पं. जितेंद्र जानी, इंद्र जोशी ने भी विचार व्यक्त किए।

सांसारिक जीवन से मुक्ति प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग



गीता रामायण सेवा संघ अशोकनगर में गीता जयंती मनाई गई। इस अवसर पर गीता के अध्यायों का स्व पाठक एवं पठन किया गया। संघ के अध्यक्ष एवं पूर्व यूआईटी चेयरमैन रविंद्र श्रीमाली ने गीता के आध्यात्मिक चिंतन पर प्रकाश डालते हुए इसे सांसारिक जीवन से मुक्ति प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग कहा। कार्यक्रम में डॉ. जयराज आचार्य, देवेंद्र श्रीमाली, प्रेम, प्रदीप, आनंदी लाल,कन्हैया लाल, राजेश साहू, हेमेंद्र, सरला, सुनीता, अर्चना, निर्मला आदि उपस्थित थे।

बीएन में भी हुआ आयोजन

बीएन विश्वविद्यालय और स्वामी विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी के संयुक्त तत्वावधान में गीता जयंती का आयोजन हुआ। डॉ पुखराज सुखलेचा ने गीता के कर्मयोग, ज्ञानयोग राजयोगऔर भक्तियोग पर विवेचना प्रस्तुत की। डॉ राजमल लखदार ने कुरुक्षेत्र के युद्ध क्षेत्र में कृष्ण द्वारा अर्जुन के माध्यम से हम सभी प्राणियों के कल्याण के लिए जो ज्ञान दिया उसके कुछ श्लोकों पर प्रकाश डाला। इस मौके पर डॉ कमल सिंह राठौड़, पूर्व न्यायाधीश हिमांशु राय नागौरी, विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन प्रदीप कुमार सिंह, प्रेसिडेंट एनबी सिंह, रजिस्ट्रार और वित्त नियंत्रक परबत सिंह राठौड़ आदि उपस्थित थे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, बुधवार, 15 दिसम्बर, 2021

गीता जयंती मनाई

गीता सांसारिक जीवन से मुक्ति का एकमात्र मार्ग



उदयपुर. गीता जयंती के अवसर पर मंगलवार को कई आयोजन हुए। गीता रामायण सेवा संघ अशोकनगर में गीता के अध्यायों का स्व पाठक एवं पठन किया गया। इस अवसर पर गीता रामायण सेवा संघ के अध्यक्ष एवं पूर्व यूआईटी चेयरमैन रविंद्र श्रीमाली ने गीता के आध्यात्मिक चिंतन पर प्रकाश डालते हुए इसे सांसारिक जीवन से मुक्ति प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग कहा। कार्यक्रम में डॉक्टर जयराज आचार्य, देवेंद्र श्रीमाली, प्रेम, प्रदीप, आनंदी लाल आदि ने विचार रखे। बीएन विश्वविद्यालय और स्वामी विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी के तत्वावधान में गीता जयंती पर डॉ. पुखराज सुखलेचा ने गीता के कर्मयोग, ज्ञानयोग, राजयोग और भक्तियोग पर विवेचना प्रस्तुत की। डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने गीता में दिए दूसरे और 16 वें अध्याय पर प्रकाश डाला। इधर, शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में प्रमुख वक्ता सुविवि में संस्कृत विभागध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि गीता सम्पूर्ण आचार शास्त्र है। यह भारतीय ज्ञान परम्परा का अमृत तत्व है। अध्यक्षता करते हुए पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि गीता आध्यात्मिक एनसायक्लोपिडिया के साथ ही एक शाश्वत स्मरण पत्र है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता परा व अपरा के समन्वय का ग्रंथ व्यक्ति को सत्य से संस्कारित करता है और जीवन के ध्येय को प्रदान करता है। वहीं, मदनमोहन मालवीय आयुर्वेद राजकीय महाविद्यालय में गीता महोत्सव हुआ। प्राचार्य प्रोफेसर महेश दीक्षित ने बताया कि सर्वप्रथम गीता का पूजन किया। मुख्य अतिथि प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि गीता मनुष्य जीवन का संगीत है। गीता जीवन को आनंदित करता है और गीता का आश्रय लेना चाहिए।

प्रातःकाल
उदयपुर, बुधवार 7 जुलाई, 2021

नवीन शिक्षा नीति डॉ. कोठारी की शिक्षा नीति का ही विस्तार : डॉ. सारस्वत



उदयपुर। सार्वभौमिक विज्ञान का तत्व चिंतन हमें ऋषि मुनियों द्वारा विरासत में मिला। यह अध्यात्म का अविछिन्न हिस्सा था जिससे जीवन की सभी गुणवत्ताओं को प्राप्त करने के साथ ही अंतिम लक्ष्य की उपलब्धि के लिए क्षमतावान था। यह विचार वैज्ञानिक मनीषी डॉ. दौलत सिंह कोठारी की स्मृति में शान्तिपीठ के तत्वावधान में ऑनलाईन मोड़ पर आयोजित 13वें व्याख्यान में 'विज्ञान, अध्यात्म, संधारणीयता, नैतिकता व निर्णय क्षमता' विषय पर बोलते हुए नीति आयोग के सदस्य, पृथ्वी मिसाइल के प्रणेता, डी.आर.डी.ओ. के पूर्व महानिदेशक तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. वी.के.सारस्वत ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि उक्त विषय वस्तु पर डॉ. कोठारी ने विस्तार से चिंतन किया और उसी के अनुरूप स्वतंत्र भारत की पहली शिक्षा नीति के जो सिद्धांत प्रतिपादित किये थे, नवीन शिक्षा नीति, 2020 उसी का ही विस्तार है जिसमें विज्ञान, अध्यात्म और नैतिकता जैसे मानदण्डों को समाज में गहरे स्थापित करने पर विचार किया गया है। अध्यक्षता करते हुए विज्ञान चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि स्थायित्व एवं निर्णय क्षमता के विकास को रेखांकित करते हुए डॉ. सारस्वत ने सामाजिक विकास व संतुलन के लिए आध्यात्मिक दृष्टि से नया आयाम जोड़ा है। प्रारंभ में स्वागत भाषण देते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने स्मृति व्याख्यान के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ. कोठारी की दृष्टि में अध्यात्म-विज्ञान का मार्ग व्यक्ति की नैसर्गिक क्षमताओं को पूर्ण विकसित करने का मार्ग है और इसी से अभिप्रेरित संस्कृति समाज के स्थायित्व को आश्वस्त कर सकती है। संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. पी.एस.तलेसरा ने आभार व्यक्त किया। बी.एन विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के डॉ. के.एस.राठौड़ ने संचालन किया।

डॉ. डीएस कोठारी जयंती पर हुए विविध आयोजन



उदयपुर (वि)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के विज्ञान महाविद्यालय की ओर से डॉ डीएस कोठारी जयंती पर विविध आयोजन हुए। बायोटेक्नोलॉजी विभाग में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह ने की। उन्होंने कहा कि एक वैज्ञानिक के रूप में डॉक्टर कोठारी का योगदान अविस्मरणीय है, और सबसे महत्वपूर्ण बात है कि वे मूलतः उदयपुर के थे। उन्होंने अपने शोध नवाचारों व अनुसंधान के जरिए उदयपुर का भी नाम रोशन किया। इस अवसर पर बायोटेक्नोलॉजी विभाग में स्थित उनकी मूर्ति का जीर्णोद्धार और पार्क का सौंदर्यीकरण से सम्बंधित कार्य भी करवाए गए। कुलपति प्रो. सिंह एवं अन्य शिक्षकों ने डॉ कोठारी की मूर्ति पर माल्यार्पण किया और शिक्षा जगत में उनके योगदान को याद किया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष एवम अधिष्ठाता मौजूद थे। विज्ञान महाविद्यालय कब अधिष्ठाता प्रो. घनश्याम सिंह राठौड़ ने सभी का स्वागत किया एवं धन्यवाद ज्ञापन किया।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, मंगलवार, 06 जुलाई, 2021

डॉ. दौलत सिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान आज

उदयपुर. शान्तिपीठ के तत्वावधान में मंगलवार को सुबह 11.30 पर तेरहवां डॉ. दौलत सिंह कोठारी स्मृति ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया जाएगा। नीति आयोग के सदस्य एवं रक्षामंत्री के पूर्व मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार एवं डी.आर.डी.ओ. के प्रमुख रहे डॉ. वी.के.सारस्वत व्याख्यान देंगे। अध्यक्षता मोहनसिंह कोठारी करेंगे।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, बुधवार, 07 जुलाई, 2021

डॉ. डीएस कोठारी जयंती पर हुए विविध आयोजन

डॉ. कोठारी थे सूक्ष्मदर्शी व दूरदर्शी : डॉ. माशेलकर



डॉ. कोठारी को श्रद्धांजलि देते व पौधरोपण करते हुए। पत्रिका

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. डॉ. दौलत सिंह कोठारी शोध एवं शिक्षण संस्थान का उद्घाटन समारोह मंगलवार को विज्ञान समिति परिसर में हुआ। मुख्य अतिथि पूर्व महानिदेशक, भारतीय विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, डॉ. रघुनाथ अनंत माशेलकर थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. गोवर्धन मेहता, पूर्व निदेशक भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरू द्वारा बीज वक्तव्य दिया गया। साथ ही कार्यक्रम में स्मारिका एवं संस्था हिन्दी-परिचय पत्रक एवं वेबसाइट का लोकार्पण भी एमपीयूएटी कुलपति डॉ. एनएस राठौड़ द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि डॉ रघुनाथ अनंत माशेलकर ने कहा कि डॉ. डीएस कोठारी सूक्ष्मदर्शी एवं दूरदर्शी थे। वह पूरे देश के लिए प्रेरक एवं मार्गदर्शक थे। संचालन डॉ. केपी तलेसरा एवं डॉ. रितु भटनागर द्वारा किया गया। शान्तिपीठ के तत्वावधान में ऑनलाइन मोड पर आयोजित तेरहवें व्याख्यान में 'विज्ञान, अध्यात्म, संधारणीयता, नैतिकता व निर्णय क्षमता' विषय पर बोलते हुए नीति आयोग के सदस्य, पृथ्वी मिसाइल के प्रणेता, डी.आर.डी.ओ. के पूर्व महानिदेशक डॉ. वी.के.सारस्वत ने कहा कि डॉ. कोठारी ने विस्तार से चिंतन किया और उसी के अनुरूप स्वतंत्र भारत की पहली शिक्षा नीति के सिद्धांत प्रतिपादित किए थे। अध्यक्षता विज्ञान चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने की। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने स्मृति व्याख्यान के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। संचालन डॉ. के.एस.राठौड़ ने किया।

पुष्पांजलि व वृक्षारोपण

इधर, सुविवि के विज्ञान महाविद्यालय की ओर से बायोटेक्नोलॉजी विभाग में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर अमेरिका सिंह ने की। इस अवसर पर बायोटेक्नोलॉजी विभाग में स्थित उनकी मूर्ति का जीर्णोद्धार और पार्क के सौंदर्यीकरण से संबंधित कार्य भी करवाए गए। विज्ञान समिति अशोक नगर परिसर में एमपीयूएटी विवि के कुलपति डॉक्टर नरेंद्र सिंह राठौड़ की ओर से पौधरोपण किया गया। इस अवसर पर डॉ. के. एल. कोठारी, आर. के. चतुर, के. एल. तोतावत, राजेंद्र खोखावत, डॉ. एस. एस पोखरना, भोपाल सिंह गरबड़ा आदि उपस्थित थे। डीएसकेआईआरई संस्थान की ओर से पुष्पांजलि कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर डॉ. एलएम सिंघवी एवं डॉ. दिलीप धींग, करण सिंह सामोता, डॉ. जीएस राठौड़, डॉ. अनिल कोठारी आदि उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर उदयपुर, मंगलवार 06 जुलाई, 2021

शिक्षाविद् व वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. कोठारी की जयंती आज

रक्षा मंत्रालय में प्रथम वैज्ञानिक सलाहकार और भारत के प्रतिरक्षा विज्ञान के जनक थे डॉ. कोठारी

कम्युनिटी रिपोर्टर | उदयपुर

शान्तिपीठ का तेरहवां डॉ. दौलत सिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान मंगलवार सुबह 11:30 बजे होगा। इसमें नीति आयोग के सदस्य एवं रक्षामंत्री के पूर्व मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार एवं डी.आर.डी.ओ. के प्रमुख रहे डॉ. वी.के.सारस्वत ऑनलाइन व्याख्यान देंगे। शिक्षाविद्, वैज्ञानिक डॉ. डी.एस.कोठारी की जन्म जयंती पर होने वाले व्याख्यान की अध्यक्षता मोहनसिंह कोठारी करेंगे।

भारत पाक युद्ध में डॉ. कोठारी की वहीं भूमिका, जो महाभारत में श्रीकृष्ण ने निभाई

12 जुलाई 1948 को डॉ. दौलत सिंह कोठारी ने भारत के रक्षा मंत्रालय में भारत के प्रथम वैज्ञानिक सलाहकार का पद संभाला और 1961 तक कार्यरत रहे। उन्होंने समस्त प्रतिरक्षा प्रतिष्ठानों का पुनर्गठन किया। उन्होंने रक्षा विज्ञान, इलेक्ट्रोनिकी, शरीर क्रिया विज्ञान, धातुकर्म, भू-स्थायित्व, खाद्य संरक्षण, वैमानिकी, गैस टरबाइन एवं मिसाइल जैसे अनेक विषयों पर कार्य किए। न्यूक्लियर मेडिसिन की नींव भी डॉ. कोठारी ने ही रखी। हैदराबाद की डिफेंस मेटलर्जिकल लेबोरेट्री के एमेरिटस साइंटिस्ट डॉ. ए.नागरत्नम ने डॉ. कोठारी को भारत के प्रतिरक्षा विज्ञान का पिता कहा है। भारत पाक युद्ध के दौरान डॉ. कोठारी का योगदान देश कभी नहीं भुला पायेगा। तारा भौतिकी में अपने विशेष ज्ञान का प्रयोग करते हुए उन्होंने ऐसे आयुध का आविष्कार किया जो इस्पात के कई इंच मोटे कवच को भेद देता है। युद्ध के दरम्यान भारत की सेना ने पाक सेना के पैटन टैंकों को इसी आयुध से नष्ट किया था। यु.एस.एज्यूकेशन फाउण्डेशन इन इंडिया के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर पी.जे.लवकरे ने ठीक ही कहा था। ''प्रतिरक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में डॉ. कोठारी ने वह भूमिका निभाई जो महाभारत में कृष्ण ने अर्जुन के लिए निभाई थी। दबाव आयनीकरण सिद्धांत की खोज का श्रेय डॉ. कोठारी को ही है।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, बुधवार, 7 जुलाई, 2021

शिक्षाविद् डॉ. डीएस कोठारी की जयंती पर शांति पीठ के ऑनलाइन व्याख्यान बोले में जेएनयू के कुलाधिपति

देश की पहली शिक्षा नीति में डॉ. कोठारी ने दिया था सार्वभौम विज्ञान तत्व का वैदिक चिंतन : डॉ. सारस्वत

कम्युनिटी रिपोर्टर | उदयपुर

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के कुलाधिपति डॉ. वी.के. सारस्वत ने कहा है कि सार्वभौम विज्ञान के तत्व हमें ऋषि-मुनियों से विरासत में मिले। यह अध्यात्म का अभिन्न हिस्सा था। ऐसे कई विषयों पर उदयपुर के शिक्षाविद डॉ. डी.एस. कोठारी ने गहन और विस्तृत चिंतन किया था, जिन्होंने उसी के हिसाब से स्वतंत्र भारत की पहली शिक्षा नीति के सिद्धांत भी तैयार किए था। नई शिक्षा नीति उसी का ही विस्तार है। डॉ. सारस्वत देश के पहले शिक्षा आयोग अध्यक्ष डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर शांति पीठ के ऑनलाइन व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे। विषय 'विज्ञान, अध्यात्म, नैतिकता और निर्णय क्षमता' था। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विज्ञान चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि स्थायित्व और निर्णय क्षमता के विकास के साथ ही सामाजिक विकास और संतुलन के लिए आध्यात्मिक दृष्टि से नया आयाम जोड़ा गया है। इससे पहले शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी की दृष्टि में अध्यात्म-विज्ञान से ही व्यक्ति की क्षमताओं को पूर्ण विकसित करने का रास्ता है। पायरोटेक के अध्यक्ष और संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. पीएस तलेसरा, बीएन विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के डॉ. केएस राठौड़ मौजूद रहे। उधर, सुखाड़िया विश्वविद्यालय के साइंस कॉलेज की ओर से भी डॉ. कोठारी की जयंती पर आयोजन हुए। बायोटेक्नोलॉजी विभाग में कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह ने की। उन्होंने कहा कि एक वैज्ञानिक के रूप में डॉक्टर कोठारी का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने अपने शोध नवाचारों और अनुसंधान के जरिए उदयपुर का भी नाम रोशन किया।

विज्ञान समिति परिसर में डॉ. दौलत सिंह कोठारी शोध और शिक्षण संस्थान का उद्घाटन हुआ



विज्ञान समिति परिसर में डॉ. दौलत सिंह कोठारी शोध और शिक्षण संस्थान का उद्घाटन समारोह हुआ। डॉ. गोवर्धन मेहता, एमपीयूएटी के कुलपति डॉ. एनएस राठौड़ भी मौजूद रहे। विज्ञान समिति के संस्थापक और डॉ. डीएस कोठारी संस्थान के प्रबंध न्यासी डॉ. केएल कोठारी ने संबोधित किया। मुख्य अतिथि डॉ. रघुनाथ अनंत माशेलकर ने कहा कि डॉ. डीएस कोठारी सूक्ष्मदर्शी और दूरदर्शी थे। वे पूरे देश के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शक थे। उन्होंने ज्ञान और मानवीय संवेदनाएं केंद्रित समाज की अवधारणा पर जोर दिया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शनिवार, 20 फरवरी, 2021

रामकृष्ण परमहंस की जयंती मनाई



उदयपुर. शान्तिपीठ की ओर से मानव उत्कर्ष और आध्यात्मिकता के प्रज्ञा पुरुष श्रीरामकृष्ण परमहंस विषयक गोष्ठी हुई। बतौर प्रमुख वक्ता पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि रामकृष्ण परमहंस मात्र ऐसा उदाहरण है जिसने सभी प्रमुख धर्म मार्गों की साधना कर ईश्वर को प्राप्त किया तथा वैज्ञानिक तरीके से परम सत्य तक पहुंचाने के मार्ग का प्रतिपादन भी किया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि परमहंस ने समन्वय और समरसता के सूत्र देकर मानवीय चेतना के उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त किया। अध्यक्षता करते हुए वेदविज्ञ पण्डित भंवरलाल व्यास ने जीवन में भाव प्रधानता और इसकी शुद्धि पर विस्तार से व्याख्या करते हुए कहा की सामाजिक अखण्डता व शान्ति के लिए परमहंस के साहित्य को आत्मसात करना श्रेयस्कर है। गोष्ठी में निर्मल, शरद भारती, रोशन देपुरा, ओंकार लाल मेनारिया, समाजसेवी विरेन्द्र बंसल आदि उपस्थित थे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शनिवार, 20 फरवरी 2021

रामकृष्ण परमहंस का आविर्भाव तत्कालीन समय की आवश्यकता



उदयपुर। अवतार वरिष्ठाय के रूप में रामकृष्ण परमहंस का आविर्भाव तत्कालीन समय की आवश्यकता का उच्च परिणाम था। उन्होंने धर्म और वर्ग संघर्ष से उठी नाना प्रकार की समस्याओं का प्रामाणिकता के साथ आध्यात्मिक चेतना से समाधान किया। उक्त विचार रामकृष्ण परमहंस की जयन्ती पर गुरुवार को शान्तिपीठ द्वारा मानव उत्कर्ष और आध्यात्मिकता के प्रज्ञा पुरूष श्रीरामकृष्ण परमहंस विषयक सत्संग-संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किये। प्रमुख वक्ता पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि रामकृष्ण परमहंस मात्र ऐसा उदाहरण है जिसने सभी प्रमुख धर्म मार्गों की साधना कर ईश्वर को प्राप्त किया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संत शास्त्र का सरल संस्करण है जिसे कोई भी जिज्ञासु बिना कठिनाई के समझ सकता है। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए वेदविज्ञ पण्डित भंवरलाल व्यास ने कहा किसामाजिक अखण्डता व शान्ति के लिए परमहंस के साहित्य को आत्मसात करना श्रेयस्कर है।

दैनिक भास्कर
शनिवार, 20 फरवरी 2021

शांतिपीठ में परमहंस जयंती पर संगोष्ठी



उदयपुर | अवतार वरिष्ठाय के रूप में राम कृष्ण परमहंस का आविर्भाव तत्कालीन समय की आवश्यकता का उच्च परिणाम था। उन्होंने धर्म और वर्ग संघर्ष से समस्याओं का प्रामाणिकता के साथ आध्यात्मिक चेतना से समाधान किया। ये विचार रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर शान्तिपीठ की मेजबानी में 'मानव उत्कर्ष और आध्यात्मिकता के प्रज्ञा पुरुष श्रीरामकृष्ण परमहंस' पर संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि ब्रह्मांड में मनुष्य की संरचना सबसे महत्वपूर्ण और अद्भुत है।

उदयपुर, शनिवार, 6 फरवरी, 2021

वैज्ञानिक डॉ. कोठारी के अवदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता : प्रो. सिंह



उदयपुर | विश्व में भारतवर्ष का निर्माण ऋषि-मुनियों की देन हैं और जिस शाश्वत ज्ञान को उन्होंने स्थापित किया, उसका प्रकाश कभी नष्ट नहीं हो सकता। इसी ज्ञान परम्परा की श्रृंखला में आए दिवंगत प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी के अवदान को भुलाया नहीं जा सकता। यह बात सुविवि कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह ने वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर आयोजित गोष्ठी में कही। इस दौरान पायरोटेक के डॉ. पीएस तलेसरा, शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, इतिहासविद डॉ. ललित पांड्या ने भी विचार रखे। इस दौरान शान्तिपीठ के अनंत गणेश त्रिवेदी ने कुलपति से कहा कि सुविवि के प्रस्तावित साइंस सेंटर का नाम डॉ. दौलत सिंह कोठारी हो सकता है, जिसे कुलपति ने स्वीकार किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शनिवार, 06 फरवरी, 2021

पुण्यतिथि पर गोष्ठी

नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में डॉ. कोठारी का योगदान अप्रतिम

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. शिक्षाविद् वैज्ञानिक डॉ.दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर गोष्ठी हुई। कुलपति प्रो.अमेरिका सिंह ने कहा कि डॉ. कोठारी ने विज्ञान में नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में उनके शोध के महत्व को रेखांकित किया, जिसने तत्कालीन वैश्विक सोच को नई दिशा दी। पायरोटेक के डॉ. पी.एस.तलेसरा ने कहा कि वर्तमान में विज्ञान वैश्विक स्तर पर ऊर्जा के स्थायी स्त्रोतों की खोज में संलग्न है, जिसकी अवधारणा डॉ. कोठारी पूर्व में सिद्ध कर चुके थे। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कुलपति को प्रस्ताव दिया कि विश्वविद्यालय द्वारा जो साइंस सेन्टर बनाना प्रस्तावित है उसे डॉ.कोठारी के नाम से सुशोभित किया जाए। नगर निगम के महापौर गोविन्द सिंह टांक , शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी, डॉ.आर.बी.कुमार, एडवोकेट मोतीसिंह राणावत, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी के पूर्व मुख्य अभियंता रोशन देपुरा आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक नवज्योति

उदयपुर, शुक्रवार, 5 फरवरी 2021

डॉ. कोठारी का अवदान भुलाया नहीं जा सकता



उदयपुर। विश्व में भारतवर्ष का निर्माण ऋषिमुनियों की देन है और जिस शाश्वत ज्ञान को उन्होंने स्थापित किया, उसका प्रकाश कभी नष्ट नहीं हो सकता। इसी ज्ञान परम्परा की श्रृंखला में आए वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी के अवदान को भुलाया नहीं जा सकता। उक्त विचार प्रख्यात शिक्षाविद् वैज्ञानिक डॉ. कोठारी की पुण्यतिथि पर आयोजित गोष्ठी में मुख्य अतिथि सुविवि के कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह ने व्यक्त किये। पायरोटेक के डॉ. पी.एस.तलेसरा, शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, इतिहासविद् डॉ. ललित पाण्डेय, आदि ने भी विचार व्यक्त किये। शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने गोष्ठी की अध्यक्षता की। विशिष्ट अतिथि महापौर गोविन्द सिंह टांक थे।

साहित्यकार डॉ. राजशेखर व्यास को श्रद्धांजलि दी

उदयपुर | साहित्यकार डॉ. राजशेखर व्यास के असामयिक निधन पर शान्तिपीठ संस्थान में दिवंगत आत्मा की शांति के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि पंडित राजशेखर व्यास इतिहास के सकारात्मक पक्ष के पैरोकार थे। पुरातत्वविद् डॉ. ललित पांडे ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि वे असल में संस्कृति व्यास थे। वे मेवाड़ ही नहीं देश के ख्यातनाम शिक्षक इतिहासकार और रूद्र वीणावादक थे। उनके निधन से समाज की अपूरणीय क्षति हुई।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, मंगलवार, 07 जुलाई, 2020

शांतिपीठ के वेबिनार में बोले पंजाब के पूर्व मुख्य सलाहकार कोठारी

डॉ. कोठारी की शिक्षा नीति आज भी शिक्षा नीतियों का आधार है

उदयपुर | शान्तिपीठ का शिक्षाविद डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जन्म जयंती वेबिनार सोमवार को हुआ।

इसमें पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि डॉ. कोठारी की प्रस्तुत शिक्षा नीति वर्तमान में भी शिक्षा नीतियों का आधार है। उन्होंने कहा कि डॉ. कोठारी की मान्यता थी कि कौनसा पाठ्यक्रम तय किया जाना है, इसके लिए शिक्षक स्वतंत्र होना चाहिए, दबाव में नहीं। प्रो. एसआर व्यास ने कहा कि शिक्षा पर अब तक किए गए वैश्विक प्रयोग और अनुसंधानों ने एक बात सिद्ध की है कि उसे सम्पूर्णात्मक होना चाहिए अन्यथा वह विनाशक होगी। डॉ. कोठारी इसी विचार के पैरोकार थे। पीएस तलेसरा ने डॉ. कोठारी के जीवन के कई संस्मरण सुनाए। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि. डॉ. कोठारी की जीवन यात्रा अन्तर्चेतना की यात्रा है। डॉ. ललित पांडे, मनोज जोशी ने भी विचार रखे।

विज्ञान समिति करेगी शोध संस्थान की स्थापना

विज्ञान समिति के सभागार में डॉ. दौलत सिंह कोठारी का जन्म दिन समारोह मनाया गया। कोटा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. मनोहर कालरा, भूपाल सिंह कोठारी और डॉ. कुंदन लाल कोठारी ने डॉ. कोठारी के चित्र पर माल्यार्पण किया। कोषाध्यक्ष राजेंद्र खोखावत ने बताया कि डॉ. कोठारी के सम्मान में शोध संस्थान की स्थापना की जाएगी। जो विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र मे शोध कार्य करेगी।

राजस्थान पत्रिका
patrika.com
उदयपुर, मंगलवार, 07 जुलाई, 2020

अहिंसा के आदर्शों को जीवन में अपनाया डॉ. कोठारी ने

उदयपुर. राष्ट्रीय अस्मिता के रक्षार्थ शौर्य और अहिंसा मूलक मानवीय आदर्श एक साथ चलकर ही विश्वशान्ति के शिखर लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। भारतीय प्रतिरक्षा विज्ञान के जनक डॉ. डी.एस.कोठारी ने अहिंसा के आदर्शों को जीवन में अपनाया तथा जरूरत पड़ने पर राष्ट्रीय कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए शत्रु को पराभूत करने के मंत्र भी प्रदान किए।

यह शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर शान्तिपीठ की ओर से हुई संगोष्ठी में वक्ताओं ने रखे। अध्यक्षता करते हुए पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि डॉ. कोठारी द्वारा प्रस्तुत शिक्षा नीति वर्तमान में भी शिक्षा नीतियों का आधार है।

दर्शनशास्त्री प्रो. एस. आर. व्यास, पी.एस. तलेसरा, अनन्त गणेश त्रिवेदी, डॉ. ललित पाण्डे, मनोज जोशी ने भी विचार रखे। डॉ. कोठारी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। संयोजन डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने किया।

इधर, विज्ञान समिति प्रांगण में उदयपुर के पद्म विभूषण कोठारी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में पौधरोपण हुआ। यहां डॉ. के.एल. कोठारी, कोषाध्यक्ष राजेंद्र खोखावत, कारण सामोता, महा सचिवप्रकाश तातेड़, सचिव शांति लाल भंडारी, डॉ. महीप भटनागर, भूपाल कोठारी, मनोहर कालरा व मुनीश गोयल उपस्थित थे।

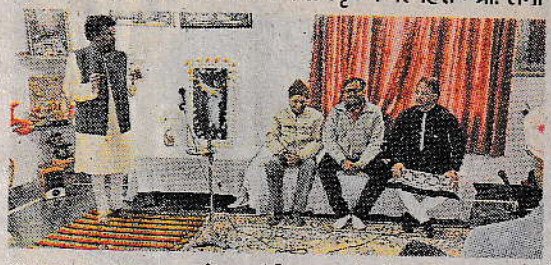
राजस्थान पत्रिका . गुरुवार, 20 फरवरी, 2020.

रामकृष्ण परमहंस को किया याद

उदयपुर . रामकृष्ण परमहंस ने सनातन धर्म के सार्वजनिक साधना मार्ग को प्रशस्त किया, जिस पर चलकर अनेक जिज्ञासुओं ने व्यष्टिगत सीमाओं से परे जाकर विराट समष्टि चेतना के असीम भाव को प्राप्त किया। उनका जीवन संदेश समता और सामाजिक एकता के सौन्दर्य को निखारने में महान प्रांसगिक हैं। ये विचार रामकृष्ण परमहंस जयन्ती के मौके पर मंगलवार शाम शान्तिपीठ संस्थान की ओर से सभागार में आयोजित सत्संग संगोष्ठी में व्यक्त किए गए। प्रमुख वक्ता सुविवि में संस्कृत साहित्य के प्रो. नीरज शर्मा थे। शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, पूर्व प्रधान वन संरक्षण एस.के. वर्मा, भंवर व्यास, ओंकारलाल मेनारिया ने भी विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता रामकृष्ण भावधारा के चिंतक मोहनसिंह कोठारी ने की।

दैनिक भास्कर गुरुवार 20 फरवरी, 2020

ज्ञान, भक्ति, वैराग्य की त्रिवेणी थे रामकृष्ण परमहंस : प्रो. शर्मा



उदयपुर | रामकृष्ण परमहंस जयंती पर शान्तिपीठ की संस्थान के सभागार में सत्संग-संगोष्ठी हुई। प्रमुख वक्ता प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि रामकृष्ण स्वयंभू शास्त्र थे। उन्होंने विराट सत्य को निराकार व साकार दोनों रूप में जाना। वे ज्ञान, भक्ति और वैराग्य की त्रिवेणी थे। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संत शास्त्र की मूर्त अभिव्यक्ति है जिसके सान्निध्य में सहज ही उच्च संस्कारों की उपलब्धि संभव है। एस.के.वर्मा, वेदविंद भंवर व्यास, ओंकारलाल मेनारिया आदि ने भी विचार रखे। रामकृष्ण शरणम के भजन के साथ समापन हुआ।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, गुरुवार, 20 फरवरी 2020

रामकृष्ण स्वयंभू शास्त्र थे



ब्यूरो नवज्योति, उदयपुर। रामकृष्ण परमहंस ने सनातन धर्म के प्राचीन भारतीय धर्म-दर्शन को अपने जीवन और व्यवहार में इस प्रकार प्रस्तुत किया कि उनके आध्यात्मिक विराट भूमिका में बिना किसी भेदभाव के समाज के सभी वर्ग समाहित हो सके। ये विचार श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती के अवसर पर शांतिपीठ द्वारा संस्थान के सभागार में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में बोलते हुए वक्ताओं ने व्यक्त किए। कार्यक्रम दो सत्रों में हुआ। प्रमुख वक्ता मोसुविवि में संस्कृत साहित्य के प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि रामकृष्ण स्वयंभू शास्त्र थे, उन्होंने विराट सत्य को निराकार व साकार दोनों रूप में जाना। प्रारम्भ में शांतिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने आयोजन की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। अध्यक्षता रामकृष्ण भावधारा के चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने की।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, बुधवार, 5 फरवरी 2020

डॉ. डीएस कोठारी की पुण्यतिथि • शिक्षाविद् बोले- समय और परिस्थिति के अनुसार बदलाव जरूरी

पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के तालमेल से ही शिक्षा में सुधार संभव, संस्कार-मूल्यों के बिना शिक्षा अधूरी

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के तालमेल से ही शिक्षा में सुधार किया जा सकता है। यह बात देश की पहले शिक्षा आयोग के अध्यक्ष डीएस कोठारी की 27वीं पुण्यतिथि पर हुए कार्यक्रम में शिक्षाविदों ने कही। शांतिपीठ सभागार में हुए कार्यक्रम में शहर के शिक्षाविद्, समाजसेवी आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम संयोजक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गांधीवादी वैज्ञानिक डॉ. कोठारी ने समय और परिस्थिति के अनुसार शिक्षा नीति में राष्ट्रहित और मानवीय मूल्यों को समाहित किया। अपने कार्यकाल के दौरान डॉ. कोठारी ने विज्ञान और तकनीकी शिक्षा को दिशा देने के लिए प्रयास किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. राजशेखर व्यास ने की। वक्ताओं ने कहा कि आज की विषम परिस्थितियों में समाज को दिवगंत शिक्षाविद् कोठारी जैसै व्यक्तित्व की काफी जरूरत है। मौके पर कैलाश बिहारी वाजपेयी ने विचार व्यक्त किए। एडवोकेट भंवर व्यास ने कहा कि संस्कार मूल्यों को जोड़े बिना शिक्षा सर्वांगीण विकास के मूल लक्ष्य को हासिल नहीं कर सकती। पर्यावरणविद् जीपी सोनी, वास्तुविद डॉ. ललित पाण्डे, पूर्व अभियन्ता अनिरूद्ध सिंह चुण्डावत, एडवोकेट धर्मराज ने भी विचार व्यक्त किए।



डॉ. डीएस कोठारी की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम में चर्चा करते शिक्षाविद।

जानिए डॉ. डीएस कोठारी को

6 जुलाई 1906 को उदयपुर में जन्म हुआ। यूजीसी के अध्यक्ष रहे। वैज्ञानिक शब्दावली आयोग और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के प्रथम अध्यक्ष बने। जवाहरलाल नेहरू विवि के कुलपति भी रहे। वर्तमान में विवि और स्कूलों में संचालित 10+2+3 शिक्षा व्यवस्था का मॉडल डॉ. कोठारी की देन है। देश और दुनिया में शिक्षा, विज्ञान और रक्षा विकास में खूब नाम कमाया। 1964-66 में इनकी अध्यक्षता में कोठारी शिक्षा आयोग बनाया गया और इनकी सिफारिश के बाद ही केन्द्र सरकार ने 10+2+3 मॉडल को पूरे देश में लागू किया।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर, बुधवार, 05 फरवरी, 2020
patrika.com

वैज्ञानिक डॉ. कोठारी को किया याद

उदयपुर . गांधीवादी वैज्ञानिक डॉ. कोठारी ने समय और परिस्थिति को देखकर शास्त्र और शस्त्र का समन्वय करते हुए राष्ट्र की प्रतिरक्षा विज्ञान को नई दिशा तो दी ही, उन्होंने मानव मात्र के कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त किया।

ये विचार शिक्षाविद, वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर शान्तिपीठ संस्थान के सभागार में आयोजित संगोष्ठी में व्यक्त किए गए। 'अध्यात्म-विज्ञान और सामाजिक परिवर्तन' विषयक संगोष्ठी हुई। अध्यक्षता शिक्षाविद डॉ. राजशेखर व्यास ने की। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, शिक्षाविद कैलाश बिहारी वाजपेयी, अधिवक्ता भंवर व्यास, जी.पी. सोनी, डॉ. ललित पाण्डे, अनिरूद्ध सिंह चुण्डावत, रोशन देपुरा ने विचार व्यक्त किए।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, बुधवार, 5 फरवरी 2020

परिस्थितियों की विषमता ने समाज को किया विषाक्त

ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर। उपस्थित परिस्थितियों की विषमता ने समाज को निरन्तर विषाक्त किया है, आवश्यकता है अध्यात्म को इसके सत्य स्वरूप में समझा जाए। ये विचार शिक्षाविद्-वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि के अवसर पर शांतिपीठ द्वारा संस्थान के सभागार में अध्यात्म-विज्ञान और सामाजिक परिवर्तन विषयक संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता शिक्षाविद् डॉ. राजशेखर व्यास ने की। इस अवसर पर शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी, वेदविद एडवोकेट भंवर व्यास, पर्यावरणविद जीपी सोनी, वास्तुविद डॉ. ललित पाण्डे, पूर्व अभियंता अनिरुद्ध सिंह चूंडावत, जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी के पूर्व मुख्य अभियन्ता रोशन देपुरा ने भी विचार व्यक्त किए।



गीता जयंती व बैकुंठ एकादशी मनाई

भगवान का पूजन कर मांगी सुख-शांति



उदयपुर. फतहसागर स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर में शुक्रवार को बैकुण्ठ एकादशी मनाई गई। शिव दल प्रमुख मनीष मेहता ने बताया कि राधाकृष्ण मन्दिर में कृष्ण प्रतिमा को गंगा स्नान कराया गया। उसके बाद तुलसी पूजन किया गया। कार्यकर्ताओं ने मन्दिर के पुजारी गोपाल शर्मा के सान्निध्य में 121 बार विष्णु सहस्रनाम का जाप कर सुख-शांति की प्रार्थना की । हाऊसिंग बोर्ड सी ब्लॉक स्थित दक्षिणेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण में दक्षिणेश्वर महिला मंडल की ओर से मोक्षदा एकादशी और गीता जयंती मनाई गई। मंडल की रानू भटनागर के नेतृत्व में महिलाओं ने भगवान को विशेष श्रृंगार धराया। सनातन मंच के जिलाध्यक्ष प्रदीप श्रीमाली के नेतृत्व में तुलसी का पूजन किया।हिन्दू क्रांति दल ने ज्योति नगर शोभागपुरा स्थित शिव मन्दिर में तुलसी का पौधा रोपकर पूजन किया। साथ ही 101 तुलसी के पौधे वितरित किए। उम्मेद सेवा संस्थान की ओर से तितरड़ी स्थित संस्थान के कार्यालय में तुलसी पूजन किया।

सेवा भारती उदयपुर के हनुमान मंदिर गमेती बस्ती, पुरोहितों की मादड़ी एवं सेंट्रल एरिया सेवा बस्ती में हवन एवं तुलसी पूजन हुआ। मुख्य अतिथि सेवा भारती चित्तौड़ प्रान्त के प्रचार प्रमुख गोपाल कनेरिया, महानगर मंत्री निमंतीलाल आमेटा आदि मौजूद थे।

बागेश्री संगीत संस्थान पानेरियों की मादड़ी में संस्थापक सचिव भगवती लाल साहू के सान्निध्य में तुलसी पूजन कार्यक्रम हुआ। आनंद आरोग्य केंद्र सुखाड़िया विश्वविद्यालय, श्री कल्लाजी वैदिक यूनिवर्सिटी निंबाहेड़ा शांति पीठ उदयपुर और पाथ टू आनंदम कैलिफोर्निया के संयुक्त तत्वावधान में वेबिनार हुआ। शांतिपीठ के अनन्त गणेश त्रिवेदी ने स्वागत उद्बोधन दिया। मुख्य अतिथि दयानंद भार्गव थे।

26 दिसम्बर 2020
dainiknavajyoti.com

दैनिक नवज्योति

गीता जयंती, मोक्षदा एकादशी मनाई



रक्तदान करते युवा

उदयपुर। गीता जीवन प्रबंधन का महानतम दर्शन है। जो व्यक्ति जीवन का प्रबंधन करना सीख लेगा, वह देश-दुनिया का प्रबंधन भी सफलतापूर्वक कर लेगा। यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक ओमप्रकाश ने ऑनलाइन समुत्कर्ष व्याख्यान माला में कही। भागवत कथा का स्मरण

दक्षिण विस्तार स्थित दक्षिनेश्वर महिला मंडल द्वारा मोक्षदा एकादशी और गीता जयंती हाऊसिंग बोर्ड सी-ब्लॉक स्थित दक्षिनेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण में मनाई। महिलाओं ने मंदिर में भगवान का विशेष श्रृंगार किया। श्रीमद भागवत कथा का स्मरण कर विधि विधान से पूजा-अर्चना की। सेवा भारती की ओर से हनुमान मंदिर गमेती बस्ती, पुरोहितों की मादड़ी एवं सेंट्रल एरिया सेवा बस्ती में विश्व कल्याण एवं निरोगता की कामना से हवन एवं तुलसी पूजन किया गया। मुख्य अतिथि सेवा भारती चित्तौड़ प्रान्त के प्रचार प्रमुख गोपाल कनेरिया थे।

तुलसी के पौधों का वितरण: मोक्षदा एकादशी एवं तुलसी पूजन दिवस के उपलक्ष में राजराजेश्वरी फाउंडेशन (परमार्थिक सृजनात्मक न्यास) द्वारा शहर के मंदिरों एवं विभिन्न स्थानों पर तुलसी के पौधे वितरित किए गए।

111 यूनिट रक्तदान: गीता जयंती पर शुक्रवार को बजरंग दल उदयपुर महानगर द्वारा रक्तदान शिविर लगाया गया। विहिप के लव श्रीमाली ने बताया कि विश्व हिंदू परिषद कार्यालय में शौर्य दिवस पर रक्तदान कार्यक्रम का समाजसेवी सुरेश बुल्ला ने उद्घाटन किया। कार्यक्रम में 111 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

यहां भी हुए आयोजन: उम्मेद सेवा संस्थान द्वारा तितरड़ी स्थित कार्यालय में तुलसी और गीता का विधि-विधान के साथ पूजा की गई। इस अवसर पर आलोक संस्थान के प्रदीप कुमावत, उम्मेद सेवा संस्थान के संस्थापक भभूत सिंह, राजेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे। हिन्दू क्रांति दल के जिला अध्यक्ष सूरज जोशी ने बताया कि ज्योति नगर शोभागपुरा में स्थित शिव मन्दिर में तुलसी का पौधा रोपण कर पूजन किया गया। 101 तुलसी के पौधे वितरण किए गए। शिव दल प्रमुख मनीष मेहता ने बताया कि यूआईटी-फतहसागर मार्ग नीलकंठ महादेव मंदिर में बैकुण्ठ एकादशी को धूमधाम से मनाया गया। तुलसी का पूजन किया गया।

अर्जुन और कृष्ण वस्तुत मन और आत्मा के प्रतिनिधि: आनंद का मार्ग गीता विषय पर आनंद आरोग्य केंद्र सुखाड़िया विश्वविद्यालय, श्रीकल्लाजी वैदिक यूनिवर्सिटी निंबाहेड़ा, शांति पीठ उदयपुर और पाथ टू आनंदम कैलिफोर्निया (अमेरिका) के साझे में गीता जयंती पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार हुआ। मुख्य अतिथि प्रो. दयानंद भार्गव ने कहा कि अर्जुन और कृष्ण वस्तुत मन और आत्मा के प्रतिनिधि के रूप में संवाद करते हैं। मन त्रिगुणात्मक है वह विषयों की ओर आकर्षित और प्रभावित होता है जबकि आत्मा सत्वगुण संपन्न है। विशिष्ट वक्ता केलिफोर्निया(अमेरिका) से सत्या कालरा ने कहा कि गीता लाईफ मैनुअल है। आनंद और आरोग्य केंद्र के निदेशक संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि गीता परमात्मा की वाणी है।

आर्ट्स कॉलेज डीन प्रो. सीमा मलिक ने संन्तुष्टि और सुख का नित्य सम्बन्ध बताया। वैदिक विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. लक्ष्मी शर्मा ने गीता के संदर्भ में धर्म और अधर्म की व्याख्या की।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, शनिवार 6 जुलाई, 2019

जयंती विशेष • प्रसिद्ध शिक्षाविद और वैज्ञानिक डॉ. कोठारी की सिफारिश पर सरकार ने कई नियम बनाए

डॉ. कोठारी की देन है देश की शिक्षा में 10+2+3 का मॉडल

एजुकेशन रिपोर्टर | उदयपुर

वर्तमान में विश्वविद्यालयों और स्कूलों में संचालित 10+2+3 शिक्षा व्यवस्था का मॉडल उदयपुर के डॉ. डीएस कोठारी की देन है। इनका नाम उदयपुर की उन शख्सियतों में से है जिन्होंने देश और दुनिया में शिक्षा, विज्ञान और रक्षा विकास में खूब नाम कमाया। वर्ष 1964-66 में इनकी अध्यक्षता में कोठारी शिक्षा आयोग बनाया गया और इनकी सिफारिश के बाद ही केन्द्र सरकार ने 10+2+3 मॉडल को पूरे देश में लागू किया। इन्होंने स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में भी मातृभाषा में शिक्षा देने की सिफारिश की थी जिसे हाल ही नई शिक्षा नीति में भी शामिल किया गया है। इन्होंने शिक्षक की आर्थिक, सामाजिक और व्यावसायिक स्थिति सुधारने और विषय विभाजन भी कक्षा नौ के बदले कक्षा 10 के बाद किए जाने की अहम सिफारिश की थी।



यूजीसी अध्यक्ष, जेएनयू कुलपति जैसे प्रमुख पदों पर रहे

: 6 जुलाई 1906 को उदयपुर में जन्मे डॉ. कोठारी ने प्रारंभिक शिक्षा उदयपुर और इंदौर में की। इलाहबाद विवि से भौतिकी में एमएससी की। यहां उनके गुरु विश्वविख्यात भौतिकी शिक्षक मेघनाथ साहा थे। वर्ष 1933 में डॉक्टरेट की उपाधि उन्होंने कैम्ब्रिज विवि की प्रसिद्ध केवेंडिश प्रयोगशाला में रिसर्च करके पूरी की। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के अध्यक्ष रहे। वैज्ञानिक शब्दावली आयोग और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के प्रथम अध्यक्ष बने। वर्ष 1963 में भारतीय विज्ञान कांग्रेस के स्वर्ण जयंती सत्र अध्यक्ष बने और जवाहरलाल नेहरू विवि के कुलपति भी रहे।

नेहरू की विज्ञान नीति में शामिल थे कोठारी: त्रिवेदी

शांतिपीठ संस्थान के अनंत गणेश त्रिवेदी ने बताया कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की विज्ञान नीति में जो लोग शामिल थे उनमें डॉ. कोठारी भी थे। डॉ. कोठारी रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार रहे। भारतीय संविधान निर्माती सभा के सदस्य मास्टर बलवंत सिंह मेहता बताते थे कि नेहरू ने एक बार अपने भाषण में डॉ. कोठारी का जिक्र करते कहा था कि आपके में से कई गांधीवादी हैं लेकिन हमारी सरकारी सेवाओं में भी ऐसे व्यक्ति हैं जो भले ही खादी ना पहनते हो, पर सच्चे गांधीवादी है। जैसे डॉ. कोठारी। कोठारी अंत समय तक गीता से प्रेरणा लेते रहे। वे बताते थे कि विज्ञान पढ़ने से ही गीता समझ में आएगी।

डॉ. कोठारी ने राष्ट्र धर्म, मानव कल्याण के मार्ग को दिशा दी

गांधी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों का वैज्ञानिक अध्ययन कर डॉ. कोठारी ने राष्ट्र धर्म और मानव कल्याण के मार्ग को नई दिशा दी। उक्त विचार शुक्रवार को शिक्षाविद् डा. दौलतसिंह कोठारी की जन्म जयंती की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ की मेजबानी में ओ.टी.सी. के सभाकक्ष में डॉ. कोठारी'' विषयक विचार संगोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने कहे। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि मनुष्य चेतना विकास के अहिंसा, सत्य, अस्तेय, वितरागता एवं अपरिग्रह के मौलिक सिद्धान्तों को गांधी ने आत्मसात किया और इन्हीं मौलिक तत्वों को आत्मसात करते हुए डॉ. कोठारी ने मनुष्य मात्र के आगे बढ़ने के प्रयासों को विस्तार दिया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शनिवार, 6 जुलाई 2019

अस्त्र संग्रह से संहार तय, साहसिक अहिंसा ही बचने का उपाय

गांधी मनीषा के आधुनिक पुरोधा डा. कोठारी विषयक विचार गोष्ठी



ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर

वैज्ञानिक शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जन्म जयंती की पूर्व संध्या पर शुक्रवार को शान्तिपीठ द्वारा ओटीसी सभागार में महात्मा गांधी के 150 वीं जयंती वर्ष में गांधी मनीषा के आधुनिक पुरोधाः डॉ. कोठारी विषयक विचार संगोष्ठी में वक्ताओं ने कहा, महात्मा गांधी ने दुनिया को सावचेत किया था कि यदि अस्त्र संग्रह की पागल दौड़ जारी रही तो ऐसा संहार निश्चित है जो आज तक इतिहास में नहीं है। यदि कोई विजेता रहा भी तो वह विजेता राष्ट्र जीवित मृत्यु ही जीएगा।

इस सामूहिक आत्मघात से बचने का यदि कोई उपाय है तो वह सिर्फ शर्तहीन साहसिक अहिंसा का मार्ग ही है। गांधी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों का वैज्ञानिक अध्ययन कर डॉ. कोठारी ने राष्ट्र धर्म और मानव कल्याण के मार्ग को नयी दिशा दी। उन्होंने निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति माण्डव के सिद्धांत के अजातशत्रु भाव को आत्मसात किया, तो दूसरी ओर उन्होंने भौतिकी के अपने विशेष ज्ञान को प्रयोग में लाकर ऐसे आयुध का आविष्कार किया जिससे भारत पाक युद्ध के समय पैटन टेकों को नष्ट किया गया। अध्यक्षीय उद्बोधन में पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि मनुष्य चेतना विकास के अहिंसा, सत्य, अस्तेय, वितरागता एवं अपरिग्रह के मौलिक सिद्धान्तों को गांधी ने आत्मसात किया और डॉ. कोठारी ने मनुष्य मात्र के आगे बढ़ने के प्रयासों को विस्तार दिया। प्रमुख वक्ता प्रो. एसआर व्यास ने कहा, भारतीय मनीषि ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म का दर्शन किया और यही कार्य डॉ. कोठारी ने करते हुए गांधी की मनीषा को आधुनिक पुरोधा के रूप विस्तार दिया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा, डॉ. कोठारी ने अन्तर्जगत व बहिर्जगत दोनों की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए पारस्परिक पूरकता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया तथा कहा कि अपरा और परा दोनों को सांख्य दर्शन में बड़ी ही सुन्दरता से निरूपित किया है जो वेदान्त का आधार है और आधुनिक विज्ञान को नूतन दिशा प्रदान करता है। कोटा विश्व विद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पीके दशोरा ने कहा, शिक्षा आयोग की रिपोर्ट के रूप में डॉ. कोठारी ने मनुष्य निर्माण का मसौदा प्रस्तुत किया है।

कोठारी ने गीता के कर्मयोग को साधा और राष्ट्र निर्माण की दिशा दी। ओटीसी की अधिकारी रेखा भटनागर ने भी विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ में अशोक भण्डारी ने युवा प्रतिभागियों का स्वागत किया। अन्त में प्रश्न उत्तर सत्र भी रखा गया। गोष्ठी का संचालन भरत कुमावत ने किया जबकि शान्तिपीठ की ओर से पूर्व आरएएस अधिकारी हीरालाल कुणावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर, शनिवार, 6 जुलाई, 2019

वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी जयंती पर आयोजन

डॉ. कोठारी ने देश को दी नई दिशा



व्याख्यान कार्यक्रम में मंचासीन अतिथि। पत्रिका

उदयपुर . महात्मा गांधी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों का वैज्ञानिक अध्ययन कर डॉ. डीएस कोठारी ने राष्ट्र धर्म और मानव कल्याण के मार्ग को नई दिशा दी। उन्होंने ऐसे आयुध का आविष्कार किया, जिससे भारत-पाक युद्ध के समय पेटन टैंकों को नष्ट किया गया। विचार वैज्ञानिक शिक्षाविद डॉ. डीएस कोठारी की जयंती की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ की ओर से ओटीसी में आयोजित विचार गोष्ठी में अतिथियों ने व्यक्त किए। महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती वर्ष में 'गांधी मनीषा के आधुनिक पुरोधाः डॉ. कोठारी' विषयक संगोष्ठी में ये विचार व्यक्त किए गए। अध्यक्षता पंजाब के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने की। प्रो. एस.आर. व्यास, शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने डॉ. डी.एस. कोठारी की जीवनी पर प्रकाश डाला। कोटा विवि के पूर्व कुलपति प्रो. पी.के. दशोरा, ओटीसी अधिकारी रेखा भटनागर ने भी विचार रखे। संचालन भरत कुमावत ने किया।

संगोष्ठी आज

पद्म विभूषण डॉ. दौलतसिंह कोठारी के 114वीं जयंती पर सुविवि और विज्ञान समिति की ओर से शनिवार सुबह संगोष्ठी का आयोजन होगा। विज्ञान समिति संस्थापक डॉ. केएल कोठारी ने बताया कि मुख्य वक्ता लोकसभा सदस्य और पूर्व मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह होंगे। अध्यक्षता नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया करेंगे। विशिष्ट अतिथि सांसद अर्जुन मीणा होंगे। आयोजन विवि के स्वर्ण जयंती अतिथि गृह में होगा।

प्रातःकाल

उदयपुर, शनिवार 6 जुलाई, 2019

शर्तहीन साहसिक अहिंसा ही एकमात्र मार्ग



उदयपुर (वि)। महात्मा गांधी ने दुनियाँ को सावचेत किया कि यदि अस्त्र संग्रह की पागल दौड़ जारी रही तो ऐसा संहार निश्चित है जो आज तक इतिहास में नहीं है। यदि कोई विजेता रहा भी तो वह विजेता राष्ट्र जीवित मृत्यु ही जीयेगा। इस सामूहिक आत्मघात से बचने का यदि कोई उपाय है तो वह सिर्फशर्तहीन साहसिक अहिंसा का मार्ग ही हैं। गांधी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों का वैज्ञानिक अध्ययन कर डॉ. कोठारी ने राष्ट्र धर्म और मानव कल्याण के मार्ग को नयी दिशा दी। उन्होंने ''निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव'' के सिद्धांत के अजातशत्रु भाव को आत्मसात किया, तो दूसरी ओर उन्होंने भौतिकी के अपने विशेष ज्ञान को प्रयोग में लाकर ऐसे आयुध का आविष्कार किया जिससे भारत पाक युद्ध के समय पेटन टेकों को नष्ट किया गया। उक्त विचार आज वैज्ञानिक शिक्षाविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जन्म जयंती की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ द्वारा ओ.टी.सी. के सभाकक्ष में महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती वर्ष में ''गांधी मनीषा के आधुनिक पुरोधाः डॉ. कोठारी'' विषयक विचार संगोष्ठी में बोलते हुए कई व्यक्ताओं ने व्यक्त किये।

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि मनुष्य चेतना विकास के अहिंसा, सत्य, अस्तेय, वितरागता एवं अपरिग्रह के मौलिक सिद्धान्तों को गांधी ने आत्मसात किया और इन्हीं मौलिक तत्वों को आत्मसात करते हुए डॉ. कोठारी ने मनुष्य मात्र के आगे बढ़ने के प्रयासों को विस्तार दिया। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो. एस.आर.व्यास ने कहा कि भारतीय मनीषि ने सूक्ष्माति सूक्ष्म का दर्शन किया और यही कार्य डॉ. कोठारी ने करते हुए गांधी की मनीषा को आधुनिक पुरोधा के रूप विस्तार दिया।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि डॉ. कोठारी ने अन्तर्जगत व बहिर्जगत दोनों की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए पारस्परिक पूरकता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर, शनिवार, 09 मार्च, 2019

परमहंस जयंती मनाई

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर . परा और अपरा का अद्भुत महायोग है, श्रीरामकृष्ण परमहंस, जो विवेक और वैराग्य को साथ लेकर परम सत्ता को समर्पण की प्रेरणा देता है। ये विचार श्रीरामकृष्ण परमहंस की जयंती पर शान्तिपीठ की ओर से आयोजित सत्संग संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता दर्शन शास्त्र के प्रो. एसआर व्यास ने की। चिन्तक मोहनसिंह कोठारी, संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, ए.के. झा, धर्मराज, रोशन देपुरा ने विचार रखे।

प्रातःकाल
उदयपुर, शनिवार 9 मार्च, 2019

रामकृष्ण परमहंस जयंती मनाई

उदयपुर (वि)। परा और अपरा का अद्भुत महायोग है श्रीरामकृष्ण परमहंस जो विवेक और वैराग्य को साथ लेकर परम सत्ता को समर्पण की प्रेरणा देता है। आज आवश्यकता है भौतिक और आध्यात्मिक भारत के नवोदय की जिससे देश न केवल आंतरिक व बाहरी प्रहारों से सुरक्षित होगा अपितु विश्व कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। उक्त विचार आज श्रीरामकृष्ण परमहंस की जयंती के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा संस्थान के सभागार में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए दर्शन शास्त्र के प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि आध्यात्मिक अनुभूति चाहे क्षणिक हो, वह जीवन को सकारात्मकता प्रदान करती है। उन्होनें समाज को अनुभूति विधा से जोडे जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। चिन्तक मोहन सिंह कोठारी ने रामकृष्ण भावधारा की व्याख्या करते हुए कहा कि परमहंस के लघु वक्तव्य सागर में सागर की तरह हैं जिसे अमल में लाने से संतुलित समाज की स्थापना हो सकती है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जो खुद की जंग में जीत गया उसे दुनिया की कोई ताकत हरा नहीं सकती। भारतीय मनीषा चरित्र निर्माण को प्राथमिकता देती है और जब कभी शिक्षा केन्द्रों से इसका अभाव हुआ, देश दुर्बल हुआ।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर ■ शनिवार ■ 9 मार्च, 2019

परमहंस की जयंती पर हुई संगोष्ठी

उदयपुर। परा और अपरा का अद्भुत महायोग है रामकृष्ण परमहंस। जो विवेक और वैराग्य को साथ लेकर परम सत्ता को समर्पण की प्रेरणा देता है। आज आवश्यकता है भौतिक और आध्यात्मिक भारत के नवोदय की जिससे देश न केवल आंतरिक व बाहरी प्रहारों से सुरक्षित होगा अपितु विश्व कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। उक्त विचार शुक्रवार को रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर शान्तिपीठ की ओर से संस्थान सभागार में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता दर्शन शास्त्र के प्रो. एसआर व्यास ने की। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, विद्युत अभियंता एके झा, एडवोकेट धर्मराज, रोशन देपुरा आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर उदयपुर, शनिवार 09 मार्च, 2019

जयंती पर स्वामी रामकृष्ण परमहंस को याद किया

उदयपुर| शान्तिपीठ संस्थान के सभागार में रामकृष्ण परमहंस जयंती शुक्रवार को मनाई गई। सत्संग-संगोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि आज भौतिक और आध्यात्मिक भारत के नवोदय की आवश्यकता है ताकि देश न केवल बाहरी, बल्कि आंतरिक प्रहारों से भी सुरक्षित रहे और विश्व कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त करे। अध्यक्षता कर रहे दर्शन शास्त्री प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि आध्यात्मिक अनुभूति चाहे क्षणिक हो, जीवन को सकारात्मकता देती है।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, मंगलवार, 5 फरवरी 2019

लोभ प्रवृत्ति से उन्मुक्त आचरण को नियंत्रित करना होगा

उदयपुर। वर्तमान विषम हालात को काबू करना है तो लोभ प्रवृत्ति से उन्मुक्त आचरण को नियंत्रित करना होगा। यह विचार शिक्षाविद् वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी के पुण्यतिथि पर शान्तिपीठ द्वारा आयोजित स्मृति संवाद की अध्यक्षता करते हुए पंजाब सरकार के पूर्व सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने व्यक्त किये। उन्होंने चिंता व्यक्त की कि आज व्यक्तित्व व कृतित्व में अन्तर ही समस्याओं को जटिल बना रहा है।

शांतिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी की मान्यता थी कि मौलिक रूप से वैज्ञानिक सत्य और नैतिक सत्य विरोधाभासी नहीं है। यह एक-दूसरे के पूरक हैं। पूर्व जिला कलक्टर



सुमतिलाल बोहरा ने डॉ. कोठारी के शिक्षा के क्षेत्र में दिये गये अवदान को रेखांकित करते हुए कहा कि राष्ट्र के नवनिर्माण शिक्षा व्यवस्था पर समग्र रूप से दृष्टिपात करने की आवश्यकता है। संवाद में डॉ. आर बी कुमार, डॉ. सुरेश श्रीमाली, रोशन देपुरा, कुंवर अजीत प्रताप सिंह, ए.के.झा आदि ने भी विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ डॉ. कोठारी की तस्वीर पर अतिथियों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित की गई।

दैनिक भास्कर उदयपुर, सोमवार 09 दिसंबर, 2019

गीता जयंती • संगोष्ठी-वार्ताओं में बताया इस महाग्रंथ का महत्व और सार

कर्म, ज्ञान और भक्ति का दिग्दर्शन है गीता, इससे दूर कर सकते हैं दुख-द्वंद्व : कोठारी

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

गीता जयंती पर रविवार को शान्तिपीठ संस्थान परिसर में हुई गोष्ठी में पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने वर्तमान सामाजिक हालात पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज भोग की संस्कृति हावी है। इसके दुष्परिणाम के चलते समाज असामान्य विकृतियों की विडंबनाओं से गुजर रहा है। योग संस्कृति अपनाने में ही इनके समाधान हैं।

कोठारी ने कहा कि गीता योग शास्त्र है। यह कर्म, ज्ञान और भक्ति मार्गों का दिग्दर्शन है, जिस पर चलकर व्यक्ति और समाज सारे दुखों और द्वंद्व से मुक्त हो सकता है। इस दौरान प्रो. नीरज शर्मा ने गीता में अर्जुनत्व की व्याख्या करते हुए कहा कि इन्द्र, भीष्म, द्रोण जैसों का कृपा पात्र अर्जुन संसार के दावानल से झुलस जाता है किन्तु प्रेम एवं अनन्य श्रद्धा से आत्म स्वरूप और परमात्मा के अद्वैत को अर्जित करते हुए सारे द्वंद्व से मुक्त हो जाता है। उन्होंने कहा कि विवेक मुक्ति का साधन है। संसार नहीं, आनंद हमारा स्वरूप है। इस दौरान वेदविज्ञ एडवोकेट भंवरलाल व्यास, शान्तिपीठ संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, दर्शन शास्त्री प्रो. एस.आर. व्यास, पूर्व कलक्टर सुमतिलाल बोहरा, भरत कुमावत और मनोज गंधर्व आदि ने भी इस महाग्रंथ को लेकर विचार व्यक्त किए।

शहर में शोभायात्रा निकाली, गीता के श्लोक सुनाए



गीता जयंती पर बजरंग दल की ओर से प्रांत सहसंयोजक दीपक प्रजापत और महानगर संयोजक राजेन्द्र परमार के नेतृत्व में टाउन हॉल से जगदीश चौक तक शोभायात्रा निकाली गई। विहिप महानगर मंत्री अशोक प्रजापत, सहमंत्री अर्जुन धानेरवा, सहमंत्री दिलीप सिंह पंवार आदि कार्यकर्ता शामिल हुए। सूरजपोल चौराहा स्थित अर्बुदा कला मन्दिर संगीत प्रशिक्षण संस्थान में कार्यक्रम हुआ। संगीत विद्यार्थियों को श्रीमद् भगवतगीता के 18 अध्यायों की संक्षिप्त जानकारी और श्लोक का वाचन हुआ।

प्रातःकाल उदयपुर, सोमवार 9 दिसम्बर, 2019 pratahkal.com

गीता से समाज के सारे दुखों द्वंद्वों से मुक्ति संभव

उदयपुर (वि)। आज भोग की संस्कृति हावी है, दुष्प्रिणाम स्वरूप समाज असामान्य विकृतियों की विडम्बनाओं से गुजर रहा है। इसके समाधान की खोज योग संस्कृति अपनाने से ही संभव हो सकता है। गीता योग शास्त्र है, कर्म, ज्ञान व भक्ति मार्गों का दिग्दर्शन है जिससे चलकर व्यक्ति व समाज सारे दु:खों और द्वंद्वों से मुक्त हो सकता है। उक्त विचार आज गीता जयन्ती के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में संस्थान के परिसर में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में बोलते हुए कई व्यक्ताओं ने व्यक्त किए।

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने वर्तमान सामाजिक हालात पर गंभीर



चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज भोगवादी मानसिकता हावी हो चुकी है और इसका निदान गीता में उद्घोषित योगस्थ: कुरू कर्माणी से ही संभव है।

प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो.नीरज शर्मा ने गीता में अर्जुनत्व की व्याख्या करते हुए कहा कि इन्द्र, भीष्म, द्रोण जैसों का कृपा पात्र अर्जुन संसार के दावानल से झुलस जाता है किन्तु प्रेम एवं अनन्य श्रद्धा से आत्म स्वरूप और परमात्मा के अद्वैत को अर्जित करते हुए सारे द्वंद्वों से मुक्त हो जाता है। उन्होंने कहा कि विवेक मुक्ति का साधन है। मुक्ति और आनंद एक है। संसार नहीं आनंद हमारा स्वरूप है। वेदविज्ञ एडवोकेट भंवरलाल व्यास ने कहा कि अर्जुन और श्रीकृष्ण जीवात्मा और परमात्मा का सुन्दर रूपक है और इनके मध्य का दिव्य संवाद आत्म स्वरूप में अवस्थित कर सच्चिदानंदघन का अनुभव कराने के रहस्यों का निष्पादन है। विषय प्रवर्तन करते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कर्म, ज्ञान एवं भक्ति के त्रिवेणी-योग से व्यक्ति सर्वभूतहितेरता: को सिद्ध कर सकता है। उन्होंने शिक्षा के हर आयाम पर योग शास्त्र को हिस्सा बनाये जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर, सोमवार, 09 दिसम्बर, 2019
patrika.com

गीता जयंती पर शहर में हुए विविध आयोजन

उदयपुर . गीता जयन्ती के अवसर पर शान्तिपीठ में सत्संग-संगोष्ठी का आयोजन हुआ। वक्ताओं ने कहा कि भोग संस्कृति हावी है, दुष्परिणाम स्वरूप समाज असामान्य विकृतियों की विडम्बनाओं से गुजर रहा है। समाधान की खोज योग संस्कृति अपनाने से ही संभव हो सकती है। गीता योग शास्त्र हैं, कर्म, ज्ञान व भक्ति मार्गों का दिग्दर्शन हैं, जिससे चलकर व्यक्ति व समाज सारे दुःखों और द्वंद्वों से मुक्त हो सकता हैं।



अध्यक्षता पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने की। प्रमुख वक्ता प्रो. नीरज शर्मा, भंवरलाल व्यास, शान्तिपीठ संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, प्रो. एस.आर. व्यास, रोशन देपुरा, ए.के. झा, धर्मराज, भरत कुमावत, मनोज गंधर्व ने विचार व्यक्त किए।

इधर, सूरजपोल चौराहा स्थित अर्बुदा कला मन्दिर संगीत प्रशिक्षण संस्थान में गीता जयंती मनाई। संस्थान निदेशक विवेक अग्रवाल ने गीता जयंती का महत्व बताया। मंत्र जाप किया गया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 9 दिसंबर 2019

गीता के मार्ग पर चलकर ही मुक्त हो सकते हैं दुखों से



उदयपुर। आज भोग की संस्कृति हावी है, दुष्प्रिणाम स्वरूप समाज असामान्य विकृतियों की विडम्बनाओं से गुजर रहा है। गीता योग शास्त्र है, कर्म, ज्ञान व भक्ति मार्गों का दिग्दर्शन है जिससे चलकर व्यक्ति व समाज सारे दुःखों और द्वंद्वों से मुक्त हो सकता है।

उक्त विचार रविवार को गीता जयन्ती के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि आज भोगवादी मानसिकता हावी हो चुकी है और इसका निदान गीता में उद्घोषित योगस्थः कुरू कर्माणी से ही संभव है । प्रो. नीरज शर्मा ने गीता में अर्जुनत्व की व्याख्या करते हुए कहा कि इन्द्र, भीष्म, द्रोण जैसों का कृपा पात्र अर्जुन संसार के दावानल से झुलस जाता है किन्तु प्रेम एवं अनन्य श्रद्धा से आत्म स्वरूप और परमात्मा के अद्वैत को अर्जित करते हुए सारे द्वंद्वों से मुक्त हो जाता है। वेदविज्ञ एडवोकेट भंवरलाल व्यास ने कहा कि अर्जुन और श्रीकृष्ण जीवात्मा और परमात्मा का सुन्दर रूपक है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि कर्म, ज्ञान एवं भक्ति के त्रिवेणी-योग से व्यक्ति सर्वभूतहितेरताः को सिद्ध कर सकता है। दर्शन शास्त्री प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि गीता नवीनता एवं जीवंतता का विचार ग्रन्थ है। पूर्व कलक्टर सुमतिलाल बोहरा ने कहा कि जो दूसरों के दुःख को समझे वही मानवीय सौन्दर्य और ईश्वर आस्था को प्राप्त कर सकता है। पूर्व मुख्य अभियंता रोशन देपुरा, विद्युत अधिषासी अभियन्ता ए.के.झा.,एडवोकेट धर्मराज, भरत कुमावत, मनोज गंधर्व आदि ने भी विचार व्यक्त किए ।

राजस्थान पत्रिका 7 जुलाई, 2018

शिक्षाविद् कोठारी को किया श्रद्धा से नमन

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. देश-विदेश में अपने व्यक्तित्व व कृतित्व द्वारा शहर का नाम रोशन करने वाले ख्यात शिक्षाविद् व पूर्व यूजीसी अध्यक्ष डॉ. डीएस कोठारी की 113वीं जयंती पर शुक्रवार को व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने विचार रखे।

इस मौके पर प्रो. मंजू मांडोत, डॉ. मनीष श्रीमाली, डॉ. हेमशंकर दाधीच, डॉ. चन्द्रेश छतवानी, भवानीपाल सिंह, डॉ. हरीश शर्मा, कृष्णकांत कुमावत, घनश्याम सिंह भीण्डर, डॉ. दिनेश श्रीमाली, डॉ. कुलशेखर व्यास व जितेन्द्र सिंह चौहान मौजूद थे।विज्ञान समिति की ओर से कोठारी की जयन्ती पर संगोष्ठी हुई। मुख्य वक्ता पेसिफिक विवि के प्रो. बीषी शर्मा सहित कोटा विवि के कुलपति प्रो. पीके दशोरा, भौतिकी के प्रो. पारसमल अग्रवाल, सुविवि में हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज़ शर्मा ने विचार व्यक्त किए। इधर, शान्तिपीठ में संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, शिक्षाविद् मनोहरसिंह कृष्णावत, दर्शन शास्त्र के प्रो. आरएन व्यास, कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा, एसआइइआरटी उपनिदेशक डॉ. मधुसूदन व्यास, टीआरआइ अधिकारी गितेशश्री, एडवोकेट भंवर व्यास, हीरालाल कुणावत, मनोज गंधर्व आदि वक्ताओं ने व्यक्त किए।



कोठारी की जयंती पर विज्ञान समिति में आयोजित व्याख्यान में विचार रखते वक्ता।

dainiknavajyoti.com

दैनिक नवज्योति

7-7-18

ज्ञानेन्द्रियां-कर्मेन्द्रियां शरीर के अनुसार काम करें तो ही जीवन सफल : प्रो. शर्मा



■ पद्मविभूषण डॉ. डीएस कोठारी की जयंती पर गीता, आध्यात्म एवं विज्ञान पर संगोष्ठी

ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर

विज्ञान समिति की ओर से मेवाड़ गौरव पद्मविभूषण डॉ. डीएस कोठारी की जयंती पर गीता, आध्यात्म एवं विज्ञान पर शुक्रवार को एक दिवसीय संगोष्ठी हुई।

पेसिफिक विवि के प्रेसिडेंट प्रो. बीपी शर्मा ने कहा कि सभी ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां शरीर के अनुसार काम करे तो जीवन सफल हो जाता है। कोटा विवि के कुलपति प्रो. पीके दशोरा ने कहा कि शिक्षा की बात जब भी आती है तो कोठारी कमीशन को कोई भुला नहीं सकता। भगवान के मुख से निकली गीता वेद से भी ऊपर है। गीता का ज्ञान डॉ. कोठारी के जीवन में कितना महत्वपूर्ण रहा होगा, इसका उनके विचारों से अंदाजा लगाया जा सकता है। भौतिकी के प्रॉफेसर डॉ. पारसमल अग्रवाल ने कहा कि गीता तो कर्मयोगी, तत्वज्ञानी सम्राट बनने का उपदेश देने वाला है। सुविवि हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि संसार के सामान को साथ नहीं ले जा सकते। इन सामानों का सिर्फ आनंद लें और यहीं छोड़कर जाएं। संगोष्ठी के प्रारम्भ में विज्ञान समिति के संस्थापक डॉ. केएल कोठारी ने डॉ. डीएस कोठारी का जीवन परिचय दिया। संगोष्ठी संयोजक डॉ. एन.एल. कच्छारा ने बताया, अभी तक विश्व की 40 से अधिक भाषाओं में गीता का अनुवाद हो चुका है जिसमें 16 भारतीय भाषाएं भी हैं। विज्ञान समिति के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. [illegible] ने आभार जताया। [illegible] तेड़ ने किया।

शान्तिपीठ में संगोष्ठी

शिक्षाविद्-वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयन्ती पर शुक्रवार को शान्तिपीठ के शिक्षा के मार्ग एवं लक्ष्य विषयक संगोष्ठी में कोटा विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ. परमेन्द्र दशोरा ने कहा कि विश्व की विकास दौड़ में भारत को अग्रणी बनाना है तो हमें भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्धति के विज्ञान और आधुनिक शिक्षा के नवाचारों का समुचित समन्वय बैठाना पड़ेगा। अध्यक्षता शिक्षाविद् रावत मनोहर सिंह थाणा ने की। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने भी विचार रखे।

www.dainiknavajyoti.in
सच्चा हमसफर

7-7-18

दैनिक नवज्योति

डॉ. कोठारी के व्यक्तित्व पर व्याख्यानमाला

उदयपुर। शिक्षाविद् एवं यूजीसी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. डीएस कोठारी की 113वीं जयंती पर शुक्रवार को विद्यापीठ के केंद्रीय कार्यालय में पुष्पांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर डॉ. कोठारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर व्याख्यानमाला हुई। कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि डॉ. कोठारी भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की विज्ञान नीति के सदस्यों में इनका भी नाम था। वे रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार भी रहे। 1961 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष रहे और उन्होंने इस पर पद 10 वर्ष तक कार्य किया। इस अवसर पर प्रो. मंजू मांडोत, डॉ. मनीष श्रीमाली, विशेषाधिकारी डॉ. हेमशंकर दाधीच, डॉ. चन्द्रेश छतवानी, स्पोर्ट्स बोर्ड सचिव भवानीपाल सिंह, डॉ. हरीश शर्मा भी पुष्पांजलि अर्पित की।

प्रातःकाल
उदयपुर, सोमवार 19 फरवरी, 2018

रामकृष्ण परमहंस जयंती व संगोष्ठी

उदयपुर। ईश्वर का साक्षात्कार करके आध्यात्मिक गुरू बनने की परम्परा इस देश की दिव्य विरासत है जिसके आश्रय में चलकर समाज अपनी संवेदनशीलता बरकरार रख सकता है किन्तु जब सत्य गौण हो जाए और परम्पराएं जड़ता प्राप्त करने लगे तो परिणाम विनाशकारी बनने लगते हैं । उक्त विचार रामकृष्ण परमहंस जयन्ती के अवसर पर शनिवार को शान्तिपीठ की ओर से 'सामाजिक समरसता के आध्यात्मिक प्रवर्तक रामकृष्ण परमहंस' विषयक आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। रामकृष्ण भावधारा से जुडे चिन्तक मोहनसिंह कोठारी ने अध्यक्षता करते हुए आत्मनो मोक्षार्थम् जगतहिताय च की व्याख्या करते हुए कहा कि परमहंस स्वयं का कल्याण और परहित साधने का संदेश है । उन्होंने कहा कि रामकृष्ण ने सारे धर्म मार्गो को साधकर सत्य का साक्षात्कार करते हुए सद्भाव के मार्ग को प्रकाशित किया।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने नैतिक उन्नयन के लिए आध्यात्मिक संवेदनशीलता की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि रामकृष्ण मनुष्य मात्र के अंतिम लक्ष्य का सरल संपादन हैं। गोष्ठी में डॉ. गोविन्दसिंह भारद्वाज, डॉ. बालगोपाल शर्मा, ए.के.झा., मनोज गंधर्व रूपशंकर चौबीसा ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आयोजित भजन सत्र में आर.के.बोस ने रामकृष्ण के भजन प्रस्तुत कर वातावरण को संगीतमय बना दिया।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . सोमवार . 19.02.2018

सत्संग-संगोष्ठी

उदयपुर. शान्तिपीठ की ओर से 'सामाजिक समरसता के आध्यात्मिक प्रवर्तक रामकृष्ण परमहंस' विषयक सत्संग-संगोष्ठी हुई। मोहनसिंह कोठारी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि रामकृष्ण ने सारे धर्म मार्गो को साधकर सत्य का साक्षात्कार करते हुए सद्भाव के मार्ग को प्रकाशित किया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि रामकृष्ण मनुष्य मात्र के अंतिम लक्ष्य का सरल संपादन हैं । गोष्ठी में डॉ. गोविन्दसिंह भारद्वाज, डॉ. बालगोपाल शर्मा, ए.के.झा., मनोज गंधर्व, रूपशंकर चौबीसा ने भी विचार व्यक्त किए। आर.के.बोस ने रामकृष्ण के भजन प्रस्तुत किए

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 19 फरवरी 2018

आध्यात्मिक गुरु बनने की परंपरा देश की दिव्य विरासत

उदयपुर। ईश्वर का साक्षात्कार करके आध्यात्मिक गुरु बनने की परम्परा इस देश की दिव्य विरासत है। जिसके आश्रय में चलकर समाज अपनी संवेदनशीलता बरकरार रख सकता है किन्तु जब सत्य गौण हो जाए और परम्पराएं जड़ता प्राप्त करने लगे तो परिणाम विनाशकारी बनने लगते हैं। यह विचार रामकृष्ण परमहंस जयन्ती पर शान्तिपीठ की ओर से सामाजिक समरसता के आध्यात्मिक प्रवर्तक रामकृष्ण परमहंस विषयक आयोजित सत्संग संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। मोहनसिंह कोठारी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि परमहंस स्वयं का कल्याण और परहित साधने का संदेश है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने नैतिक उन्नयन के लिए आध्यात्मिक संवेदनशीलता की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि रामकृष्ण मनुष्य मात्र के अंतिम लक्ष्य का सरल संपादन हैं। गोष्ठी में डॉ. गोविन्दसिंह भारद्वाज, डॉ. बालगोपाल शर्मा, ए.के.झा., मनोज गंधर्व, रूपशंकर चौबीसा ने भी विचार व्यक्त किए। भजन सत्र में आर.के. बोस ने रामकृष्ण के भजन प्रस्तुत कर वातावरण को संगीतमय बना दिया। राजेन्द्र राजवंशी ने सद्भावना गीत प्रस्तुत किया।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, गुरुवार, 14 जून 2018

सिंगापुर घोषणा का स्वागत

उदयपुर। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और उत्तर कोरिया के चेयरमैन किम जोंग उन के बीच हुई सिंगापुर में शान्ति शिखर वार्ता दुनियां भर में आशा की नई किरण है। यह न केवल कोरियाई प्रायद्वीप में आणविक निःशस्त्रीकरण की प्रतिबद्धता की घोषणा है, अपितु अन्तरराष्ट्रीय शान्ति की दिशा में बड़ा कदम है। शान्तिपीठ संस्थान में सिंगापुर घोषणा का स्वागत किया गया। स्वागत विमर्श की अध्यक्षता करते हुए चिन्तक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि निःशस्त्रीकरण की दिशा में कार्य करने वाले लोगों और संस्थाओं के लिए यह समझौता उत्साहवर्धक है। संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने इसे विश्व शान्ति की दिशा में नई पहल बताया। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विशेषज्ञ डॉ. आर.बी. कुमार ने कहा कि दो अतिरिक्त विचारों का समन्वय दुनिया को नई सकारात्मक दिशा देता है। पूर्व प्रशासनिक अधिकारी एस.एल. बोहरा, एडवोकेट मदन पुरोहित, डॉ. इन्द्र जोशी ने आशा व्यक्त की कि विश्वव्यापी एकता को यह नया आयाम देगा।

प्रातःकाल
उदयपुर, गुरूवार 21 जून, 2018

चेतना में बदलाव योग से ही संभव

उदयपुर। योगस्थ होकर कर्म करने का विज्ञान विश्व समाज को वर्तमान की गंभीर समस्याओं से निजात दिला सकता है। आज आवश्यकता है मानव मात्र की चेतना में बदलाव की, विकास की और यह योग्यता योग से सम्भव है जिससे विश्व के अस्तित्व मात्र पर छाए अद्वितीय संकटों से मुक्ति मिल सके। ये विचार आज अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ द्वारा आयोजित संगोष्ठी में व्यक्त किये गये। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए दर्शन शास्त्र के प्रो. एस. आर. व्यास ने भाव योग की व्याख्या करते हुए कहा कि आज भावनात्मक विचलन महा व्याधि का कारण है। आवश्यकता है भावनात्मक सुदृढ़ता विकसित हो। उन्होंने योग के गहरे निहितार्थ तक पहुँचने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि व्यक्ति के जीवन की सार्थकता तभी सिद्ध हो सकती है, जब वह औरों के लिए जीना शुरू करे और यह सम्भव है कर्म योग से, कर्म आसक्ति से नहीं। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए चिन्तक मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि मूल रूप से योग के आश्रय में आत्मा और परमात्मा के अभेद को आत्मसात करना है, किन्तु सामान्य से शिखर तक पहुँचने के जितने भी स्तर हैं सभी परम उपयोगी हैं, यही योग शास्त्र की महान विशेषता है।

प्रातःकाल
उदयपुर, सोमवार 5 फरवरी, 2018

वैज्ञानिक डॉ. कोठारी की स्मृति में चिंतन संगोष्ठी

उदयपुर। दार्शनिक-वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी के विविध आयामों पर राष्ट्र विकास के अवदान कभी विस्मृत नही किये जा सकते। एक ओर भारत के प्रतिरक्षा विज्ञान के जनक के रूप में डी.आर.डी.ओ. का विकास तो दूसरी ओर शिक्षा जगत में कोठारी कमीशन की उत्तरोत्तर प्रासंगिक बनती रिपोर्ट। डॉ. कोठारी के चैतन्य ने विज्ञानमय कोष से आनंदमय कोष की ओर गमन करते हुए मानव मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।

उक्त विचार आज प्रख्यात शिक्षाविद, वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. कोठारी की पुण्य स्मृति में शान्तिपीठ द्वारा आयोजित चिन्तन गोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पी.के. दशोरा ने कहा कि डॉ. कोठारी ऋषि परम्परा के दार्शनिक वैज्ञानिक थे। उन्होंने शिक्षा को भारत की नब्ज समझा और इसी में राष्ट्र के नव-निर्माण का स्वप्न साधा। भौतिक शास्त्र के प्रो. एस.एन.ए. जाफरी ने कहा कि डॉ. कोठारी का भौतिकी के क्षेत्र में अनोखा कार्य है। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए चिन्तक मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि जीवन की सर्वश्रेष्ठ विद्या वो अर्जित करते हैं जो पदार्थ की खोज का मार्ग और आत्मा की खोज के मार्ग की पूरकता को सम्पादित करते है, जैसा डॉ. कोठारी ने किया। कोटा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एम.एल. कालरा ने विज्ञान के क्वेन्टम मेकेनिज्म और चेतना के विकास पर विस्तार से प्रकाश डाला। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि मानवीय आदर्शो के लक्ष्य अर्जित करने में विज्ञान निःसंदेह सहयोगी बन सकता है, बशर्ते यह मूल्य अनुप्राणित दिशा प्राप्त करे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर ■ सोमवार ■ 5 फरवरी, 2018

डॉ. कोठारी ऋषि परम्परा के दार्शनिक वैज्ञानिक थे



उदयपुर। दार्शनिक-वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी के विविध आयामों पर राष्ट्र विकास के अवदान कभी विस्मृत नहीं किये जा सकते। यह विचार प्रख्यात शिक्षाविद, वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. कोठारी की पुण्य स्मृति में शान्तिपीठ द्वारा आयोजित चिन्तन गोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किये। मुख्य अतिथि कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पी.के. दशोरा ने कहा कि डॉ. कोठारी ऋषि परम्परा के दार्शनिक वैज्ञानिक थे। भौतिक शास्त्र के प्रो. एस.एन.ए. जाफरी, चिन्तक मोहनसिंह कोठारी, कोटा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एम.एल. कालरा, शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, एस.एल. बोहरा, डॉ. आर.बी. कुमार, अभिनव पण्ड्या, डॉ. गोविन्दसिंह भारद्वाज, कर्नल गुमानसिंह राव, डॉ. दिग्विजय पण्ड्या, भंवर व्यास आदि ने भी विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ में डॉ. कोठारी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

rajasthanpatrika.com
राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . सोमवार . 05.02.2018

डॉ. कोठारी को किया याद

उदयपुर. दार्शनिक-वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी की पुण्य स्मृति पर रविवार को शान्तिपीठ संस्था की ओर से पुष्पांजलि चिन्तन गोष्ठी का आयोजन हुआ। अध्यक्षता चिन्तक मोहनसिंह कोठारी ने की। कोटा विवि के कुलपति प्रो. पीके. दशोरा ने कहा कि डॉ. कोठारी ऋषि परम्परा के दार्शनिक वैज्ञानिक थे। उन्होंने शिक्षा को भारत की नब्ज समझ राष्ट्र नव-निर्माण का स्वप्न साधा। भौतिक शास्त्र प्रो. एसएनए. जाफरी, कोटा विवि के पूर्व कुलपति प्रो. एमएल. कालरा ने विज्ञान के क्वेन्टम मैकेनिज्म और चेतना के विकास पर प्रकाश डाला। अनन्त गणेश त्रिवेदी, एसएल. बोहरा, डॉ. आरबी. कुमार, अभिनव पण्ड्या, डॉ. गोविन्दसिंह भारद्वाज, गुमानसिंह राव, डॉ. दिग्विजय पण्ड्या, भंवर व्यास ने विचार रखे।



दैनिक भास्कर, उदयपुर, मंगलवार 06 फरवरी, 2018

चिंतन गोष्ठी हुई



शान्तिपीठ की वैज्ञानिक डॉ. डीएस कोठारी की स्मृति में चिंतन गोष्ठी हुई। इसमें मुख्य अतिथि कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पीके दशोरा ने कहा कि डॉ. कोठारी ऋषि परंपरा के दार्शनिक वैज्ञानिक थे। उन्होंने शिक्षा को भारत की नब्ज समझा और इसी में राष्ट्र के नव-निर्माण का स्वप्न देखा। भौतिक शास्त्र के प्रो. एसएनए जाफरी ने कहा कि डॉ. कोठारी का भौतिकी के क्षेत्र में अनोखा कार्य है। कोटा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एमएल कालरा, शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, एसएल बोहरा, डॉ. आरबी कुमार आदि ने भी विचार रखे।

प्रातःकाल
उदयपुर, शनिवार 7 जुलाई, 2018

प्राचीन व आधुनिक शिक्षा में समुचित समन्वय बैठाना होगा



उदयपुर। सात दशक से भी अधिक समय से शिक्षा पर कई विमर्शों, समीक्षाओं और आयोगों के सुझाव के बाद भी इस विशाल देश में शिक्षा की एकरूपता नहीं दिखाई दी और ना ही समय की मांग के अनुरूप कोठारी कमीशन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा का समग्र प्रारूप ही व्यवहार में आ पाया। विश्व की विकास दौड़ में भारत को अग्रणी बनाना है और मानव मात्र के सुखद भविष्य को भी आश्वस्त करना है तो हमें भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्धति के विज्ञान और आधुनिक शिक्षा के नवाचारों का समुचित समन्वय बैठाना पड़ेगा।

उक्त विचार आज शिक्षाविद्-वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयन्ती के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा 'शिक्षा के मार्ग एवं लक्ष्य' विषयक आयोजित संगोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये। कोटा विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ. परमेन्द्र दशोरा ने सार्वभौमिक शिक्षा की प्रासंगिकता बताते हुए कहा कि जीव, जगत और जगदीश का समन्वय बैठा पाये वह शिक्षा है। अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद् रावत मनोहर सिंह थाणा ने शिक्षा व्यवस्था पर गम्भीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि नैतिक मूल्यों के ह्रास में शिक्षा पर अपेक्षित ध्यान के अभाव में स्थितियाँ बदतर होती रही है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी ने शिक्षा और प्रतिरक्षा विज्ञान दोनों मोर्चों पर अभूत पूर्व कार्य करते हुए राष्ट्र के नवनिर्माण की दिशा दी, किन्तु नैतिक दबाव के अभाव में मूल्य परक राजनैतिक निर्णय न लिये जाने के कारण अपेक्षित परिणाम उपलब्ध न हो पाये। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा एसआईईआरटी के उपनिदेशक डॉ. मदूसुदन व्यास, टीआरआई के अधिकारी गितेश श्री, एडवोकेट भंवर व्यास, हीरालाल कुणावत, मनोज गंधर्व आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, शनिवार 07 जुलाई, 2018

प्राचीन शिक्षा पद्धति के विज्ञान और आधुनिक शिक्षा के नवाचारों का समन्वय जरूरी: कोठारी

शिक्षाविद् और वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर संगोष्ठी



विज्ञान समिति की मेजबानी में शुक्रवार को डॉ. डी.एस. कोठारी के जन्म दिवस पर 'गीता, अध्यात्म एवं विज्ञान' पर संगोष्ठी हुई। पेसिफिक विवि के प्रेसिडेंट प्रो. बीपी शर्मा ने कहा कि सभी ज्ञानेंद्रियां और कर्मेंद्रियां शरीर के अनुसार काम करें तो जीवन सफल हो जाता है।

उदयपुर| देशभर में सात दशक से भी ज्यादा समय से शिक्षा पर कई विमर्शों, समीक्षाओं और आयोगों के सुझावों का दौर चलता रहा है, लेकिन शिक्षा की एकरूपता नजर ही नहीं आती है। ना ही अभी तक समय की मांग के अनुरूप कोठारी कमीशन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा का समग्र प्रारूप व्यवहार में लाया गया है। जबकि विश्व विकास दौड़ में भारत को अग्रणी बनाने और मानव मात्र के सुखद भविष्य की बातें की जा रही हैं। इसके लिए भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्धति के विज्ञान और आधुनिक शिक्षा के नवाचारों का समुचित समन्वय बिठाना होगा। शिक्षा वही है, जो जीव, जगत और जगदीश के बची समन्वय बैठा पाए। यह बात शिक्षाविद और वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर शुक्रवार को शान्तिपीठ की शिक्षा के मार्ग एवं लक्ष्य विषयक संगोष्ठी में वक्ताओं ने कही। कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. परमेन्द्र दशोरा ने सार्वभौमिक शिक्षा की प्रासंगिकता पर कहा कि जीव, जगत और जगदीश का समन्वय बैठा पाए, वही शिक्षा है। मेवाड़ क्षत्रिय महासभा के संरक्षक रावत मनोहर सिंह थाणा ने शिक्षा व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। शिक्षा प्रणाली पर पूरा ध्यान केन्द्रित नहीं होने से स्थितियां बदतर होती जा रही हैं।

इन्होंने भी व्यक्त किए विचार : शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी की मान्यता थी कि अहिंसा और विज्ञान आधारित खुले समाज की संस्थापना विज्ञान या बौद्धिक तर्क मात्र से नहीं हो सकती, इसके लिए आत्मज्ञान की ओर बढ़ना होगा। दर्शनशास्त्र के प्रो. आरएन व्यास, महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा, एसआईईआरटी के उपनिदेशक डॉ. मधुसूदन व्यास, टीआरआई के अधिकारी गीतेश, भंवर व्यास, हीरालाल कुणावत, मनोज गंधर्व ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर ■ बुधवार
■ 19 दिसंबर, 2018
6

गीता की कर्मयोग विधि में छिपा है खुशहाली का राज



उदयपुर। द्वन्द्व, भय एवं अशान्ति के दौर जैसी परिस्थितियों में भी गीता की कर्मयोग विधि में खुशहाली का राज छिपा है, आवश्यकता है इसे जीवन में अपनाये जाने हेतु एक पुख्ता आचार संहिता अपनाये जाने की, जिससे व्यक्ति जाति, सम्प्रदाय व क्षेत्र से ऊपर उठकर एक आत्मप्रज्ञ नागरिक की भूमिका में प्रस्तुत हो सके।

उक्त विचार मंगलवार को गीता जयन्ती पर शान्तिपीठ द्वारा संस्थान के सभागार में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में कई प्रतिभागियों ने व्यक्त किये। अध्यक्षता करते हुए पंजाब सरकार के पूर्व सलाहाकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि गीता सम्पूर्ण आध्यामित्क ज्ञान का एनसाइक्लोपिडिया है। दर्शनशास्त्र के प्रो. एसआर व्यास ने कहा कि व्यक्ति जिस काल व परिस्थिति में घिरा है उससे मुक्त होने के लिए गीता व्यक्ति को ही क्षमतावान बनाने का रास्ता बताती है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्तगणेश त्रिवेद्वी ने कहा कि जरूरत है गीता के तत्वाधान को आत्मसात करने हेतु समुचित वातावरण बनाये जाने की।

डॉ. परितोष दुग्गड ने प्रकृति के गुणों की व्याख्या की। गोष्ठी में उदयपुर के डी.एस.ओ. गीतेशश्री, डॉ. सुरेश प्रकाश श्रीमाली, रोशन देपुरा, कृष्णगोपाल शर्मा, एड. धर्मराज ने भी विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी के दूसरे सत्र में अर्थ डायग्नोसिस के डॉ. अरविदर सिंह ने पॉवर प्रोजेक्ट द्वारा ओरा तथा चक्रों पर प्रकाश डाला। कैलाश पालीवाल ने आभार व्यक्त किया।

प्रातःकाल
उदयपुर, बुधवार 19 दिसम्बर, 2018

गीता की कर्मयोगी विधि में छिपा है खुशहाली का राज

उदयपुर (वि.)। द्वंद्व, भय एवं अशान्ति के दौर जैसी परिस्थितियों में भी गीता की कर्मयोग विधि में खुशहाली का राज छिपा है आवश्यकता है इसे जीवन में अपनाये जाने हेतु एक पुख्ता आचार संहिता अपनाये जाने की जिससे व्यक्ति जाति, सम्प्रदाय व क्षैत्र से उपर उठकर एक आत्मप्रज्ञ नागरिक की भूमिका में प्रस्तुत हो सके। उक्त विचार आज गीता जयन्ती के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा संस्थान के सभागार में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में बोलते हुए कई प्रतिभागियों ने व्यक्त किये। अध्यक्षता करते हुए पंजाब सरकार के पूर्व सलाहाकार मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि गीता सम्पूर्ण आध्यामित्क ज्ञान का एनसाईक्लोपिडिया है। दर्शनशास्त्र के प्रो. एस.आर.व्यास ने कहा कि व्यक्ति जिस काल व परिस्थिति में घिरा है उससे मुक्त होने के लिए गीता व्यक्ति को ही क्षमतावान बनाने का रास्ता



बताती है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्तगणेश त्रिवेद्वी ने स्वधर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जिज्ञासु को गीता पूर्ण स्वाधीनता देकर प्रति प्रश्नों का अधिकार प्रदान करती है, जरूरत है गीता के तत्वाधान को आत्मसात करने हेतु समुचित वातावरण बनाये जाने की। डॉ. परितोष दुग्गड ने प्रकृति के गुणों की व्याख्या प्रस्तुत की। गोष्ठी में उदयपुर के डी.एस.ओ. गीतेशश्री, डॉ. सुरेश प्रकाश श्रीमाली, रोशन देपुरा, कृष्णगोपाल शर्मा, एड. धर्मराज ने भी विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी के दूसरे सत्र में अर्थ डायग्नोसिस के डॉ. अरविदर सिंह ने पॉवर प्रोजेक्ट द्वारा ओरा तथा चक्रों पर विस्तार से प्रकाश डाला। कैलाश पालीवाल ने आभार व्यक्त किया।

अर्बुदा कला मंदिर संगीत एवं योग प्रशिक्षण संस्थान में मंगलवार को श्रीमद्भगवतगीता जयंती का आयोजन हर्षोल्लास एवं धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर संगीत संस्थान में विद्यार्थियों को श्रीमद्भगवतगीता की जानकारी,गीता पाठ और उसके अठारह अध्यायों की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की गई। संस्थान निदेशक विवेक अग्रवाल ने बताया कि कार्यक्रम में हरिनाम संकीर्तन एवं हरे कृष्ण महामंत्र का जाप और उसको करने की विधि और महत्व को समझाया गया।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . गुरुवार . 02.03.2017

पथ प्रदर्शक रहे रामकृष्ण



रामकृष्ण जयंती के अवसर पर बुधवार को हुई संगोष्ठी में मौजूद प्रबुद्धजन।

जयंती पर संगोष्ठी

उदयपुर. मणिपुर सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि रामकृष्ण ने साकार व निराकार सत्ता को साधकर मानव मात्र के अन्तिम लक्ष्य को उपलब्ध कराने का मार्ग प्रशस्त किया। वे मंगलवार को रामकृष्ण परमहंस जयन्ती एवं विज्ञान दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी को बतौर अध्यक्ष सम्बोधित कर रहे थे। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस.सारंगदेवोत ने कहा कि रामकृष्ण ने विवेकशील पथ प्रदर्शन किया। डॉ. आर.बी. कुमार ने कहा कि अध्यात्मिक व वैज्ञानिक चिंतन में कहीं विरोधाभास नही है, अपितु ये एक-दूसरे को पुष्ट करते हैं।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अध्यात्म व विज्ञान दोनों के एक ही लक्ष्य हैं, स्वयं की खोज। वर्तमान के शीर्षस्थ वैज्ञानिकों द्वारा विज्ञान की उपनिषदिक व्याख्या निःसन्देह आध्यात्मिक स्पंदन का वातावरण निर्मित करती है। विद्युत निगम के अधिशासी अभियन्ता ए.के.झा, शिक्षाविद् के.बी.वाजपेयी, प्रताप सिंह झाला, आर.के.मेनारिया, भंवरलाल व्यास ने भी विचार व्यक्त किए। हाजी नूर मोहम्मद, सरदार मोहम्मद, प्रकाश पानेरी, कमलेश्वर सिंह राठौड़ आदि उपस्थित थे। प्रारम्भ में अतिथियों ने रामकृष्ण की तस्वीर पर माल्यार्पण किया।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, गुरुवार, 2 मार्च 2017

विज्ञान व अध्यात्म का अद्वैत ला सकता है स्वर्णिम युग

रामकृष्ण परमहंस जयंती एवं विज्ञान दिवस पर संगोष्ठी

उदयपुर। रामकृष्ण परमहंस जयंती एवं विज्ञान दिवस के अवसर पर शांतिपीठ के तत्वावधान में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि आज के दौर का विज्ञान व तकनीकी उत्कर्ष सर्वनाश का कारण भी बन सकता है और अध्यात्म के साथ चलकर यह दुनिया को स्वर्ग से भी सुंदर बना सकता है। जरूरत है अध्यात्म और विज्ञान की संपूरकता को आत्मसात किए जाने की। विज्ञान व अध्यात्म का अद्वैत दुनिया को स्वर्णिम युग में ला सकता है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए मणिपुर सरकार के पूर्व सलाहकार एवं परमहंस भावधारा से जुड़े मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि रामकृष्ण एकमात्र संत हुए हैं जिन्होंने विश्व के प्रमुख सम्प्रदायों की सांगोपांग साधना करते हुए अनेक मार्गों से ईश्वर का



साक्षात्कार किया। उन्होंने साकार व निराकार सत्ता को साधकर मानव मात्र के अंतिम लक्ष्य को उपलब्ध कराने का मार्ग प्रशस्त किया। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने परमहंस के आविर्भाव के समय को धर्म की पुनःसंस्थापना का काल बताते हुए कहा कि तत्कालीन समय भटकाव व अंतर्द्वन्द का था और धर्म के नाम पर समाज में नाना विकृतियां व्याप्त हो चुकी थी। ऐसे समय में रामकृष्ण ने विवेकशील पथ प्रदर्शन किया। डॉ. आरबी कुमार, शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, विद्युत अधिशाषी अभियंता एके झा, शिक्षाविद् के बी वाजपेयी, प्रताप सिंह झाला, आरके मेनारिया, एड. भंवरलाल व्यास ने भी विचार व्यक्त किए। भौतिकी के प्रो. भटनागर, हाजी नूर मोहम्मद, सरदार मोहम्मद, एड. प्रकाश पानेरी, कमलेश्वर सिंह राठौड़ आदि उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, गुरुवार 30 नवंबर, 2017

गीता जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान में सत्संग संगोष्ठी

गीता जयंती पर शान्तिपीठ संस्थान में बुधवार को हुई सत्संग संगोष्ठी में दर्शनशास्त्र के प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि ज्ञान की पूर्णता का बोध ही समाज को जोड़ सकता है तथा सकारात्मक दिशा दे सकता है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता भारतीय तत्व चिन्तन का वैज्ञानिक उद्घाटन है और यह विश्व को महान देन है। शिक्षाविद् के.बी. वाजपेयी, एड. धर्मराज, रोशन देपुरा, कैलाश पालीवाल, सागर आनन्द सरस्वती, प्रो. बी.आर. कुमार आदि ने विचार व्यक्त किए। इधर, निंबार्क शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज में गीता जयंती की पूर्व संध्या पर गीता के द्वितीय अध्याय श्लोक 54 से 72 तक स्थित प्रज्ञ के श्लोकों का 108 बार पाठ किया गया। प्राचार्य डॉ. सुरेन्द्रकुमार द्विवेदी ने बताया कि गुरुवार को गीता जयंती कार्यक्रम होगा।

प्रातःकाल
उदयपुर, गुरूवार 30 नवम्बर, 2017

मनाई गीता जयंती

उदयपुर। भौतिक विकास की अंधी दौड़ में समूचा विश्व औसत दर्जे की व्यवस्थाओं का शिकार है तथा मानवीय आदर्शों तथा सांस्कृतिक पोषण के अभाव से उत्पन्न भयानक माहौल में व्यक्ति हितकारक व विवेकशील निर्णय लेने में असमर्थ है। ऐसे में गीता के कर्मयोग के सिद्धान्तों से संस्कारित पीढ़ी भावी विश्व का नवनिर्माण कर सकती है। यह विचार बुधवार को गीता जयन्ती पर शान्तिपीठ के द्वारा संस्थान परिसर में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए दर्शनशास्त्र के प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि ज्ञान के पूर्णता का बोध ही समाज को जोड़ सकता है तथा सकारात्मक दिशा दे सकता है। उन्होंने गीता को मेनेजमेन्ट का आदि स्त्रोत बताया। प्रो. बी.आर. कुमार ने कर्म के अधिकार की वैज्ञानिक व्याख्या को समझने की आवश्यकता प्रतिपादित की। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता भारतीय तत्वचिन्तन का वैज्ञानिक उद्घाटन है और यह विश्व को महान देन है जिसे आत्मसात कर व्यक्ति न केवल स्वयं के व्यक्तित्व का विकास ही कर सकता है, बल्कि राष्ट्र और विश्व समाज के नवनिर्माण का जरिया बन सकता है। गोष्ठी में शिक्षाविद् के.बी. वाजपेयी, एड. धर्मराज, रोशनदेपुरा, कैलाश पालीवाल, सागर आनन्द सरस्वतीआदि ने भी विचार व्यक्त किये। प्रतीक चौधरी ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर ■ गुरुवार ■ 30 नवंबर, 2017

गीता के कर्मयोग सिद्धांतों से ही विश्व का नवनिर्माण संभव

उदयपुर। भौतिक विकास की अंधी दौड़ में आज समूचा विश्व औसत दर्जे की व्यवस्थाओं का शिकार है तथा मानवीय आदर्शों तथा सांस्कृतिक पोषण के अभाव से उत्पन्न भयानक माहौल में व्यक्ति हितकारक व विवेकशील निर्णय लेने में असमर्थ है। ऐसे में गीता के कर्मयोग के सिद्धांतों से संस्कारित पीढ़ी भावी विश्व का नवनिर्माण कर सकती है। ये विचार बुधवार को गीता जयंती के अवसर पर शांतिपीठ द्वारा संस्थान परिसर में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए दर्शनशास्त्र के प्रो. एसआर व्यास ने कहा कि ज्ञान की पूर्णता का बोध ही समाज को जोड़ सकता है तथा सकारात्मक दिशा दे सकता है। उन्होंने गीता को मैनेजमेंट का आदिस्त्रोत बताया। प्रो. बीआर कुमार ने कर्म के अधिकार की वैज्ञानिक व्याख्या को समझने की आवश्यकता प्रतिपादित की। शांतिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता भारतीय तत्व चिंतन का वैज्ञानिक उद्घाटन है। गोष्ठी में शिक्षाविद् केबी वाजपेयी, धर्मराज, रोशन देपुरा, कैलाश पालीवाल, सागर आनन्द सरस्वती आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

पक्ष विपक्ष प्रतिपक्ष
उदयपुर, रविवार, 16 जुलाई, 2017

वर्तमान शिक्षा पद्धति में आध्यात्मिक मूल्यों की आवश्यकता : प्रो. शर्मा



डॉ0 डी.एस.कोठारी की जयन्ति पर शांतिपीठ भारत में आयोजित गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए। फोटो पीवीपी

उदयपुर। वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं व्यवस्था में आध्यात्मिक मूल्यों की पुनर्स्थापना की आवश्यकता है, जिससे सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो और सार्वभौमिक कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सके।

ये विचार डीएस कोठारी की जयंती के अवसर पर शांतिपीठ द्वारा आयोजित हमारी शिक्षा पद्धति और वर्तमान चुनौतियां विषयक विचार गोष्ठी में सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. चेपी शर्मा ने व्यक्त किए।

उन्होंने वर्तमान शिक्षा के हालात पर गम्भीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह डिग्री केंद्रित हो गई है। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति उमाशंकर शर्मा ने संवेदनहीनता पर चिंता व्यक्त की और शिक्षा में कर्म कौशल की आवश्यकता प्रतिपादित की।

प्रो बी आर कुमार ने कहा कि वर्तमान में विद्यार्थी डिग्रियां तो प्राप्त कर रहे हैं, लेकिन वे योग्यता विहीन है। इस अवसर पर एडवोकेट भंवर व्यास, शांतिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, कवियत्री एवं समीक्षक डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, शिक्षाविद केबी वाजपेयी, विद्युत निगम के अधिशासी अभियंता एके झा, जलदाय विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता रोशन देपुरा, नानालाल कोठारी, भरत कुमावत ने भी विचार व्यक्त किए।

गोष्ठी का संयोजन डॉ धीरज प्रकाश जोशी ने किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर 7 जुलाई, 2017

गोष्ठी में रखे विचार

उदयपुर. शांतिपीठ भारत की ओर से गुरुवार को डॉ. डी.एस. कोठारी की जयंती पर 'हमारी शिक्षा पद्धति और वर्तमान चुनौतियां' विषयक विचार गोष्ठी हुई। मुख्य अतिथि सुविवि के कुलपति प्रो. जे.पी. शर्मा, एमपीयूएटी कुलपति उमाशंकर शर्मा, प्रो. बी.आर. कुमार, भंवर व्यास, शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने विचार रखे। डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, के. बी. वाजपेयी, विद्युत निगम के अधिशासी अभियंता ए.के. झा, जलदाय विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता रोशन देवपुरा, नानालाल कोठारी व भरत कुमावत मौजूद थे। संचालन डॉ. धीरज प्रकाश जोशी ने किया। मनोज गंधर्व ने आभार जताया।

भूमि का मान
उदयपुर, 7 जुलाई, 2017

शिक्षा पद्धति और वर्तमान चुनौतियों पर विचार गोष्ठी

शांतिपीठ की हमारी शिक्षा पद्धति और वर्तमान चुनौतियां विषय पर विचार गोष्ठी हुई। इसमें मुख्य अतिथि सुविवि के कुलपति प्रो. जेपी शर्मा ने वर्तमान शिक्षा के हालात पर गंभीर चिंता करते हुए कहा कि यह डिग्री केंद्रित हो गई क्या पढ़ाना चाहिए इसका सुनिश्चित मार्ग तय नहीं कर पा रही है। एमपीयूएटी के कुलपति उमाशंकर शर्मा ने शिक्षा में कर्म कौशल की आवश्यकता है। प्रो. बीआर कुमार, भंवर व्यास, शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी आदि ने भी विचार रखे।

प्रातःकाल
उदयपुर, शुक्रवार 7 जुलाई, 2017

'योग सम्मत शिक्षा ही वर्तमान चुनौतियों की काट'

उदयपुर। वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं व्यवस्था में आध्यात्मिक मूल्यों की पुनर्स्थापना की आवश्कयता है, जिससे सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो और सार्वभौमिक कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सके। आज भोग नहीं, योग सम्मत शिक्षा ही वर्तमान की चुनौतियो का मुकाबला कर सकती है। उक्त विचार आज डी एस कोठारी की जन्मजयंती के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा हमारी शिक्षा पद्धति और वर्तमान चुनौतियां विषयक आयोजित विचार गोष्ठी में व्यक्त किये गए हैं।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.जे पी शर्मा ने वर्तमान शिक्षा के हालात पर गम्भीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह डिग्री केंद्रित हो गयी, क्या पढ़ाना चाहिए इसका सुनिश्चित मार्ग तय नही कर पा रही है। उन्होंने योग शिक्षा की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि यह हमें भारत की मौलिक शिक्षा और आधुनिक विज्ञान में समन्वय स्थापित करते हुए अपेक्षित मार्ग उपलब्ध करा सकते हैं। उन्होंने पांच साल तक की उम्र के बच्चो को स्कूली शिक्षा की आवश्यकता नहीं बताते हुए परिवार में शिक्षित करने की आवश्कयता बताई।]

महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति उमाशंकर शर्मा ने संवेदनहीनता पर चिंता व्यक्त की और शिक्षा में कर्म कौशल की आवश्यकता प्रतिपादित की। प्रो. बी.आर. कुमार ने कहा कि वर्तमान में विद्यार्थी डिग्रियां तो प्रास कर रहे हे, लेकिन वे योग्यताविहिन है। एडवोकेट भंवर व्यास ने अधिभूत, अधिदेव व आध्यात्मिक मूल्यों की और लौटने हेतु संस्कार सूत्रों की आवश्यकता बताई। विषय प्रवर्तन करते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने आधुनिक विज्ञान और आध्यात्म की पूरकता एवं समन्वय पर डॉ. डी.एस. कोठारी के चिंतन को शिक्षा में समुचित स्थान दिए जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। इस अवसर पर कवियत्री एवं समीक्षक डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ ने नैतिकता और विज्ञान के अन्तर्सम्बन्धों की दिशा में डॉ. कोठारी के चिंतन को प्रासंगिक बताया। अध्यक्षी उदबोधन देते हुए शिक्षाविद के बी वाजपेयी ने भावना, ज्ञान व कर्म के समन्वय पर बल दिया।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 7 जुलाई 2017

वर्तमान शिक्षा पद्धति में आध्यात्मिक मूल्यों की आवश्यकता : प्रो. शर्मा

उदयपुर। वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं व्यवस्था में आध्यात्मिक मूल्यों की पुनर्स्थापना की आवश्यकता है, जिससे सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो और सार्वभौमिक कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सके। ये विचार डीएस कोठारी की जयंती के अवसर पर शांतिपीठ द्वारा आयोजित हमारी शिक्षा पद्धति और वर्तमान चुनौतियां विषयक विचार गोष्ठी में सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जेपी शर्मा ने व्यक्त किए।

उन्होंने वर्तमान शिक्षा के हालात पर गम्भीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह डिग्री केंद्रित हो गई है।

महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति उमाशंकर शर्मा ने संवेदनहीनता पर चिंता व्यक्त की और शिक्षा में कर्म कौशल की आवश्यकता प्रतिपादित की।

प्रो बीआर कुमार ने कहा कि वर्तमान में विद्यार्थी डिग्रियां तो प्राप्त कर रहे



हैं, लेकिन वे योग्यता विहीन हैं। इस अवसर पर एडवोकेट भंवर व्यास, शांतिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, कवियत्री एवं समीक्षक डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, शिक्षाविद केबी वाजपेयी, विद्युत निगम के अधिशासी अभियंता एके झा, जलदाय विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता रोशन देपुरा, नानालाल कोठारी, भरत कुमावत ने भी विचार व्यक्त किए।

गोष्ठी का संयोजन डॉ धीरज प्रकाश जोशी ने किया।

दैनिक नवज्योति

उदयपुर ■ रविवार, 5 फरवरी, 2017

डा कोठारी की पुण्यतिथि पर संगोष्ठी



उदयपुर। उच्च जीवन मूल्य सम्मत शिक्षा के अभाव में व्यक्ति के चरित्र निर्माण की अपेक्षा करना बेमानी है। जीवन व्यापार की उपलब्धियां अर्जित की जानी चाहिए, लेकिन संवेदनशीलता की मधुरता की कीमत पर नहीं। आज राष्ट्र को इन नवनिर्माताओं की जरूरत है जो विज्ञान व वाणिज्य के साथ ही मानवीय मूल्यों को आत्मसात कर पाए। ये विचार प्रख्यात शिक्षाविद्, वैज्ञानिक डा दौलतसिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर शांतिपीठ की ओर से आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। संगोष्ठी में शिक्षाविद् केबी वाजपेयी, अन्नत गणेश त्रिवेदी, भंवर जोशी, रोशन जैन, अशोक झा, रोशन देपुरा, भूपालसिंह कोठारी, प्रकाश पानेरी आदि ने विचार रखे।

राजस्थान पत्रिका

उदयपुर . रविवार

05.02.2017

उच्च जीवन मूल्य सम्मत शिक्षा जरूरी

उदयपुर @ पत्रिका. उच्च जीवन मूल्य सम्मत शिक्षा के अभाव में व्यक्ति के चरित्र निर्माण की अपेक्षा करना सरासर बेमानी है।

ये विचार शनिवार को शिक्षाविद डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर शांतिपीठ में आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। संगोष्ठी में शिक्षाविद् केबी वाजपेयी, शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी हीरालाल, भूपाल सिंह कोठारी, भरत कुमावत, भंवर जोशी, रोशन जैन आदि ने विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर उदयपुर, बुधवार, 6 जुलाई, 2016

47 साल में फर्श से अर्श ही नहीं..चांद से मार्स तक पहुंचे हम

इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन के चेयरमैन एएस किरण कुमार ने मंगलवार को उदयपुर में दो कार्यक्रमों में शिरकत की। शांति पीठ की ओर से डॉ. दौलत सिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान समारोह में उन्होंने राजकीय गुरु गोविंद स्कूल में कई स्कूलों के छात्रों और जोनल रेलवे प्रशिक्षण संस्थान में भी पीपीटी के माध्यम से इसरो की पांच दशक की विकास यात्रा की पूरी कहानी सुनाई। पढ़िए उन्ही की जुबानी...

▪ एएस किरण कुमार, चेयरमैन, इसरो





उदयपुर । गुरु गोविन्द सिंह स्कूल में इसरो के चेयरमैन ए एस किरण से सवाल करती छात्रा ।

प्यारे बच्चो,

आज मैं आपसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान की जिद और जुनून की वो कहानी साझा कर रहा हूं, जिसे सुनकर हर देशवासी को गर्व होना चाहिए। आपको पता है आज से ठीक पांच दशक पहले हम अंतरिक्ष अनुसंधान के मामले में दुनिया में अंतिम पायदान पर खड़े थे, और आज हमारे वैज्ञानिकों के जज्बे और मेहनत के दम पर हम विश्व की तीसरी ताकत के रूप में बड़ी मजबूती के साथ उभरे हैं। हाल ही में हमने 22 जून को 20 सैटेलाइट एक साथ प्रक्षेपित कर इतिहास रचा है। इसमें 13 अमेरिका और शेष जर्मनी, कनाडा और इंडोनेशिया के थे। खास बात ये है कि तीन भारत के पूणे और चेन्नई की यूनिवर्सिटी में स्टूडेंट्स की 8 साल की मेहनत से तैयार किए गए थे।

आइए, मैं इस प्रजेंटेशन के माध्यम से आपको इसरो की पांच दशकों की विकास यात्रा की पूरी कहानी सुनाता हूं। शुरुआत 1957 से करते हैं। रसिया के पहले सेटेलाइट स्पूतनिक लॉन्च करने के साथ ही अंतरिक्ष के नए रास्ते खुल गए। उस वक्त अमेरिका रसिया से प्रभावित तो था लेकिन साथ ही एक बड़ा प्रतिद्वंद्वी भी बन गया। उस वक्त हमारे महान वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई, जिन्हें इंडियन स्पेस प्रोग्राम का जनक माना जाता है, ने भारत में भी इसी प्रकार के अनुसंधान केंद्र की जरूरत महसूस की। 1969 में इसरो की स्थापना उन्हीं की देन है। आप जानते हैं उस वक्त सरकार को इसकी स्थापना के लिए मनाने में भी उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसरो ने पहला सैटेलाइट आर्यभट्ट 1975 में लॉन्च किया। इसके बाद इसरो कई प्रकार के कम्युनिकेशन सेटेलाइट, अर्थ ऑब्जरवेशन सेटेलाइट सहित यह उपलब्धियां मार्स ऑरबिट मिशन और चंद्रयान- 2 तक पहुंच गई। भारत मार्स मिशन को पहले ही प्रयास में सफल करने का पहला राष्ट्र बना। आज इसरो मंगल-यान-2 की तैयारी में है।

बच्चों, हाल ही में इसरो ने केंद्र सरकार के रेल्वे मिनिस्ट्री के साथ एमओयू साइन किया है, जिसमें सेटेलाइट द्वारा रेलवे क्रॉसिंग पर होने वाले एक्सीडेंट को कम करने के लिए काम किया जा रहा है। डाक विभाग के लिए भी एप तैयार किया जा रहा है जिसमें डाकिए खुद का रूट तय कर पाएंगे। हर उपभोक्ता के मोबाइल पर सूचना पहुंच जाएगी कि डाकिया डाक देने आ रहा है, घर पर ही रहें।

▪ जैसा कि इसरो के चेयरमैन एएस किरण कुमार ने उदयपुर में दो कार्यक्रमों में कहा।

बच्चों के सवाल-किरण के जवाब

Q. एलियंस और उडनतश्तरी होती है क्या ?

ये फिजूल की बातें हैं, इनमें कोई सत्यता नहीं है। ये सिर्फ फिल्मों में ही होता है।

Q. दूसरे ग्रहों पर जीवन की क्या संभावना है ?

आज तक मानव जीवन के अलावा भी कोई जीवन होने के तथ्य किसी ग्रह पर नहीं मिले हैं।

Q. क्या मनुष्य उड़ने में सक्षम है ?

उत्तरः निर्भर करता है कि किस उद्देश्य के लिए उड़ना है। वैसे आज स्काई डाइविंग जैसे कई गैजेट्स व विकल्प उपलब्ध है।

Q. 20 सेटेलाइट एक साथ छोड़े हैं, अगला लक्ष्य क्या है ?

फोकस मौसम के सटीक अनुमान लगाने वाले सेकेरोमीटर बनाने पर है। अब तक हम कम्प्युटर के अनुमान पर ही निर्भर करते हैं।

Q. स्पेस वैदर क्या है ?

इसमें सूर्य व उसकी विकिरणों पर स्टडी की जाती है। जिसमें धरती व अन्य ग्रहों पर होने वाले प्रभावों को जानने में मदद मिलती है।

Q. मार्स मिशन में क्या प्रगति है ?

कई प्रकार के डाटा मिल रहे हैं। जिससे बड़ी रिसर्च जुड़ी हैं।

THE TIMES OF INDIA, JAIPUR
THURSDAY, JULY 7, 2016

Space tourism presently not on ISRO radar: Kiran

Udaipur: ISRO chairman and secretary, department of space, A S Kiran Kumar said India is making use of the space technology exceptionally well for developmental initiatives and for improving the living standards of her people.

"Though we are quite capable of doing it, but sending men to Mars for leisure is presently not our priority. We would rather spend our knowledge to provide relief to people in distress than explore the potential in space tourism" Kumar said.

The scientist was answering queries of inquisitive school children during an interaction program held here on Tuesday by Shantipeeth, India, a voluntary organization working for peace and fraternity.

He elaborated the increasing significance of space research applications in India like disaster management, tele-medicines, bio diversity mapping, forest fire monitoring, weather forecasting, crop yield estimate, water resource management and satellite education.

TOI



ISRO chairman A S Kiran Kumar speaking at an interaction programme in Udaipur

While answering another question Kumar negated the theory of aliens.

"Aliens are purely fictitious and we have not got a single evidence of their presence all these years" he affirmed. Reiterating the organization's commitment for human welfare, the ISRO chief said " Of our various satellites 13 are for communications, 7 for navigations, 14 for remote sensing purposes.

Through advance weather forecasting, we are able to disseminate information to thousands of people inhabiting the country's long coastline, We helped people during the Uttrakhand tragedy. Through water mapping, we inform the fishermen of the hazardous zones in oceans and seas and even tell them where they can find fishes in abundance" Kumar said.

Talking about the recent big achievement of launching 20 satellites in a single flight, the ISRO chief said that 17 co-passenger satellites were of other countries including America, Indonesia, Germany and Canada.

"The cost of sending a rocket to launch a small satellite is very huge. We did not do this free of cost, we charged them and thus met our expense for the launching" he informed.

Tech to enhance railway network

Later delivering a lecture held in the memory of scientist D S Kothari, Kiran Kumar elaborated the series of development initiatives undertaken by ISRO to help governments in delivering good governance. "In future, we will be using space studies to enhance railway network."

rajasthanpatrika.com
राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . बुधवार . 06.07.2016

सेटेलाइट से 20 हजार करोड़ का फायदा

इसरो का लक्ष्य अब समुद्र की गहराइयों को नापने का

उदयपुर इसरो का लक्ष्य है रिलॉचिंग सेटेलाइट व्हीकल और समस्त समुद्री सूचनाएं एकत्र करने वाला एक उपकरण इजाद करना है। रिलॉचिंग व्हीकल से सेटेलाइट स्थापित करने पर होने वाला खर्च काफी कम हो जाएगा, क्योंकि अब तक उपग्रह स्थापित करने वाला यंत्र अंतरिक्ष में ही रह जाता है। स्ट्रोमीटर से हम समुद्र की सभी गतिविधियों की निगरानी रख सकेंगे।

यह बात इसरो अध्यक्ष एएस किरण ने मंगलवार को शांतिपीठ की ओर से रेलवे प्रशिक्षण स्कूल में आयोजित डॉ. डी.एस. कोठारी स्मृति व्याख्यान में कही। उन्होंने बताया कि हमारे एक सेटेलाइट से सालाना 20 हजार करोड़ रुपए का लाभ हो रहा है। इसरो हैदराबाद सेंटर से समुद्र संबंधी सूचनाएं उपलब्ध कराई जा रही है। हमारे सेटेलाइट समुद्र जिस स्थान पर अच्छी मात्रा में मछली है, उस स्थान को गहरे रंग में प्रदर्शित करता है। ऐसे में मछुआरों को बेवजह समुद्र की गहराई नहीं नापनी पड़ती है जिससे डीजल व पेट्रोल की भी काफी बचत हो रही है। अध्यक्ष ने स्पष्ट किया कि फिलहाल मंगल पर मानव भेजना इसरो का कोई लक्ष्य नहीं है। हम ऐसे सेटेलाइट अंतरिक्ष में स्थापित करना चाहते है, जिनसे देश व मानव के विकास में तेजी लाई जा सके। जो लोग मंगल पर मानव भेजने की तैयारी में है, अपना कार्य करें। हम विकास के लिए सेटेलाइट उतारेंगे। अध्यक्ष किरण ने बताया कि धरती में किस स्थान पर खनिज व पेयजल है। हमारे सेटेलाइट भूगर्भ में छिपे खनिज व पेयजल को भली भांति प्रदर्शित कर रहे है। इसके माध्यम से देश में कई जगह जल संकट का समाधान किया गया है। किन स्थानों पर प्लांट लगाकर सर्वाधिक सौर ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है, इसकी जानकारी हमारे सेटेलाइट उपलब्ध करवा रहे हैं। चक्रवातों से मरने वालों की संख्या का ग्राफ शून्य हो गया है। इसरो अध्यक्ष ने बताया कि असम, मेघालय व अंडमान निकोबार आदि राज्यों में 350 निर्धारित केंद्रों को सेटेलाइट से लिंक कर आसानी से टेली मेडिसन व एजुकेशन सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी, यह बिलकुल वीडियो कांफ्रेंस जैसा होगा। इसरो अध्यक्ष ने बताया कि भुवन, नाविक और गगन सेटेलाइट से तस्वीर बदलने की तैयारी है। इनका एक रिसीवर से रेलवे नेटवर्क एवं ट्रेनों की स्थिति आदि की पूरी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। भविष्य में पानी से कौन से ट्रेक डेमेज हो सकते है, यह भी सेटेलाइट से जान सकते है। रेलवे और इसरो साथ कार्य कर रहे है। पुणे विवि व सत्यभामा विवि के विद्यार्थियों की ओर से बनाए गए सेटेलाइट इसरो ने निःशुल्क अंतरिक्ष में स्थापित किए है। हम ज्ञान में किसी देश से कम नहीं है।



रेलवे ट्रेनिंग स्कूल सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद शहरवासी। पत्रिका



बच्चों ने पूछे सवाल।



उदयपुर के रेजिडेंसी स्कूल में बुधवार को शहर के स्कूलों के छात्र-छात्रा इसरो अध्यक्ष डॉ.राधाकृष्णन से विज्ञान के बारे जानकारी लेने पहुंचे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . उदयपुर
11.07.2013

सरलता से समझाई विज्ञान की जटिलताएं

उदयपुर. अंतरिक्ष में क्या राज छिपा है, पृथ्वी जैसा और भी कोई ग्रह है क्या, दूसरे ग्रह पर जाने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है...?

विज्ञान के छात्रों में अंतरिक्ष से जुड़ी ऐसी कई जिज्ञासाएं हमेशा रहती हैं। ऐसे में यदि स्वयं अंतरिक्ष विज्ञान के विशेषज्ञ और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन 'इसरो' के अध्यक्ष बच्चों के सवालों का जवाब देने के लिए सामने हों तो क्या कहने।

उदयपुर के छात्रों के लिए बुधवार का दिन इसी उपलब्धि से भरा था जब इसरो अध्यक्ष डॉ.के.राधाकृष्णन ने उनसे बातचीत की। यहां डॉ. दौलतसिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान में आए डॉ. राधाकृष्णन रेजिडेंसी स्कूल के सभागार में बच्चों से रूबरू हुए। उन्होंने अंतरिक्ष यात्रा, इसरो के आने वाले मंगल ग्रह के प्रोजेक्ट और सेटेलाइट से पृथ्वी को पहुंचने वाले खतरे आदि सवालों का जवाब दिया।

निरंतर पढ़ने का संदेश: डॉ. राधाकृष्णन ने छात्रों से कहा कि सफलता का एक मात्र रास्ता निरंतर अभ्यास है। वे स्वयं भी हर रोज कुछ ना कुछ नया सीखते हैं और यही सफलता की कुंजी है। उन्होंने छात्रों को इसरो के कार्यों से अवगत कराया और भविष्य के मिशनों की भी जानकारी दी। उन्होंने अपना मेल आईडी भी बच्चों को दिया ताकि वे सवाल उन्हें भेज सकें। कार्यक्रम में सेंट पॉल्स, सेंट एंथनीज, केंद्रीय विद्यालय, सेंट ग्रिगोरियस, दिल्ली पब्लिक स्कूल, रेजिडेंसी आदि के छात्र-छात्राएं शामिल थे।

नहीं उठाया फायदा

यह उदयपुर के छात्रों के लिए उपलब्धि रही कि इसरो के अध्यक्ष उनके सामने थे, लेकिन मलाल यह रहा कि सरकारी स्कूल के बच्चे इसका ज्यादा फायदा नहीं उठा सके। अध्यापकों ने इसके पीछे अंग्रेजी भाषा पर पकड़ कमजोर होने का कारण बताया। उनका कहना है कि सरकारी स्कूलों में अंग्रेजी मजबूत करने के लिए विशेष प्रयास करने होंगे, वर्ना छात्र औरों से पिछड़ जाएंगे।

सवाल-जवाब

प्रश्न- सेंट पॉल स्कूल के आनंद माथूर ने अंतरिक्ष यात्रा के विषय में सवाल किया?

उत्तर- किसी मनुष्य को स्पेस की यात्रा पर भेजने में सालों की तैयारी लग जाती है। यह देखना पड़ता है कि स्पेस में लाइफ सपोर्ट सिस्टम कितना है या कैसे दिया जा सकता है। उस व्यक्ति की सुरक्षा पर ध्यान देना भी एक बड़ी जिम्मेदारी होती है। स्पेस में जाते वक्त स्पेस के वातावरण के अनुसार ही पहले उस व्यक्ति को खुद को ढालना पड़ता है और जब वह पृथ्वी पर लौटता है, तब उसे फिर से यहां के वातावरण के अनुसार खुद को ढालने में थोड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

प्रश्न- केंद्रीय विद्यालय के प्रतीक तिवारी ने एलियन और अन्य सौर मंडल में जीवन होने की संभावना पर सवाल रखा।

उत्तर- इस विषय पर कई देश जानकारी खोज रहे हैं। पृथ्वी पर जीवन भी कई सदियों के बाद संभव हो पाया है। रासायनिक बदलाव के बाद बायोलॉजिकल बदलाव आए, इसके बाद ही पृथ्वी पर जीवन संभव हो पाया है। 2013 के हमारे प्रोजेक्ट में हम मंगल ग्रह पर मीथेन की खोज इसी उद्देश्य से कर रहे हैं, ताकि जीवन की संभावना का पता किया जा सके। चूंकि एक संभावित मात्रा में मीथेन पाए जाने से जीवन की संभावना की जा सकती है।

प्रश्न- डीपीएस के छात्र ने विदेशी सेटेलाइट से भारत के सेटेलाइट को खतरे की चिंता जताई।

उत्तर- डॉ.राधाकृष्णन ने कहा कि सभी देशों के सेटेलाइटों को निर्धारित जियोस्टेशनरी ऑरबिट में ही जगह दी जाती है। इसे हम इस प्रकार समझ सकते हैं जैसे पार्किंग में कारों के पास अपनी-अपनी जगह होती है।

प्रश्न- केंद्रीय विद्यालय के आशीष मेहता ने पूछा कि सेटेलाइट से पृथ्वी को खतरा है या नहीं?

उत्तर- सेटेलाइट से कोई खतरा नहीं होता है, 50 सालों में एकाध घटना ही ऐसी हो सकती है कि पृथ्वी पर इसका कोई असर पड़ रहा है।



शांतिपीठ संस्था परिसर में पौधरोपण करते इसरो के अध्यक्ष के.राधाकृष्णन व पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक डॉ. गुलाब कोठारी।

इसरो लगाएगा स्पेस प्रदर्शनी!

सुविवि कुलपति ने मांगी रिमोट सेंसिंग

उदयपुर शहर में इसरो का कोई संग्रहालय भले न खोला जाए लेकिन आगामी दिनों में यहां स्पेस प्रदर्शनी जरूर लगाई जा सकती है। शांतिपीठ संस्था द्वारा आयोजित डॉ.दौलतसिंह कोठारी व्याख्यान माला में मौजूद लोगों के सवालों का जवाब देते हुए इसरो अध्यक्ष डॉ.के.राधाकृष्णन ने यह आश्वासन दिया है। रेलवे प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सुखाड़िया विश्वविद्यालय कुलपति प्रो.आई.वी.त्रिवेदी ने भी इसरो से रिमोट सेंसिंग और भूगोल विभाग के लिए जीआईएस सिस्टम के लिए सहयोग की मांग रखी। इस पर डॉ.राधाकृष्णन ने पूरा भरोसा दिलाया है। इसरो द्वारा प्राकृतिक आपदाओं के संबंध में भविष्यवाणियों व अन्य सहयोग के मसले पर उन्होंने कहा कि वे सेटेलाइट के माध्यम से लगातार चित्र आदि भारतीय मौसम विभाग को मुहैया करवाते रहते हैं जिस पर अध्ययन से भविष्यवाणियां उन्हीं के द्वारा की जानी होती है। उत्तराखंड त्रासदी से पूर्व व बाद में भी चित्र उपलब्ध कराए गए ताकि बचाव अभियान में मदद मिल सके। उन्होंने सुनामी चेतावनी केन्द्र की स्थापना का उदाहरण देते हुए आने वाले समय में और उन्नति व विकास की संभावनाएं जताईं। डॉ.कोठारी के परिजनों ने इसरो अध्यक्ष को चित्र संकलन भेंट किया।

अष्टधातु की प्रतिमा लगेगी: शांतिपीठ संस्थान के अनंत गणेश त्रिवेदी ने स्वागत उद्बोधन देते हुए विश्वविद्यालय परिसर में डॉ.डी.एस.कोठारी की आदमकद अष्टधातु की प्रतिमा लगाए जाने और यूआईटी द्वारा बारह लाख रुपए की राशि देने पर आभार जताया। वहीं, कुलपति प्रो.त्रिवेदी ने विज्ञान के क्षेत्र में डॉ.दौलतसिंह स्मृति पुरस्कार शुरू किए जाने की जानकारी दी। रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य सत्यपाल मैढ़ ने भी विचार रखे और शांतिपीठ सलाहकार समिति सदस्य एम.एस.कोठारी ने आभार जताया। कार्यक्रम का संचालन नेहा ने किया। का.सं.

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . शनिवार . 19 फरवरी 2011

आध्यात्म मनुष्य चेतना विकास का आधार



रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर संगोष्ठी

उदयपुर (कासं). रामकृष्ण परमहंस ने देश की तत्कालीन परिस्थितियों में व्याप्त भेदाभेद और पारस्परिक वैमनस्य से समाज को मुक्ति दिलाई और आने वाली शताब्दियों के लिए मनुष्य मात्र को जीवन का अंतिम लक्ष्य प्रदान किया। ये विचार शुक्रवार को रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर शान्तिपीठ में आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं के मुख से उभर कर आई। अध्यक्षता करते हुए मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि आत्मनोमोक्ष्यार्थम् जगत हिताय के लिए रामकृष्ण ने विवेकानंद को तैयार किया। रक्षा वैज्ञानिक डॉ. रामगोपाल ने कहा कि डारविन के क्रमशः विकास के सिद्धान्त की तरह ही मनुष्य के चेतना के विकास का आधार अध्यात्म विज्ञान है जिसका वैज्ञानिक रास्ता रामकृष्ण ने सारे धर्म मार्गों से चल कर दिया। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जो अनेकता में नैसर्गिक एकता का दर्शन करता है, वहीं समाज को एक सूत्र में पिरोता है। रामकृष्ण ने अनेक मार्गों से चलकर शाश्वत को आत्मसात किया। गोष्ठी में राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय में दर्शन शास्त्र की विभागाध्यक्ष डॉ. निर्मल गर्ग ने भी विचार व्यक्त किए। दूसरे सत्र में पं. रामकृष्ण बोस ने विवेकानंद के बांग्ला व हिन्दी में भजन सुनाए। तबले पर संगत नीरज तिवारी ने की।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, रविवार, 20 फरवरी 2011, 7

'चेतना विकास का आधार'



सरदारपुरा स्थित शांतिपीठ में गत दिवस 'सामाजिक समरसता के प्रेरक रामकृष्ण परमहंस' विषयक संगोष्ठी हुई। जिसमें डॉ. रामगोपाल ने कहा कि मनुष्य के चेतना विकास का आधार आध्यात्म विज्ञान है। अनंत गणेश त्रिवेदी, डॉ. निर्मल गर्ग आदि ने भी विचार रखे। आयोजन की अध्यक्षता मोहनसिंह कोठारी ने की।

दैनिक नवज्योति
अजमेर, रविवार, 20 फरवरी, 2011

देश को पारस्परिक वैमनस्य से मुक्ति दिलाई रामकृष्ण ने

रामकृष्ण परमहंस जयन्ती मनाई

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 19 फरवरी। रामकृष्ण ने देश की तत्कालीन परिस्थितियों में व्याप्त भेदाभेद और पारस्परिक वैमनस्य से समाज को मुक्ति दिलाई और आने वाली शताब्दियों के लिए मनुष्य मात्र को जीवन का अंतिम लक्ष्य प्रदान किया।

उक्त विचार आज रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर शान्तिपीठ में सामाजिक समरसता के प्रेरक रामकृष्ण परमहंस विषयक आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि जगत हिताय के लिए रामकृष्ण ने विवेकोनंद को तैयार किया। शान्ति है और प्रारम्भ भी शान्ति से है। रक्षा वैज्ञानिक डॉ. रामगोपाल ने कहा कि डारविन ने क्रमशः विकास के सिद्धान्त की तरह ही मनुष्य की चेतना के विकास का आधार अध्यात्म विज्ञान है जिसका वैज्ञानिक रास्ता रामकृष्ण ने सारे धर्म मार्गों से चल कर दिया।



उदयपुर। रामकृष्ण परमहंस जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में मंचासीन अतिथिगण। फोटो : नवज्योति

प्रारम्भ में शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जो अनेकता में नैसर्गिक एकता का दर्शन करता है वह समाज को एक सूत्र में पिरोता है। रामकृष्ण ने अनेक मार्गों से चल कर शाश्वत को आत्मसात किया। उन्होंने कहा कि शाश्वत को आत्मसात करने का मार्ग शान्ति मार्ग है। गोष्ठी में राजकीय मीरां कन्या महाविद्यालय में दर्शन शास्त्र की विभागाध्यक्ष डॉ. निर्मल गर्ग ने भी विचार व्यक्त किए। कर्यक्रम के दूसरे सत्र में पं. रामकृष्ण बोस ने विवेकानंद के भजन बांगला व हिन्दी में गाकर सुनाए। तबला की संगत निरज तिवारी ने की।

समाचार जगत

जयपुर, 20 फरवरी, 2011

रामकृष्ण परमहंस जयन्ती मनाई

उदयपुर, निसं.। रामकृष्ण-विवेकानंद भावधारा सदा निरा है। यह जीवात्मा को परमात्मा से जोड़ने का शाश्वत राज मार्ग है। रामकृष्ण ने देश की तत्कालीन परिस्थितियों में व्याप्त भेदाभेद और पारस्परिक वैमनस्य से समाज को मुक्ति दिलाई और आने वाली शताब्दियों के लिए मनुष्य मात्र को जीवन का अंतिम लक्ष्य प्रदान किया। उक्त विचार आज रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर शान्तिपीठ में सामाजिक समरसता के प्रेरक रामकृष्ण परमहंस विषयक आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि जगत हिताय के लिए रामकृष्ण ने विवेकानंद को तैयार किया। शान्ति है और प्रारम्भ



भी शान्ति से है। रक्षा वैज्ञानिक डॉ. रामगोपाल ने कहा कि डारविन ने क्रमशः विकास के सिद्धान्त की तरह ही मनुष्य की चेतना के विकास का आधार अध्यात्म विज्ञान है जिसका वैज्ञानिक रास्ता रामकृष्ण ने सारे धर्म मार्गों से चल कर दिया। प्रारम्भ में शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जो अनेकता में नैसर्गिक एकता का दर्शन करता है वह समाज को एक सूत्र में पिरोता है।

रामकृष्ण ने अनेक मार्गों से चल कर शाश्वत को आत्मसात किया। उन्होंने कहा कि शाश्वत को आत्मसात करने का मार्ग शान्ति मार्ग है। गोष्ठी में राजकीय मीरां कन्या महाविद्यालय में दर्शन शास्त्र की विभागाध्यक्ष डॉ. निर्मल गर्ग ने भी विचार व्यक्त किए। कर्यक्रम के दूसरे सत्र में पं. रामकृष्ण बोस ने विवेकानंद के भजन बांगला व हिन्दी में गाकर सुनाए। तबला की संगत निरज तिवारी ने की।

दैनिक नवज्योति
14 दिसम्बर, 2013 शनिवार

जीवन के सत्य को प्राप्त करने का माध्यम है गीता

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 13 दिसंबर। जीव जगत और जगदीश्वर में पारस्परिक पूरकता के रहस्यों का उद्घाटन है श्रीमद् भगवत गीता, जिसे आम्मसात कर मनुष्य मात्र जीवन के शाश्वत सत्य को प्राप्त कर सकता है।

उक्त विचार शुक्रवार को श्रीमद् भगवत गीता जयंती के अवसर पर शांतिपीठ में आयोजित विचार गोष्ठी में व्यक्त किए गए। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए चिन्तक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि गीता सार्वकालिक व सार्वभौमिक दिव्य संदेश है जो मनुष्य मात्र को शाश्वत स्मृति का बोध कराता है। शांतिपीठ के सस्थापक महासचिव अन्नत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि श्रीमद्भगवत गीता सार्वकालिक व सार्वभौमिक शाश्वत संदेश है जिसे आत्मसात कर मनुष्य मात्र लौकिक व पारलौकिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि आधुनिक विज्ञान में उपस्थित पूरकता के सिद्धान्त को गीता प्रष्ठपोषित करती है जिस पर चल कर विज्ञान मनुष्य मात्र के लिये मंगलकारी हो सकता है उन्होने आशा व्यक्त की कि विज्ञान युग में गीता का चिन्तन विश्व समाज को बहुआयामी संकटों से पार ले जा सकता है तथा विश्वकुटुम्ब की अवधारणा को चरितार्थ कर सकता है। विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो. पूरणलाल शर्मा ने कहा कि गीता जीव व जीवन को पूर्वाग्रहो से मुक्त करते हुए शाश्वत से जोड़ती है।

प्रातःकाल
उदयपुर, शनिवार, 14 दिसम्बर, 2013

'भागवत को आत्मसात करने से शाश्वत सत्य की प्राप्ति'

उदयपुर। जीव जगत और जगदीश्वर में पारस्पिरक पूरकता के रहस्यो का उदघाटन है श्रीमदभगवत गीता जिसे आत्मसात कर मनुष्य मात्र जीवन के शाश्वत सत्य को प्राप्त कर सकता है। यह विचार शुक्रवार को श्रीमदभगवत गीता जयंती पर शांतिपीठ में आयोजित विचार गोष्ठी में व्यक्त किये गये।

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए चिन्तक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि गीता सार्वकालिक व सार्वभौमिक दिव्य संदेश है जो मनुष्य मात्र को शाश्वत स्मृति का बोध कराता है। शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अन्नत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि श्रीमदभागवत गीता सार्वकालिक व सार्वभौमिक शाश्वत संदेश है जिसे आत्मसात कर मनुष्य मात्र लौकिक व पारलौकिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। उन्होने कहा कि आधुनिक विज्ञान में उपस्थित पूरकता के सिद्धान्त को गीता प्रष्ठपोषित करती है जिस पर चल कर विज्ञान मनुष्य मात्र के लिये मंगलकारी हो सकता है। उन्होने आशा व्यक्त की कि विज्ञान युग में गीता का चिन्तन विश्व समाज को बहुआयसमी संकटो से पार ले जा सकता है तथा विश्वकुटूम्ब की अवधारणा को चरितार्थ कर सकता है । विषय प्रर्वतन करते हुए प्रो. पूरण लाल शर्मा ने कहा कि गीता जीव व जीवन को पूर्वाग्रहो सो मुक्त करते हुए शाश्वत से जोडती है । अंत में एम. एस. राणावत ने आभार व्यक्त किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 15 दिसम्बर 2013

गीता जयंती पर विचार गोष्ठी का आयोजन

उदयपुर. श्रीमद् भगवत गीता जयंती के अवसर पर शुक्रवार को शांतिपीठ में विचार गोष्ठी आयोजित की गई। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि गीता सार्वकालिक व सार्वभौमिक दिव्य संदेश है जो मनुष्य मात्र को शाश्वत स्मृति का बोध कराता है। शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अन्नत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि श्रीमदभगवत गीता सार्वकालिक व सार्वभौमिक शाश्वत संदेश है जिसे आत्मसात कर मनुष्य मात्र लौकिक व पारलौकिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। प्रो. पूरणलाल शर्मा ने गीता को जीव व जीवन को पूर्वाग्रहों से मुक्त करते हुए शाश्वत से जोड़ने वाला बताया।

प्रातःकाल
उदयपुर, रविवार 5 फरवरी, 2012



उदयपुर। डॉ. कोठारी को पुष्पांजलि अर्पित करते अतिथि।

डॉ. कोठारी की प्रतिमा लगाने का निर्णय

उदयपुर। प्रख्यात वैज्ञानिक शिक्षाविद् डा. दौलत सिंह कोठारी की स्मृति को अक्षुण्ण रखे जाने हेतु मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के विज्ञान महाविद्यालय में डा. कोठारी की आदम कद प्रतिमा स्थापित की जायेगी । यह निर्णय डा. डी.एस. कोठारी की पुण्यतिथि पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में संस्थान के सभागार में आयोजित स्मृति सभा में सर्व सम्मति से लिया गया ।

सभा में मुख्य अतिथि के रूप में में बोलते हुए मो.सु.विश्वविद्यालय के कुलपति डा. इन्द्रवर्धन त्रिवेदी ने कहा कि डा. कोठारी जैसे विश्व के महान शिक्षाविद् वैज्ञानिक की महाविद्यालय में प्रतीमा स्थापित होने से भावी पिढ़ी को निरन्तर प्रेरणा मिलेगी। सभा की अध्यक्षता रावत मनोहर सिंह थाणा ने की।

शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने डा. कोठारी को ज्ञान विज्ञान की समन्वित नूतन संस्कृति का प्रवर्तक बताया।

सभा में भौतिक विज्ञान प्रो. एस.एन. जाफरी, शिक्षाविद् ओ.पी. जोशी, रोशन देपुरा, राजकुमार मेनारिया, अधिवक्ता त्रिभूवननाथ पुरोहित, ओमप्रकाश मूथा आदि ने विचार व्यक्त किये।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 5 फरवरी 2012

साइंस कॉलेज में लगेगी डॉ. कोठारी की प्रतिमा

उदयपुर. मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के विज्ञान महाविद्यालय में प्रख्यात वैज्ञानिक व शिक्षाविद् डा. दौलत सिंह कोठारी की विशाल प्रतिमा स्थापित की जाएगी।

यह निर्णय शनिवार को शान्तिपीठ के तत्वावधान में संस्थान सभागार में आयोजित स्मृति सभा में सर्वसम्मति से किया गया। सभा में मुख्य अतिथि सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति डा. इन्द्रवर्धन त्रिवेदी ने कहा कि डा. कोठारी की प्रतिमा से भावी पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी।

अध्यक्षता करते हुए रावत मनोहर सिंह थाणा ने कहा कि भारत प्रतिरक्षा विज्ञान के जनक डा. कोठारी भी हैं।

शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने डा. कोठारी को ज्ञान विज्ञान की समन्वित नूतन संस्कृति का प्रवर्तक बताया। इस कार्य के लिए कुलपति त्रिवेदी की अध्यक्षता में तदर्थ समिति गठित की गई, इसमें रावत मनोहर सिंह थाणा को समिति प्रमुख बनाया गया।

इस अवसर पर डा. कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किए गए। भौतिक विज्ञान प्रो. एस.एन. जाफरी, शिक्षाविद् ओ.पी. जोशी, रोशन देपुरा, राजकुमार मेनारिया, अधिवक्ता त्रिभुवननाथ पुरोहित, ओमप्रकाश मूथा आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर
उदयपुर • रविवार 5 फरवरी 2012 •

साइंस कॉलेज में लगेगी डॉ. कोठारी की आदमकद प्रतिमा

उदयपुर. साइंस कॉलेज परिसर में प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. कोठारी की आदमकद प्रतिमा स्थापित की जाएगी। यह निर्णय शनिवार को डॉ. कोठारी की पुण्यतिथि पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में संस्थान के सभागार में हुई स्मृति सभा में सर्व सम्मति से लिया गया। मुख्य अतिथि सुविवि कुलपति डॉ. आई.वी. त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी जैसे शिक्षाविद् वैज्ञानिक की महाविद्यालय में प्रतिमा स्थापित होने से भावी पीढ़ी को निरंतर प्रेरणा मिलेगी।

जनता के सहयोग से होगा कार्य : अध्यक्षता करते हुए रावत मनोहर सिंह थाणा ने कहा की जिस तरह हम प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप से गौरवान्वित हैं उसी तरह भारत प्रति रक्षा विज्ञान के जनक डा. कोठारी से भी हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने डा.कोठारी को ज्ञान विज्ञान की समन्वित नूतन संस्कृति का प्रवर्तक बताते हुए इस प्रस्ताव को सभा में रखा जिसे सर्व सम्मति से पारित किया गया।

इस वर्ष ही लगेगी प्रतिमा : प्रतिमा स्थापना के कार्य की समय सीमा तय करते हुए वर्ष 2012 में ही पूरा करने का निर्णय किया गया। कुलपति त्रिवेदी की अध्यक्षता में तदर्थ समिति गठित की गई है। इसमें रावत मनोहर सिंह थाणा को समिति प्रमुख की भूमिका में सम्मिलित किया गया। सभा में भौतिक विज्ञान प्रो. एस.एन. जाफरी, शिक्षाविद् ओ.पी. जोशी, रोशन देपुरा, राजकुमार मेनारिया, अधिवक्ता त्रिभुवननाथ पुरोहित, ओमप्रकाश मूथा आदि मौजूद थे।

दैनिक नवज्योति, अजमेर, 7 फरवरी, 2012

विज्ञान महाविद्यालय परिसर में लगेगी मूर्ति

उदयपुर, 6 फरवरी /प्रख्यात वैज्ञानिक शिक्षाविद् डॉ. दौलतसिंह कोठारी की स्मृति को अक्षुण्ण रखे जाने हेतु मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय के विज्ञान महाविद्यालय में डॉ. कोठारी की आदम कद प्रतिमा स्थापित की जायेगी। यह निर्णय डॉ. कोठारी की पुण्य तिथि के अवसर पर शांतिपीठ के तत्वावधान में संस्थान के सभागार में आयोजित स्मृति सभा में सर्व सम्मति से लिया गया। मुख्य अतिथि के रुप में बोलते हुए मोसुविश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.इन्द्रवर्धन त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी जैसे विश्व के महान शिक्षाविद् वैज्ञानिक की महाविद्यालय में प्रतिमा स्थापित होने से भावी पीढी को निरन्तर प्रेरणा मिलेगी। त्रिवेदी ने कहा कि विश्वविद्यालय इस पावन कार्य हेतु महाविद्यालय में उपयुक्त स्थान मुहैया कराने के साथ ही पूरा सहयोग प्रदान करेगा। अध्यक्षता करते हुए रावत मनोहरसिंह थाणा ने कहा कि जिस तरह हम प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप से गौरवान्वित है। उसी तरह भारत प्रति रक्षा विज्ञान के जनक डॉ. कोठारी से भी है। उन्होंने कहा कि उक्त कार्य में आर्थिक कठिनाई आड़े नहीं आएगी, तदुपरांत जन जन के सहयोग से इस यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। प्रारम्भ में शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने डॉ. कोठारी को ज्ञान विज्ञान की समन्वित नूतन संस्कृति का पवर्तक बताते हुए उक्त प्रस्ताव सभा में रखा जिसे सर्व सम्मति से पारित किया गया। मूर्ति स्थापना के कार्य की समय सीमा तय करते हुए इसे वर्ष 2012 में ही पूरा करने का निर्णय किया गया। कार्य निष्पादन हेतु कुलपति त्रिवेदी की अध्यक्षता में तदर्भ समिति गठित की गई जिसमें रावत मनोहरसिंह थाणा को समिति प्रमुख की भूमिका में सम्मिलित किया गया। सभा में भौतिक विज्ञान प्रो. एस.एन.जाफरी, शिक्षाविद् ओ.पी. जोशी, रोशन देवपुरा, राजकुमार मेनारिया, अधिवक्ता त्रिभुवननाथ पुरोहित, ओमप्रकाश मूथा आदि ने विचार व्यक्त किये एवं पुष्पांजलि अर्पित की। मनोज गंधर्व ने आभार व्यक्त किया।



उदयपुर। डॉ. दौलतसिंह कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण करते हुए मोसु विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.आई.वी.त्रिवेदी एवं रावत मनोहरसिंह थाणा आदि। फोटो-नवज्योति

दैनिक नवज्योति
अजमेर, सोमवार, 20 फरवरी 2012

परमहंस ने धर्म एवं दर्शनों को किया आत्मसात

श्रीरामकृष्ण परमहंस की 177 वीं जयंती पर सत्संग-संगोष्ठी

उदयपुर, 19 फरवरी। आध्यात्मिक चैतन्य के आश्रय में व्यवहरिक जीवन जीने से ही समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना संभव है। राम कृष्ण परमहंस ने सभी धर्मो और दर्शनों के सत्य को आत्मसात किया और मनुष्य मात्र के लिए आत्म साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त किया। उक्त विचार रविवार को श्रीरामकृष्ण परमहंस की 177 वीं जयंती के अवसर पर शांतिपीठ के तत्वावधान में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में बोलते हुए वक्ताओं ने व्यक्त किये।

वरिष्ठ साहित्यकार नंद चतुर्वेदी ने कहा कि महापुरुषों का दर्शन हमारी जीवन ज्योति बननी चाहिये और हमारी बहिर्जगत की यात्रा अंतर्जगत में पूर्ण होनी चाहिये। रामकृष्ण के शिष्य स्वामी विवेकानन्द संस्थानिक धर्मपुरुष नही थे, वे एक मानव धर्म की महान पहचान है। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रो.एस.आर. व्यास ने कहा कि रामकृष्ण ने अपनी अनुभूतियों से विकाट के दर्शन किये। हमें इस आदर्श को समाने रखकर स्वयं की साधना से संकुचित सीमाओं को ध्वस्त कर व्यापकता को आत्मसात करना चाहिये। डॉ. विनय पेण्डसे ने रामकृष्ण के जीवन से जुडे कई उदाहरणों से बताया कि परमहंस देव ने सारे सम्प्रदायों के सत्य को पहचाना और मनुष्य मात्र की समग्र एकता के सूत्र को नया आयाम दिया।



उदयपुर। शांतिपीठ द्वारा आयोजित रामकृष्ण परमहंस जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में अतिथि। फोटो-नवज्योति

शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि राष्ट्र चरित्र की गठन आध्यात्मिक शिक्षा से संभव है। उन्होंने कहा कि जो आत्म ज्योति जगा पाने में सहायक न बने वह शिक्षा अधूरी है। पण्डित भंवरलाल व्यास ने शांति मंत्र प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन डॉ. भगवतीप्रसाद चौबीसा ने किया, आभार अधिवक्ता त्रिभुवननाथ पुरोहित ने ज्ञापित किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में पण्डित रामकृष्ण बोस ने स्वामी विवेकानन्द एवं रामकृष्ण के भजन सुनाए। पापड़ी भट्टाचार्य और आनन्द रुप भट्टाचार्य ने संगत की। इस अवसर पर संगीत शिक्षक रफीक अहमद ने भक्ति गीत की प्रस्तुति दी। प्रारम्भ में अतिथियों द्वारा रामकृष्ण की तस्वीर पर माल्यार्पण किया तथा दीप प्रज्ज्वलित किया गया।

प्रातःकाल
उदयपुर,रविवार 19 फरवरी, 2012

रामकृष्ण परमहंस की जयन्ती मनाई

उदयपुर। रामकृष्ण परमहंस की 177वीं जयन्ती पर शांतिपीठ के तत्वावधान में सत्संग-संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी में वरिष्ठ साहित्यकार नंद चतुर्वेदी ने कहा कि महापुरूषों का दर्शन हमारी जीवन ज्योति बननी चाहिए। गोष्ठी की अध्यक्षता प्रो. एस.आर. व्यास ने की। डॉ. विनया पेण्डसे ने कहा कि परमहंस देव ने सारे सम्प्रदायों के सत्य को पहचाना।

शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि राष्ट्र चरित्र का गठन आध्यात्मिक शिक्षा से संभव है। पं. भंवरलाल व्यास ने शांति मंत्र प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन डॉ. भगवती प्रसाद चौबीसा ने किया।

दूसरे सत्र में पं. रामकृष्ण बोस ने स्वामी विवेकानन्द एवं रामकृष्ण के भजन सुनाये। संगीत शिक्षक रफीक अहमद ने भक्ति गीत की प्रस्तुति दी।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . शनिवार . 18.01.2014

शान्तिपीठ का वार्षिकोत्सव

उदयपुर. शान्तिपीठ उच्च प्राथमिक विद्यालय टोकर का वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम 'वृंद वृन्दा वत्सलम' का आयोजन किया गया, जिसमें उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओ ने मनमोहक प्रस्तुतिया दी। अध्यक्षता शान्तिपीठ उदयपुर के अनंत गणेश त्रिवेदी ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में समाज सेवी ठाकुर रामसिंह ,कुलदीप सिंह राठौड व नारायण लाल त्रिवेदी थे। प्रारम्भ में प्रधानाध्यापक रविन्द्र ने विद्यालय की गतिविधियो की जानकारी के साथ ही प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . बुधवार . 05.02.2014 धान पत्रिका लकासटा पत्रिका

'विद्यालयों से हो चरित्र गठन'

उदयपुर. राष्ट्र को आवश्यकता है तो चरित्र की। उत्कृष्ट समाज निर्माण के लिए चरित्र गठन का प्राथमिक कार्य विद्यालयों से हो सकता है। इसके अभाव में अर्जित ज्ञान अहंकारी व्यक्तियों का निर्माण करते हुए समाज को ईर्ष्या, द्वेष और अविश्वास से विकृति की ओर ले जाता है। शिक्षाविद वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर शांतिपीठ में मंगलवार को पुष्पांजलि कार्यक्रम हुआ, जिसमें वक्ताओं ने उपरोक्त विचार व्यक्त किए। इस दौरान सुविवि कुलपति डॉ. आई.वी. त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी विज्ञान के शिखर पर पहुंचे थे। उनकी आदमकद प्रतिमा का निर्माण शुरू हो गया है और जल्दी ही विवि में इसे स्थापित किया जाएगा। जनजाति विश्वविद्यालय के कुलपति टी.सी. डामोर ने कहा कि विद्यालयी और विश्वविद्यालयी शिक्षण सस्थाओं का कार्य सरल नागरिकों के निर्माण का होना चाहिए। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार एस.एल. नागदा ने भी विचार व्यक्त किए। शान्तिपीठ संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी ने विज्ञान और तत्व दर्शन के आभाज्य समन्वय को साधा तथा विश्व के आसन्न संकटों से उबरने का मार्ग प्रशस्त किया। शिक्षाविद कैलाश बिहारी वाजपेयी ने कहा कि अहंकारी व्यक्तित्व का निर्माण समाज को पतन की ओर ले जाता है। पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष वसीम खान, रोशन जैन प्रो. पी.आर. व्यास, शान्तिलाल पामेचा, प्रकाश पानेरी, हरीश पालीवाल, भोपालसिंह कोठारी, मंजूर अहमद आदि ने विचार व्यक्त किए। शान्तिपीठ के घनश्यामसिंह थाणा ने आभार जताया। इससे पहले डॉ. कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित किए गए।



डॉ. दौलतसिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर शान्तिपीठ में मंगलवार को आयोजित पुष्पांजलि कार्यक्रम में उपस्थित वक्ता।

राजस्थान पत्रिका शनिवार, 10 दिसंबर 2016

जीवन में वैज्ञानिकता लाती है गीता

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. श्रीमद् भगवद गीता मानव मात्र के उत्कर्ष का दिव्य संदेश है, जिससे जीवात्मा परमात्मा से जुड़ने के अन्तिम लक्ष्य को पा लेती है। यह उद्वेगों के पार ले जाने के साथ ही जीवन में वैज्ञानिक दिशा देती है। यह विचार विश्व मानवाधिकार दिवस एवं गीता जयन्ती की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ संस्थान के श्रीमद्भगवदगीता के प्रकाश में मानवाधिकार' विषयक संगोष्ठी में शुक्रवार को उभर कर आए। प्रो. सच्चिदानन्द जोशी ने कहा कि गीता मानवाधिकारों की सीधी व्याख्या तो नही करती किन्तु मानवाधिकारों की व्यापकता का बोध अवश्य प्रदान करती है। इस दौरान संस्था के कई कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

प्रातःकाल उदयपुर, शनिवार 10 दिसंबर, 2016

मानवाधिकारों की व्यापकता का बोध कराती है गीता



उदयपुर। ज्ञान, भक्ति और कर्तव्यों के समन्वय के उत्कर्ष के प्रकाश में मानवाधिकारों की व्यापकता का बोध श्रीमद्भगवद्गीता से प्राप्त किया जा सकता है जो वर्तमान में उपस्थित विश्वव्यापी उद्वेगों के पार जाने का मार्ग ही प्रशस्त नही करता अपितु मानव मंगल के आचार और विचार की वैज्ञानिक दिशा देता है।

उक्त विचार आज विश्व मानवाधिकार दिवस एवं गीता जयन्ती की पूर्व संध्या के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में 'श्रीमद्भगवद्गीता के प्रकाश में मानवाधिकार' विषयक आयोजित संगोष्ठी में उभर कर आये।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रो. सच्चिदानन्द जोशी ने कहा कि गीता मानवाधिकारों की सीधी व्याख्या तो नही करती किन्तु मानवाधिकारों की व्यापकता का बोध अवश्य प्रदान करती है। उन्होंने परस्परम भाव की व्याख्या करते हुए कहा कि बाँटकर खाने का विचार दूसरे के अधिकारों की स्वतः रक्षा करता है।

विशिष्ठ अतिथि के रूप में बोलते हुए म. प्र. कृ. विश्वविद्यालय के कुलपति उमाशंकर शर्मा ने युवा वर्ग को आह्वान किया कि वे गीता के संदेश को पूरी कर्तव्यनिष्ठा से आत्मसात कर स्वयं और समाज को सकारात्मक दिशा दें।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता मानव मात्र के उत्कर्ष का दिव्य संदेश है जिससे चलकर जीवात्मा परमात्मा से जुड़ने के अन्तिम लक्ष्य को उपलब्ध कर सकता है।

विचार व्यक्त करते हुए प्रो. विजय लक्ष्मी चौहान ने कहा कि अपेक्षा का अभाव अधिकारों के संरक्षण के साथ ही समाज में समरसता पैदा करता है। एडवोकेट भंवरलाल व्यास ने स्वाध्याय व अनासक्त भाव की विस्तृत व्याख्या की। मार्शल आर्ट विशेषज्ञ राजकुमार मेनारिया, स्वामीनारायण प्रतिष्ठान के साहू, सम्पत माहेश्वरी, मनोज गन्धर्व ने भी विचार व्यक्त किये। एड. धर्मराज ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक नवज्योति उदयपुर ■ शनिवार, 10 दिसम्बर, 2016 5

भागवत गीता में ज्ञान, भक्ति व कर्तव्यों का बोध: जोशी

गीता जयन्ती की पूर्व संध्या पर गोष्ठी



उदयपुर। विश्व मानवाधिकार दिवस एवं गीता जयन्ती की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में श्रीमद्भगवद्गीता के प्रकाश में मानवाधिकार विषयक आयोजित संगोष्ठी में प्रो. सच्चिदानन्द जोशी ने कहा कि ज्ञान, भक्ति और कर्तव्यों के समन्वय के उत्कर्ष के प्रकाश में मानवाधिकारों की व्यापकता का बोध श्रीमद्भगवद्गीता से प्राप्त किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि गीता मानवाधिकारों की सीधी व्याख्या तो नहीं करती किन्तु मानवाधिकारों की व्यापकता का बोध अवश्य प्रदान करती है। उन्होंने परस्पर भाव की व्याख्या करते हुए कहा कि बांटकर खाने का विचार दूसरे के अधिकारों की स्वतः रक्षा करता है। व्यक्ति केन्द्रित विचार पश्चिम की सोच है जबकि ईशावास्य मिदंमसर्व की उपनिषदिक व्याख्या प्राणी मात्र के कल्याण की घोषणा है। विशिष्ठ अतिथि मप्रकृ विश्वविद्यालय के कुलपति उमाशंकर शर्मा ने युवा वर्ग को आह्वान किया कि वे गीता के संदेश को पूरी कर्तव्यनिष्ठा से आत्मसात कर स्वयं और समाज को सकारात्मक दिशा दें। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता मानव मात्र के उत्कर्ष का दिव्य संदेश है जिससे चलकर जीवात्मा परमात्मा से जुड़ने के अन्तिम लक्ष्य को उपलब्ध कर सकता है। प्रो. विजय लक्ष्मी चौहान ने कहा कि अपेक्षा का अभाव अधिकारों के संरक्षण के साथ ही समाज में समरसता पैदा करता है। एडवोकेट भंवरलाल व्यास ने स्वाध्याय व अनासक्त भाव की विस्तृत व्याख्या की। मार्शल आर्ट विशेषज्ञ राजकुमार मेनारिया, सम्पत माहेश्वरी, मनोज गन्धर्व ने भी विचार व्यक्त किए। धर्मराज ने आभार व्यक्त किया।

गीता जयन्ती महोत्सव आज

निम्बार्क शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अपरान्ह 3 बजे श्रीमद् भागवत गीता जयन्ती महोत्सव मनाया जाएगा। मुख्य अतिथि जतिन गांधी, महन्त रासबिहारी शरण शास्त्री एवं प्रमुख वक्ता पं.भंवरलाल व्यास व लक्ष्मण पुरी गोस्वामी होंगे।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, शनिवार, 10 दिसंबर, 2016

अधिकारों की व्यापकता का बोध गीता से संभव

उदयपुर | ज्ञान, भक्ति और कर्तव्यों के समन्वय के उत्कर्ष के प्रकाश में मानवाधिकारों की व्यापकता का बोध श्रीमद् भागवत गीता से ग्रहण किया जा सकता है। इससे वर्तमान में विश्वव्यापी उद्वेगों के पार जाने के ही मार्ग प्रशस्त नहीं होते, बल्कि मानव मंगल के आचार और विचार की वैज्ञानिक दिशा भी मिलती है। यह विचार शुक्रवार को गीता जयंती की पूर्व संध्या के अवसर पर शांति पीठ संस्थान के श्रीमद भागवत गीता के प्रकाश में मानवाधिकार विषयक संगोष्ठी में कहे गए। प्रो. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि गीता मानवाधिकारों की सीधी व्याख्या तो नहीं करती किंतु मानवाधिकारों की व्यापकता का बोध प्रदान करती है।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, रविवार, 15 फरवरी 2015

आत्मा, परमात्मा के अद्वैत को आत्मसात करने की आवश्यकता

डॉ. दौलत सिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान माला



आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज के ऑडिटोरियम में आयोजित डॉ. दौलत सिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान माला में किताब का विमोचन करते अतिथि।

उदयपुर। परब्रह्म सर्वत्र है, हर व्यक्ति में जरूरत है ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग व राज योग को मिला कर आत्मा और परमात्मा के अद्वैत को आत्मसात करने की। तब जाकर आधुनिक दौर के समुद्र मंथन से उपजे गरल को हम अमृत में बदल पाएंगे। उक्त विचार शनिवार को शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज के ऑडिटोरियम में आयोजित डॉ. दौलत सिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान में पूर्व केन्द्रीय मंत्री व राज्य सभा सांसद डॉ. कर्ण सिंह ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हमें वर्तमान में उपजे विष को अपनी अनवरत साधना से अमृत में बदलना होगा।

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए विद्यापीठ विश्व विद्यालय के कुलाधिपति एच. सी. पारीख ने डॉ. कोठारी के कई संस्मरण सुनाए। स्वागत भाषण देते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आधुनिक विज्ञान में उपनिषदिक मार्ग को अपनाया है। डॉ. कोठारी के जीवन का उत्तरार्ध इसी दशा को समर्पित था। इस अवसर पर विवेक वीथी पुस्तिका का अतिथियों ने विमोचन किया। इसमें साहित्यकार समीक्षक डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ द्वारा पूर्व में शान्तिपीठ द्वारा प्रकाशित स्मृति वीथी की समीक्षा की गई है। कुलश्रेष्ठ का सम्मान भी किया गया। पी. एस. तलेसरा ने आभार व्यक्त किया। शान्तिपीठ सलाहकार परिषद के सदस्य मोहन सिंह कोठारी ने डॉ. कर्ण सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट किया। कुलपति राजस्थान विद्यापीठ एस. एस. सारंग देवोत, राज्य सभा सांसद त्रिपाठी भी उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, रविवार 15 फरवरी, 2015

सर्वधर्म समभाव से आएगी शांति

पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. कर्ण सिंह ने कहा कि परब्रह्म सर्वत्र है, उसे जानने के लिए ज्ञान योग की जरूरत है। भक्ति, कर्म, राजयोग को मिलाकर आत्मा-परमात्मा के अद्वेत को आत्मसात करने की जरूरत है। यही संदेश हमें उपनिषदों ने दिया है। पूर्व केंद्रीय मंत्री शान्तिपीठ संस्थान द्वारा आयोजित डॉ. दौलत सिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान कार्यक्रम में बोल रहे थे। आरएनटी मेडिकल कॉलेज सभागार में आयोजित 11वें व्याख्यान कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि जब तक सर्व धर्म समभाव से ही शांति स्थापित हो सकती है। विद्यापीठ के कुलाधिपति एच.सी. पारीख, संस्थान के अनंत गणेश त्रिवेदी ने विचार रखे। साहित्यकार डॉ.



डीएम कोठारी स्मृति व्याख्यान में फोल्डर का विमोचन करते अतिथि।

रजनी कुलश्रेष्ठ का सम्मान किया गया। पी.एस. तलेसरा, मोहन सिंह कोठारी, एस.एस. सारंगदेवोत आदि मौजूद थे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 15 फरवरी, 2015

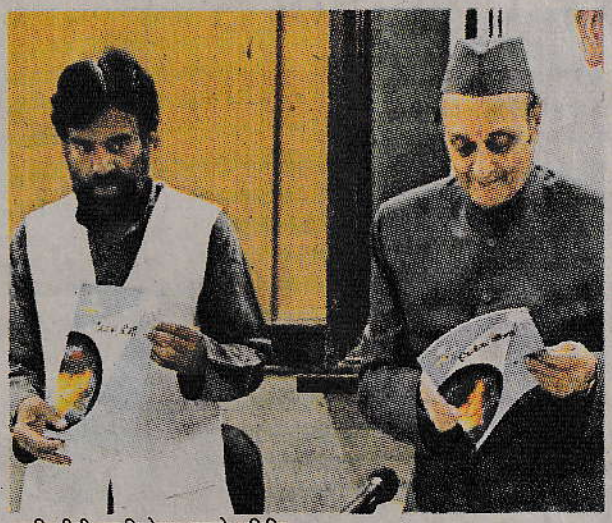
[डॉ. डीएस कोठारी स्मृति व्याख्यान]

उपनिषद् को बनाएं जीवन का आधार : कर्णसिंह

उदयपुर @ पत्रिका
patrika.com/city

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डॉ. कर्णसिंह ने कहा कि स्कूली बच्चों पर गोलियां दागना, गिरजाघरों पर हमला करना जैसे अमानवीय कृत्य कोई धर्म नहीं सिखाता। धर्म के नाम पर हिंसा न्यायोचित नहीं है। अपने धर्म को श्रेष्ठ मानकर अन्य के प्रति हिंसा के व्यवहार से देश-दुनिया में अशांति फैल रही है। ऐसे में धर्म को जानने की जरूरत है।

सिंह शनिवार को यहां आरएनटी मेडिकल कॉलेज में शांतिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित डॉ. डीएस कोठारी स्मृति 11 वें व्याख्यान कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आज युवा अतीत और भविष्य के बीच त्रिशंकु बनकर परेशान हो रहा है। युवाओं को चाहिए कि उपनिषद् के सिद्धांतों पर चलें। तभी जीवन सरल और सार्थक हो सकता है। जीवन की समस्याओं से लड़ने के लिए परब्रह्म की कल्पना, परब्रह्म का प्रतिबिंब, योग, सर्वधर्म समभाव, वसुदेव कुटुम्बकम और समाजवाद पर ध्यान देने की आवश्यकता है। शांतिपीठ संस्थान के संस्थापक अनंत गणेश चतुर्वेदी ने डॉ. कोठारी के जीवन पर प्रकाश डाला। इस मौके पर संस्थान की गतिविधियों पर आधारित पुस्तक 'स्मृति वीथी' तथा उसकी समीक्षा पुस्तक का विमोचन किया गया। उसका वाचन समीक्षक डॉ. रजनी ने किया। इस अवसर पर पीएस तलेसरा भी उपस्थित थे।



स्मृति वीथी का विमोचन करते अतिथि।

कुर्सियों ने किया परेशान

कार्यक्रम में पुरानी हो चुकी कुर्सियों ने श्रोताओं को खासा परेशान किया। व्याख्यान के दौरान एक कुर्सी टूट गई और एक श्रोता गिर पड़ा। इस पर अन्य लोग कुर्सी पर संभल कर बैठे।

कांग्रेस की स्थिति चिन्ताजनक

बातचीत में डॉ. सिंह ने कहा कि कांग्रेस की स्थिति चिंताजनक है किन्तु कार्यकर्ता निराश न हों बल्कि मनन करें। राजनीति में हार-जीत चलती रहती है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी ने कमाल कर दिखाया है। उम्मीद है, कुछ अच्छे बदलाव होंगे।

उदयपुर, रविवार 15 फरवरी, 2015
प्रातःकाल

गैर इंसानी बढ़ती हरकतों पर जताई चिंता



उदयपुर विवे क विथी पुस्तक का विमोचन करते अतितिगण।

उदयपुर । परब्रह्म सर्वत्र है, हर व्यक्ति में है, जरूरत है ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग व राज योग को मिला कर आत्मा और परमात्मा के अद्वैत को आत्मसात करने की तब ही जाकर आधुनिक दौर के समुद्र मंथन से उपजे गरल को हम अमृत में बदल पायेंगे। यह उपनिषदों का संदेश है। उक्त विचार शनिवार को शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज के ऑडिटोरियम में आयोजित डॉ. दौलत सिंह कोठारी ग्यारहवां स्मृति व्याख्यान देते हुए पूर्व केन्द्रीय मंत्री व राज्य सभा सांसद डॉ. कर्ण सिंह ने व्यक्त किये। उन्होंने वर्तमान की गैर इन्सानी बढ़ती हरकतों पर गंभीर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि हालात यहाँ तक पहुंच गये हैं कि छोटे बच्चों तक को मारा जा रहा है। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए राजस्थान विद्यापीठ विश्व विद्यालय के कुलाधिपति एच. सी. पारीख ने डॉ. कोठारी के कई संस्मरण सुनाते हुए कहा कि वर्तमान में विज्ञान व तकनीकि को मानव कल्याण की ओर दिशा देना नितांत आवश्यक है। स्वागत भाषण देते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आधुनिक विज्ञान में उपनिषदिक मार्ग को अपनाया है। डॉ. कोठारी के जीवन का उत्तरार्ध इसी दशा को समर्पित था। इस अवसर पर विवेक वीथी पुस्तिका का अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया जिसमें साहित्यकार समीक्षक डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ द्वारा पूर्व में शान्तिपीठ द्वारा प्रकाशित स्मृति वीथी की समीक्षा की गई है। अतिथियों द्वारा कुलश्रेष्ठ का सम्मान भी किया गया। पायरोटेक इन्टरनेशनल के पी. एस. तलेसरा ने आभार व्यक्त किया। शान्तिपीठ सलाहकार परिषद के सदस्य मोहन सिंह कोठारी ने डॉ. कर्ण सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट किया।

अध्यात्म में विज्ञान की गहनता

हम में सूरज की तपिश क्यों महसूस होती है? सूरज स्वयं में गर्म क्यों है? जब हम ऐसे सवाल का जवाब देने का प्रयास करते हैं तो वह सभ्यता के इतिहास की तरह विशाल हो जाता है। यह एक भौतिक सत्य है। यह प्रकृति ही है जो हमें यह अहसास कराती है। सूर्य है जो प्रकृति में ऊर्जा का स्रोत है। शरीर के सम्पर्क में आने वाले कुछ तत्व भी उसे ताप प्रदान करते हैं। इन सब प्रश्नों के उत्तर में एक ही सवाल उठता है। यह सभी शरीर महसूस करता है। ऐसे में शरीर कौन सी वस्तु है?

और जवाब भी ढूंढा

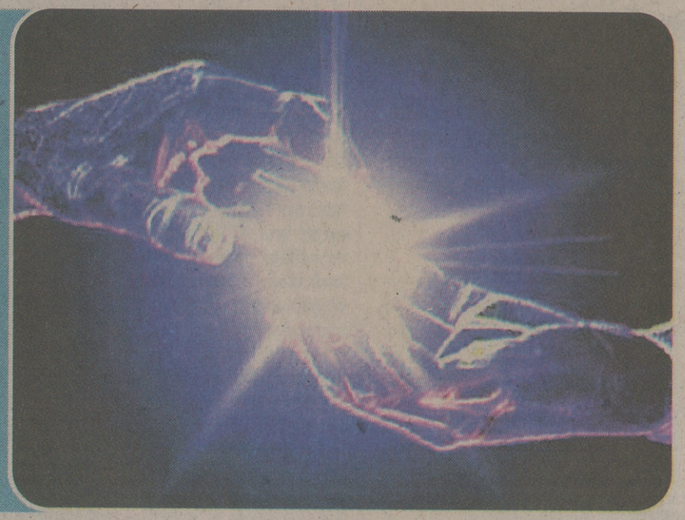
यही सब सवाल विज्ञान, इतिहास और दर्शन का आधार हैं। श्रीमद् भगवद् गीता के आठवें, 13वें और 18वें अध्याय में यही सवाल पूछा गया है। शरीर क्या है? इसका जवाब देने के लिए कई उदाहरण और विशेषणों का प्रयोग हुआ है।

किया विश्लेषण

कृष्ण अर्जुन को कौरवों पक्ष तरह पुरुषार्थ दो। इस अर्जुन का माता से जैविक रक्षण करता है, स्त्रीलिंग, प्रकृति विभा भौतिक अन्न तथा है। गीता में कृष्ण ने अर्जुन को समझाया है कि शरीर एक क्षेत्र [फील्ड] है, जैसे किसान का खेत [फील्ड] प्रत्येक प्रकार की ऊर्जा को तत्वों रूप में विभाजित है। और यहीं पर मानव को प्रकृति के विज्ञान का व्यापक दोहराव देखा जा सकता है। जो लोग क्षेत्र को समझने की क्षमता रखते हैं उन्हें क्षेत्रज्ञ (ऊर्जा और तत्व रूप) कहते हैं। इसलिए शरीर क्षेत्र के समान है।

कैसे करें अनुभव

गीता के अठारहवें अध्याय में कृष्ण कहते हैं कि अध्यात्म की वैज्ञानिकता का अनुभव चेतना के उच्चतम स्तर, परमात्म विचार व योग से होता है। योग में जीव व आत्मा दोनों की चेतनता का अनुभव होता है। एकात्मिकता चेतनता ही मानव को जीवन का मूल है। इसे आत्मा माना गया है। मनुष्य प्रकृति के सभी चैतन्य तत्वों से जीवन पाता है।



शरीर के क्षेत्र का वैज्ञानिक समीकरण

प्रत्येक क्षेत्र की पांच इकाइयां होती हैं। इन्हें प्रकृति का आवरण भी कह सकते हैं। यह एक वैज्ञानिक समीकरण के समान है। यह पांच इकाइयां हमें प्रकृति से मिलती है। यह पांच इकाइयां पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल और आकाश है। दर्शन में प्रकृति को अपने गुण और भाव के कारण मृत माना गया है। विज्ञान में किसी भी द्रव्य को पूर्ण मृत नहीं माना गया है। क्योंकि प्रकृति स्वयं में मनो-भौतिक और मनो-कायिक विचार है। यह गुणात्मक है। जबकि, गीता के तेरहवें से अठारहवें अध्याय के अध्ययन में प्रकृति की चैतन्यता को योग का एक स्वरूप माना गया है। इसका प्रभाव भी जीव, अजीव और चराचर जगत पर ऊर्जा के रूप में दिखाया गया है। इसलिए प्रकृति में कोई द्रव्य चैतन्यहीन नहीं होता। विज्ञान में सापेक्षिकता का सिद्धान्त इसे अभिकल्पना को पूर्ण प्रतिष्ठित करता है। उसके अनुसार चेतनता (ऊर्जा) व द्रव्य (तत्व) ही सूर्य में गर्मी का अभास कराते हैं। चेतना और द्रव्य अर्थात ऊर्जा और तत्व मिलकर प्रकृति के जीव और अजीव शरीर का निर्माण करते हैं।

नारायण की पूर्णता की वैज्ञानिक पुष्टि

इसी प्रकार प्रत्येक अणु में पूर्णता होती है। वह स्वयं में ब्रह्म है और सृष्टि का रचियता भी। ब्रह्माण्ड का आधार अणु है। ऋग्वेद में विश्व के 'अणुरूप उरुगाय' अर्थात् सूर्य को विष्णु की उपाधि दी गई है। आधुनिक विज्ञान में अणु को प्रत्येक वैज्ञानिक क्रिया का आधार बताया गया है। वह अनन्त है और कभी नष्ट नहीं किया जा सकता है। सिर्फ ऊर्जा परिवर्तन से उसका रूप बदला जा सकता है। अध्यात्म के अनुसार भी किसी वस्तु के विकास का आधार सूक्ष्म रूप कण है, जिन्हें हम प्रोटोन और न्यूट्रॉन कहते हैं। यही अणु का आधार भी है। दुनिया में सूर्य से आने वाली किरणों की गति को स्थिर माना गया है। वेदों में भी ईश्वर को स्थिर कहा गया है। आधुनिक विज्ञान भी ईश्वर के सम्बंध में भारतीय अवधारणा को प्रायोगिक तौर पर स्पष्ट करता है। विज्ञान ने इसके आगे बढ़ कर कण के दो रूप माने भार रूप (भौतिक अस्तित्व) और तरंग रूप (ऊर्जा) जो अध्यात्म में तत्व और चैतन्य माने गए हैं।

[जैसा कि डॉ. डीएस कोठारी ने स्वयं अपने एक आलेख में लिखा]

कानून और रिश्तों के मुरीद थे डॉ.कोठारी



डॉ.कोठारी को देश-विदेश में जानने वाले लोग उनके सुसंस्कारी स्वभाव की प्रशंसा करते नहीं थकते। महात्मा गांधी का अनुसरण करने वाले डॉ.कोठारी भी गांधी जी की तरह ही सरल और अहिंसा भरे जीवन की कल्पना करते थे। वे ना केवल लोगों को इसकी सीख देते थे, बल्कि खुद भी इन्हीं सिद्धांतों पर जीवन व्यतीत किया करते थे।

डॉ.कोठारी के भतीजे बी.एस.कोठारी ने कहा कि डॉ.कोठारी बहुत ही सरल व्यक्तित्व रखते थे। वे घर के मुखिया थे और सभी उनकी बात माना करते थे। डॉ.कोठारी बड़े और छोटे का भेद नहीं किया करते थे, वे सभी को सम्मान दिया करते थे।

डॉ.कोठारी को याद करते हुए बी.एस.कोठारी ने कहा 'डॉ.कोठारी के लिए कानून और रिश्ते दोनों की ही बहुत एहमियत थी। दिल्ली में उनके बेटे की शादी थी तो उसमें तत्कालीन राष्ट्रपति ने भी शिरकत की। उस समय डॉ.कोठारी ने राष्ट्रपति को केवल दस ही मिनट दिए बाकी का समय उन्होंने अपने परिवार के अन्य रिश्तेदारों से बातचीत में ही गुजारा। वहीं उनकी पोती की शादी के दौरान सरकार ने 100 लोगों से अधिक लोगों को भोजन कराने पर प्रतिबंध लगा रखा था। इसीलिए उन्होंने लड़के वालों से सख्ती से कह दिया था कि वह लोग 99 लोगों को ही लेकर आएं। '

उदयपुर के लाल

प्रो. एस.एन.ए. जाफरी : खगोलीय एवं पर्यावरणीय वैज्ञानिक हैं। वे वर्तमान में मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी में भौतिक विज्ञान विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। प्रो.जाफरी को आईयूसीएए पुणे के अतिथि वैज्ञानिक अवार्ड और भारत शिक्षा रत्न की उपाधि प्राप्त है। प्रो. जाफरी के अब तक 53 शोध पत्र विश्व की प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित किये जा चुके हैं। प्रो. जाफरी अमेरिका व भारत के संयुक्त 1000 करोड़ रुपए की लागत के गुरुत्वीय तरंगों के वेधशाला के प्रोजेक्ट से भी जुड़े हुए हैं। उनको खगोलीय घटनाओं से संबंधित गतिविधियों को जन-जन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी आईयूसीएए पुणे ने पश्चिम भारत क्षेत्र के लिए सौंप रखी है, वे इसके समन्वयक भी हैं। यह आईयूसीएए संदर्भ केंद्र, एमएलएसयू में स्थापित है।

शोध कार्य : डॉ. जाफरी का शोध क्षेत्र मुख्य रूप से ब्लैक होल, न्यूट्रॉन स्टार, गामा किरणों का विस्फोट, सूर्य कलकों और वायु प्रदूषण है। उदयपुर में एमएपीएन (मॉडलिंग एयर पोल्यूशन एंड नेटवर्किंग) प्रोजेक्ट के मुख्य निरीक्षक है।

डॉ.मुफखार बेग: भारत के प्रसिद्ध पर्यावरणीय वैज्ञानिक हैं। यह वर्तमान में भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम), पुणे में कार्यक्रम निदेशक है। डॉ. बेग ब्रिटेन की शोध पत्रिका 'जर्नल ऑफ ऐटमॉस्फेरिक एंड सोलर टिरेस्ट्रियल फिज़िक्स' के संपादक भी हैं। उन्हें प्रतिष्ठित शांति स्वरूप भटनागर सम्मान और संयुक्त राष्ट्र संघ का डब्ल्यूएचओ सम्मान मिल चुका है। उनके 85 शोध पत्र विश्व की प्रसिद्ध शोध पत्रिकाओं में छाप चुके हैं।

कार्य- डॉ. बेग का मुख्य शोध क्षेत्र वायु प्रदूषण पुर्वानुमान, ग्रीन हाउस गैसों का प्रभाव व ओजोन परत का क्षय है। डॉ. बेग सन् 1982 में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के भौतिकी विषय से स्वर्ण पदक विजेता हैं। उन्होंने मापन और सफर नामक प्रोजेक्ट, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की सहायता से भारत में पहली बार शुरू किया। डॉ. बेग ने एयर क्वालिटी फोरकास्टिंग सिस्टम तैयार किया गया है, जिसके केंद्र पुणे और दिल्ली हैं।

डॉ. लोकेय भारती : सौर वैज्ञानिक हैं। वर्तमान में डॉ. भारती राकीय विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। वे प्रो. एस.एन.ए.जाफरी के छात्र रह चुके हैं। डॉ. भारती के सौर कलंको के क्षेत्र में उल्लेखनीय शोध के कारण उन्हें कई प्रतिष्ठित विदेशी संस्थानों की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई है।

कार्य- डॉ.भारती का मुख्य शोध क्षेत्र सौर कलंको का अध्ययन और उनमें चुंबकीय क्षेत्र की भूमिका और महत्ता का अध्ययन है।

लेकसिटी के नन्हे वैज्ञानिकों का कमाल

एलोवेरा बैटरी

स्कूल : आलोक सीनियर सैकण्डरी स्कूल, हिरण मगरी सेक्टर -11,

मार्गदर्शक- डॉ. मधुबाला पुरोहित, चन्द्रशेखर शर्मा

छात्र– हेमांग औदिच्य – (प्रोजेक्ट हेड), प्रतीक याज्ञिक, जय तलेसरा (सहायक)

प्लास्टिक कचरे का सदुपयोग

स्कूल – आलोक सीनियर सैकण्डरी स्कूल, हिरण मगरी सेक्टर 11

नाम – हिमांशु कालरा



उदयपुर में शनिवार को गांधीवादी वैज्ञानिक डा. दौलत सिंह कोठारी की जन्मतिथि पर

RENAULT, INDIA'S MOST AWARDED AUTO BRAND*, TURNS 2.
JOIN THE CELEBRATIONS ON 5TH, 6TH & 7TH JULY.
www.renault.co.in

दैनिक भास्कर
उदयपुर . गुरुवार. 11 जुलाई, 2013

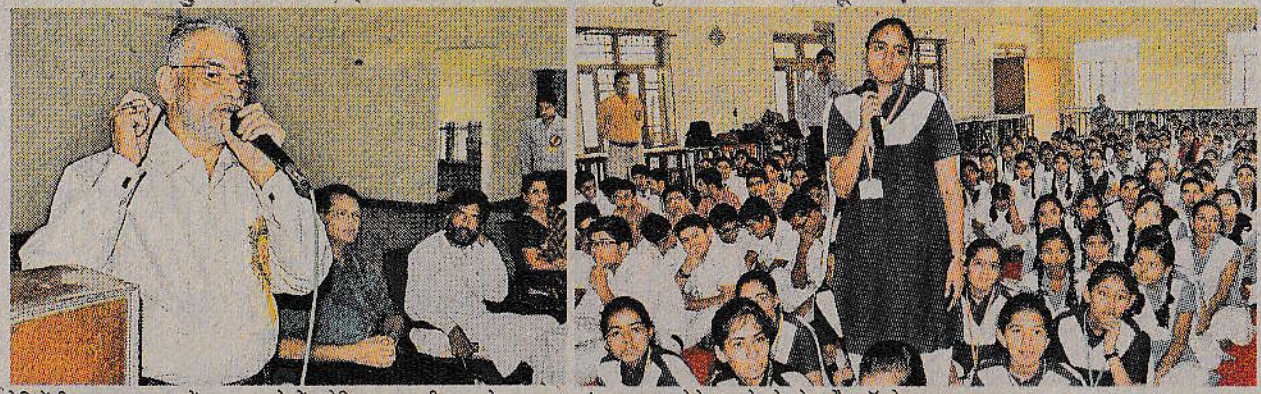
सर, और किस ग्रह पर लोग रह सकते हैं?

सीधा संवाद शांतिपीठ की ओर से हुआ आयोजन, इसरो के चेयरमैन डॉ. राधाकृष्णन ने दिए स्कूली विद्यार्थियों के सवालों के जवाब

नगर संवाददाता. उदयपुर

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के चेयरमैन डॉ. के. राधाकृष्णन बुधवार को यहां रेजिडेंसी सीनियर सेकंडरी स्कूल सभागार में विद्यार्थियों के साथ संवाद कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने सवालों के जवाब देकर बच्चों की जिज्ञासा शांत की।

शांति पीठ भारत की ओर से हुए इस कार्यक्रम में सेंट पॉल्स, सेंट मेरिज, एमएमपीएस, केंद्रीय विद्यालय क्रम-एक व दो, आलोक स्कूल, सेंट ग्रिगोरियस, रेजिडेंसी, डीपीएस, सेंट एंथोनी आदि स्कूलों के 200 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस दौरान शांति पीठ के संस्थापक सचिव अनंत गणेश त्रिवेदी, रेजिडेंसी स्कूल की प्राचार्य मधु शर्मा, उदयपुर सौर वेधशाला के वैज्ञानिक, शिक्षक आदि मौजूद थे। संचालन नेहा भूतड़ा ने किया।



रेजिडेंसी स्कूल सभागार में शुक्रवार को सेंट मेरिज स्कूल की छात्रा के सवाल (दाएं) पर जवाब देते (इसरो) के चेयरमैन डॉ. के. राधाकृष्णन।

सवाल : सर, इसरो स्पेस ट्रिप की प्लानिंग कर रहा है क्या?

जवाब : नहीं, ऐसी कोई योजना नहीं है। स्पेस में जाने के लिए जरूरी ट्रेनिंग कठिन है। यह आसान नहीं है।

सवाल : सर, क्या पृथ्वी के अलावा किसी और ग्रह पर जीवन है?

जवाब : इस पर अनुसंधान जारी है। जहां मिथेन गैस है और एक तय रेंज में है वहां जीवन की संभावना बनती है।

सवाल : सर, क्या मंगल पर जीवन है?

जवाब : मंगल पर पानी के जो अंश

बच्चों ने किए रोचक सवाल

मिले हैं, उससे लगता है कि शायद वहां कभी जीवन का अस्तित्व रहा हो। आज रेडिएशन इतना बढ़ गया है, ऐसे मे जीवन की संभावनाएं कम होती नजर आ रही हैं।

सवाल : कल्पना चावला की मृत्यु का कारण क्या है?

जवाब : कल्पना चावला का निधन फरवरी 2003 में कोलंबिया शटल की वापसी के दौरान हो गया था। तकनीकी खराबी के कारण शटल क्रैश हो गया था।

सवाल : सर, जैसे धरती पर बढ़ते गाड़ियों से ट्रैफिक जाम की स्थिति पैदा हो गई है, वैसे क्या लगातार अंतरिक्ष में कई देशों द्वारा भेजे जा रहे अंतरिक्ष यान, सेटेलाइट से जाम जैसी स्थिति तो नहीं होगी?

जवाब : हर क्षेत्र में संतुलन जरूरी है। चाहे वह धरती हो या अंतरिक्ष। फिलहाल ऐसी स्थिति नहीं है अंतरिक्ष में। अंतरिक्ष में बहुत बड़ा एरिया है। वहां 12 देशों की सेटेलाइट स्टेशन बनाने की योजना है।

सवाल : सर क्या अंतरिक्ष अनुसंधान के दौरान प्रदूषण नहीं होता?

जवाब : होता है, लेकिन उतना नहीं जितना हम अपने घरों में, अन्य सार्वजनिक स्थलों पर करते हैं।

सवाल : सर ब्लैकहोल क्या होता है?

जवाब : कोई तारा जब ज्यादा सिकुड़ता है तो असीम गुरुत्वाकर्षण से भरपूर हो जाता है तो वह ब्लैकहोल कहलाता है। ब्रह्मांड में इस तारे में जो प्रवेश कर जाता है, वह बाहर नहीं आ सकता। इसी प्रकार प्रकाश अंदर से बाहर नहीं आ सकता।

दैनिक भास्कर
उदयपुर • रविवार 1 अप्रैल 2012 • 16

डॉ. कोठारी का सिद्धांत नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्पद : डॉ. वात्स्यायन

शांति पीठ उदयपुर की ओर से डॉ. डी.एस. कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला

उदयपुर. प्रख्यात साहित्यकर्मी डॉ. कपिला वात्स्यायन ने कहा कि आधुनिक विज्ञान के पूरकता के सिद्धांत को सामाजिक व्यवहार में लागू किए जाने का प्रवर्तन करते हुए भारत के प्रमुख वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् डॉ. डी.एस. कोठारी ने नई दिशा दी।

डॉ. कपिला शुक्रवार को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर ऑडिटोरियम में शांति पीठ और इंडिया इंटर नेशनल सेन्टर द्वारा आयोजित डॉ. डी.एस. कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला में बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि डॉ. कोठारी ने भारत प्रतिरक्षा विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में जो योगदान दिया उससे कहीं अधिक उन्होंने इंसानियत के उच्च स्तर पर पहुंच कर सरलता का दर्शन प्रस्तुत किया। उनके दर्शन पर चलकर समाज को समता और शांति की ओर ले जाया जा सकता है। प्रारंभ में शांति पीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी ज्ञान-विज्ञान का ऐसा समन्वय सूत्र है जिससे विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त होता है। इस अवसर पर प्रो. कोठारी की पौत्री डॉ. दीपिका कोठारी ने डॉ. कोठारी के संस्मरण सुनाए। समारोह में शान्तिपीठ के प्रकाशन स्मृति वीथी का लोकार्पण किया गया।



व्याख्यानमाला में उपस्थित अतिथियों द्वारा पुस्तक का विमोचन करते हुए।

विज्ञान व आध्यात्म का समन्वय जरूरी : अध्यक्षता करते हुए राज्यसभा सदस्य डॉ. कर्ण सिंह ने कहा कि विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय मानव कल्याण के लिए जरूरी है।

शिक्षक-विद्यार्थी मिलकर समस्याओं का हल खोजें :मुख्य अतिथि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. यशपाल ने कहा कि डॉ. कोठारी ने विश्वविद्यालय को एक सोसायटी माना, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी की सशक्त भूमिका होती है।

प्रातःकाल
उदयपुर, रविवार, 1 अप्रैल, 2012

डॉ. कोठारी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत आज भी प्रासंगिक

नई दिल्ली। आधुनिक विज्ञान के पूरकता के सिद्धान्त को सामाजिक व्यवहार में लागू किये जाने का प्रवर्तन करते हुए भारत के प्रमुख वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् डॉ.डी.एस. कोठारी ने एक नई दिशा दी। उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत आज भी प्रासंगिक एवं नई पीढी के लिए प्रेरणादायक है।"

यह विचार नई दिल्ली में शुक्रवार शाम को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (आई.आई.सी.) ओडिटोरियम में शान्ति पीठ, भारत और इंडिया इन्टरनेशनल सेन्टर द्वारा आयोजित डॉ.डी.एस. कोठारी स्मृति व्याख्यान में बोलते हुए प्रख्यात साहित्य कर्मी डॉ. कपिला वात्स्यायन ने व्यक्त किये।

डॉ. कपिला ने "डॉ. डी.एस.कोठारी एक आधुनिक ऋषि" विषय पर बोलते हुए कहा कि डा.कोठारी ने भारत प्रतिरक्षा विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में महान योगदान दिया किन्तु इससे भी कही अधिक उन्होने इंसानियत के उच्च स्तर पर पहुंच कर सरलता और निराभिमानता का दर्शन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आई.सी.सी.आर के अध्यक्ष और वरिष्ठ राज्य सभा सदस्य डा.कर्ण सिंह ने कहा कि "परा" और "अपरा" दोनों सत्य की खोज हैं और दोनो के साथ चलने से ही विश्व कल्याण की उपलब्धि हो सकती है। उन्होने कहा इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए डा.कोठारी ने विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय की विचार धारा को पोषित किया।

डॉ. कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला की श्रृंखला के उक्त नवमें व्याख्यान के मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो.यशपाल ने कहा कि डा. कोठारी ने विश्वविद्यालय को एक सोसायटी माना जिसमें शिक्षक और विधार्थी की सशक्त भूमिका होती है। उन्होंने संस्मरणों का उल्लेख करते हुए कहा कि वे डा. कोठारी के सम्पर्क में आकर विज्ञान और शिक्षा की खोज में अग्रसर हुए ।

प्रारंभ में शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर प्रो.कोठारी की पौत्री डॉ. दीपिका कोठारी ने डॉ.कोठारी द्वारा उनकी बचपन में लिखी डॉयरी में से संस्मरण सुनाए । समारोह में शान्तिपीठ के प्रकाशन 'स्मृति वीथी ' का लोकार्पण किया गया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, गुरुवार, 7 जुलाई 2011

विज्ञान से अध्यात्म तक के प्रेरक

डॉ. डी.एस. कोठारी को किया याद



शांतिपीठ में डॉ. डीएस कोठारी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए। पत्रिका

कार्यालय संवाददाता @ उदयपुर

देश के प्रख्यात वैज्ञानिक उदयपुर के डॉ. डी.एस.कोठारी की 105वीं जयंती पर बुधवार को सरदारपुरा स्थित शांतिपीठ में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें शहरवासियों ने उनकी तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की।

शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने बताया कि कार्यक्रम में मोहनसिंह कोठारी, प्रो. एस.एन.जोशी, कैलाशबिहार वाजपेयी, डॉ. पी.एल.शर्मा, प्रकाश पानेरी आदि ने डॉ. कोठारी के योगदान की चर्चा करते हुए उनके जीवन से जुड़े प्रसंग सुनाए।

निबंध प्रतियोगिता

विज्ञान समिति की ओर से बुधवार को डॉ. डी.एस.कोठारी का व्यक्तित्व एवं विज्ञान और शिक्षा में उनका योगदान विषयक निबंध प्रतियोगिता हुई।

संस्थापक डॉ. के.एल.कोठारी ने बताया कि विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। इस अवसर पर श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि ने बताया कि डॉ. कोठारी ने विज्ञान के साथ अध्यात्म को जोड़ा था।

डॉ. कोठारी : परिचय



प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. डी.एस.कोठारी का जन्म 6 जुलाई, 1906 को उदयपुर में हुआ था। उनकी शिक्षा उदयपुर व इंदौर में हुई। वर्ष 1933 में उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने भौतिकी के क्षेत्र में दबाव आयनीकरण सिद्धांत, सांख्यिकी यांत्रिकी में संख्याओं के विभाजन का सिद्धांत आदि पर उल्लेखनीय कार्य किया। पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने डॉ. कोठारी को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की जिम्मेदारी सौंपी थी। वह रक्षा मंत्रालय के प्रथम वैज्ञानिक सलाहकार, यूजीसी चेयरमैन, नेशनल साइंस एकेडमी फैलो, इंडियन साइंस कांग्रेस के चेयरमैन आदि पदों पर रहे। भारत-पाक युद्ध के दौरान डॉ. कोठारी ने ऐसे आयुध का आविष्कार किया जो लोहे के कई इंच मोटे कवच को भेद सकता था। उन्हें 1966 में शांतिस्वरूप भटनागर अवार्ड और 1973 में पद्म विभूषण से नवाजा गया। डॉ. कोठारी का देहांत 4 फरवरी, 1993 जयपुर में हुआ।

दैनिक भास्कर
गुरुवार, 7 जुलाई 2011 .उदयपुर

कोठारी पर डाक टिकट जारी



उदयपुर | डाक विभाग की ओर से आज प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. डी. एस कोठारी पर 5 रुपए का स्मारक डाक टिकट जारी किया गया। श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि के अनुसार उदयपुर में जन्मे डॉ. डी. एस कोठारी जाने माने वैज्ञानिक एवं दार्शनिक शिक्षाविद् थे। उनकी सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने विज्ञान के साथ अध्यात्म को जोड़ा। ज्ञात हो कि सन् 1962 में डॉ. कोठारी को पद्मभूषण एवं 1975 में पद्म विभूषण प्रदान किया जा चुका है।

शांतिपीठ में संगोष्ठी : गांधीवादी वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी की 105वीं जयंती के मौके पर शांतिपीठ में संगोष्ठी हुई। इस मौके पर प्रो. एस.एन. जोशी ने कहा कि आज ईमानदारी और निर्भीकता से प्रश्नकर्ताओं की नितांत आवश्यकता है। अध्यक्षता करते हुए चिंतक मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि वर्तमान में जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना का कार्य चुनौतिपूर्ण है।

दैनिक भास्कर
उदयपुर · शनिवार · 20 फरवरी 2010

रामकृष्ण परमहंस की जयंती मनाई

उदयपुर | रामकृष्ण परमहंस की जयंती शांतिपीठ संस्था के तत्वावधान में सत्संग के साथ मनाई गई। इसमें वक्ताओं का मत था कि व्यक्ति के चरित्र गठन के मार्ग से गिरी हुई शिक्षा व्यवस्था सर्व कल्याण के वांछित लक्ष्य को अर्जित नहीं कर सकती। आवश्यकता है कि प्रासंगिक उपक्रमों के साथ ही वर्तमान की शिक्षा आध्यात्मिक व नैतिक उन्नयन का जरिया बने। तब ही सामाजिक समरसता और विश्व शांति का वातावरण निर्मित किया जा सकता है। शांतिपीठ सभागार में पुष्पांजलि के साथ ही अपराह्न में चिकलवास के माध्यमिक विद्यालय में 'आध्यात्मिक जागरण के पुरोधा श्रीरामकृष्ण' विषयक संगोष्ठी रखी गई। इसमें संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि रामकृष्ण ने साधना के अनेक मार्गों से परमात्मा का साक्षात्कार करके सर्वधर्म समानत्व का आदर्श प्रस्तुत किया। व्यक्ति के चरित्र का विकल्प नहीं होता, चरित्र का गठन अल्पकालीन परिश्रम का प्रतिफल नहीं है अपितु नैतिक प्रतिबद्धता की इंसानी अभिव्यक्ति है जिसे दीर्घकालीन साधना से ही हासिल किया जा सकता है। अध्यक्षता करते हुए प्रधानाध्यापक नरेंद्र कच्छारा ने रामकृष्ण विवेकानंद की भावधारा पर विचार रखे। प्रारंभ में भगवतीप्रसाद चौबीसा ने विषय प्रवर्तन किया। आभार डॉ. इंद्रदेव जोशी ने ज्ञापित किया। संचालन यशवंतसिंह ने किया।

प्रातःकाल
फाल्गुन शुक्ला 6 शनिवार, 20 फरवरी, 2010



उदयपुर। रामकृष्ण परमहंस पर आयोज्य संगोष्ठी में उपस्थित छात्र-छात्राएं।

रामकृष्ण परमहंस जयन्ती पर संगोष्ठी

उदयपुर, 19 फर. (वि)। गुरूवार को शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में रामकृष्ण परमहंस की जयन्ती के अवसर पर सत्संग-संगोष्ठी के आयोजन किए गए। संस्थान के विस्तार विभाग द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालय, चिकलवास के सभागार में 'आध्यात्मिक जागरण के पुरोधा ' रामकृष्ण परमहंस पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। छात्र एवं शिक्षक समुदाय को सम्बोधित करते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि रामकृष्ण ने साधना के अनेक मार्गों से परमात्मा का साक्षात्कार करके सर्वधर्म समानत्व का आदर्श प्रस्तुत किया।

उन्होंने कहा कि व्यक्ति के चरित्र का विकल्प नहीं होता है। चरित्र का गठन अल्पकालीन परिश्रम का प्रतिफल नहीं है अपितु नैतिक प्रतिबद्धता की इन्सानी अभिव्यक्ति है जिसे दीर्घकालीन साधना से हासिल किया जा सकता है। गणेश ने गुरू-शिष्य परम्परा की वैज्ञानिक स्वीकृतियों को पुनः स्थापित किये जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विद्यालय के प्राचार्य नरेन्द्र कच्छारा ने रामकृष्ण-विवेकानन्द की भावधारा पर विचार व्यक्त किये। प्रारंभ में भगवतीप्रसाद चौबीसा ने विषय प्रवर्तन किया। डॉ. इन्द्रदेव जोशी ने आभार व्यक्त किये। प्रारम्भ में भगवती प्रसाद चौबीसा ने विषय प्रवर्तन किया। डॉ. इन्द्रदेव जोशी ने आभार व्यक्त किया। संचालन यशवन्तसिंह ने किया।

दैनिक नवज्योति
अजमेर, रविवार, 21 फरवरी 2010

उन्नयन का जरिया बने शिक्षा : त्रिवेदी

उदयपुर, 20 फरवरी। व्यक्ति के चरित्र गठन के मार्ग से च्युत शिक्षा व्यवस्था सर्व कल्याण के वांछित लक्ष्य को अर्जित नहीं करा सकती, आवश्यकता प्रासंगिक उपक्रमों के साथ ही वर्तमान की शिक्षा आध्यात्मिक व नैतिक उन्नयन का जरिया बने तब ही सामाजिक समरसता और विश्व शान्ति का वातावरण निर्मित किया जा सकता है।

यह विचार शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में श्रीरामकृष्ण परमंस की जयन्ती पर साधना के साथ ही पुष्पांजलि अर्पित की गई, जबकि अपराह्न संस्थान के विस्तार विभाग द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालय, चिकलवास के सभागार में आध्यात्मिक जागरण के पुरोधा श्रीरामकृष्ण पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। छात्र एवं शिक्षक समुदाय को सम्बोधित करते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि रामकृष्ण ने साधना के अनेक मार्गों से परमात्मा का साक्षात्कार करके सर्वधर्म समानत्व का आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति के चरित्र का विकल्प नहीं होता है। चरित्र का गठन अल्पकालीन परिश्रम का प्रतिफल नहीं है अपितु नैतिक प्रतिबद्धता की इंसानी अभिव्यक्ति है जिसे दीर्घकालीन साधना से हासिल किया जा सकता है। गणेश ने गुरू-शिष्य परम्परा की वैज्ञानिक स्वीकृतियों को पुनः स्थापित किए जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विद्यालय के प्राचार्य नरेन्द्र कच्छारा ने रामकृष्ण विवेकानंद की भावधारा पर विचार व्यक्त किए। प्रारम्भ में भगवती प्रसाद चौबीसा ने विषय प्रवर्तन किया तथा डॉ. इन्द्रदेव जोशी ने आभार व्यक्त किया। गोष्ठी का संचालन यशवंत सिंह ने किया।

प्रातःकाल
आषाढ़ कृष्णा 10, बुधवार, 7 जुलाई, 2010

डॉ. कोठारी की जन्मतिथि पर गोष्ठी सम्पन्न

उदयपुर, 6 जुलाई (कासं.)। शिक्षाविद् वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जयंती पर शांतिपीठ के तत्वावधान में मोसुविवि कुलपति कान्फ्रेंस कक्ष में '''शांति, संस्कृति एवं विज्ञान'' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए मोसुविवि के कुलपति डॉ. आई.वी. त्रिवेदी ने कहा कि विद्यार्थी वर्ग में '''साइन्टिफिक टेम्प्रामेन्ट'' विकसित करने की आवश्यकता है।

उन्होंने राष्ट्र निर्माण में विज्ञान की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा कि विज्ञान के अध्ययन प्रक्रिया को और सरल बनाया जाये तथा युवा वर्ग को इस ओर प्रेरित किया जाये।

शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शिक्षा, प्रतिरक्षा और मानव मूल्यों के प्रति डॉ. कोठारी की स्वाभाविक प्रतिबद्धता ही उनके जीवन का संदेश है।

इस अवसर पर डॉ. राजेश पाण्डे, डॉ. एन. लक्ष्मी, डॉ. वेणुगोपालन, डॉ. बी.एन. व्यास, विनय कोठारी, एस.एल. भंडारी ने विचार व्यक्त किये।

मनोहर गंधर्व ने धन्यवाद ज्ञापित किया।



उदयपुर। डॉ. कोठारी के जन्मदिन पर शांतिपीठ की ओर से आयोजित गोष्ठी में अतिथिगण।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . बुधवार . 7 जुलाई 2010

'वैज्ञानिक सोच विकसित करें'

उदयपुर. मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलपति डॉ. इंद्रवर्द्धन त्रिवेदी ने कहा कि वर्तमान समय में विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच विकसित करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि विज्ञान के अध्ययन की प्रक्रिया और भी बनाकर युवा वर्ग को इस दिशा में प्रेरित किया जाना चाहिए। वह शिक्षाविद् डॉ. दौलतसिंह कोठारी की जयन्ती पर मंगलवार को शांतिपीठ के तत्वावधान में सुविवि के सभागार में आयोजित 'शांति संस्कृति एवं विज्ञान' विषयक गोष्ठी में बोल रहे थे। इस मौके पर शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी, प्रो.एस.एन. जोशी, प्रो. आर.एन.व्यास, खगोलविद् प्रो.एस.एन.जाफरी, भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. राजेश पाण्डे आदि ने विचार व्यक्त किए। विज्ञान महाविद्यालय में डॉ. कोठारी की आदमकद प्रतिमा लगाने पर भी सुझाव दिया गया।

राष्ट्रदूत
उदयपुर, बुधवार ७ जुलाई, २०१०

"शांति के लिए प्रतिबद्धता जरूरी"

उदयपुर, 6 जुलाई (का.सं.)। "विज्ञान व तकनीकी की दिशा के लिए शांति की प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। अध्यात्मक और विज्ञान की पारस्परिक पूरकता युक्त आचरण विश्व समुदाय के दुखद भविष्य का मार्ग आश्वस्त कर सकता है। दशाब्दियों पूर्व डॉ. कोठारी जैसे आध्यात्मविद वैज्ञानिक ने आधुनिक विज्ञान व तकनीकी को शांति की दिशा दी। आज आवश्यकता है युवा वर्ग कोठारी जैसे वैज्ञानिकों से प्रेरणा पाकर स्वर्णिक युग का निर्माण करें।"

उक्त विचार आज शिक्षाविद वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जन्मतिथि के अवसर पर शांतिपीठ के तत्वावधान में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय कुलपति कान्फ्रेंस कक्ष में शांति संस्कृति एवं विज्ञान विषयक आयोजित विचार गोष्ठी उभर कर आए। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. इन्द्रवर्धन त्रिवेदी ने कहा कि आज विद्यार्थी वर्ग में साइंटिफिक टेम्पोमेन्ट विकसित करने की आवश्यकता है।

उन्होंने राष्ट्र निर्माण में विज्ञान की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा कि विज्ञान के अध्ययन की प्रक्रिया और भी सरल बनाई जाये तथ युवा वर्ग को इस दिशा में प्रेरित किया जाये।

प्रो. एस.एन. जोशी ने कहा कि शांति के लिए प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। विज्ञान के लिए नहीं विज्ञान की नूतन दिशा के लिए शांतिप्रतिबद्ध होना आवश्यक है। उन्होंने वैज्ञानिकों को राजनेताओं के दबाव से मुक्त रहकर मानव कल्याण की ओर प्रयत्नशील होने की आवश्यकता प्रतिपादित की। प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि डॉ. कोठारी अध्यात्मक और विज्ञान दोनों ही मार्ग से आने वाले के लिए मार्गदृष्टा थे। शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शिक्षा, प्रतिरक्षा और मानव मूल्यों के प्रति डॉ. कोठारी की स्वाभाविक प्रतिबद्धता ही उनके जीवन का संदेश है। उन्होंने कहा कि शिक्षा अभाज्य है।

दैनिक भास्कर
उदयपुर | बुधवार 7 जुलाई | 2010 | 1

अध्यात्म व विज्ञान एक दूसरे के पूरक

अध्यात्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। वैज्ञानिक व आध्यात्म से जुड़े लोग डॉ. दौलतसिंह कोठारी जैसे अध्यात्मविद वैज्ञानिकों से प्रेरणा लेकर स्वर्णिम युग का निर्माण करें। यह बात सुविवि के कुलपति प्रो. आईवी त्रिवेदी ने शिक्षाविद् वैज्ञानिक डॉ. कोठारी की जन्मतिथि के अवसर पर शांतिपीठ के तत्वावधान में कुलपति कांफ्रेंस हॉल में आयोजित शांति संस्कृति एवं विज्ञान विषयक विचार गोष्ठी में कही। उन्होंने कहा कि आज विद्यार्थी वर्ग में साइंटिफिक टेंप्रामेंट विकसित करने की जरूरत है। इस अवसर प्रो. वीएन जोशी ने कहा कि शांति के लिए प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। प्रो. एसआर व्यास ने कहा कि कोठारी अध्यात्म और विज्ञान दोनों ही मार्ग से आने वाले के लिए मार्गदृष्टा थे। शांतिपीठ के संस्थापक सचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शिक्षा, प्रतिरक्षा और मानव मूल्यों के प्रति डॉ. कोठारी की स्वाभाविक प्रतिबद्धता ही उनके जीवन का संदेश है। शिक्षा अभाज्य है, खंड खंड में विभक्त होकर शिक्षा को अभीष्ट नामुमकिन है, डॉ. कोठारी ने शिक्षा को अहिंसा से जोड़कर पूर्णता की ओर अग्रसर होने का मार्ग प्रकाशित किया। प्रो. वेणुगोपालन, डॉ. बीएल आहुजा, डॉ. बीएन व्यास, डॉ. एन. लक्ष्मी, डॉ. आरएम लोढ़ा ने भी संबोधित किया। प्रारंभ में अतिथियों द्वारा डॉ. कोठारी की तस्वीर पर माल्यार्पण किया गया। आभार मनोहर गंधर्व ने माना।

... तो नोबल लेते कोठारी : इस गोष्ठी में खगोलविद डॉ. एसएनए जाफरी ने कहा कि नोबेल पुरस्कार मरणोपरांत नहीं दिया जाता, अन्यथा सफेद बौने तारों की प्रचंड तारों (व्हाइट ड्वारफ्स) पर शोध पर डॉ. कोठारी नोबेल लोरियट होते। त्रिवेदी ने कहा कि बड़ी कक्षाओं में डॉ. कोठारी के योगदान की अनदेखी है जबकि चौथी कक्षा में उनका योगदान 'वैज्ञानिक संत' नामक पाठ में पढ़ाया जा रहा है।

प्रातःकाल
उदयपुर, बुधवार, 19 फरवरी, 2014



उदयपुर। रामकृष्ण की तस्वीर पर माल्यार्पण करते हुए।

रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर सत्संग

उदयपुर। श्री राम कृष्णपरमहंस की जयंती के अवसर पर शान्तिपीठ की ओर से सत्संग- संगोष्ठी आयोजित हुई। अध्यक्षता चिंतक मोहनसिंह कोठारी ने की। दूसरे सत्र में भजन कीर्तन की प्रस्तुतियां दी गयी।

शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि सामाजिक समरसता के उन्नायक है श्री राम कृष्ण परमहंस ने भगवद् साक्षात्कार के अनेको मार्गो को आत्मसात कर मनुष्य मात्र को परम लक्ष्य तक पहुंचने का सरल मार्ग बताया और जगत के कार्यो को सेवा भाव से करने का सन्देश दिया ।

पण्डित रामकृष्ण बोस ने स्वामी विवेकानन्द और रामकृष्ण के कई भजन बांग्ला व हिन्दी में प्रस्तुत करते हुवे वातावरण को संगीत से सरोबार कर दिया। प्रारम्भ में अतिथियों द्वारा रामकृष्ण की तस्वीर पर माल्यार्पण किया गया । निशान्त जोशी ने आभार व्यक्त किया जबकि इन्द्र देव ने अतिथियों का स्वागत किया ।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . बुधवार . 19.02.2014

परमहंस जयंती मनाई



उदयपुर. राम कृष्ण परमहंस जयंती के अवसर पर शान्तिपीठ में मंगलवार को मोहनसिंह कोठारी की अध्यक्षता में सत्संग- संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कोठारी ने परमहंस को समाज की शान्ति का दर्शन बताते हुए कहा कि वे भक्ति, ज्ञान और वैराग्य का पूर्ण समन्वय हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा की परमहंस सामाजिक समरसता के उन्नायक है। उन्होंनें भागवद् साक्षात्कार के अनेक मार्गो को आत्मसात कर मनुष्य मात्र को परम लक्ष्य तक पहुंचने का सरल मार्ग बताया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में भजन कीर्तन हुआ जिसमें पं.रामकृष्ण बोस ने स्वामी विवेकानन्द और रामकृष्ण के भजन बांग्ला व हिन्दी में प्रस्तुत किए।

दैनिक भास्कर, उदयपुर
बुधवार. 19 फरवरी, 2014

सामाजिक समरसता के उन्नायक थे स्वामी रामकृष्ण

उदयपुर । श्रीराम कृष्ण परमहंस जयंती पर मंगलवार को शांति पीठ की ओर से सरदारपुरा कार्यालय में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। शांति पीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि रामकृष्ण परमहंस सामाजिक समरसता के उन्नायक थे। उन्होंने भगवद् साक्षात्कार के अंकों-मार्गों को आत्मसात कर मनुष्य मात्र को परम लक्ष्य तक पहुंचने का सरल मार्ग बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि रामकृष्ण समाज की शांति का दर्शन हैं। पंडित रामकृष्ण बोस ने स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण के भजनों को बांग्ला व हिन्दी में प्रस्तुत किया।

सिटी @SUNDAY

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 6 जुलाई, 2014

विज्ञान व उपनिषद की सम्पूरकता के सिद्धांत को अपनाया जाए

डॉ. डीएस कोठारी की जयंती से पूर्व स्मृति सभा का आयोजन

उदयपुर. अध्यात्म और विज्ञान के अद्वेत तत्वदर्शी डॉ. दौलत सिंह कोठारी ने 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विश्व समुदाय को सावचेत किया था कि विज्ञान का उत्कर्ष अध्यात्म के आश्रय में चलकर ही न केवल मानवता के मंगलमय भविष्य का निर्माण करेगा अपितु स्वयं की उत्तरोत्तर विकास यात्रा को भी अनवरत रख पाएगा। आवश्यकता है आधुनिक विज्ञान व उपनिषदों में प्रतिपादित सम्पूरकता के सिद्धान्त को जीवन व्यवहार में अपनाया जाय। ज्ञान-विज्ञान की अभाज्य संस्कृति से विश्व कुटुम्ब निर्माण में डॉ. कोठारी जैसे मनीषियों का योगदान लिया जाए। उक्त विचार विज्ञान मनीषि डॉ. डी.एस. कोठारी की जन्म तिथि की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ की ओर से आयोजित स्मृति सभा में वक्ताओं ने व्यक्त किए। भारतीय प्रशासनिक अधिकारी सुमतिलाल बोहरा ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि डॉ. कोठारी ने निरपेक्ष भाव से जीवन जीया व मानवीय सौन्दर्य का उदाहरण प्रस्तुत किया। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आदमी के मस्तिष्क ने विकास के आयाम को इतना विस्तार दिया है कि इसके साथ संतुलन बनाए रखने के लिए आन्तरिक चेतना का विकास नितांत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि अंतः चेतना के विकास क्रम में डॉ. कोठारी ने गांधी, आइन्सटीन और अरविन्दो को आत्मसात किया। डॉ. आर.एम. लोढा ने विद्यार्थी वर्ग में आध्यात्म व विज्ञान की शिक्षा की आवश्यकता प्रतिपादित की।

सभा में रोशन देपुरा, भोपाल सिंह कोठारी, प्रो. पी.एल. शर्मा, एल.के. जोशी ने भी विचार व्यक्त किए। सभा की अध्यक्षता समाज सेवी घनश्याम सिंह कृष्णावत ने की। प्रारम्भ में डॉ. कोठारी की तस्वीर पर अतिथियों द्वारा माल्यार्पण किया गया।



दौलत सिंह कोठारी की जन्मतिथि की पूर्व संध्या पर पंचवटी स्थित शांतिपीठ पर पुष्पांजलि अर्पित करते।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, रविवार, 6 जुलाइ 2014

डॉ कोठारी की जयंती की पूर्व संध्या पर स्मृति सभा

उदयपुर। अध्यात्म और विज्ञान के अद्वैत तत्वदर्शी डा. दौलत सिंह कोठारी ने 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विश्व समुदाय को सावचेत किया था। विज्ञान का उत्कर्ष अध्यात्म के आश्रय में चलकर ही न केवल मानवता के मंगलमय भविष्य का निर्माण करेगा अपितु स्वयं की उत्तरोतर विकास यात्रा को भी अनवरत रख पाएगा। आवश्यकता है आधुनिक विज्ञान एवं उपनिषदों में प्रतिपादित सम्पूरकता के सिद्धान्त को जीवन व्यवहार में अपनाया जाय।

उक्त विचार शनिवार को विज्ञान मनीषि डा. डी.एस.कोठारी की जयंती की पूर्व संध्या पर शांतिपीठ की ओर से आयोजित दिव्य स्मृति सभा में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। कार्यक्रम में सुमतिलाल बोहरा, संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी, डा. आर.एम. लोढा, रोशन देपुरा, भोपाल सिंह कोठारी, प्रो. पी.एल.शर्मा, एल.के.जोशी आदि ने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता समाज सेवी घनश्याम सिंह कृष्णावत ने की। प्रारम्भ में डा. कोठारी की तस्वीर पर अतिथियों ने माल्यार्पण किया। दीपक भूतड़ा ने आभार व्यक्त किया जबकि निशान्त जोशी ने स्वागत किया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, गुरुवार, 5 फरवरी, 2015

शांतिपीठ ने दी डॉ. कोठारी को श्रद्धांजलि

ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर

शांतिपीठ की ओर से बुधवार को स्व. डॉ. डीएस कोठारी को याद करते हुए स्मृति सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अध्यात्म और विज्ञान के समपूरक सम्बन्ध से मानव कल्याण की दिशा बोध देने का श्रेय डॉ. कोठारी को जाता है। डॉ. कोठारी की स्मृति में शान्तिपीठ अब तक दस व्याख्यान का आयोजन कर चुका है।

14 फरवरी को वेदान्त विद् डॉ. कर्ण सिंह ग्यारहवां कोठारी स्मृति व्याख्यान देंगे। वे 13 फरवरी की शाम दिल्ली से उदयपुर आएंगे। सभा की अध्यक्षता चिन्तक मोहन सिंह कोठारी ने की। गिरीश उपाध्याय ने आभार व्यक्त किया। प्रारंभ में इन्द्रदेव जोशी ने अतिथियों का स्वागत किया।

रा. पत्रिका, 5 फरवरी, 2015

कोठारी को याद किया

उदयपुर. शांतिपीठ में बुधवार को डॉ. डीएस कोठारी की की पुण्यतिथि पर स्मृति सभा हुई। इसमें संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने डॉ. कोठारी की जीवनी पर प्रकाश डाला।

राजस्थान पत्रिका 8 उमाई 2015

डॉ. कोठारी की जयंती मनाई

उदयपुर. डॉ. डी.एस. कोठारी की जयन्ती मंगलवार को मनाई गई। इस अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा संस्थान सभागार में पुष्पांजलि सभा आयोजित की गई। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी ने 21वीं शताब्दी को सौर ऊर्जा युग बताया। उन्होंने सौर ऊर्जा के व्यापक उपयोग को शान्ति और समृद्धि का सूचक बताया। शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने कहा कि आधुनिक शिक्षा को मूल्यपरक बनाकर राष्ट्र के नवनिर्माण में डॉ. कोठारी का चिंतन सर्वाधिक कारगर सिद्ध हो सकता है। सभा में पूर्व प्रशानिक अधिकारी सूमतिलाल बोहरा, भगवतीलाल चौबीसा, भोपाल सिंह कोठारी, एडवोकेट धर्मराज ने भी विचार व्यक्त किए।

राजस्थान पत्रिका

उदैयपुर . सोमवार . 16.02.2015

कर्णसिंह ने किए एकलिंगजी के दर्शन

उदयपुर. कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डॉ. कर्णसिंह रविवार को एकलिंगजी मंदिर पहुंचे और घंटाभर शिवस्तुति की। इस दौरान शान्तिपीठ के अनंत गणेश त्रिवेदी, राजस्थान विद्यापीठ विवि के कुलपति एसएस सारंगदेवोत, राज्यसभा सांसद डीपी त्रिपाठी भी उपस्थित थे। इसके बाद डॉ. सिंह अमरखजी महादेव पहुंचे, जहां पंचमुखी विग्रह पर जलाभिषेक किया। साथ ही शान्तिपीठ पहुंचकर रूद्राक्ष का पौधा रोपा।



प्रातःकाल

उदयपुर, सोमवार 16 फरवरी, 2015

डॉ. कर्णसिंह ने एकलिंगजी के दर्शन किए

उदयपुर। वेदान्त विद् डॉ. कर्ण सिंह रविवार प्रातः एकलिंगजी पहूँचे। घण्टेभर शिव स्तुति के बाद आरती के दर्शन किये। उनके साथ शान्तिपीठ के अनंत गणेश त्रिवेदी, राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति एस.एस. सारंगदेवोत, राज्यसभा सांसद डी. पी. त्रिपाठी भी उपस्थित थे। यहां से वे अमरखजी महादेव पहूँचे जहाँ अमरखजी संरक्षण मण्डल के बंशीलाल कुम्हार, अशोक कुमावत, हेमन्त चोरड़िया, प्रकाश पानेरी, इन्द्र जोशी के साथ ही कई ग्रामवासियों ने डॉ. कर्णसिंह का स्वागत किया। अमरखजी पंचमुखी विग्रह पर जलाभिषेक करने के बाद उन्होंने प्राकृतिक विरासत को बचाकर शिवार्पणम किये जाने के कार्य को प्रसंशनीय बताते हुए इसे शिव संकल्प की सिद्धी बताया।

दैनिक नवज्योति

उदयपुर, सोमवार, 16 फरवरी, 2015

वेदान्त विद् डॉ सिंह ने एकलिंगजी के दर्शन किए

उदयपुर। वेदान्त विद् डॉ कर्ण सिंह ने रविवार को एकलिंगजी, अमरखजी महादेव के दर्शन किए। उन्होंने दोनों स्थानों पर शिव स्तुति के बाद आरती के दर्शन किए। उनके साथ शान्तिपीठ के अनंत गणेश त्रिवेदी, राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति एसएस सारंगदेवोत, राज्यसभा सांसद डी. पी. त्रिपाठी भी उपस्थित थे। अमरखजी संरक्षण मंडल के बंशीलाल कुम्हार, अशोक कुमावत, हेमन्त चोरड़िया, प्रकाश पानेरी, इन्द्र जोशी ने डॉ कर्णसिंह का स्वागत किया। डा सिंह ने शान्तिपीठ में रूद्राक्ष का पौधा लगाया।

स्मृति शेष : 2002 में हुए डॉ. कोठारी स्मृति व्याख्यान में डॉ. कलाम के संबोधन के अंश

'माता-पिता और प्राथमिक शिक्षक सबसे अहम'

उदयपुर| पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम 4 फरवरी, 2002 को आरएनटी कॉलेज सभागार में शांति पीठ के डॉ. डीएस कोठारी स्मृति व्याख्यान में आए थे। उस समय दिए भाषण के अंश-

इस व्याख्यान अवसर पर क्या विचार रखूं यह सोच रहा था। डॉ. कोठारी इसलिए सुपरिचित हैं, क्योंकि जिस संगठन में हम काम कर रहे हैं, उसे 1948 में रक्षामंत्री के प्रतिरक्षा सलाहकार रहते शुरू किया था। साल 1911 में भारतीय जन घोष एक उत्तम, शालीन और सशक्त आवाज सिद्ध हुआ। महर्षि अरविंद ने इसे मानवता का गान नाम दिया। इस गान में उन्होंने यह उद्घोष किया कि एक बार ऐसा समय आएगा जब भारतीय अपने ऊपर घनघोर विषाद की काली छाया को झकझोर कर फेंक देगा और गुलामी की बेडियों को काट कर फिर से स्वतंत्रता प्राप्त कर सशक्त राष्ट्र बनेगा।

बच्चे के जवाब ने हैरान किया : पिछले दो दिनों में मैं 2000 बालकों से मिला। उनकी अपनी कल्पना है। 15 साल के एक बच्चे से मैंने पूछा- डॉक्टर बनकर तुम क्या करोगे। आम तौर पर यही उत्तर मिलता कि उपचार और धनार्जन। लेकिन उसे बालक ने कहा कि मैं लोगों के दुख-दर्द को दूर करने के लिए चिकित्सक बनना चाहता हूं। ऐसे सद विचार माता-पिता को अपने बच्चों में कूट-कूट कर भरनी चाहिए।

अपना एक अनुभव सुनाता हूं : 14 अगस्त 1947 को मेरे अध्यापक आयाथुरा असालावम ने मुझसे 9वीं कक्षा में आकर कहा, कलाम तुम विद्यालय के चौकोर मैदान में सभी 400 बच्चों को इकट्ठा करो। आज हमें आजादी मिलने वाली है। रात को ठीक 11:45 विद्यार्थियों को लाया और 12 बजे पंडित नेहरू का भाषण सुनने में आया। पंडित जी हिंदी में बोले, मुझे समझ में नहीं आया क्योंकि मेरी भाषा तमिल है। लेकिन मुझे खुशी हुई कि अंग्रेजी झंडा उतारा गया और तिरंगा फहराया गया। अगली सुबह अखबार खोला तो मैंने दो फोटो देखे। एक चित्र में पंडित जी ध्वज फहरा रहे थे और दूसरी ओर नोआखाली की गली में नंगे बदन, नंगे पांव सांप्रदायिक दंगों के बीच लोगों के दुख दूर करते महात्मा गांधी। दूसरे फोटो (गांधीजी) ने मेरी स्मृति पर अमिट छाप छोड़ी। 15 अगस्त को छपे इस फोटो ने मेरी अंतरात्मा को झकझोर दिया।

बच्चों को न परमात्मा और न ही शैतान बदल सकता है

एक बालक 60 से 70 फीसदी समय स्कूल में बिताता है। घर पर उसके माता पिता भरपूर समय नहीं दे पाते। भ्रष्टाचार को हराना है तो मूल्य आधारित शिक्षा और मूल्य आधारित जीवन होना चाहिए। माता-पिता और प्राथमिक शिक्षक का दायित्व महत्वपूर्ण है, महान है और चुनौतीपूर्ण है।

30 अगस्त 2015

निदेशक डॉ

दैनिक भास्कर
उदयपुर, मंगलवार, 22 दिसंबर, 2015

गीता जयंती पर गोष्ठी

गीता वर्तमान समस्याओं का समाधान : प्रो. सारंगदेवोत

उदयपुर। गीता जयंती पर सोमवार को शांतिपीठ की चिंतन गोष्ठी हुई। मुख्य अतिथि राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि गीता वर्तमान समस्याओं का समाधान है। प्रो. एसएन जोशी ने कहा कि आज समाज में विवेकशील मानसिकता की व्यापक आवश्यकता है। शांतिपीठ संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता विश्व विडंबनाओं से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। भंवरलाल व्यास, शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी, डॉ. उमाशंकर शर्मा, एसएल बोहरा, पूर्व आयुक्त देवस्थान विभाग एसएल नागदा, एडवोकेट धर्मराज, प्रकाश पानेरी, भरत कुमावत, धीरज अरोड़ा, देवेंद्र साहू, आरपी चौबीसा आदि ने भी विचार रखे। इधर, निम्बार्क शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज में गीता जयंती महोत्सव हुआ। इसमें प्राचार्य डॉ.सुरेंद्र द्विवेदी ने श्रीकृष्ण के उपदेशों को आधार बनाकर समाज में व्याप्त विकृतियों को दूर करने का आह्वान किया। मेवाड़ महामण्डलेश्वर महंत रासबिहारी शरण ने भी विचार रखे। अस्थल मंदिर में भजन कार्यक्रम हुआ। विद्या निकेतन बामावि सेक्टर 4 में गीता श्लोक प्रतियोगिता हुई।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर. मंगलवार . 22.12.2015

भगवद्गीता का ज्ञान शाश्वत

उदयपुर. श्रीमद् भगवद् गीता का ज्ञान शाश्वत है, यह आध्यात्मिक बोध का वैज्ञानिक मार्ग प्रस्तुत करती है। इस पर चलकर मनुष्य परेशानियों से मुक्ति पा सकता है। यह बात गीता जयंती पर शांतिपीठ की ओर से आयोजित गोष्ठी में कुलपति प्रो. एसएस. सारंगदेवोत ने कही। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवाओं से आह्वान किया कि गीता के ज्ञान से राष्ट्र निर्माण करें। कैलाश बिहारी वाजपेयी ने गीता को काल व परिस्थिति के अनुसार शिक्षा जगत से पूर्ण मनोयोग से जोड़ने की आवश्यकता बताई।

समाचार जगत
जयपुर, 23 दिसम्बर 2015

गीता पर चिन्तन गोष्ठी

उदयपुर (निसं.)

श्रीमद्भागवद गीताआध्यात्मिक बोध का वैज्ञानिक मार्ग प्रस्तुत करती है, जिस पर चलकर मनुष्य मात्र वर्तमान में उपस्थित विडम्बनाओं से मुक्ति पा सकता है। गीता वह शास्त्र है जिसमें संसार के सारे आस्था मार्गों की स्वीकृति है और उनमें पारस्परिक पूरकता के निरूपण के साथ ही यह शाश्वत से जोड़ती है। उक्त विचार शान्तिपीठ द्वारा आयोजित चिन्तन गोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि गीता वर्तमान समस्याओं का समाधान है। उन्होंने गीता को 21 वीं शताब्दी का सार्वभौमिक प्रकाश बताया। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए प्रो. एस.एन.जोशी ने कहा कि गीता विषाद् से विवेक की ओर जाने की राह का दीर्घ दर्शन करती है। आज समाज में विवेकशील मानसिकता की व्यापक आवश्यकता है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गीता विश्व विडम्बनाओं से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने युवा वर्ग को आव्हान किया कि वे गीता को आत्मसात कर नूतन राष्ट्र का निर्माण करें। उन्होंने युवावर्ग को गीता के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अवगत करने हेतु एक सतत् प्रक्रिया अपनाई जाने की प्रस्तावना प्रस्तुत की, जिसे सर्वसम्मति स्वीकारा गया। संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते हुए एड. भंवरलाल व्यास ने कर्म भक्ति और ज्ञान के योग की वैज्ञानिक अवधारणा का प्रतिपादन किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर. शनिवार
06.02.2016

'कोठारी ने दी राष्ट्र को नई दिशा'



वैज्ञानिक-शिक्षाविद् डॉ. डीएस कोठारी की पुण्यतिथि पर शुक्रवार को आयोजित स्मृति गोष्ठी में मौजूद अतिथि।

पुण्यतिथि पर हुई संगोष्ठी

उदयपुर. 'भारत में प्रतिरक्षा विज्ञान के जनक डॉ. दौलत सिंह कोठारी ने ज्ञान-विज्ञान की अभाज्य संस्कृति का प्रतिपादन कर राष्ट्र के सशक्त नवनिर्माण और मानव मंगल के सनातन मार्ग को नई दिशा दी। उनकी मान्यता थी कि विज्ञान के उत्कर्ष का आयाम उपनिषदों में प्रतिपादित ज्ञान को आत्मसात करना होगा। वैज्ञानिक-शिक्षाविद् डॉ. डीएस कोठारी की पुण्यतिथि पर हुई स्मृति गोष्ठी में यह तथ्य निकल कर आए। संगोष्ठी के अध्यक्ष कुलपति प्रो. परमेंद्र दशोरा ने कहा कि विश्व शान्ति का स्वप्न भारत ने कई शताब्दियों पूर्व देखा। हमारे मनीषियों ने सूक्ष्म के विवेचन के साथ ही समाज में संतुलन व सामंजस्य बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने डॉ. कोठारी की शिक्षा नीति को वर्तमान के लिए प्रासांगिक बताया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी का चिन्तन प्रकृति के नियमों की अनुपालना की नई दिशा देता है। इसके माध्यम से आतंक, हिंसा व पर्यावरण आदि का निदान किया जा सकता है। डॉ. कोठारी ने गांधी और आइंसटीन को समानरूप से आत्मसात कर अहिंसा का मजबूत पक्ष रखा। प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा ने सैद्धान्तिक भौतिकी व नैतिक शिक्षा के समन्वय से नवनिर्माण की आवश्यकता प्रतिपादित की। पं. भंवरलाल व्यास ने कहा कि ऋषि प्रज्ञा को समाज के सम्पूर्ण सरोकारों के नियामक के रूप में पुनः अपनाने से ही विश्व शांति का सपना साकार हो सकता है।

इंटेलीजेन्स ब्यूरो के पूर्व अधिकारी जीएल. कोठारी, डॉ. धीरज जोशी, भरत कुमावत ने भी विचार व्यक्त किये। दिवंगत कोठारी को पुष्पांजलि अर्पित की गई थी। संगोष्ठी में राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति एस एस. सारंगदेवोत, वल्लभ नगर उपखण्ड अधिकारी मुकेश कलाल, डॉ.एलएल. शर्मा, प्रकाश पानेरी, भूपालसिंह कोठारी, आरएस.चौबीसा, गिरीश उपाध्याय, डॉ. उमा शंकर शर्मा आदि उपस्थित थे।

प्रातःकाल
उदयपुर, शनिवार 6 फरवरी, 2016

कोठारी की पुण्यतिथि पर स्मृति संगोष्ठी

उदयपुर। भारत में प्रतिरक्षा विज्ञान के जनक डॉ. दौलत सिंह कोठारी ने ज्ञान-विज्ञान की अभाज्य संस्कृति का प्रतिपादन कर राष्ट्र के सशक्त नवनिर्माण और मानव मंगल के सनातन मार्ग को नूतन दिशा दी। उनकी मान्यता थी कि विज्ञान के उत्कर्ष का चरम आयाम तब होगा जब यह उपनिषदों में प्रतिपादित ज्ञान को आत्मसात कर लेगा। यह विचार वैज्ञानिक-शिक्षाविद् डॉ. डी.एस. कोठारी की पुण्य तिथि पर शान्तिपीठ द्वारा आयोजित स्मृति-संगोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये।

संगोष्ठी की अध्यक्षता म.प्र.कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेन्द्र दशोरा ने की। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने डॉ. कोठारी के कई संस्मरण बताते हुए कहा कि डॉ. कोठारी का चिन्तन प्रकृति के नियमों की अनुपालना की नई दिशा देता है। प्रशासनिक अधिकारी सुमतिलाल बोहरा ने सैद्धान्तिक भौतिकी व नैतिक शिक्षा के समन्वय से नवनिर्माण की आवश्यकता प्रतिपादित की। इस अवसर पर पुष्पांजलि अर्पित की गई जिसमें राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति एस.एस.सारंगदेवोत, वल्लभ नगर उपखण्ड अधिकारी मुकेश कलाल डॉ.एल.एल. शर्मा, एड. प्रकाश पानेरी, भूपालसिंह कोठारी, आर.एस.चोबीसा, गिरिश उपाध्याय भी सम्मिलित थे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर. शुक्रवार. 19.02.2016

समानत्व का संदेश है परमहंस

उदयपुर. रामकृष्ण परमहंस का आर्विभाव उन परिस्थितियों में हुआ, जब मत मतान्तरों का संघर्ष और साम्प्रदायिक वैमनस्य के हालात भयानक थे। रामकृष्ण ने स्वयं अनेक धर्म मार्गों से साधना कर आध्यात्मिक उत्कर्ष को प्राप्त किया और मनुष्य को ईश्वर प्राप्ति का लक्ष्य प्रदान किया। यह विचार रामकृष्ण परमहंस जयंती के अवसर पर सरदारपुरा स्थित शान्तिपीठ संस्थान के सभागार में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में व्यक्त किए गए। कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. एसएन जोशी ने कहा कि विपरित विचारों व परिस्थितियों में भी व्यक्ति अपनी धीरता न खोए व समत्व की स्थिती बनाये रखे तो आपदाएं स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। प्रो एसआर व्यास ने कहा कि विवेक और वैराग्य भाव से वंचित होकर समाज का नैतिक उन्नयन संभव नही है। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि रामकृष्ण सर्वधर्म समानत्व का संदेश बनकर आध्यात्मिक उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस अवसर पर एसएल बोहरा, कैलाश बिहारी वाजपेयी, धर्मराज ने भी विचार व्यक्त किए। रूपशंकर चौबीसा ने आभार जताया।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, शुक्रवार 19 फरवरी, 2016

रामकृष्ण परमहंस जयंती पर सत्संग-संगोष्ठी



रामकृष्ण परमहंस जयंती पर शांति पीठ की सत्संग-संगोष्ठी हुई। इसमें प्रो. एसएन जोशी ने कहा कि विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति को धीरज नहीं खोना चाहिए। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, एसएल. बोहरा, शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी आदि ने भी विचार रखे।

प्रातःकाल
उदयपुर, शुक्रवार 19 फरवरी, 2016

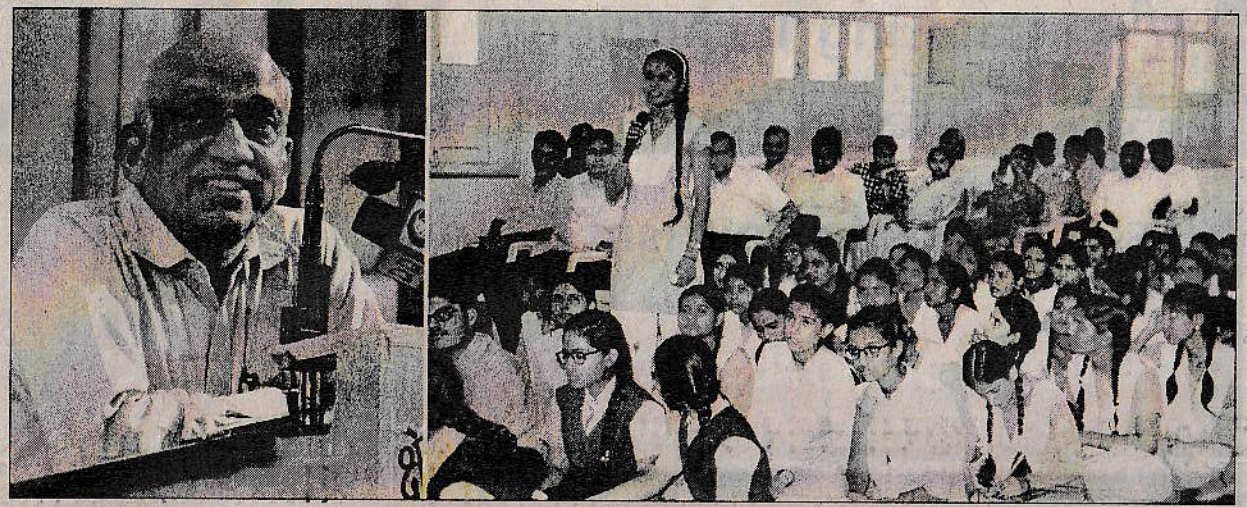
रामकृष्ण परमहंस जयंती पर संगोष्ठी

उदयपुर। रामकृष्ण परमहंस की जयन्ती पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से सत्संग-संगोष्ठी प्रो. एस. एन. जोशी की अध्यक्षता में हुई। प्रो. एस. आर. व्यास, शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी एस. एल. बोहरा, शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी आदि ने कहा कि जिन महापुरुषों ने शास्वत को प्राप्त किया, उन्होंने युगधर्म को रोशन किया और कल्याण की दिशा दी। रामकृष्ण परमहंस का आविर्भाव उन परिस्थितियों में ही हुआ जब मत मतान्तरों का संघर्ष और साम्प्रदायिक वैमनस्य के हालात भयानक थे।

प्रातःकाल
उदयपुर, बुधवार 6 जुलाई, 2016

सिर्फ फिल्मों में होते हैं उड़नतश्तरी व एलियन

डीएस कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला में इसरो चेयरमैन किरण कुमार ने कहा



उदयपुर। इसरो चेयरमैन एएस किरण कुमार मंगलवार को शांतिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित डीएस कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला को संबोधित करते हुए तथा उपस्थित बच्चे।

उदयपुर। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान के चेयरमैन एएस किरण कुमार ने मंगलवार को शांतिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित डीएस कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला में बतौर मुख्य वक्ता एक छात्र के सवाल के जवाब में कहा कि एलियन और उड़न तश्तरी जैसी बातों में कोई भी सच्चाई नहीं होती है। यह बातें सिर्फ फिल्मों में ही होती हैं। वास्तव में ऐसा कभी भी नहीं होता। कोई भी ऐसे साक्ष्य नहीं मिले हैं जो इसे साबित करता हो।

यहां रेलवे प्रशिक्षण संस्थान ऑडिटोरियम में आयोजित व्याख्यानमाला में एएस किरण कुमार ने इसरो के अब तक के कार्यकलापों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अब तक भारत ने अपने उपग्रह के साथ 20 देशों के 74 दूरसंवेदी उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए हैं।

इसरो ने अब तक 137 मिशन पूरे किए जिसमें 80 दूरसंवेदी उपग्रह भारत के शामिल हैं। इसरो ने अब तक 20 अलग अलग देशों के सेटेलाइट उपग्रह अंतरिक्ष में छोड़े जिससे देश को 10 करोड़ अमरीकी डॉलर की आमदनी हुई।

उन्होंने बताया कि 22 जून को इसरो ने अंतरिक्ष की दुनिया में पीएसएलवी के जरिये 20 उपग्रह एक साथ छोडकर नया इतिहास रचा। इसमें अमरीका के 13 उपग्रह, भारत के 3 तथा कनाडा, जर्मनी एवं इंडोनेशिया के 4 उपग्रह शामिल हैं। इनमें दो उपग्रह पूणे विवि के छात्रों ने तैयार किए थे। ये सभी उपग्रह अभी अच्छी तरह से काम कर रहे हैं।

भारत द्वारा अंतरिक्ष में स्थापित चन्द्रयान एक चन्द्रमा पर पानी बनने की प्रक्रिया का पता करने की उपलब्धि हासिल करने वाला दुनिया का एक मात्र उपग्रह है। आगामी समय में इसरो द्वारा चन्द्रयान-2 की तैयारी की जा रही है।

किरण कुमार ने कहा कि 80 के दशक में जब मोबाईल नहीं थे, लोगों को टेलीफोन से दूसरे शहरों में बात करने के लिए कई घंटों तक कॉल बुक करवाकर इंतजार करना पडता था वहीं अंतरिक्ष में स्थापित उपग्रहों की वजह से आज मोबाइल न केवल बातचीत का जरिया बना बल्कि देश दुनिया में होने वाली गतिविधियों तथा आवश्यकता का साधन बन गया है।

95 प्रतिशत बोरवेल सफल

उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष में स्थापित इन्सेट 3 डी प्रति आधा घंटे में छह अलग अलग तरह के फोटो देश के कोने-कोने से ले सकता है। यह उपग्रह कृषि एवं मौसम की जानकारी के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहा है। इस वर्ष कर्नाटक सहित देश के अन्य राज्यों में सूखे की स्थिति का सामना करने के लिए सरकार ने दूर संवेदी उपग्रह की सहायता लेकर बोरवेल खुदवाए। लगभग साढे तीन लाख बोरवेल में से 90 से 95 प्रतिशत बोरवेल सफल हुए। दूरसंवेदी उपग्रह मछुआरों के लिए भी उपयोगी सिद्ध हुआ हैं। इससे एक और जहां मौसम की जानकारी हासिल होने में सहायता मिलती है वहीं दूसरी और मछुआरों को मछलियां कहां, कितनी गहराई पर मिलेगी उसका पता भी चल जाता है। उन्होंने बताया कि इससे प्रतिवर्ष 15 से 20 हजार करोड रुपये की बचत होती है। हाल में केन्द्र सरकार के साथ देश के 4300 हेरिटेज साइड का पता लगाया है तथा ऑन लाइन कार्यक्रम चालू किया गया हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कोटा विवि के कुलपति प्रो. पीके दशोरा ने की। यूसीएस के चेयरमैन वीपी राठी, रेलवे ट्रेनिंग संस्थान के प्रिंसिपल सत्यपाल, संस्थापक महासचिव शांतिपीठ अनंत गणेश त्रिवेदी, विनोद कपूर आदि मौजूद थे। इससे पहले चेयरमैन एएस किरण सुबह गुरू गोविंदसिंह स्कूल में शहर के विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों से रूबरू हुए व अंतरिक्ष, खगोल व सामान्य विज्ञान से जुड़े सवालों के जवाब दिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यापीठ विवि के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने की। विशिष्ट अतिथि पायरोटेके के पीएस तलेसरा थे। डॉ. एसएन जाफरी व डॉ. धीरज जोशी भी मौजूद थे।

कार्यक्रम के बाद किरण कुमार ने उदयपुर सोलर ऑब्जर्वेट्री का भी अवलोकन किया। इसके बाद वे कुछ वैज्ञानिकों के साथ अहमदाबाद रवाना हो गए।

राष्ट्रदूत उदयपुर, बुधवार 6 जुलाई, 2016

'देश-दुनिया में भारत की छवि वर्तमान समय में मजबूत'

उदयपुर, (कासं)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान के चेयरमैन एएस किरण कुमार का मानना है कि एलियंस और उडनतश्तरी जैसी बातें फिजूल हैं, इनमें कोई सत्यता नहीं है। यह सिर्फ फिल्मों में ही होता है, हकीकत में ऐसा कुछ नहीं है। आज तक ऐसे कोई साक्ष्य मिले ही नहीं हैं। इसरो चेयरमैन ने एक विद्यार्थी के सवाल कि एलियंस वाकई होते हैं क्या, के जवाब में यह बात कही।

इसरो चेयरमैन किरण कुमार मंगलवार को शांतिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित डीएस कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला में बतौर मुख्यवक्ता शामिल हुए। रेलवे प्रशिक्षण संस्थान ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में एएस किरण कुमार के साथ शांतिपीठ संस्थान के पदाधिकारी, रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारी, कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति पीके दशोरा सहित शहर के कई गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। इस दौरान मुख्य वक्ता किरण कुमार ने अपने वक्तव्य में इसरो के सफर पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इसरो चेयरमैन ने कहा कि देश दुनिया में भारत की छवि वर्तमान समय में मजबूत बनी है। उन्होंने हाल ही में एक साथ बीस उपग्रह छोड़ने को भारत की बड़ी उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि जब पहला उपग्रह छोड़ा गया था तब विदेशों से सहायता ली गई थी और आज बिना किसी विदेशी मदद के भारत ने यह उपलब्धि हासिल की है।



उदयपुर में आयोजित डीएस कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला को इसरो चेयरमैन एएस किरण कुमार ने संबोधित किया।

उभरते हुए वैज्ञानिकों ने बनाए दो उपग्रह : किरण कुमार ने कहा कि इन उपग्रहों में दो ऐसे उपग्रह थे जो कि उभरते हुए वैज्ञानिकों ने बनाए हैं। दो उपग्रहों को पुणे और बैंगलुरू के अध्ययनरत वैज्ञानिकों ने बनाया और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें अन्तरिक्ष में भेजा गया है। इसरो चेयरमैन ने अपने उद्बोधन के दौरान प्रजेंटेशन के माध्यम से अंतरिक्ष क्रियाओं को दिखाया साथ ही उपग्रह के माध्यम से आने वाली तस्वीरों को भी समझाने की कोशिश की।

समाचार जगत
जयपुर, 6 जुलाई 2016

इसरो ने 20 देशों के 74 दूरसंवेदी उपग्रह अंतरिक्ष में किए स्थापित : किरण

उदयपुर (वार्ता)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष ए.एस.किरण कुमार ने कहा है कि इसरो ने अब तक अपने उपग्रह के साथ 20 देशों के 74 दूरसंवेदी उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किये हैं। किरण कुमार यहां 12वां दौलतसिंह कोठारी व्याख्यानमाला में बोल रहे थे। उन्होने कहा कि इसरो ने आज तक 137 मिशन किये है जिसमें 80 दूरसंवेदी उपग्रह अपने देश के शामिल है। उन्होंने कहा कि इसरो द्वारा अब तक 20 अलग अलग देशों के छोडे गये इन सेटेलाइट उपग्रह से देश को दस करोड अमरीकी डॉलर की आमदनी हुई हैं।

उन्होंने बताया कि गत 22 जून को इसरो ने अंतरिक्ष की दुनिया में पीएसएलवी के जरिये 20 उपग्रह एक साथ छोडकर नया इतिहास रचा था। इसमें अमरीका के तेरह उपग्रह , भारत के तीन तथा कनाडा , जर्मनी एवं इंडोनेशिया के चार उपग्रह शामिल है। इन उपग्रहों में दो उपग्रह पूणे यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने तैयार किये थे। ये सभी उपग्रह अभी अच्छी तरह से काम कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि भारत द्वारा अंतरिक्ष में स्थापित चन्द्रयान (एक) ने चन्द्रमा पर पानी बनने की प्रक्रिया का पता करने की उपलब्धि हासिल करने वाला दुनिया का एक मात्र उपग्रह हैं। उन्होंने बताया कि आगामी समय में इसरो द्वारा चन्द्रयान:2: की तैयारी की जा रही है।

किरण कुमार ने कहा कि 80 के दशक में जहां मोबाईल नही आये थे और लोगों को टेलीफोन से दूसरे शहरों में बात करने के लिए कई घंटो तक कॉल बुक करवाकर इंतजार करना पडता था शेष पृष्ठ 4 पर

इसरो ने 20 देशों...

वहीं अंतरिक्ष में स्थापित उपग्रहों की वजह से आज मोबाइल न केवल बातचीत का जरिया बना है बल्कि देश दुनिया में होने वाली गतिविधियों तथा आवश्यकता का साधन बन गया हैं। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष में स्थापित इन्सेट 3 डी प्रति आधा घंटे में छह अलग अलग तरह के फोटो देश के कौने. कौने से ले सकता हैं। यह उपग्रह कृषि एवं मौसम की जानकारी के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहा है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष कर्नाटक सहित देश के अन्य राज्यों में सूखे की स्थिति का सामना करने के लिए सरकार ने बोरवेल खुदवाने के लिए इस दूर संवेदी उपग्रह की सहायता ली थी। उन्होंने बताया कि देश में इस उपग्रह की सहायता से खुदवाये गये लगभग साढे तीन लाख बोरवेल में से 90-95 प्रतिशत बोरवेल सफल हुए हैं। उन्होंने बताया कि दूरसंवेदी उपग्रह समुद्र में मछुआरों के लिए भी उपयोगी सिद्ध हुआ हैं। इससे एक और जहां मौसम की जानकारी हासिल होने में सहायता मिलती है वहीं दूसरी और मछुआरों को मछलियां कहां, कितनी गहराई पर मिलेगी उसका पुता भी चल जाता है। उन्होंने बताया कि इससे प्रतिवर्ष 15 से 20 हजार करोड रुपये की बचत होती हैं।

बोले- सफल रहा तो एरोप्लेन की तरह कई बार उपयोग हो सकेगा सेटेलाइट

री-यूजेबल सेटेलाइट जल्द होगा लॉन्च, 10 गुना कम होगी कीमत : इसरो चेयरपर्सन



रेलवे ट्रेनिंग स्कूल के सभागार में कोठारी स्मृति व्याख्यान में इसरो के अध्यक्ष ए एस किरण व अन्य अतिथि।

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन(इसरो) के चेयरपर्सन ए एस किरण कुमार ने उदयपुर में कहा कि इसरो री-यूजेबल सेटेलाइट (आरएलवी) को जल्द ही लॉन्च करने की तैयारी में है। स्पेस ट्रांस्पोर्टेशन को 10 गुना तक कम करने के मकसद से री-यूजेबल सैटेलाइट का कंसेप्ट लाया गया है। 23 मई को एक री-यूजेबल सैटेलाइट आरएलवीटीडी को छोड़ा गया था, 70 किलोमीटर की उड़ान के बाद उसे पानी में लैंड करवाया गया, जो सफल रहा। वे मंगलवार को राजकीय गुरु गोविंद स्कूल में एक कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं के सवालों के जवाब दे रहे थे। उन्होंने कहा कि अब जल्द इसे श्रीहरिकोटा के रन-वे पर लैंड करवाने की तैयारी है। सफल रहा तो इसरो एक ही सेटेलाइट को एक एरोप्लेन की तरह कई बार उपयोग कर सकेगा। करीब एक पखवाड़े पहले ही इसरो ने 20 उपग्रह एक साथ अंतरिक्ष में छोड़ने का रिकॉर्ड बनाया है। सिटी फ्रंट भी पढ़ें

ऐसा यंत्र बना रहें जो लगाएगा मौसम का सटीक अनुमान

इसरो चेयरमैन ने डॉ. दौलत सिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान में पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से छात्रों को बताया कि हमारा फोकस सेकेरोमीटर इंस्ट्रूमेंट बनाने पर है जो समुद्र के ऊपरी सतह पर हवा की वेग की पल-पल की जानकारी देगा। अब तक कम्प्यूटर सिस्टम के अनुमान पर ही हम निर्भर रहते हैं। इस यंत्र से मौसम का ज्यादा सटीक अनुमान लगाया जा सकेगा। यह मौसम के अनुमान लगाने में अब तक का सबसे महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट होगा। उन्होंने मंगलवार को जोनल रेलवे प्रशिक्षण संस्थान में एक कार्यक्रम में भी भाग लिया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर ■ बुधवार, 06 जुलाई, 2016

एलियंस और उड़न तश्तरी की बातें फिल्मों तक सीमित : किरण कुमार

इसरो अध्यक्ष ने डीएस कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला के दौरान स्टूडेंट्स के सवालों के दिए जवाब

उदयपुर। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान के चेयरमैन एएस किरण कुमार बोले कि एलियंस और उड़न तश्तरी जैसी बातें फिजूल हैं, इनमें कोई सत्यता नहीं है। ये सिर्फ फिल्मों में ही होता है, हकीकत में ऐसा कुछ नहीं है। आज तक ऐसे कोई साक्ष्य मिले ही नहीं हैं। इसरो चेयरमैन ने एक विद्यार्थी के सवाल पर यह जवाब दिया।

इसरो चेयरमैन मंगलवार को शांतिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित डीएस कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला में बतौर मुख्यवक्ता शामिल हुए। रेलवे प्रशिक्षण संस्थान ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में एएस किरण कुमार के साथ शांतिपीठ संस्थान के पदाधिकारी, रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारी, कोटा विश्वविद्यालय के कुलपति पीके दशोरा सहित शहर के कई गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।



रेलवे ट्रेनिंग सेंटर में आयोजित व्याख्यानमाला में उपस्थित इसरो के अध्यक्ष और अन्य अतिथि।

मुख्य वक्ता एएस किरण कुमार ने अपने वक्तव्य में इसरो के सफर पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि दुनिया में भारत की छवि वर्तमान समय में मजबूत बनी है। उन्होंने हाल ही में एक साथ बीस उपग्रह छोड़ने को भारत की बड़ी उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि जब पहला उपग्रह छोड़ा गया था तब विदेशों से सहायता ली गई थी और आज बिना किसी विदेशी मदद के भारत ने यह उपलब्धि हासिल की है।

उभरते वैज्ञानिकों ने बनाए दो उपग्रह: एएस किरण ने कहा कि इन उपग्रहों में दो ऐसे उपग्रह थे जो कि उभरते हुए वैज्ञानिकों ने बनाए हैं। दो उपग्रहों को पुणे और बैंगलुरू के अध्ययनरत वैज्ञानिकों ने बनाया और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें अन्तरिक्ष में भेजा गया है। इसरो चेयरमैन ने अपने संबोधन में प्रेजेंटेशन के माध्यम से अंतरिक्ष क्रियाओं को दिखाया साथ ही उपग्रह के माध्यम से आने वाली तस्वीरों को भी समझाने की कोशिश की।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर
TUESDAY
05.07.16

newsbrief

इसरो के चेयरमैन आज उदयपुर में

उदयपुर @ पत्रिका. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान



(इसरो) के चेयरमैन एएस. किरण मंगलवार को उदयपुर आएंगे। वे यहां शांतिपीठ भारत संस्थान की ओर से आयोजित डीएस कोठारी स्मृति व्याख्यान कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता संबोधित करेंगे। संस्थान के अनंत गणेश त्रिवेदी ने बताया कि आयोजन सुखाड़िया सर्किल स्थित जोनल रेलवे प्रशिक्षण संस्थान ऑडिटेरियम में सुबह सवा 11 बजे शुरू होगा। इससे पहले 10 बजे इसरो चेयरमैन गुरुगोविंद सिंह सीनियर सैकंडरी स्कूल में विद्यार्थियों से रूबरू होंगे।

rajasthanpatrika.com
राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . बुधवार . 06.07.2016

इसरो अध्यक्ष विद्यार्थियों से रूबरू...

हमारे 7 सेटेलाइट अमरीका के 32 के बराबर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर . अमरीका जो सूचनाएं 32 सेटेलाइट के नेटवर्क से एकत्र कर रहा है, वहीं सूचनाएं हम सिर्फ 7 सेटेलाइट से सफलतापूर्वक प्राप्त कर रहे है। वर्ष 1963 में हमने पहला रॉकेट लांच किया था उसमें अधिकतर उपकरण विदेशों से मंगवाए गए थे। अप्रेल-2016 में श्रीहरिकोटा से जिस रॉकेट से सेटेलाइट की लॉचिंग हुई, उसके सारे उपकरण देश में निर्मित थे। आज हम अपने ही नहीं अमरीका जैसे देशों के उपग्रह सशुल्क अंतरिक्ष में स्थापित कर रहे है। यह जानकारी भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष एएस किरण ने मंगलवार को यहां विद्यार्थियों से साझा की। यह जान-सुनकर विद्यार्थियों के चेहरे गर्व व खुशी से खिल उठे। इसरो अध्यक्ष शातिपीठ की ओर से रेलवे प्रशिक्षण स्कूल में डॉ. डी.एस. कोठारी स्मृति व्याख्यान में बतौर मुख्य वक्ता शामिल हुए। आयोजन से पहले उन्होंने गुरुगोविंद सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को संबोधित किया। विद्यार्थियों ने इसरो अध्यक्ष से सेटेलाइट साइंस व टेक्नोलॉजी से जुड़े सवाल पूछे।



एलियन, उड़न तश्तरी की बातें भ्रामक

एक बच्चे के सवाल पर इसरो अध्यक्ष ने कहा कि एलियन व उड़न तश्तरी जैसी बातें पूरी तरह भ्रामक हैं। अब तक एक भी ऐसा प्रमाण नहीं है, जिसमें एलियन जैसी बातों की पुष्टि होती हो। अंतरिक्ष में दर्जनों से उपग्रह हैं, जो ग्रहों को काफी स्पष्टता से देख रहे हैं। इसरो अध्यक्ष ने कहा कि चंद्रमा पर कई देशों ने यान भेजकर उपग्रह स्थापित किए। पूरी दुनिया जानना चाहती थी कि चंद्रमा पर पानी की उपलब्धता है या नहीं, यह पता लगाने का गौरव हमारे चंद्रयान प्रथम के नाम है। अब तक हम 36 उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित कर चुके हैं।

एक साथ स्थापित किए तीन उपग्रह

टेली कम्यूनिकेशन, ब्रॉड कॉस्टिंग सहित कुल तीन उपग्रह एक साथ अंतरिक्ष में स्थापित करने का गौरव भी भारत को प्राप्त है। हमारे सेटेलाइट रेगिस्तान सहित अन्य भूभागों में हो रहे परिवर्तनों को तेजी से प्रदर्शित कर रहे हैं। हर आधा घंटे में पूरी पृथ्वी का नवीन फोटो प्राप्त होता है। एक उपग्रह को स्थापित करने में बहुत बड़ा खर्चा आता है। हमने सशुल्क दूसरे देशों के उपग्रह लॉच करने में सहायता की, जिससे हमारा खर्चा कम हो गया। **(देखें पेज 4 भी)**

वर्ष : 61 . अंक : 120 पत्रिका समाचार पत्र समूह : 8 राज्य, 37 संस्करण राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गुजरात, तमि

दैनिक भास्कर
उदयपुर• मंगलवार, 5 फरवरी, 2013

शिक्षा में उच्च जीवन मूल्यों का समावेश जरूरी : चंद्रशेखर

डॉ. दौलतसिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर संगोष्ठी



वैज्ञानिक शिक्षाविद् डॉ.दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए।

उदयपुर | कर्नाटक राज्य के पूर्व शिक्षा मंत्री प्रो. बी.के. चंद्रशेखर ने कहा कि समाज के विकास के लिए शिक्षा में उच्च जीवन मूल्यों का समावेश जरूरी है। शिक्षा बजट को बढ़ाने की दिशा में काम करना होगा। वे सोमवार को वैज्ञानिक शिक्षाविद् डॉ.दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि डॉ. कोठारी ने अपनी रिपोर्ट में सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत शिक्षा के लिए तय किया था जो आज 3.5 प्रतिशत है, जबकि मुद्रा वृद्धि के चलते आज वह 12 प्रतिशत होना चाहिए। इस मौके पर शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी, शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी, पं. भंवरलाल व्यास, प्रो. पी.के. जैन आदि ने चर्चा में भाग लिया। संचालन मनोज गंधर्व ने किया।

साइंस कॉलेज में लगेगी डॉ. कोठारी की प्रतिमा

सुखाड़िया विवि के कुलपति प्रो. आई.वी. त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी जैसे आदर्श शिक्षक और वैज्ञानिक की आदमकद प्रतिमा विज्ञान महाविद्यालय में शीघ्र स्थापित की जाएगी।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . मंगलवार
05.02.2013

साइंस कॉलेज में लगेगी कोठारी की प्रतिमा

उदयपुर. सुखाड़िया विवि के संघटक विज्ञान महाविद्यालय में शीघ्र ही वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी की प्रतिमा स्थापित की जाएगी। उनकी पुण्यतिथि पर सोमवार को आयोजित चिंतन सभा में सुविवि कुलपति प्रो. आई.वी. त्रिवेदी ने अध्यक्षीय उद्बोधन के दौरान यह घोषणा की।

शान्तिपीठ की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कर्नाटक के पूर्व शिक्षा मंत्री प्रो. बीके चंद्रशेखर ने कहा कि समाज के समुन्नयन और शान्ति के लिए शिक्षा में उच्च जीवन मूल्यों का समावेश नितान्त आवश्यक है। उज्ज्वल भविष्य और सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण के लिए भारतीय संस्कृति के मौलिक आधार पर शिक्षा और विकास की अवधारणा स्थापित करनी होगी। शान्ति शिक्षा की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा को कई स्तरों पर भारतीय संस्कृति से जोड़कर विशेष शैक्षिक कार्यक्रम चलाने होंगे। उन्होंने अफसोस व्यक्त किया कि डॉ. कोठारी ने बरसों पहले अपनी रिपोर्ट में सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत शिक्षा के लिए तय करने की बात कही थी, जो आज 3.5 प्रतिशत है, जबकि मुद्रा वृद्धि के चलते आज वह 12 प्रतिशत होना चाहिए। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी, शिक्षाविद् कैलाशबिहारी वाजपेयी, पं. भंवर लाल व्यास, मैनेजमेन्ट कॉलेज के डीन प्रो. पीके जैन, कवि अजातशत्रु आदि ने विचार व्यक्त किए।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
अजमेर, बुधवार, 6 फरवरी , 2013

शिक्षा में उच्च जीवन मूल्यों का समावेश जरूरी

शिक्षविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि मनाई

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 5 फरवरी। समाज के समुन्नयन और शान्ति के लिए शिक्षा में उच्च जीवन मूल्यों का समावेश नितान्त आवश्यक है। उज्जवल भविष्य और सुदृढ राष्ट्र के नवनिर्माण हेतु भारतीय संस्कृति के मौलिक आधार पर शिक्षा और विकास की अवधारणा स्थापित करनी होगी। उक्त विचार आज वैज्ञानिक शिक्षविद् डॉ. दौलत सिंह कोठारी की पुण्यतिथि के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा आयोजित चिन्तन सभा में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये।

मुख्य अतिथि के रूप में कर्नाटक राज्य के पूर्व शिक्षा मंत्री प्रो. बी.के. चन्द्रशेखर ने शान्तिशिक्षा की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि हमे शिक्षा के कई स्तरों पर आधुनिक विज्ञान व तकनिकी को भारतीय संस्कृति से जोड़कर विशेष शैक्षिक कार्यक्रम चलाने होंगे।

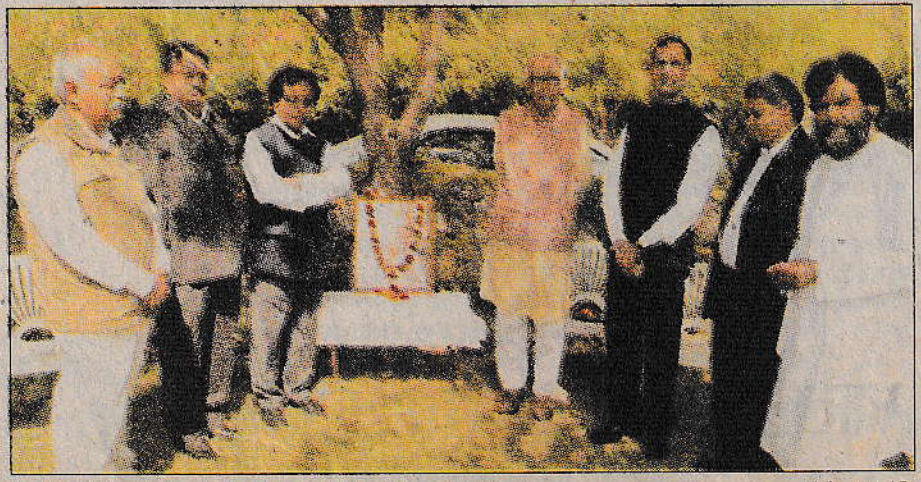
विज्ञान और मानव मूल्यों के समन्वय से उपजी नवीन सोच हमे साम्प्रदायिक सद्भाव, वर्ग संघर्ष-मुक्ति, न्याय दृष्टि और समता युक्त समाज की दिशा दे सकती है जिसके डॉ. कोठारी प्रवर्तक थे। उन्होने अफसोस व्यक्त किया कि डॉ. कोठारी ने अपनी रिपार्ट में दशाब्दियों पूर्व सकल घरेलु उत्पाद का 6 प्रतिशत शिक्षा के लिए तय किया था जो आज 3.5 प्रतिशत है, जबकि मुद्रा वृद्धि के चलते आज वह 12 प्रतिशत होना चाहिये।

सभा की अध्यक्षता करते हुए मो.सु.वि.वि. के कुलपति प्रो. आई.वी. त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी जैसे आदर्श शिक्षक और वैज्ञानिक की आदमकद प्रतीमा विज्ञान महाविद्यालय में यथाशीघ्र स्थापित की जायेगी और यह उनके प्रति हमारी सबकी हार्दिक श्रद्धांजली होगी।

शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने डॉ. कोठारी के अवदानों का उल्लेख करते हुए कहा कि डॉ. कोठारी के आत्मा और एटम के अभाज्य चिन्तन ने मानवीय संवेदनशीलता को कभी नहीं नकारा बल्कि संवेदनशील समाज निर्माण में इसे आवश्यक माना। अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का उनका चिन्तन एक विश्व राष्ट्र की दिशा देता है। शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने डॉ. कोठारी को भारतीय संस्कृति का उत्पाद बताया। पं. भंवरलाल व्यास ने संस्कारयुक्त शिक्षा की व्यवस्था पद्धति का विस्तार से प्रतिपादन किया।

मैनेजमेन्ट कॉलेज के डीन प्रो. पी.के. जैन सामाजिक विज्ञान और मानवीकी में अंग्रेजी के प्रो. प्रदीप त्रिखा, प्रो. पी.आर. व्यास, पूर्व अधीक्षण अभियन्ता रोशन देपुरा, अतिरिक्त खण्ड शिक्षा अधिकारी डॉ. विनोद सनाढ्य, व्याख्याता दिनेश कुमार राव, डॉ. चन्द्रा आमेटा, भूमिका राठौड, डॉ. कैलाश अग्रवाल ने भी विचार व्यक्त किये। कवि अजातशत्रु ने काव्यांजली प्रस्तुत करते हुए पद्य प्रस्तुत किया- वो कौन लोग है जो बम बनाते हैं, उनसे तो अच्छे कीड़े हैं जो रेशम बनाते हैं।

प्रारम्भ में डॉ. कोठारी की तस्वीर पर अतिथियों द्वारा माल्यार्पण किया तथा पुष्पांजली अर्पित की गई। गोष्ठी का संचालन मनोज गन्धर्व ने किया तथा एडवोकेट धर्मराज ने आभार व्यक्त किया।



वैज्ञानिक शिक्षविद डॉ. दौलत सिंह कोठारी को पुष्पांजलि अर्पित करते अतिथिगण। फोटो : नवज्योति

दैनिक नवज्योति
सच्चा हमसफर
अजमेर, मंगलवार, 19 फरवरी, 2013

आग्रहवाद से मुक्त है रामकृष्ण का दिग्दर्शन

'सर्वधर्म समभाव के प्रेरक रामकृष्ण परमहंस' विषयक सत्संग-संगोष्ठी

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 18 फरवरी। परमहंस श्री रामकृष्ण का आविर्भाव ऐसे समय हुआ था जब समाज धार्मिक भ्रमजाल और मत-मतान्तरों के विद्वेष से ग्रसित था। उन्होने अविरल भाव समाधि से अनेक धर्म मार्गो को आत्मसात करते हुए भगवत् प्राप्ति की ओर यह प्रमाणित किया कि सारे मार्ग सही हैं तथा मनुष्य मात्र को परमलक्ष्य उपलब्ध करा सकते हैं। रामकृष्ण ने सर्वधर्मसमानत्व को प्राप्त करते हुए एक आध्यात्मिक समन्वयक की भूमिका प्रस्तुत की।

उक्त विचार आज रामकृष्ण परमहंस की जयन्ती के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा जोनल रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के सभागार में ''सर्वधर्म समभाव के प्रेरक रामकृष्ण परमहंस'' विषयक सत्संग-संगोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए दर्शन शास्त्र के प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि रामकृष्ण का दिग्दर्शन आग्रहवाद से मुक्त है। जैसा वे देखते हैं वैसा ही प्रस्तुत करते हैं। वेदान्त व भक्तिमार्ग से यथा ब्रम्हाण्डे तथा पिण्डे प्रमाणित किया। प्रो. व्यास ने प्रत्येक व्यक्ति द्वारा कुछ क्षण देह और देश के लिए देने की आवश्यकता बताई।

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रशिक्षण संस्थान के उपाचार्य सी.एल. चितारा ने कहा कि गम्भीर हालात के समय रामकृष्ण का अविर्भाव हुआ और परिणाम स्वरूप वसुधैव कुटुम्बकम् को नया आयाम मिला। इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने समाज में ऐसे आचार्यो की आवश्यकता बताई जो यौवन की प्रचण्ड ऊर्जा और तिक्ष्ण मेधा का नियमन करते हुए उसे राष्ट्र निर्माण व मानव कल्याण में लगा सके। उन्होंने कहा विवेकानन्द रामकृष्ण की आध्यात्मिक साधना का ही प्राकट्य हैं। विवेकानन्द का सन्देश 'चरित्र गठन व नैतिक उन्नयन' आज कहीं अधिक प्रासंगिक है जिससे वर्तमान की समस्याओं को नियंत्रित किया जा सकता है।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र में पण्डित रामकृष्ण बोस ने श्री रामकृष्ण-विवेकानन्द के भजन प्रस्तुत कर सभागार को आध्यात्मिक स्पन्धन से परिपूर्ण कर दिया। गोष्ठी का संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया। प्रारम्भ में अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती और रामकृष्ण की तस्वीर पर माल्यार्पण किया गया।

राजस्थान पत्रिका
मंगलवार 19 फरवरी 2013

'देश के लिए निकालें समय'

रामकृष्ण परमहंस का आविर्भाव ऐसे समय हुआ जब समाज धार्मिक भ्रमजाल और मत-मतान्तरों के विद्वेष से ग्रसित था। उन्होंने अविरल भाव समाधि से कई धर्म मार्गों को आत्मसात करते हुए प्रमाणित किया कि सारे मार्ग सही हैं। रामकृष्ण ने सभी धर्मों में बताए गए मानव सेवा के कर्तव्य को उल्लेखित किया। यह विचार रामकृष्ण परमहंस जयन्ती पर सोमवार को शान्तिपीठ की ओर से 'सर्वधर्म समभाव के प्रेरक रामकृष्ण परमहंस' विषय पर आयोजित गोष्ठी में उभर कर आए। क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता दर्शन शास्त्र के प्रो. एस.आर. व्यास ने प्रत्येक व्यक्ति द्वारा कुछ क्षण सेहत और देश के लिए देने की आवश्यकता बताई। गोष्ठी की अध्यक्षता प्रशिक्षण संस्थान के उपाचार्य सी.एल. चितारा ने की। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि विवेकानन्द का सन्देश 'चरित्र गठन व नैतिक उन्नयन' आज कहीं अधिक प्रासंगिक है।

प्रातःकाल
माघ शुक्ल 9 मंगलवार 19 फरवरी 2013



उदयपुर। संगोष्ठी में मंचासीन अतिथि।

रामकृष्ण परमहंस की जंयती मनाई

उदयपुर। रामकृष्ण परमहंस की जयन्ती शान्तिपीठ द्वारा जोनल रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के सभागार में 'सर्वधर्म समभाव के प्रेरक श्री रामकृष्ण परमहंस' विषयक सत्संग-संगोष्ठी के साथ मनाई गई।

प्रमुख वक्ता दर्शन शास्त्र के प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि रामकृष्ण का दिग्दर्शन आग्रहवाद से मुक्त है। प्रो. व्यास ने प्रत्येक व्यक्ति द्वारा कुछ क्षण देह और देश के लिए देने की आवश्यकता बताई। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रशिक्षण संस्थान के उपाचार्य सी.एल. चितारा ने कहा कि गम्भीर हालात के समय रामकृष्ण का अविर्भाव हुआ और परिणाम स्वरूप वसुधैव कुटुम्बकम् को नया आयाम मिला। इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने समाज में ऐसे आचार्यो की आवश्यकता बताई जो यौवन की प्रचण्ड ऊर्जा और तिक्ष्ण मेधा का नियमन करते हुए उसे राष्ट्र निर्माण व मानव कल्याण में लगा सके। संगोष्ठी के दूसरे सत्र में पण्डित रामकृष्ण बोस ने श्री रामकृष्ण-विवेकानन्द के भजन प्रस्तुत कर सभागार को आध्यात्मिक स्पन्धन से परिपूर्ण कर दिया। संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

दैनिक भास्कर
उदयपुर • मंगलवार, 19 फरवरी, 2013

परमहंस की जयंती पर सत्संग संगोष्ठी

उदयपुर। रामकृष्ण परमहंस की जयंती पर सोमवार को शांति पीठ द्वारा जोनल रेलवे प्रशिक्षण संस्थान सभागार में सत्संग संगोष्ठी हुई। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता दर्शन शास्त्र के प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि रामकृष्ण का दिग्दर्शन आग्रहवाद से मुक्त है। जैसा वे देखते हैं वैसा ही प्रस्तुत करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति द्वारा कुछ क्षण देह और देश के लिए देने की आवश्यकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रशिक्षण संस्थान के उपाचार्य सी.एल. चितारा ने की।

इस अवसर पर शांति पीठ संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने समाज में ऐसे आचार्यों की आवश्यकता बताई जो यौवन की प्रचण्ड ऊर्जा और तीक्ष्ण मेधा का नियमन करते हुए उसे राष्ट्र निर्माण व मानव कल्याण में लगा सकें। संगोष्ठी के दूसरे सत्र में पंडित रामकृष्ण बोस ने भजन प्रस्तुत कर सभागार को आध्यात्मिक स्पंदन से परिपूर्ण कर दिया। गोष्ठी का संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . बुधवार
10.07.2013

इसरो अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन से बातचीत • उपग्रह देगा मौसम का सटीक पूर्वानुमान

'26 जुलाई को इनसेट-3डी का प्रक्षेपण'

उदयपुर

udaipur@patrika.com

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन ने बताया कि इसरो आगामी 26 जुलाई को मौसम सम्बन्धी जानकारी देने के लिए एक विशेष उपग्रह इनसेट-3-डी प्रक्षेपित करने जा रहा है। इसका प्रक्षेपण मध्य अमरीकी देश फ्रेंच गुआना के प्रक्षेपण केन्द्र कोरू से किया जाएगा। देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. कोठारी की स्मृति में शांतिपीठ की ओर से बुधवार को होने वाले व्याख्यान में मुख्य अतिथि और वक्ता के तौर पर भाग लेने के लिए पहुंचे डॉ. राधाकृष्णन ने पत्रिका से विशेष बातचीत में बताया



कि उपग्रह इनसेट-3-डी मौसम का सटीक पूर्वानुमान के साथ ही प्राकृतिक आपदाओं के बारे में जानकारी उपलब्ध कराएगा, जिससे प्रशासन और आपदा प्रबंधन जान-माल के नुकसान को बचाने के लिए तैयारी कर सकेंगे।इसके अलावा किसान कब फसल बोएगा और उसका उत्पादन कितना होगा, इसका भी प्रारम्भिक अनुमान लगाया जा सकेगा।

चंद्रयान-2 में अभी समय

उन्होंने बताया कि इसरो की महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक 'मिशन टू मून-चंद्रयान' का दूसरा चरण चंद्रयान-2 का अभी समय तय नहीं है। इसके लिए एक उपकरण रूस से खरीदना है, जिसका सौदा अभी तय नहीं हो पाया है। इसलिए अभी इसकी तय तारीख नहीं बताई जा सकती है।

पढ़ें 26 जुलाई @ पेज 14

डॉ. कोठारी स्मृति व्याख्यान आज

शांतिपीठ संस्थान की ओर से रेलवे प्रशिक्षण संस्थान सभागार में बुधवार सुबह 11.30 बजे देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं उदयपुर निवासी डॉ. डी.सी. कोठारी की स्मृति में व्याख्यान होगा। इसमें भाग लेने के लिए इसरो अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन मंगलवार को उदयपुर पहुंचे। डॉ राधाकृष्णन कार्यक्रम में भारत के मंगल अभियान और विज्ञान में अनुसंधान की जरूरत विषय पर व्याख्यान देंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक डॉ. गुलाब कोठारी करेंगे।

पढ़ें डॉ. कोठारी @ पेज 14

वर्ष: 58 . अंक: 124 पत्रिका समूह नेटवर्क : 8 राज्य, 33 संस्करण राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाट

डॉ. कोठारी...

विशिष्ट अतिथि सुखाड़िया विवि के कुलपति डॉ. आई.वी. त्रिवेदी होंगे। व्याख्यान से पूर्व सुबह 10 बजे डॉ. राधाकृष्णन राजकीय उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय रेजिडेंसी के सभागार में सरकारी और निजी विद्यालयों के चुनिंदा विद्यार्थियों की विज्ञान सम्बंधी जिज्ञासाओं का शमन करेंगे। रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के सभागार में आम जन का प्रवेश निःशुल्क रहेगा।

इससे पूर्व उदयपुर पहुंचने पर डबोक हवाई अड्डे पर डॉ राधाकृष्णन का स्वागत शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी, काजरी के डॉ. चौधरी, शिक्षाविद विनोद सनाढ्य आदि ने स्वागत किया। शाम को डॉ. राधाकृष्णन ने सौर वेधशाला का अवलोकन किया। इस मौके पर वेधशाला के निदेशक वेंकटकृष्णन ने उन्हें यहां हो रहे अनुसंधान की जानकारी दी। इसरो अध्यक्ष ने गोंग परियोजना और फतहसागर में लगने वाली देश की सबसे बड़ी दूरबीन के लिए अब तक हुई तैयारियों के बारे में भी जानकारी ली। इस मौके पर यूएसओ के वरिष्ठ सौर वैज्ञानिक व तकनीक अधिकारी मौजूद थे।

दैनिक भास्कर
उदयपुर . बुधवार. 10 जुलाई, 2013

डॉ. दौलतसिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान आज

डॉ. के. राधाकृष्णन मुख्य वक्ता होंगे स्कूली बच्चों से बातचीत भी करेंगे

उदयपुर | शांति पीठ की ओर से 10वां डॉ. दौलत सिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान बुधवार पूर्वाह्न 11.30 बजे रेलवे ट्रेनिंग स्कूल सभागार में होंगे। मुख्य वक्ता इसरो के अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन होंगे। अध्यक्षता मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.आई. वी. त्रिवेदी करेंगे। इससे पूर्व 10.30 बजे डॉ. राधाकृष्णन उदयपुर के कुछ सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं से रेजिडेंसी स्कूल सभागार में संवाद कार्यक्रम में भाग लेंगे। (इसरो चेयरमैन से बातचीत पेज 2)



डॉ. के. राधाकृष्णन।

इसरो अध्यक्ष 6 को उदयपुर में



डॉ. आर.के. राधाकृष्णन

2-7-13 दैपु

उदयपुर. भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष डॉ.के. राधाकृष्णनन 6 जुलाई को उदयपुर में प्रस्तावित डॉ. दौलत सिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान देंगे। शान्तिपीठ के तत्वावधान में यह उनका 10वां स्मृति व्याख्यान होगा। व्याख्यान के पूर्व डॉ. राधाकृष्णनन उदयपुर के चुनिंदा स्कूली छात्र-छात्राओं से अन्तरिक्ष विज्ञान के बारे में संवाद कर उनकी जिज्ञासाओं का समाधान करेंगे।

'स्पेस मिशन में भारत छठे पायदान पर'

भास्कर विशेष इसरो के चेयरमैन डॉ. के. राधाकृष्णन ने कहा-कम संसाधनों के बावजूद उपलब्धि कम नहीं

विपिन गांधी | उदयपुर

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के चेयरमैन डॉ. के. राधाकृष्णन का कहना है कि विश्व में भारतीय अंतरिक्ष मिशन छठे पायदान पर है। कम संसाधनों के बावजूद अंतरिक्ष अनुसंधान में इस मुकाम पर पहुंचना विकासशील देश के लिए कम उपलब्धि नहीं है।

डॉ. राधाकृष्णन शांति पीठ की ओर से बुधवार को होने वाले डॉ. डी.एस. कोठारी स्मृति कार्यक्रम में भाग लेने के लिए मंगलवार को उदयपुर पहुंचे। मुलाकात में उन्होंने कहा कि आज इस क्षेत्र में पांच हजार युवा वैज्ञानिक अंतरिक्ष की बारीकियों का अध्ययन कर रहे हैं। कॅरियर की दिशा में स्पेस एप्लीकेशन की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। नेचुरल रिसोर्सेज के प्रबंधन में इंडियन रिमोट सेंसिंग (आईआरएस), कम्युनिकेशन सर्विस में इंडियन नेशनल सेटेलाइट (इनसेट) काम कर रहा है। फिलहाल इसरो 12 स्पेस प्रक्षेपण पर काम कर रहा है, जिन्हें समय अंतराल से छोड़ा जाएगा। इस कड़ी में नेविगेशन सेटेलाइट महत्वपूर्ण उपग्रहों में से एक है। मंगल ग्रह परिक्रमा मिशन (मां) अंतरिक्ष यान पर काम तेजी से चल रहा है। इस मिशन के तहत पृथ्वी के सबसे नजदीक मंगल ग्रह पर जीवन के अस्तित्व की तकनीकी चुनौतियों को समझने में मदद मिलेगी। उन्होंने बताया कि ऑस्ट्रिया, कनाडा, डेनमार्क और ब्रिटेन छह उपग्रहों के प्रक्षेपण की तैयारी में हैं।

आपदा की घोषणा करना हमारा काम नहीं

डॉ.राधाकृष्णन ने कहा कि देश में प्राकृतिक आपदाओं के पूर्वानुमान के लिए अलग-अलग विभाग हैं।इसरो के सेटेलाइट के जरिए संबंधित वैज्ञानिक इन प्राकृतिक आपदाओं का पता लगाते हैं। पूर्वानुमान की घोषणा भी वे ही कर सकते हैं।रिमोट सेंसिंग की दिशा में सभी प्रदेशों में काम चल रहा है। राजस्थान के जोधपुर में इस दिशा में अनुसंधान जारी हैं।

12वीं पंचवर्षीय योजना में 58 मिशन

12वीं पंचवर्षीय योजना के तहत 58 अंतरिक्ष मिशन, 33 उपग्रह भेजना और 25 प्रक्षेपण यान मिशन की योजना बनाई गई है। जियो इमेजिंग उपग्रह प्राकृतिक खतरों और आपदाओं की त्वरित निगरानी की सुविधा के लिए है। भारतीय क्षेत्रीय नेविगेशन सेटेलाइट सिस्टम के लिए खड़ा है। यह देश का पहला नेविगेशन सेटेलाइट है। हाल के वर्षों में छोड़े गए सेटेलाइट में आई आरएनएसएस -1 ए (नेविगेशन सेटेलाइट- 1 जुलाई 2013), एसएआरएएल (अर्थ आब्जर्वेशन सेटेलाइट-*25 फरवरी 2013), जीएएसटी-10 (जियो स्टेशनरी सेटेलाइट -29 सितंबर 12) प्रमुख हैं।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . गुरुवार
11.07.2013
राज्यमंच

डॉ.दौलतसिंह कोठारी स्मृति दसवां व्याख्यान

मंगल पर मीथेन, पानी की उम्मीद

- इसरो अध्यक्ष राधाकृष्णन ने बताई मंगल पर खोज की योजनाएं
- अध्यक्षीय उद्‌बोधन में गुलाब कोठारी ने समझाया अध्यात्म व विज्ञान का समन्वय





डॉ. दौलतसिंह कोठारी स्मृति व्याख्यान में विचार व्यक्त करते इसरो के अध्यक्ष के. राधाकृष्णन तथा अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक डॉ. गुलाब कोठारी। (संबंधित समाचार @ पेज 2) -पत्रिका

उदयपुर. इंसान लगातार पृथ्वी के विकल्प को खोजने का प्रयास कर रहा है। इसके तहत उसका सारा ध्यान पृथ्वी के निकटस्थ ग्रह मंगल पर है। उसका भौगोलिक परिदृश्य बहुत कुछ पृथ्वी जैसा है। वहां पानी और मीथेन मिलने की पूरी सम्भावना है। अगर मंगल पर मीथेन मिलती है, तो गैरपम्परागत ऊर्जा स्रोत खोजने में बड़ी सफलता मिलेगी। इसके अलावा निकटस्थ ग्रह के बारे में जानकारी मिलने से धरती पर होने वाले अंतरिक्षीय प्रभावों का पूर्वानुमान भी लगाया जा सकेगा।

पढ़ें मंगल @ पेज 15

पेज 1 का शेष...

मंगल...

यह विचार भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन ने बुधवार को यहां शांतिपीठ संस्था की ओर से आयोजित डॉ. दौलतसिंह कोठारी स्मृति दसवें व्याख्यान में व्यक्त किए। अध्यक्षता राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक गुलाब कोठारी ने की। विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के सिद्धान्त को प्रतिपादित करने वाले डॉ. दौलतसिंह की स्मृति में आयोजित इस व्याख्यान माला के दोनों वक्ताओं का उद्‌बोधन विज्ञान और अध्यात्म के दो शिखर स्तम्भों का अनूठा मेल था। प्रमुख वक्ता और मुख्य अतिथि इसरो के अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन ने कहा कि खगोलीय और अंतरिक्ष विज्ञान में संगठन लगातार अनुसंधान कर रहा है। इस वक्त संगठन का प्रमुख ध्यान वर्ष 2013-14 में बारह कृत्रिम उपग्रहों को धरती की कक्षा में स्थापित करना है। साथ ही भू-स्थैतिक उपग्रह प्रक्षेपण यान के लिए क्रायोजेनिक इंजन का भारतीय संस्करण तैयार करना है। इसरो 'मिशन टू मार्स' की भी तैयारी का रहा है। इसके लिए वर्ष 2016 में मंगल की कक्षा में एक कृत्रिम उपग्रह स्थापित करने की योजना है।

विज्ञान और अध्यात्म अलगाव ही समस्या: अध्यक्षीय उद्‌बोधन में विज्ञान और अध्यात्म के सम्बंध का विवेचन करते हुए गुलाब कोठारी ने कहा कि विज्ञान का अध्यात्म से एकाकार नहीं होना ही विश्व में समस्याओं का कारण है। विज्ञान में तत्व और ऊर्जा है, प्राण नहीं है। जबकि अध्यात्म आत्मा के जुड़ाव से तत्व और ऊर्जा को सजीवता की ओर बढ़ा देता है। विज्ञान में उपकरणों पर आधारित प्रयोग और परिणाम होते हैं, अध्यात्म में आदमी स्वयं के भीतर प्रयोग करता है। विज्ञान के परिणाम का उपयोग परमाणु ऊर्जा के लिए भी हो सकता है या उससे परमाणु बम भी बनाया जा सकता है। सकारात्मक निर्णय व्यक्ति की समझ पर निर्भर करता है, जो आंतरिक ज्ञान यानी अध्यात्म के जुड़ाव से संभव है।

डी-कोड हो वेदों का ज्ञान: कोठारी ने कहा कि विज्ञान सूचनाओं पर और अध्यात्म दृष्टि व बुद्धिमत्ता पर आधारित है। वेद, उपनिषदों, शास्त्रों में विज्ञान की गूढ़ बातें हैं, लेकिन आज तक इन्हें 'डी-कोड' नहीं किया गया। उन्होंने इसरो अध्यक्ष से भी आग्रह किया कि वे शोधार्थियों का ऐसा दल तैयार करें जो शास्त्रों में छिपे विज्ञान को अनावृत्त कर दुनिया में भारत के प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को साबित करें।

चाहिए क्रायोजेनिक इंजन: डॉ. राधाकृष्णन ने कहा कि मंगल अभियान को सफल बनाने के लिए क्रायोजेनिक इंजन की जरूरत है। इसका विकास अगर इसरो भारत में कर लेता है, तो 'मिशन टू मार्स' का खर्च भी घट जाएगा। इसके अलावा धरती के चुम्बकीय और गुरुत्वीय क्षेत्र से बाहर निकाल कर उपग्रह को मंगल की कक्षा में स्थापित करना कठिन काम है। इसके लिए सभी प्रकार की जांच करना प्राथमिकता है। इससे पूर्व इसरो अध्यक्ष ने राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, रेजीडेंसी के सभागार में स्कूली छात्र-छात्राओं से सवाल-जवाब सत्र में भी भाग लिया और अंतरीक्ष विज्ञान को लेकर उनकी जिज्ञासाओं को भी शांत किया।

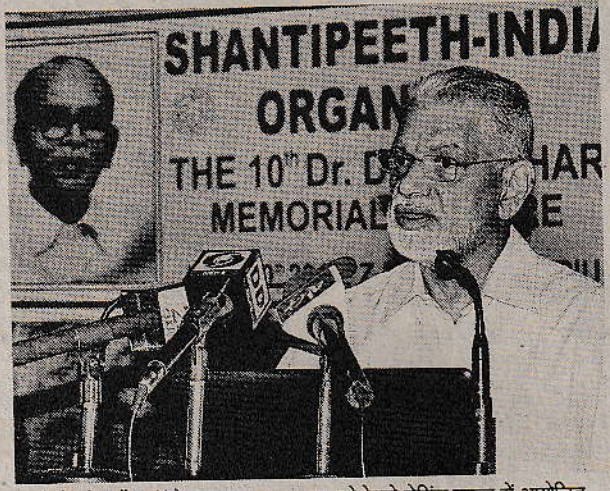
दैनिक भास्कर
उदयपुर . गुरुवार. 11 जुलाई, 2013

लीडरशिप के साथ विकास में भागीदार बनेगा इसरो : डॉ. राधाकृष्णन

शांति पीठ की ओर से डॉ.डी.एस. कोठारी व्याख्यानमाला

नगर संवाददाता | उदयपुर

इसरो के चेयरमैन डॉ. के. राधाकृष्णन ने कहा कि इसरो लीडरशिप के साथ विकास में भागीदारी बनेगा। इसरो का मकसद अंतरिक्ष कार्यक्रमों में दूसरे विकसित देशों से प्रतिस्पर्धा करना नहीं, बल्कि आगे रहना है। यही वजह है कि आज भारत विश्व में अंतरिक्ष की दिशा में कार्यरत प्रमुख देशों के साथ खड़ा है। डॉ. राधाकृष्णन बुधवार को यहां रेलवे ट्रेनिंग स्कूल सभागार में शांति पीठ भारत की ओर से डॉ. डी.एस. कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला में बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि डॉ. कोठारी की सोच भी ऐसी रही है कि मानव कल्याण के लिए आधुनिक तकनीकी का उपयोग हो। इसरो इसी दिशा में आगे बढ़ रहा है। डॉ. राधाकृष्णन ने कहा कि डॉ. कोठारी के अनुसंधानों में स्टेटिस्टिकल थर्मो डायनेमिक्स, क्वांटम स्टैटिक्स, इंटरनल कांस्टीट्यूशन ऑफ द स्टार्स आदि प्रमुख हैं जो उनके बहुआयमी व्यक्तित्व को दर्शाते है। उन्होंने पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन में बताया कि अंतरिक्ष विज्ञान के अप्लाइड आस्पेक्ट में भारत विकसित देशों की बराबरी में है। अभी यूएसओ, यूरोप, रूस, जापान, चीन के बाद भारत का नंबर आता है। इसरो के वैज्ञानिकों के अनुसंधान और कार्य दक्षता से वो दिन दूर नहीं होगा, जब भारत सबसे आगे होगा।



इसरो के चेयरमैन डॉ.के.राधाकृष्णन बुधवार को रेलवे ट्रेनिंग स्कूल में आयोजित व्याख्यानमाला को संबोधित करते हुए।



डॉ. राधाकृष्णन ने कहा कि इसरो के वैज्ञानिक स्पेस टेक्नोलॉजी को समाज और देशहित में प्रयुक्त कर लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के मकसद से रिसर्च कर रहे हैं। इसरो रिमोट सेंसिंग और सेटेलाइट तकनीक का उपयोग विकास कार्यों में कर रहा है। सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आई.वी. त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। आने वाली पीढ़ी को उनका स्मरण कराने के लिए विज्ञान महाविद्यालय में उनकी प्रतिमा लगाई जाएगी। शांति पीठ के संस्थापक सचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी गांधीवादी वैज्ञानिक थे। यही वजह है कि आज उनके किए गए कार्यों को याद किया जाता है।

स्पेस म्यूजियम बनाने का आश्वासन

इसरो अध्यक्ष ने शहर के क्षितिज कुंभट के आग्रह पर उदयपुर में स्पेस म्यूजियम बनाने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि वे इस दिशा में जोधपुर स्थित इसरो के रिमोट सेंसिंग केंद्र के वैज्ञानिक, उदयपुर सौर वेधशाला के वैज्ञानिक आदि से चर्चा करेंगे।

शाम को मुंबई लौटे

डॉ. के. राधाकृष्णन बुधवार शाम एयर इंडिया के विमान से मुंबई लौट गए। वे बंगलुरू जाएंगे। एयरपोर्ट पर उन्हें विदाई देने वालों उदयपुर सौर वेधशाला के अधिकारी, वैज्ञानिक एवं शांति पीठ संस्थान के पदाधिकारी शामिल थे।

उत्तराखंड आपदा के फोटो सौंप दिए हैं

कार्यक्रम में आपदा पूर्व सूचना देने के प्रश्न पर डॉ. राधाकृष्णन ने कहा कि इसरो पूर्व की सूचनाएं देने का काम नहीं करता है, इसके लिए अन्य विभाग कार्यरत है। इसरो केवल इमेज उपलब्ध कराता है। यहां तक कि आपदा के दौरान सूचना तंत्र में मदद करता है। उत्तराखंड त्रासदी के इमेज राज्य व केंद्र सरकार को सौंप दी है।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . सोमवार
09.07.2012
पोस्टल रजि. नं. आरजे/यूडी/ 29-15/2012-2014

सूक्ष्म जगत में विज्ञान और आध्यात्म एक

आधुनिक विज्ञान की औपनिषदिक यात्रा



उदयपुर. ब्रह्मांड की उत्पति के रहस्यों की जानकारी के लिए सूक्ष्म जगत में विज्ञान और आध्यात्म एक हो जाते हैं। आध्यात्मिक दिशा में जहां अर्न्तजगत की गहराई में जाकर महान रहस्यों को आत्मसात किया जाता है, वहीं विज्ञान में भौतिक प्रयोगों को आधार बनाकर रहस्यों का उद्घाटन किया जाता है। यह विचार डॉ. दौलतसिंह कोठारी की जयन्ती पर शांतिपीठ में आधुनिक विज्ञान की औपनिषदिक यात्रा विषय पर आयोजित संगोष्ठी में डॉ. डीएस कोठारी ने व्यक्त किए। वहीं मुख्य वक्ता प्रो. एसएन जोशी ने कहा कि भौतिक विज्ञान के खोज की एक महत्वपूर्ण दिशा ब्रह्मांड का उद्गम भी है। ब्रह्मांड की उत्पति के ज्ञान के लिए लिए नए पदार्थ के निर्माण के बारे में ज्ञान रखना आवश्यक है। गोष्ठी के अन्य वक्ता सुविवि के भौतिकशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो. एसएनए जाफरी ने कहा कि हिग्स बोसोन के खोज के बाद ब्लैकहॉल के रहस्यों को समझा जा सकेगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि केनेक्टीकट स्टेज विवि में मैनेजमेंट से जुड़े प्रो. एसएस लोढ़ा ने डॉ. दौलतसिंह को मनुष्यत्व की परिभाषा बताया और उनके राष्ट्र के प्रति योगदान का उल्लेख किया। इससे पहले शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि डॉ. कोठारी की उपलब्धियों को आगे ले जाते हुए वैज्ञानिक चन्द्रशेखर ने नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया। *कासं*

दैनिक भास्कर
उदयपुर, 8 जुलाई 2012
श्रावण कृष्ण पक्ष-5, 2069

'ब्रह्मांड के रहस्यों को जानने के लिए सूक्ष्म जगत में जाना होगा'

आधुनिक विज्ञान पर विचार गोष्ठी

उदयपुर. शिक्षाविद डॉ. दौलतसिंह कोठारी जयंती पर शांति पीठ के तत्वावधान में आधुनिक विज्ञान की औपनिषदिक यात्रा विषयक पर विचार गोष्ठी हुई।

प्रमुख वक्ता प्रो. एस.एन. जोशी ने कहा कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति के रहस्यों को जानने के लिए सूक्ष्म से सूक्ष्म जगत में जाना होगा, जहां अध्यात्म और विज्ञान एक हो जाते हैं। गांधीवादी वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. कोठारी ने दोनों विधाओं को एक-दूसरे का पूरक बताते हुए जीवन के व्यवहार में पूरकता का सिद्धांत प्रतिपादित किया था।

जोशी ने कहा कि वैज्ञानिक सिद्धांत वृहद जगत के लिए वैध हैं, लेकिन सूक्ष्म जगत के लिए हमें उन नियमों में संशोधन करना पड़ता है। वहीं दार्शनिक चिंतन और विज्ञान बहुत निकट आ जाते हैं। एमएलएसयू के भौतिक शास्त्र के प्रो. एस.एन.ए. जाफरी ने कहा कि हिग्स बोसोन को ढूंढ निकालने के बाद अब वैज्ञानिकों को ब्रह्मांड की उत्पत्ति के रहस्यों को खोजने में आसानी होगी। मुख्य अतिथि प्रो. एस.एस. लोढ़ा ने डॉ. कोठारी के शिक्षा के क्षेत्र में योगदान को रेखांकित किया। आरंभ में शांति पीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने एस्ट्रोफिजिक्स में डॉ. कोठारी की उपलब्धियां बताईं। शिक्षाविद कैलाश विहारी वाजपेयी, एम.एस. राणावत, रोशन देपुरा ने भी विचार रखे। प्रो. पी.एल. शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

के लिए क्लिक करें
kal.com

प्रातःकाल उदयपुर, रविवार 8 जुलाई, 2012 | 5

विज्ञान और आध्यात्म एक दूसरे के पूरक

उदयपुर। ब्रह्माण्ड की उत्पति के रहस्यों की जानकारी के लिए सूक्ष्माति सूक्ष्म जगत में जाना होगा, जहाँ अध्यात्म और विज्ञान एक हो जाते है। आध्यात्मिक दिशा में जहां तत्वदर्शी अन्तर्जगत की गहराई में पहुंच कर महान रहस्यों को आत्मसात् करता है वहीं वैज्ञानिक भौतिक प्रयोगों को आधार बनाकर रहस्यों को उद्घाटित करता है। गांधीवादी वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. कोठारी ने दोनों विधाओं को एक दूसरे का पूरक बताया तथा जीवन के व्यवहार में पूरकता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उक्त विचार शुक्रवार को प्रख्यात वैज्ञानिक - शिक्षाविद् डॉ. दौलतसिंह कोठारी की जयन्ती के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में आधुनिक विज्ञान की औपनिषदिक यात्रा विषयक आयोजित विचार गोष्ठी में व्यक्त किये गये।

प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो. एस.एन. जोशी ने कहा कि भौतिक विज्ञान के खोज की एक महत्वपूर्ण दिशा ब्रह्माण्ड का उद्गम भी है। आईन्सटीन ने यह तो बता दिया कि पदार्थ (मेटर) को ऊर्जा में कैसे बदला जा सकता है किन्तु ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के ज्ञान के लिये यह जानना भी आवश्यक है कि ऊर्जा को पदार्थ में कैसे बदला जा सकता है, अर्थात् नये पदार्थ का निर्माण कैसे होता है। उन्होंने कहा कि इसके ज्ञान के लिए हमें सूक्ष्म से सूक्ष्म (माईक्रोपार्टिकल) का विज्ञान समझना होगा।

गोष्ठी में अन्य प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए मो.सु. विश्वविद्यालय के भौतिक शात्र के प्रो. एस.एन.ए. जाफरी ने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा हिग्स बोसोन को ढूढ़ निकालने के बाद अब वैज्ञानिको को ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के रहस्यों की खोज में आसानी होगी और आने वाले कुछ वर्षों में महान् उपलब्धि अर्जित हो सकेगी।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए केनेक्टीकट स्टेज विश्वविद्यालय में मेनेजमेन्ट के प्रो. एस.एस. लोढ़ा ने डॉ. कोठारी को मनुष्यत्व की परिभाषा बताते हुए कहा कि राष्ट्र के प्रति उनके महान् योगदान का उल्लेख किया।

प्रारम्भ में विषय प्रवर्तन करते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि एस्ट्रोफिजिक्स के क्षेत्र में डॉ. कोठारी की उपलब्धियों को वैज्ञानिक चन्द्रशेखर ने आगे ले जाते हुए इस पर नोबल पुरस्कार प्राप्त किया।

इस अवसर पर फादर सुभाष आनन्द और पं. भंवरलाल व्यास ने धार्मिक एवं दार्शनिक जिज्ञासाओं का समाधान किया। शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी, एम.एस. राणावत, रोशन देपुरा, डॉ. आर.एम. लोढ़ा ने भी विचार व्यक्त किया। आभार प्रो. पी.एल. शर्मा ने व्यक्त किया।

इधर विज्ञान समिति में डॉ. दौलतसिंह कोठारी के जन्म दिन पर संगोष्ठी-हिग्ज बोसोन कण एवं विद्यार्थी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर सेन्टर के निदेशक प्रोफेसर एस.एन.ए. जाफरी ने हिग्ज बोसोन कण को बारीकी से समझाया।

इस अवसर पर नगर के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए एक लेख प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसका विषय था - "पद्म विभूषण डॉ. दौलतसिंह कोठारी-एक प्रासंगिक अनुकरणीय व्यक्तित्व"। इस प्रतियोगिता में सेन्ट एन्थानी सीनियर सै. स्कूल की गर्वीता बापना प्रथम रही।

दैनिक नवज्योति
अजमेर, रविवार, 1 अप्रैल, 2012

डॉ. कोठारी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत आज भी प्रांसगिक

स्मृति व्याख्यानमाला में डॉ. कपिला वात्स्यायन के उद्गार

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 31 मार्च। आधुनिक विज्ञान के पूरकता के सिद्धान्त को सामाजिक व्यवहार में लागू किये जाने का प्रवर्तन करते हुए भारत के प्रमुख वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् डॉ.डी.एस. कोठारी ने एक मानव मंगल को एक नई दिशा दी । उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत आज भी प्रासंगिक एवं नई पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक है।

यह विचार नई दिल्ली में शुक्रवार शाम को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (आई.आई.सी.) ओडिटोरियम में शान्ति पीठ उदयपुर और इंडिया इन्टर नेशनल सेन्टर द्वारा आयोजित डॉ.डी.एस.कोठारी स्मृति व्याख्यान में बोलते हुए प्रख्यात साहित्य कर्मी डॉ. कपिला वात्स्यायन ने व्यक्त किये।

डॉ. कपिला ने डॉ. डी.एस.कोठारी एक आधुनिक ऋषि विषय पर बोलते हुए कहा कि डा.कोठारी ने भारत प्रतिरक्षा विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में महान योगदान दिया किन्तु इससे भी कही अधिक उन्होने इंसानियत के उच्च स्तर पर पहुंच कर सरलता और निराभिमानता का दर्शन प्रस्तुत किया जिस पर चल कर समाज को समता और शान्ति की ओर ले जाया जा सकता है। डॉ. वात्सायन ने कहा कि आज के हालात में डॉ. कोठारी जैसे महापुरूषों के विचारों को आत्मसात करने की जरूयत है। उन्होने डॉ. कोठारी के जीवन के कई संस्मरणों का उल्लेख करते हुए कहा कि आज अहिंसा को शिक्षा से जोडकर कार्य करने की नितान्त आवश्यकता है जिससे न केवल भारतीय समाज का अपितु विश्व बंधुत्व का मार्ग प्रशस्त होता है।



उदयपुर। व्याख्यानमाला का दीप प्रज्जवलन कर शुभारम्भ करते अतिथि। फोटो : नवज्योति

विज्ञान एवं आध्यात्म का समन्वय मानव कल्याण के लिए जरूरी : डॉ. कर्णसिंह, पूर्व केंद्रीय मंत्री कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आई.सी.सी.आर के अध्यक्ष और वरिष्ठ रा'य सभा सदस्य डा.कर्ण सिंह ने कहा कि ''परा'' और ''अपरा'' दोनों सत्य की खोज हैं और दोनो के साथ चलने से ही विश्व कल्याण की उपलब्धि हो सकती है। उन्होने कहा कि वर्तमान के विषम हालात के पार जाने का मंत्र है कि हम सृष्टि और सृष्टि कर्ता के अद्वैत के विज्ञान को समझें और परस्परमभाव को आत्मसात करें।

डॉ. कोठारी स्मृति व्याख्यानमाला की श्रृंखला के उक्त नवम् व्याख्यान के मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो.यशपाल ने कहा कि डा. कोठारी ने विश्वविद्यालय को एक सोसायटी माना जिसमें शिक्षक और विधार्थी की सशक्त भूमिका होती है। आवश्यकता है कि आज के विश्वविद्यालय इसी आदर्श को उपलब्ध करते हुए सामाजिक समस्याओं का हल खोजें। प्रारंभ में शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि डा. कोठारी ज्ञान-विज्ञान का ऐसा समन्वय सूत्र हैं जिससे विश्व शान्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। उन्होने षि शब्द को आप्तपुरूष कि संज्ञा देते हुए आचार्य चरक की ''आप्तःशिष्टः बुबुधास्ते तेषां वाक्यं न संशयः''का प्रतिपादन किया । इस अवसर पर प्रो.कोठारी की पौत्री डॉ. दीपिका कोठारी ने डॉ.कोठारी द्वारा उनकी बचपन में लिखी डॉयरी में से संस्मरण सुनाए ।

समारोह में शान्तिपीठ के प्रकाशन 'स्मृति वीथी ' का लोकार्पण किया गया। यह प्रकाशन संस्थान की चौथाई शताब्दी काल की सेवाओं का उल्लेख करता है। कार्यक्रम के अन्त में शांतिपीठ की ओर से प्रो.एल.एस.कोठारी ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक भास्कर
उदयपुर • मंगलवार, 25 दिसंबर, 2012

'गीता के योग विज्ञान से नास्तिक को भी मिलता है मार्ग'

गीता जयंती पर शांति पीठ की ओर से संगोष्ठी

नगर संवाददाता | उदयपुर

शांति पीठ की ओर से गीता जयंती के मौके पर गत दिवस संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

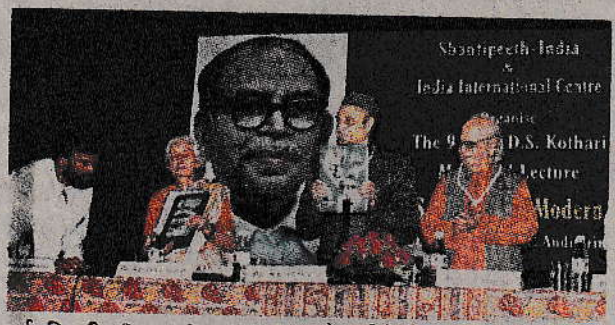
अध्यक्षता करते हुए प्रो. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि भगवत गीता मनुष्य को तात्कालिक उपलब्धियों के बहकावे में परम लक्ष्य से वंचित न होने देने का आश्वासन देती है। गीता के योग विज्ञान से आस्तिक ही नहीं, नास्तिक भी जीवन का मार्ग बना लेता है। शांति पीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि भगवत गीता में सारे धर्मों की स्वीकृति है, लेकिन यह स्वधर्म की पहचान को प्राप्त कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। मनोहर सिंह थाणा, पंडित भंवर लाल व्यास, मोहन सिंह कोठारी, प्रो. पी.एल. शर्मा, लक्ष्मणपुरी गोस्वामी ने भी विचार व्यक्त किए। गिरीश उपाध्याय ने स्वागत किया, मनोज गंधर्व ने आभार जताया।

राजस्थान पत्रिका

उदयपुर . सोमवार 02.04.2012

'डॉ. डीएस कोठारी एक आधुनिक ऋषि' व्याख्यानमाला

'दार्शनिक और अध्यात्म के समन्वयक'



नई दिल्ली. विज्ञान में पूरकता के सिद्धान्त को सामाजिक व्यवहार लाने के प्रवर्तक प्रमुख वैज्ञानिक व शिक्षाविद् डॉ. दौलतसिंह कोठारी ने मानव कल्याण को एक नई दिशा दी। उन्होंने 'परा' और 'अपरा' दोनों दार्शनिक विचारों पर वैज्ञानिक सत्य की खोज में अमूल्य योगदान दिया। साथ ही उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में उच्च शिक्षा के संस्थाग निकाय विश्वविद्याल को समाज के रूप में निरूपित कर विद्यार्थी और शिक्षक के व्यवहार की नई व्याख्या पेश की।

नई दिल्ली में शुक्रवार शाम को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर ओडिटोरियम में शान्ति पीठ, भारत और इंडिया इन्टरनेशनल सेन्टर की ओर से व्याख्यानमाला 'डॉ. डीएस कोठारी एक आधुनिक ऋषि' में उनके बारे में देश के प्रमुख शिक्षाविदों ने अपने विचा रखे। इस अवसर पर प्रो. कोठारी की पौत्री डॉ. दीपिका कोठारी ने उनकी डायरी से संस्मरण सुनाए। समारोह में शान्तिपीठ के प्रकाशन 'स्मृति वीथी' का लोकार्पण किया गया।

'परा' और 'अपरा' दोनों सत्य की खोज है और इनके साथ चलने से ही विश्व कल्याण हो सकता है। इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए डॉ. कोठारी ने विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय की विचार धारा को पोषित किया और इसी के विस्तार में मानव कल्याण की नूतन संस्कृति का स्वप्न देखा।

डॉ. कर्णसिंह, पूर्व केन्द्रीय मंत्री

डॉ. कोठारी ज्ञान-विज्ञान का ऐसा समन्वय सूत्र है जिससे विश्व शान्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। उन्होंने ऋषि शब्द को आप्तपुरुष कि संज्ञा देते हुए आचार्य चरक की 'आप्तः शिष्टः बुबुधास्ते तेषां वाक्य न संशयः' का प्रतिपादन किया।

अनंत गणेश त्रिवेदी, संस्थापक महासचिव शांतिपीठ

डॉ. कोठारी ने विश्वविद्यालय को एक समाज माना, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी की सशक्त भूमिका होती है। वर्तमान में ज्ञान का विस्तार इतना हो चुका है कि व्यक्ति का एकाकी होकर विकास करना कठिन है आवश्कता है सभी के एक साथ होकर चलने की।

प्रो. यशपाल, कुलाधिपति, जवाहर लेहरू विवि

उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त प्रासंगिक व प्रेरणादायक है। उन्होंने भारत प्रतिरक्षा विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में महान योगदान दिया। डॉ. कपिला वात्स्यायन, साहित्यकार

डॉ. कपिला वात्स्यायन, साहित्यकार

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार 19 फरवरी 2012

शांतिपीठ में सत्संग-संगोष्ठी आयोजित

[श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती मनाई]



शान्तिपीठ के तत्वावधान में आयोजित सत्संग-संगोष्ठी में भजनों की प्रस्तुतियां देते।

उदयपुर. श्रीरामकृष्ण परमहंस की 177वीं जयन्ती के उपलक्ष में शांतिपीठ तत्वावधान में सत्संग-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार नंद चतुर्वेदी ने कहा कि महापुरुषों का दर्शन हमारी जीवन ज्योति बननी चाहिए और हमारी बहिर्जगत की यात्रा अंतर्जगत में पूर्ण होनी चाहिए। अध्यक्षता करते हुए प्रो. एस.आर.व्यास ने कहा कि रामकृष्ण ने अपनी अनुभूतियों से विराट के दर्शन किए। डॉ. विनया पेण्डसे ने रामकृष्ण के जीवन से जुड़े कई उदाहरणों से बताया कि परहंस देव ने सारे सम्प्रदायों के सत्य को पहचाना और मनुष्य मात्र की समग्र एकता के सूत्र को नया आयाम दिया। शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि राष्ट्र चरित्र का गठन आध्यात्मिक शिक्षा से सम्भव है। उन्होंने कहा जो आत्म ज्योति जगा पाने में सहायक न बने वह शिक्षा अधूरी है। पं. भंवरलाल व्यास ने शान्ति मंत्र प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. भगवती प्रसाद चौबीसा ने किया जबकि आभार अधिवक्ता त्रिभुवननाथ पुरोहित ने ज्ञापित किया। दूसरे सत्र में पं.रामकृष्ण बोस ने स्वामी विवेकानन्द एवं रामकृष्ण के भजन सुनाए। पापड़ी भट्टाचार्य और आनन्द रूप भट्टाचार्य ने संगत की।

दैनिक भास्कर
उदयपुर • रविवार 19 फरवरी 2012 • 5

परमहंस ने किया था आत्म साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त

177वीं जयंती पर शान्तिपीठ में सत्संग संगोष्ठी

नगर संवाददाता . उदयपुर

आध्यात्मिक चैतन्य के आश्रय में व्यावहारिक जीवन जीने से ही समाज में नैतिक मूल्यों की पुन-र्स्थापना संभव है। राम कृष्ण परमहंस ने सभी धर्मों और दर्शनों के सत्य को आत्मसात कर मनुष्य मात्र के लिए आत्म साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त किया था।

यह बात शनिवार को श्रीरामकृष्ण परमहंस की 177वीं जयंती के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में हुई सत्संग- संगोष्ठी में वक्ताओं ने कही। वरिष्ठ साहित्यकार नंद चतुर्वेदी ने कहा कि महापुरुषों के दर्शन से हमारी जीवन ज्योति बननी चाहिए। हमारी बहिर्गत की यात्रा अंतर्गत में पूर्ण होनी चाहिए। रामकृष्ण के शिष्य स्वामी विवेकानंद मानव धर्म की पहचान हैं।

दूसरे सत्र में पंडित रामकृष्ण बोस ने स्वामी विवेकानंद एवं रामकृष्ण के भजन सुनाए। पापड़ी भट्टाचार्य और आनंद रूप भट्टाचार्य ने संगत की। इस अवसर पर संगीत शिक्षक रफीक अहमद ने भक्ति गीत की प्रस्तुति दी। इस मौके पर कई भक्त मौजूद थे।

राष्ट्र चरित्र का गठन आध्यात्मिक शिक्षा से संभव

शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि राष्ट्र चरित्र का गठन आध्यात्मिक शिक्षा से संभव है। उन्होंने कहा कि जो आत्म ज्योति जगा पाने में सहायक न बने वह शिक्षा अधूरी है। पंडित भंवरलाल व्यास ने शांति मंत्र प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. भगवती प्रसाद चौबीसा ने किया और आभार अधिवक्ता त्रिभुवन नाथ पुरोहित ने माना।

अनुभूतियों से विराट दर्शन

अध्यक्षता करते हुए प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि रामकृष्ण ने अनुभूतियों से विराट के दर्शन किए। हमें इस आदर्श को सामने रख कर स्वयं की साधना से संकुचित सीमाओं को ध्वस्त कर व्यापकता को आत्मसात करना चाहिए।

प्रातःकाल
फाल्गुन कृष्ण 7, शुक्रवार, 5 फरवरी, 2010

विज्ञान व वेदान्त का लक्ष्य भिन्न नहीं

उदयपुर, 4 फर. (नसं)। प्रख्यात वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद डॉ. डी.एस. कोठारी की पुण्य तिथि के अवसर पर गुरूवार को शांतिपीठ में विज्ञान, वेदान्त और गांधी विषयक गोष्ठी आयोजित की गई।

गोष्ठी में सुविवि दर्शनशास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.आर. व्यास ने कहा कि ईश्वर की कृति मात्र सुन्दर है और इसके सौंदर्य को आत्मसात करने अनुभूतियों से जुड़ने की जरूरत है। विज्ञान एवं वेदान्त का लक्ष्य भिन्न नहीं है। वरिष्ठ साहित्यकार नंद चतुर्वेदी ने कहा कि व्यावहारिक जगत में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि अमूर्त को साधने में मूर्त एवं यथार्थ का निष्कासन न हों।

आबकारी अतिरिक्त आयुक्त एसएल बोहरा ने कहा कि मनुष्य का सौंदर्य सकारात्मक की स्वीकृति है। शांतिपीठ के महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि डा. कोठारी ने आधुनिक विज्ञान को वेदान्त का अनुगामी बताया। संगोष्ठी में मनोज गन्धर्व, कैलाश बिहारी वाजपेयी, पं. भंवरलाल व्यास ने भी विचार रखे। गोष्ठी से उदयपुर में प्रस्तावित रिजनल साईंस सेंटर का नाम डॉ.कोठारी के नाम पर करने की राज्य सरकार से मांग की गई।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शनिवार, 6 फरवरी, 2010

'ब्रह्म व सत्य एक ही लक्ष्य के नाम'

उदयपुर, 5 फरवरी

ब्रह्म की अनुभूति की व्याख्या वेदांत है। विज्ञान व वेदांत एक ही लक्ष्य के नाम है। यह विचार शिक्षाविद् व वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. कोठारी की पुण्यतिथि पर सरदारपुरा स्थित शांतिपीठ में आयोजित गोष्ठी में सुविवि के दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. आर.एस. व्यास ने व्यक्त किए।

विज्ञान, वेदांत व गांधी विषयक गोष्ठी में वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. नंद चतुर्वेदी ने कहा कि व्यावहारिक जगत में इस बात का ध्यान रखना भी नितांत आवश्यक है कि अमूर्त को साधने में मूर्त व यथार्थ का निष्कासन ना हो। इस मौके पर आबकारी आयुक्त एस.एल.बोहरा, शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी, शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने भी सम्बोधित किया।

दैनिक नवज्योति

अजमेर, शनिवार, 6 फरवरी, 2010

ब्रह्म और सत्य एक ही लक्ष्य का नाम

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 5 फरवरी। ब्रह्म और सत्य एक ही लक्ष्य के नाम है, जिसे विज्ञान, वेदान्त तथा गांधी ने साधा है। डॉ. दौलत सिंह काठारी ज्ञान विज्ञान की अविभा'य संस्कृति के समन्वयक है। उनकी मेधा विज्ञान व अहिंसा मूलक विश्व निर्माण में प्रेरक शक्ति का कार्य कर सकती है।

विज्ञान, वेदान्त और गांधी विषयक गोष्ठी

यह विचार आज सरदारपुरा पंचवटी स्थित शान्तिपीठ की ओर से प्रख्यात वैज्ञानिक शिक्षाविद् डॉ. डी.एस. कोठारी की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित विज्ञान, वेदान्त और गांधी विषयक गोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए।



उदयपुर में संगोष्ठी को सम्बोधित करते आबकारी अतिरिक्त आयुक्त सुमतिलाल बोहरा। फोटो : नवज्योति

गोष्ठी में मुख्य वक्ता सुखाड़िया विवि के दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. एस.आर. व्यास ने कहा हैकि ईश्वर की कृति मात्र सुंदर है और इसके सौंदर्य को आत्मासत करने अनुभूतियों के आयाम से जुड़ने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि ब्रह्म की अनुभूति की व्याख्या वेदान्त है। विज्ञान एवं वेदान्त का लक्ष्य भिन्न नहीं है। वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. नंद चतुर्वेदी ने कहा कि व्यवहारिक जगत में इस बात का ध्यान रखना भी नितान्त आवश्यक है कि अमूर्त को साधने में मूर्त एवं यथार्थ का निष्कासन ना हो। आबकारी अतिरिक्त आयुक्त एस.एल. बोहरा ने कहा कि मानव जाति की कहानी निर्माण एवं विध्वंस के बीच चली आ रही है। उन्होंने कहा कि मनुष्य का सौंदर्य सकारात्मक की स्वीकृति है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि डॉ. कोठारी ने आधुनिक विज्ञान को वेदान्त का अनुगामी बताया। उन्होंने विज्ञान व अध्यात्म के लक्ष्य में किसी प्रकार के विरोधाभास को अस्वीकृत करते हुए इन्हें एक-दूसरे का पूरक बताया। त्रिवेदी ने कहा कि गांधी ने मनुष्य के संवेदनशील अस्तित्व से शुद्ध चैतन्य को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया और डॉ. कोठारी ने भी यही मार्ग साधा। गोष्ठी में मनोज गंधर्व ने विज्ञान एवं अध्यात्म के समन्वय से बनने वाले मार्ग से युवा समुदाय को जोड़ने की आवश्यकता बताई। शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने डॉ. कोठारी की शिक्षा नीति के महत्व को प्रतिपादित किया। एडवोकेट पंडित भंवरलाल व्यास वर्तमान की चुनौतियों का शमन करने ब्रह्म सूत्र एवं उपनिषद की दिशा को आत्मसात करने की जरूरत पर बल दिया। भोपाल सिंह कोठारी ने आभार व्यक्त किया। गोष्ठी में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया कि विज्ञान महाविद्यालय का नाम डॉ. कोठारी के नाम पर किया जाए। साथ ही राज्य सरकार से यह मांग की गई कि उदयपुर में प्रस्तावित रिजनल साईंस सेंटर का नाम डॉ. कोठारी के नाम पर किया जाए। प्रारम्भ में डॉ. कोठारी की तस्वीर पर अतिथियों के द्वारा माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया गया।

राजस्थान पत्रिका

उदयपुर, गुरुवार, 4 फरवरी, 2010

विचार गोष्ठी आज

उदयपुर, 3 फरवरी। शिक्षाविद् डॉ. दौलतसिंह कोठारी की पुण्यतिथि पर गुरुवार को शांतिपीठ की ओर से शाम 4 बजे संस्थान के सभागार में विज्ञान, वेदान्त और गांधी विषयक विचार गोष्ठी का आयोजन किया जाएगा।

दैनिक भास्कर

उदयपुर · शुक्रवार · 5 फरवरी 2009

डॉ. कोठारी ज्ञान-विज्ञान के समन्वयक



ब्रह्म और सत्य एक ही लक्ष्य के नाम है जिसे विज्ञान, वैदांत तथा गांधी ने साधा है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी ज्ञान विज्ञान की अविभाज्य संस्कृति के समन्वयक है। उनकी मेधा विज्ञान व अहिंसा मूलक विश्व निर्माण में प्रेरक शक्ति का कार्य कर रही है। ये विचार गुरुवार को सरदारपुरा स्थित शातिपीठ में वैज्ञानिक, शिक्षाविद् डॉ डीएस कोठारी की पुण्यतिथि पर विज्ञान, वेदांत और गांधी विषयक गोष्ठी में विभिन्न वक्ताओं ने व्यक्त किए। गोष्ठी में सर्वसम्मति से विज्ञान महाविद्यालय का नाम डॉ. कोठारी के नाम पर करने का प्रस्ताव पारित किया गया। उदयपुर में प्रस्तावित क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र का नामकरण डॉ. कोठारी पर करने की मांग की गई। गोष्ठी में सुविवि में दर्शन शास्त्र के विभागाध्यक्ष डॉ. एसआर व्यास, वरिष्ठ साहित्यकार नंद चतुर्वेदी, अतिरिक्त आबकारी आयुक्त एसएल बोहरा, संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, मनोज गंधर्व, शिक्षाविद् कैलाश विहारी वाजपेयी आदि ने विचार व्यक्त किए।

दैनिक नवज्योति
अजमेर, गुरुवार, 8 जुलाई, 2010

युवा आगे आएं और स्वर्णिम युग का करें निर्माण

विज्ञान व तकनीकी दिशा पर शान्ति की प्रतिबद्धता जरूरी

न्यूज सर्विस

उदयपुर ,7 जुलाई। विज्ञान व तकनकी की दिशा के लिए शान्ति की प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। अध्यात्म और विज्ञान की पारस्परिक पूरकता युक्त आचण विश्व समुदाय के सुखद भविष्य का मार्ग आश्वस्त कर सकता है।

दशाब्दियों पूर्व डॉ. कोठारी जैसे आध्यात्मविद् वैज्ञानिक ने आधुनिक विज्ञान व तकनीकी को शान्ति की दिशा दी। आज आवश्यकता है युवा वर्ग जैसे वैज्ञानिकों से प्रेरणा पाकर स्वर्णिम युग का निर्माण करें।

उक्त विचार शिक्षाविद् वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जन्म तिथि के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में मोहनलाल सुखाड़िा विवि कुलपति कांफ्रेंस कक्ष में शांति संस्कृति एवं विज्ञान विषयक आयोजित विचार गोष्ठी में व्यक्त किए।

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. इन्द्रवर्धन त्रिवेदी ने कहा कि आज विद्यार्थी वर्ग में साइंटिफिक टेम्प्रामेंट विकसित करने की आवयकता है। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में विज्ञान की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा कि विज्ञान के अध्ययन की प्रक्रिया और भी सरल बनाई जाए तथा युवा वर्ग को इस दिशा में प्रेरित किया जाए।

शान्तिपीठ के संसीपक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शिक्षा, प्रतिरक्षा और मानव मूल्यों के प्रति डॉ. कोठारी की स्वाभाविक प्रतिबद्धता ही उनके जीवन का संदेश है। उन्होंने कहा कि शिक्षा अभाज्य है। खण्ड-खण्ड में विभक्त होकर शिक्षा का अभिष्ट नामुमकिन है।

डॉ. कोठारी ने शिक्षा को अहिंसा से जोड़कर पूर्णता की ओर चलने का मार्ग प्रतिपादित किया। इस अवसर पर प्रो. एस.एन. जोशी, खगोलविद् प्रो. एस.एन. जाफरी ने भी सम्बोधित किया। प्रारम्भ में डॉ. कोठारी की तस्वीर पर अतिथियों द्वारा माल्यार्पण किया गया था शान्तिपीठ की ओर से मनोहर गंधर्व ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

जय राजस्थान
दिनांक- 7 जुलाई 2010, वार- बुधवार

शान्ति के लिए प्रतिबद्धता जरूरी



उदयपुर, 6 जुलाई। विज्ञान व तकनीकी की दिशा के लिए शान्ति की प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। अध्यात्म और विज्ञान की पारस्परिक पूरकता युक्त आचरण विश्व समुदाय के समुदाय के सुखद भविष्य का मार्ग आश्वस्त कर सकता है। दशाब्दियों पूर्व डॉ. कोठारी जैसे आध्यात्मविद् वैज्ञानिक ने आधुनिक विज्ञान व तकनीकी को शान्ति की दिशा दी। आज आवश्कता है युवा वर्ग कोठारी जैसे वैज्ञानिकों से प्रेरणा पाकर स्वर्णिम युग का निर्माण करें।

उक्त विचार आज शिक्षाविद् वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी की जन्मतिथि के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वाधान में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय कुलपति कान्फ्रेसकक्ष में शान्ति संस्कृति एवं विज्ञान विषयक आयोजित विचार गोष्ठी में व्यक्त किये गये। गोष्ठी की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. इन्द्रवर्धन त्रिवेदी ने की। प्रो. एस.एन. जोशी ने कहा कि शान्ति के लिए प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शिक्षा, प्रतिरक्षा और मानव मूल्यों के प्रति डॉ. कोठारी की स्वाभाविक प्रतिबद्धता ही उनके जीवन का संदेश है। खगोलविद् प्रो. एस.एन. जाफरी ने सफेद बोने तारों की प्रचंड उर्जा पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर डॉ. कोठारी की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये जाने के लिए विविध पक्षों पर विचार किया गया तथा सर्व सम्मति से तय किया गया कि विज्ञान महाविद्यालय में डॉ. कोठारी की आदमकद प्रतिमा लगायची जाये। इस कार्य को अन्जाम देने कुलपति डॉ. त्रिवेदी ने यथाशीघ्र कार्यवाही की अभिव्यक्ति दी।

प्रारंभ में डॉ. कोठारी की तस्वीर पर अतिथियों द्वारा माल्यार्पण किया गया तथा शान्तिपीठ की ओर से मनोहर गन्धर्व ने धन्यवाद ज्ञापित किया।